हिटलर के क़ैदखाने में

रचयिता

श्री राज किशोर 'किशोर'

विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

प्रथम बार १,१००] [मूल्य २॥)

प्रकाशक की ओर से

[विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।]

१६ मार्च, १६३३

म्यूनिक पुलिस जेल, २४वीं कोठरी

स्टीफैन को जेल में आये एक हफ्ता गुजर चुका था। वह जेल मे क्यो लाया गया ? यह उसे नही मालूम। वह कब छूटेगा ? यह भी उसे नही पता। उसका क्या होगा ? वह यह भी नही जानता।

जेल मे कदम रखते समय उसे विश्वास था कि उसका मुक़दमा सुना जायगा और उसके साथ न्याय होगा। पर एक सप्ताह के बाद उसे मालूम पड़ने लगा कि यह उसका भ्रम था। वह म्यूनिक के जेल की मजबूत दीवालो के बाहर अपने जीवन पर्यंत एक बार भी जा सकेगा, इसमे उसे सदेह था।

यकायक उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो वह मर चुका है और उसकी निर्जीव लाश भर शेष बची है। वह बहुत देर तक खाट पर पड़ा हुआ छत की ओर देखता रहा। उसके मस्तिष्क मे एक विचार तक न उठा। उसकी साँस बंद सी हो गई। .. अचानक उसकी निद्रा भग हुई। नही, उसे दुनिया मे जीवित रहना है, काम करना है। वह जरूर जिन्दा रहेगा। ससार की सेवा करेगा। उसे कोई नहीं मार सकता। परमात्मा उसके साथ है।..... लेकिन मृत्यु से उसे कौन बचा सकता है ?

मृत्यु !

नही। मृत्यु कैसी ? मृत्यु और जीवन का यह कैसा संघर्ष ? वह जीवित है और जीवित रहेगा। अवश्य जिन्दा रहेगा।

उसने जेल की कोठरी के चारों ओर दृष्टि डाली। उसने गदी और मजबूत दीवाले देखी। वह देखता रहा ...

उसने पीतल के कटोरे को हाथों में उठा लिया। बरफ के भाँति ठंडे कटोरे ने उसके हाथ गला दिये। कटोरा छूट कर जमीन पर गिर गया। उसने कटोरा फिर उठा लिया और जाडे की सर्दी का अनुभव करता रहा।

अत्याचार से पीड़ित कैदियों की दु:ख-चीत्कार उसके कानों मे प्रवेश करने लगी। उसका मुलायम दिल पसीज उठा। उसकी आँखो से आँसू की दो बूँद टपक कर जमीन पर गिर गयी। वह सुनता रहा। ..

उसका कमजोर शरीर एक बार सुख से पुलक उठा।

उसे अनुभव हुआ कि वह जीवित है!

× × × ×

उसने एक पुलिसमैन से प्रार्थना की कि वह उसकी पेसिल और कागज ला दे। पुलिसमैन भला आदमी था। वह चुपचाप जेल के गोदाम में गया और वहा से उसकी पेसिल और नोट-बुक ले आया।

जब वह जेल में आया तब उसकी पेसिल और नोट-बुक छीन ली गई थी। वे उसे अब फिर मिल गई। उन्हे पा कर उसे इतनी खुशी हुई जितनी कि एक बहुत समय से बिछुडे हुए प्रेमी को अपनी प्रेमिका को पाकर खुशी होती है। वह आनन्द में नाच उठा। उसने लिखना शुरू किया। नोटबुक के श्वेत-पृष्ठो पर बसती पेसिल सुख से नाचने लगी। पर उसकी विचार-शक्ति क्षीण हो गई थी। उसके विचार अस्त-व्यस्त हो गये थे। उसके लिखे हुए शब्दो का कोई अर्थ न था और उसके जुमले बेमतलब थे।

उसे जोर का बुखार चढा हुआ था। उसका शरीर काँप रहा था। लेकिन वह लिखता ही गया।. ...उसकी कमजोर उँगलियाँ शिथिल

पड़ गईं। उसने सब लिखे हुए पृष्ठ फाड डाले और फटे टुकड़े अपने विस्तरे के नीचे छिपा दिये। और सो गया।

वह दिन भर सोता रहा। जब उसकी आँखे खुलीं, तब रात हो चली थी। जेल के सिपाही ने कोठरी की धीमी बत्ती जला दी थी। उसकी रोशनी गदी दीवालो को और भी भयानक बना रही थी।

वह उठा! वह बेचैनी की हालत मे कोठरी में घूमता रहा। वह करे क्या? आखिर वह अपना समय कैसे काटे। पढ़ने के लिये भी तो कोई चीज नहीं। वह निराश होकर धम से खाट पर बैठ गया और निरुद्देश्य-सा सामने ताकने लगा। उसे झपकी आने लगी।

यकायक उसे खयाल हुआ कि उसके पास कागज और पेंसिल हैं। उसने अपने विस्तर के नीचे से दोनो चीजे निकालीं और लिखना शुरू किया। उसने जेल के बारे मे लिखा। उसने कैदियो के दुख के विषय में लिखा। उसने अखबार के लिये एक लेख तैयार कर दिया।

सहसा वह रुक गया। लिखने से फायदा क्या? वह किस लिये लिखे? क्यो लिखे? किसके लिये लिखे? इन पक्तियों को कोई नहीं पढ़ेगा। कोई कम्पोजीटर इन्हे कम्पोज नही करेगा। कोई अखबार इन्हे प्रकाशित नही करेगा। शायद कल इनका लिखने वाला मौत के घाट उतार दिया जाय। उदासी और निराशा ने उसे आ घेरा। उसने लिखे हुए कागजो को फिर फाड़ डाला। वह फिर बेचैनी से कोठरी मे घूमने लगा।

लेकिन फिर उसका उत्साह बढा। "जब तक मैं जीवित हूँ, जब तक मेरी साँस चलती है, जब तक मेरे पास पेंसिल और काग़ज़ हैं, तब तक मै अवश्य लिखूँगा!"

उसने चिल्लाकर कहा। उसने गदी दीवालो से बार बार ये शब्द दुहराये मानों वे उसे लिखने से रोक रही हो।

वह अपने आप से बाते करने लगा। उसे अपनी आवाज किसी दूसरे की सी प्रतीत होने लगी। उसे मालूम पडा कि यह शब्द कही दूर से आ रहा है।

"जो कुछ मैंने इस जेल मे सुना, देखा और अनुभव किया है और जो सुनूगा, देखूगा और अनुभव करूँगा, वह मै सब लिखूँगा। मैं ससार को बताऊँगा कि जर्मनी का नात्सीदल उससे क्या छिपा रहा है।"

कहते-कहते वह चुप हो गया। उसे चारो ओर की शाति बहुत गहरी प्रतीत हुई। अपने दोनो हाथो मे उसने अपना सिर छिपा लिया। उसकी कनपटी उबल रही थी। उसके विचार उल्टे-सीधे थे।

लेकिन क्या वह सचमुच लिखे? क्या वह डायरी रखने की जोखिम मोल ले? यदि पुलिस को डायरी मिल गई तब उसका अवश्य ही खात्मा हो जायगा। फिर उसको मृत्यु के मुख से कोई नहीं बचा सकता!

पर उसकी अतरात्मा ने कहा, "नही, अवश्य लिखो।" उसने डायरी लिखने का प्रण कर लिया। उसने सोच लिया कि रिहाई के समय वह जेल से डायरी को छिपा कर ले जायगा। वह ससार को बतलायेगा कि जर्मनी के अदर क्या हो रहा है। शायद तब वे लोग जो आज जर्मनी के अत्याचार सुनने के लिये बहरे बन गये हैं, सुने। शायद तब अत्याचार के शिकार अपनी आवाजे बुलद पाये। शायद तब वे लोग जो चुपचाप बैठे हैं इस अमानुपिकता के विरुद्ध अस्त्र-शस्त्र उठाये। और शायद तब वे दस हजार निरपराध व्यक्ति जो आज जर्मनी के राजनीतिक जेलो मे पडे सड़ रहे हैं अपना छुटकारा पा जाये!

वह दृढता पूर्वक बैठ गया। उसने दीवाल के सहारे कागज रक्खा और उस पर पेन्सिल से लिखने लगा—

"मै ये पक्तियाँ म्यूनिक के पुलिस जेल की २४ नम्बर की कोठरी से लिख रहा हूँ। अपनी कैद के बाद मैं जिन कोठरियो में रक्खा गया हूँ, उनमे से यह तीसरी कोठरी है। यह कोठरी छोटी, गंदी और अधेरी है। मेरे पास न तो मेज है और न कुर्सी। वहाँ की दीवाले गदी है। छत के पास वाली छोटी-सी खिड़की जमाने से साफ नहीं हुई। गंदी दीवाल पर धूल की एक मोटी तह बिछी हुई है। उस पर किसी पहले कैदी ने उँगली से लिख दिया है, "हिटलर की जय!" उसकी सामने वाली दीवाल पर किसी समष्टिवादी कैदी ने लाल पेसिल से कम्यूनिस्ट इन्टरनैशनल का पूरा गाना लिख दिया है।

"इस कोठरी मे पहले नात्सी और समष्टिवादी रहते थे। अब मैंने उनका स्थान ले लिया है। अब मैं यहाँ बद हूँ, मैं जिसने कि राजनीति मे आज तक कोई भाग नही लिया!"

"मै यहाँ राजनीतिक कारणो से गिरफ्तार हूँ। मुझे अन्य दस हजार व्यक्तियो की तरह बवेरियन पुलिस ने कैद कर रक्खा है।"

"जेल के बाहर एक नई जर्मनी की रचना हो रही है। लाखो जर्मन खुशियाँ मना रहे हैं। उनके लिये हर हिटलर "लज्जा और अपमान" से छुटकारा देने वाला है। उनके लिये जातीय समाजवाद अर्थात् नात्सीवाद का अर्थ स्वतत्रता है। लेकिन साधारण जन समूह का नशा जेल के दीवालों के अदर प्रवेश नहीं कर पाता। यहाँ न तो रोशनीदार जुलूस ही है और न फूलो की माला ही है। यहाँ नात्सियों का नगा चित्र दीख पड़ता है। यहाँ आपको उनकी अमानुषिकता, संकीर्णता और घृणा देखने को मिलेगी।

"मेरी कोठरी तीन कदम लम्बी है। स्थान सकीर्ण है। पर ख़ुद जर्मनी भी तो संकीर्ण हो गया है!"

× × × ×

यह पत्र "म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस" नामक पत्र के सम्पादक, स्टीफैन लॉरॉ की रक्षित क़ैद के विषय मे है।

"कल रेगाइर अगस्टाट वैक से जो बात चीत हुई मी उसके पश्चात् मैं निम्नलिखित बाते अंकित करता हूँ।

मै बहुत दिनों से हेर लॉरॉ से भेट करना चाहता हूँ जिससे कि मैं उनसे कुछ नई बातें मालूम कर सकूँ। परन्तु मुझे यह आज्ञा अभी तक नहीं मिली। मैंने कल इस बात पर भी जोर देने का साहस किया था कि हमारी नई गवर्नमेंट बदला नहीं वरन् मेल मिलाप चाहती है।

"प्रधान मंत्री गोरिंग ने रोम मे इसी बात का विश्वास दिलाया था। मुझे विश्वास है कि मुझे इन बातो के दोहराने के लिये अवश्य क्षमा करेंगे। आज हमारे चासलर हिटलर का जन्म-दिवस है जो मेरे मुवक्किल की रिहाई के लिये बड़ा शुभ होगा। मैं पहिले ही बतला चुका हूँ कि हेर लॉरॉ की राजनीतिक सम्मतियाँ उचित हैं और वह बहुत देशप्रेमी है। परन्तु खेद की बात है कि उसे अपनी सफाई देने का अभी तक अवसर नहीं दिया गया।

"उसकी अभी तक कुछ सुनवाई नहीं हुई और न उसे यही मालूम है कि किस कारण से उसको जेल मे भेजा गया है। उसका वर्तमान सकट उसके स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक है। उसको अपनी स्त्री की चिन्ता और भी अधिक सताती रहती है। क्योकि उसकी मौजूदा आर्थिक अवस्था शोचनीय है और वह अपनी स्त्री का व्यय सुचारु रूप से नहीं दे सकता। अगर राजनीतिक पुलिस का यह विश्वास है कि हेर लॉरॉ की पूर्व राजनीतिक हरकतें जातीय-समाजवाद के खिलाफ रही हैं, तब भी यह उचित है कि इस बुद्धिमान् पुरुष को नवीन दशाओं के अनुसार स्वयं को ढालने का अवसर दिया जाय। इस प्रकार के असाधारण प्रतिभाशाली पुरुष को अनर्थ यातना देने के बजाय स्वयं में मिला लेना अधिक उपयोगी है। इन्हीं कारणों से मैं

रेगाइर अगस्ट्राट वेक से आदर पूर्वक विनय करता हूँ कि हर लॉरॉ को रहा कर दिया जाय।

(दस्तखत) स्काम

स्टीफैन खत को पढने के बाद हस पडा। उसे यह बहुत विचित्र और हास्यपद प्रतीत हुआ कि स्काम ऐसे कूटनीतिज्ञ के पत्र लिखकर उसकी रिहाई का उद्योग कर रहा है।

२३ अप्रैल

"तुम लोगो को नही मालूम कि आज कल मेरी जान कैसी मुसीबत मे है। अगर तुम लोगो की स्त्रिया भी जेल मे वन्द होती तो तब तुमको आटे दाल का भाव मालूम पडता .. लेकिन तुमसे ऐसी बाते करने मे कोई लाभ नहीं!"

स्टीफैन के कमरे का साथी क्राइगर हताश हो गया।

बेचारा क्राइगर बडी आफत मे था। उसके लिये दुनिया मे प्रलय सी होने वाली थी—एक जर्मन अफसर की दुनिया, एक देश भक्त जर्मन की दुनिया लुट-सी गई थी।

"मैं कभी इस अनादर को नही भूलूगा।" उसने दोहराते हुए कहा—

जेल मे डालने का अनादर एक ऐसे आदमी को कारागार मे सडाना जो महान युद्ध मे जर्मनी के लिए अपना खून बहा चुका हो। जो १० साल पहिले जातीय दल का नेता रह चुका हो जिसने हिटलर के साथ युद्ध मे भी भाग लिया हो, जिसने हिटलर को जेल से रिहा होने पर उसे लाने के लिए अपनी मोटर भेजी हो, जिसने देश भक्ति के लिए अगणित बलिदान किये हो, जिसके जीवन का ध्येय देश भक्त बनना था—और फिर उसी जेल मे सडाया जावे।

और उसकी स्त्री, जिसने महान युद्ध मे नर्स का काम किया हो,

उसको भी जेल में डाल दिया जाय। वह भी कोठरी मे बन्द है जिसमे रंडियो और चोरी करने वाली औरते रक्खी जाती हैं।

क्राइगर के दिमाग मे अपने और अपनी स्त्री के कारागार भोगने के विचारो के अतिरिक्त और कुछ विचार नहीं आता था। वह उन बातो को सोच-सोच कर रात दिन दुखी होता था।

उसके मित्रगणों के मत्री होते हुए और उसका एक जर्मन अफसर होते हुए भी, वह जेल मे बन्द है! और उसे जर्मनी के जातीय-समाज-वादियो ने ही बन्द किया है!

हर बार क्राइगर उपरोक्त बातो को सोच २ कर अपनी मुट्ठी मेज पर दे दे मारता था और चिल्लाता था।

"सुअरो, शिकारी कुत्तो, तुम्हारा नाश हो!"

उसके नेत्रों से फिर अश्रुधारा; और वह निद्रा देवी की गोद मे आश्रय पाने के लिये नशे की गोली खाकर लेट जाता; और अपनी चारपाई पर मृतक-सा पड़ा रहता।

जब प्रार्थना के वास्ते गिर्जे के घटे बजते, तब क्राइगर उठ कर बैठ जाता हाथ जोड़ लेता और अपनी स्त्री को दुख से मुक्त करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता। उन पति-पत्नी ने यही क्रम बॉध रक्खा था कि जब गिरजे मे घंटा बजता तो दोनों अपनी-अपनी कोठरी मे बैठ जाते और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करते। उस समय उनके लिये जेल की दीवाले लुप्त हो जाती; और उनको एक दूसरे से कोई भी अलग न कर पाता—न लोहे की छडें, न लोहे के दरवाजे ही......को ऐसा आभास होता था मानो कि वे एक दूसरे के पास हैं।

वे यहॉ क्यों हैं?

राजनीतिक पुलिस क्राइगर को गिरफ्तार करना चाहती थी। उसे जब यह मालूम हुई, तब वह कहीं चला गया। पुलिस ने उसे घर पर न पाकर उसकी स्त्री को ही जेल गिरफ्तार कर ले गये और जेल मे

डाल दिया। उसकी स्त्री फ्रा क्राइगर को बतलाया गया कि ज्योंही उसका पति अपने आपको वहाँ हाजिर करेगा, उसे स्वयं छोड़ दिया जावेगा।

क्राइगर दूसरे दिन हाजिर हो गया।

उसकी स्त्री को छोड़ दिया गया। उसने अपने पति को छुड़ाने का भर सक प्रयत्न किया। वह बड़े-बडे जातीय-दल के नेताओं को जानती थी। उसने उनसे प्रार्थना की कि वे उसकी सहायता करें। उसको सलाह दी गई कि वह हिंडनबर्ग से अपील करे। अस्तु, उसने सभापति को लिखा। हिंडनबर्ग ने फौरन उत्तर दिया कि मामले को तै करने में वे जल्दी करेंगे। और कोई कसर बाकी न छोड़ेंगे।

फ्रा क्राइगर ने प्रेसीडेंट हिंडनबर्ग का खत अपने पति के पास जेल में भेज दिया। उसने सोचा कि इससे उन्हें धीरज बँधेगा। लेकिन जब राजनीतिक पुलिस ने उस खत को देखा, तो वे आग-बबूला हो गये। दूसरे दिन ही फ्रा क्राइगर को भी गिरफ्तार कर लिया गया। बेहतर होता कि वह प्रेसीडेंट हिंडनबर्ग से इस बात की अपील ही न करती।

इन पति-पत्नी की गिरफ्तारी के जो कारण जातीय-समाजवादियों ने बताये थे, वे बिल्कुल जासूसी कहानी के समान मालूम होते थे।

पोहनर जो कि पहिले म्यूनिच में पुलिस प्रेसीडेंट था और जो १० साल पहिले घोषित जातीय-समाजवादी था और यदि वह आज जीवित होता तो शायद इस पार्टी का नेता होता, क्राइगर का परम मित्र था। क्राइगर बहुधा पुलिस प्रेसीडेंट से उसके दफ्तर में मिलने जाया करता था और दोनों की स्त्रियों में भी फ्रॉ पोहनर और फ्रॉ क्राइगर में भी घनिष्ठता थी।

एक दिन इतवार को क्राइगर ने पोहनर और उसकी स्त्री को अपनी मोटर पर हवाखोरी करने के लिए निमन्त्रण दिया। पोहनर ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया, और पार्टी आनन्द से बवेरिया के गाँवों में घूमने चल दिए।

अचानक मोटर गाड़ी का एक पहिया बाहर निकल पड़ा। ब्रेक भी खराब हो गए और उन्होंने समय पर काम न दिया। दुर्घटना से बचने का कोई उपाय ही न था। मोटर उलट गई और सवारी एक खाई मे जा गिरी। पोहनर के इतनी सख्त चोट लगी कि वह कुछ ही दिनो मे मर गया। क्राइगर का सिर फट गया, मगर दोनों औरते और मोटर ड्राइवर बच गए।

यह दुर्घटना बहुत साल पहले हुई थी।

बाद को मालूम हुआ कि पहिए मे का एक पेच ग़ायब था। मोटर ड्राइवर को इस बेपरवाही के लिए कुछ हफ़्तों के लिए जेल भेज दिया गया।

फ्रॉ पोहनर ने यह घोषित किया कि उसके पति की मृत्यु का कारण क्राइगर ही है। अगर क्राइगर ने उसके पति को निमंत्रण न दिया होता तो यह अकस्मात् मृत्यु न होती और वह आज भी जिन्दा होता। उसने यह खुलेआम घोषित किया कि क्राइगर ने जान-बूझ कर उसको मार डाला है। उसके पति को मारने के लिए यह सब ढोंग पहले ही से रच लिया गया था। यही बाते कुछ साल पहिले अखबार मे भी छपी थी। जासूसी तरीके से मामले की दोबारा खोज की गई और क्राइगर निरपराध सिद्ध हुए।

सालो गुजर गए। यह मामला भी स्मृति-पट पर धुँधला पड़ गया। जब कि जातीय-समाजवादियो के हाथ में शासन की बाग़डोर आई तो क्राइगर को गिरफ़ार कर लिया गया।

राजनीतिक पुलिस ने इस मामले की फिर जाच करना आरम्भ किया। सब कागजात दफ़र से फिर मँगाए गये और उनको फिर देखा गया।

इन दिनो क्राइगर, उसकी स्त्री और ड्राइवर को हवालात में रक्खा गया। जिससे कि वे कानूनी तरीकों से अपने बचाव का प्रयत्न कर

सके। उनको वकील करने की भी आज्ञा नही मिली और न उनकी कोई बात ही नही सुनी गई।

२४ अप्रैल

सुबह भर वे व्यायाम के समय की बाट देखते रहे। उनके उदासीन जीवन मे यही एक परिवर्तन था। इस समय वे अपने कमरे के साथियों के साथ इधर उधर घूमकर बात-चीत कर सकते थे।

काउट स्ट्राकविज व्यायाम के समय को "दोपहर का शेयर बाजार" कह कर पुकाराता था।

स्टीफैन सोचता था कि यह नाम बिल्कुल ठीक है और दृश्य भी शेयर बाजार से बिल्कुल मिलता जुलता है। अन्तर केवल यही है कि कैदी शेयर का व्यापार नहीं करते। उनका व्यापार समाचारों का है। जब अच्छी २ खबरे होती हैं तो बाजार चढ जाता है, और जब खराब खबर होती है, तो बाजार भाव गिर जाता है। ये भाव मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखते हैं। वे कैदियो जल्दी छूटने की आशाए हैं।

एक कैदी को पत्र मिला जिसमे लिखा हुआ था—

"मैने राजनीतिक पुलिस के अध्यक्ष से बाते की है। उसने जल्दी से जल्दी मामले की जाच करने का वायदा कर लिया है।" इस खबर से बाजार मे सनसनी फैल गई। सब कैदी खुशी से पागल हो गये और स्वतत्रता का स्वप्न देखने लगे, अगर उनमे से कोई एक आदमी छूट जावे, तो सब को आशा होने लगती कि अब शायद उनकी रिहाई का नम्बर आये—सब अपने को आजाद समझने लगते थे।

परन्तु जब कभी वे गोरिंग का व्याख्यान राज्य के शत्रुओ के खिलाफ पढते, तो उन पर निराशा छा जाती—बाजार-भाव जमीन चाटने लगता।

दोपहर का शेयर मार्केट ही सब कैदियो के स्वभाव को निर्धारित

जो कि रूसी साम्यवादी दल का मेम्बर था और दूसरा उसका वीगसेक नामक रूसी-जर्मन ड्राइवर। वह गाड़ी, जिसमे कि बहुत-सा सन्देह युक्त सामान था, म्यूनिच को जा रही थी और बीच मे ही रोक दी गई। वह चासलर को मारने का षड़यन्त्र था। वह भारतीय ४० साल का है और देखने मे राक्षस के माफिक लम्बा-चौड़ा है। वह और उसका साथी गाडी सहित म्यूनिच को पुलिस के पहरे में पिछले इतवार को भेज दिये गये।"

वीगसेक ने लेख को कई बार पढ़ा। उसने अविश्वास-सूचक अपना सिर हिलाया। वह इस संवाद को समझ न सका।

"मैं अपनी मोटर को मीरन से जर्मनी ले जा रहा था" उसने स्टीफैन से कहा, "मेरा इरादा अपनी दोनो लड़कियों को बोर्डिंग हाउस मे दाखिल कराने का था। मेरे साथ मेरी स्त्री औ बच्चे थे और मेरा एक जान-पहिचान का टैगोर नामक मित्र, जो सुप्रसिद्ध भारतीय कवि टैगोर का भतीजा है, भी था। जब हम जर्मनी की सीमा पर पहुँचे, तब हमको गिरफ़ार कर लिया गया।"

वीगसेक ने एक ठंडी सास ली।

"मेरी स्त्री और मेरे दो बच्चों को रेल से म्यूनिच जाना पड़ा। टैगोर को और मुझको पुलिस स्टेशन कार मे ले जाया गया। मोटर मे नात्सी सिपाही हमारी निगरानी के लिए साथ मे थे।

"लेकिन अखबारो मे यह कैसे लिखा है कि तुमने हिटलर को मारने का षड़यंत्र रचा है?" स्टीफैन ने उससे पूछा।

"मुझे कुछ नहीं मालूम! अपने जीवन भर में राजनीति मे मैंने तनिक भी भाग नहीं लिया। मैं मीरन मे रहता हूँ और बहुत दिनो से जर्मनी नही आया। टैगोर सिर्फ जर्मनी के हाल-चाल देखने चला आया था.... बेचारे की इच्छा पूरी हो गई!" वीगसेक ने खेद पूर्ण सूखी हँसी के साथ अपनी बात खतम की।

फर्म का एक नात्सी कमिश्नर बना दिया गया था। अपनी मासिक तनख्वाह दो हजार मार्क्स तै की है।

और नात्सियो का घोषित उद्देश्य क्या है ?

"राष्ट्र का हित व्यक्ति के हित से अधिक महत्व पूर्ण है !"

× × × ×

३९ नम्बर का नया कैदी बिल्कुल चुप था। वह व्यायाम के समय बरामदे मे अकेला ही घूमता रहता था। वह बिल्कुल क्षोभित, असहाय और निराश था।

स्टीफैन उसके पास गया और बोला "क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ ?"

उसने उसे अपना नाम बतलाया, "वीगसेक"।

"तब तुम्ही वह आदमी हो जो हिटलर पर हमला करना चाहता था ?"

वीगसेक ने उसे बडे आश्चर्य से देखा। वह उसकी बातो का मतलब नही समझा।

"टेलीग्राम जीटग नामक अखबार को पढ़ कर तुम्हे सब बातो का पता चल जावेगा।" स्टीफैन ने उससे कहा।

वह कल का अखबार अपने कमरे से लाया और उसे वीगसेक को दिखलाया। सीधे सफे पर लिखा हुआ था।

"हिटलर को मारने का षड़यंत्र"

म्यूनिच, २५ अप्रैल। खबर मिली है कि हिटलर को मारने का षणयत्र रचा जा रहा है। जासूसी खबर मिलने पर एक प्राइवेट मोटर जिसमे इटली का झडा था और इटली का ही मोटर-नम्बर था, पिछले इतवार को रिमस्टिग नामक स्थान पर रोक दी गई। गाड़ी मे बैठे हुए व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गये। उनमे एक टैगोर नामक भारतीय था

वह अपने आप से बाते करने लगा। उसे अपनी आवाज किसी दूसरे की सी प्रतीत होने लगी। उसे मालूम पडा कि यह शब्द कही दूर से आ रहा हैं।

"जो कुछ मैंने इस जेल मे सुना, देखा और अनुभव किया है और जो सुनूगा, देखूगा और अनुभव करूँगा, वह मै सब लिखूँगा। मै ससार को बताऊँगा कि जर्मनी का नात्सीदल उससे क्या छिपा रहा है।"

कहते-कहते वह चुप हो गया। उसे चारो ओर की शाति बहुत गहरी प्रतीत हुई। अपने दोनो हाथो मे उसने अपना सिर छिपा लिया। उसकी कनपटी उबल रही थी। उसके विचार उल्टे-सीधे थे।

लेकिन क्या वह सचमुच लिखे? क्या वह डायरी रखने की जोखिम मोल ले? यदि पुलिस को डायरी मिल गई तब उसका अवश्य ही खात्मा हो जायगा। फिर उसको मृत्यु के मुख से कोई नहीं बचा सकता!

पर उसकी अतरात्मा ने कहा, "नही, अवश्य लिखो।" उसने डायरी लिखने का प्रण कर लिया। उसने सोच लिया कि रिहाई के समय वह जेल से डायरी को छिपा कर ले जायगा। वह ससार को बतलायेगा कि जर्मनी के अदर क्या हो रहा है। शायद तब वे लोग जो आज जर्मनी के अत्याचार सुनने के लिये बहरे बन गये हैं, सुने। शायद तब अत्याचार के शिकार अपनी आवाजे बुलद पाये। शायद तब वे लोग जो चुपचाप बैठे हैं इस अमानुषिकता के विरुद्ध अस्त्र-शस्त्र उठायें। और शायद तब वे दस हजार निरपराध व्यक्ति जो आज जर्मनी के राजनीतिक जेलों मे पडे सड़ रहे हैं अपना छुटकारा पा जायँ!

वह दृढ़ता पूर्वक बैठ गया। उसने दीवाल के सहारे कागज रक्खा और उस पर पेंसिल से लिखने लगा—

"टैगोर कहाँ है ?" स्टीफैन ने पूछा।

"तीसरी मजिल मे" वीगसेक ने जवाब दिया।

"और तुम्हारे बीवी-बच्चे ?"

"मैं नही जानता . ।"

वीगसेक चुप हो गया। उसके मुख पर उदासीनता छा गई। वह निराशा से अपने हाथ मल रहा था। उसकी अश्रु-धारा बहने ही वाली थी।

स्टीफैन ने उसको एक किताब दी ताकि वह पढ़ कर कुछ समय काट सके। यह मुसोलिनी की जीवनी थी। वीगसेक ने स्टीफैन को धन्यवाद दिया। इस पुस्तक के साथ होने से उसका कोठरी के एकाकीपन का भय कम हो गया।

२७ अप्रैल

हिटलर को मारने के षड़यत्र वाले मामले की कार्रवाई खूब तेजी से चल रही थी। विस्मयपूर्ण जल्दी हो रही थी। बेशक विलायत की सरकार ने टैगोर की तरफ से और इटली की सरकार ने वीगसेक की तरफ से जर्मन सरकार से इस व्यवहार का जवाब माँगा था। नही तो राजनीतिक सरकार को इतनी जल्दी कभी भी न पडती।

कल शाम को स्टीफ़ैन के कमरे का दरवाजा खोला गया। वार्डर ने वीगसेक के कमरे का भी ताला खोल दिया था ताकि वह स्टीफैन की किताब उसे वापिस लौटा दे क्यो कि वह रिहा होने वाला था। वीगसेक के चेहरे पर आशा की झलक स्पष्ट दीख पडती थी। उसने भारी हृदय से बिदा ली।

आज म्यूनिच के समाचार-पत्रों मे निम्नलिखित सक्षिप्त घोषणा प्रकाशित हुई।

"म्युनिच पुलिस का कहना है". कि जो रिपोर्ट कुछ अखबारो मे एक भारतीय और उसके साथी की गिरफ्तारी के विषय मे छपी

तक परिश्रम किया था और मेरे बाबा ६२ साल की उम्र तक काम में चपल थे।"

डा० मासूर धीरे-धीरे बरामदे मे टहल रहा था। वह समय-समय पर रुक जाता था। वृद्धावस्था ने उसे थका दिया था। दूसरे साथी उसके साथ टहलना पसद नही करते। थोडे से समय मे जितना अधिक अपने हाथ-पैर फैला सके उतना ही अच्छा। फिर कोठरी के तग स्थान मे ठूॅस दिये जायॅगे। मासूर के साथ टहलना घोघे के साथ रेगना था, इसलिए वे लोग बारी २ से उसकी सगत मे रहते। आज स्टीफैन की बारी थी। उसने आज का सारा व्यायाम का समय डाक्टर के साथ बिता दिया। थोडी देर के बाद डा० मासूर रुका। वह बरामदे की खिड़की के पास खड़ा हो गया। वह पत्थर पर झुका, अपने सिर को छड़ो के बीच मे रक्खा और धूप खाने लगा। सूरज तेजी पर था। यह वास्तव मे ईश्वरीय देन थी—उस अधेरी कोठरी मे रहने के बाद।

वे दोनों आध घटे तक चुपचाप धूप खाते हुए चुपचाप खडे रहे। डाक्टर के हाथ खिडकी की तीलियो को पकडे हुए थे।

स्टीफैन ने उसके हाथो को देखा। वे उसके पेशे मे किये गये परिश्रम और शुभ काम के स्पष्ट प्रमाण थे। उन हाथो ने कितने रोगियो को अच्छा किया होगा, कितने मरते हुओ को बचाया होगा। स्टीफैन ने अपने दिमाग मे इस प्रकार से उन दो सुन्दर हाथो का चित्र चित्रण किया जब कि वे तीलियों को पकडे हुए थे। उनको देख कर हिटलर का अन्याय दूना दुखदाई मालूम होने लगता था।

स्टीफैन मासूर की कलाई पर एक नये घाव का चिन्ह देखा। उसने उस चिन्ह की ओर इशारा करते हुए कहा —

"ऐसा मालूम होता है कि आपने अपनी रगे खोलनी की कोशिश की थी।"

डाक्टर उदास हो गया। वह बोला—"इस विषय की चर्चा मत करो—मैं तुमसे प्रार्थना करता हूॅ, विनय करता हूॅ।"

थी, उसके बारे में अब यह घोषणा की जाती है कि चांसलर के मार डालने का शक निर्मूल था। पुलिस की जांच-पड़ताल से यह सिद्ध हो गया है कि उन लोगों की यात्रा बिल्कुल प्राइवेट और निर्दोष थी।"

× × × ×

जब वार्डर सुबह को हमें पानी भरने के लिये बाहर निकलता है तो सबसे पहले डाक्टर मामूर नल पर पहुंच जाता था और बड़ी होशियारी से अपनी पोशाक पहनता था। उसका सूट बिल्कुल बेदाग था और उसका कॉलर बिल्कुल साफ था मानो वह अभी से धुलकर आया हो। वह अपने काम का बड़ा पाबन्द था। जब वह अपने कमरे में होता था तो कॉलर को साफ रखने के लिये उस पर कागज लपेट देता था। जब सब कोई मजाक बनाते तो वह कहता "तुमको आज कल मितव्ययी बनाना चाहिए। यहाँ तक कि कालर्स की भी परवा करनी चाहिए।"

पहले-पहिल वह जेल में आने से बहुत खुश हुआ। क्योंकि वह इतने प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ ताले में बन्द था। "मेरे घर वाले मित्र सुनकर खुश होंगे कि मैं कैसे-कैसे नामी सज्जनों से मिलता जुलता हूँ।" डाक्टर उस छोटे नगर से आता है जहाँ के लोग ऐसी बातों को बहुत बड़ा मानते हैं।

लेकिन अब वह इस जीवन से घबरा गया था। अब उसको प्रकाश में रहने की इच्छा थी। वह अपनी तीस साल की पुरानी डाक्टरी का काम फिर करना चाहता था और अपने घर जाना चाहता था।

उसने व्यायाम के समय एक साथी से उदासीन भाव से कहा, "मुझे अभी अपने जीवन के कर्तव्य का पालन करना है। मैं अभी शान्तिपूर्वक कुछ वर्ष और काम करता रहूँगा। मैं जानता हूँ कि मैं इस समय ६५ साल का हूँ; लेकिन मेरे पिता ने ८० साल की अवस्था

लाया गया। फिर उसको पीटा गया, और फिर उसे वापस कोठरी मे बंदकर दिया गया। एक घटे बाद फिर वह निकाल कर लाया गया, पीटा गया । और वे फिर उसको वापस ले गए । इसी तरह तमाम दिन उस अशक्त बृद्ध पर मार पडी। हरेक घटे के बाद सिपाही डाक्टर को मेज पर पटक देते थे। और उसे निर्दयता से पीटते थे। डा० मासूर के तमाम बदन पर खून ही खून झलकने लगा था। जख्मो का दर्द असहनीय होता गया। दोबारा पिटने का डर उसे और भी दुखदायी था। ५६ मिनट तक वह पिटने के भय मे कापता रहता, ५६ मिनट तक वह व्यथा की टीस से घबडाता रहता। फिर एक मिनट होता असहनीय शारीरिक कष्ट का। सन्ध्या होते-होते उसके मस्तिष्क मे उन्मादता के चिन्ह दीख पडने लगे। उसने उन्मत्त होकर अपनी रग चाकू से काट डाली।

जब कि सिपाही उसे फिर पीटने के लिए लेने आये, तो उन्होने अपने शिकार को बेहोश जमीन पर पडा पाया।

डा० मासूर को अस्पताल ले जाया गया। थोडे दिन के बाद उसके होश-हवाश दुरुस्त हुये। उसकी जिन्दगी बच गई थी।

अस्पताल का प्रमुख सर्जन के जो कि डा० मासूर को बहुत दिनों से जानता था, उसको अफसरो के कमरो मे रखा। उसने जातीय समाज वादियो से उसके छुटकारे की जोरदार अपील की और रक्षित कैद से मुक्ति पाने मे उसे सफलता हुई।

थोडे दिनों के बाद डा० मासूर ने अस्पताल छोड दिया। वह म्यूनिच गया। वह कोवर्ग मे रहने मे अब घबराता था। परन्तु बद-किस्मती ने म्यूनिच मे भी उसका पीछा न छोड़ा। ज्यादा समय नहीं हुआ था कि उसको फिर गिरफ्तार कर लिया गया। तभी से वह यहाँ पर पुलिस जेल मे था।

डाक्टर ने ऐसा कौन सा घोर अपराध किया था जिसके लिये उसको

उसका तमाम शरीर काँप रहा था।

"ईश्वर के वास्ते, बतलाओ तो क्या बात है?", मैंने व्यग्र हो कर पूछा। "मेरा मतलब तुमको कोई नुकसान पहुँचाने का नहीं है। मैंने सिर्फ़ अपने विचार प्रकट किए थे! कृपा करके दुखी न होइय।"

उसने उत्तेजित होकर जवाब दिया, "तुमने जो कुछ कहा सब ठीक है! सब ठीक है!!"

बहुत देर तक दोनों खामोश रहे। तब अचानक ही डाक्टर ने कहा :—

"तुमने बिल्कुल ठीक सोचा। मैं कमजोर था......और अधिक सहन न कर सका '' 'मैंने अपनी रग खोल डाली।"

"जब तुम जेल मे थे उस समय?"

डाक्टर ने सम्मति सूचक सिर हिलाया।

"क्या तुम्हारे साथ इतना दुर्व्यवहार किया गया था? क्या तुम पीटे गये थे?"

लेकिन मासूर ने जोरदार शब्दों मे इस बात का इन्कार किया, "नहीं, मेरे साथ अच्छा वर्ताव किया गया था, मैं पीटा नही गया था''' मैं पीटा नहीं गया था।"

स्पष्टतया बुड्ढा डाक्टर सच-सच बाते नही बता रहा था। वह अपनी इन गुप्त बातो को किसी को बतलाना नही चाहता था। स्टीफैन दूसरे क्वाटर से यह सुन चुका था कि डा० मासूर को नात्सी सिपाहियों ने मारते मारते अधमरा कर दिया था।

उसकी व्यथा पूर्ण कहानी बहुत दर्दनाक है। डा० मासूर को सिपाहियों के बैरक तक उसके घर कोबर्ग से घसीट कर लाया गया था। बैरक में वह ६५ साल का वृद्ध डाक्टर मेज पर डाल दिया गया और नौजवान सिपाहियों ने अपने रबड के कोडों से उसको पीटा। तब उसको वहाँ से लेजाकर ताले में बन्द कर दिया। एक घटे के बाद फिर बाहर

वर्णन करेगा जिससे अमेरिका वालों को वहाँ की हालात का ज्ञान प्राप्त हो। उसका कहना था :—"मैं आज भी जर्मनी मे उसी प्रकार की शान्ति पाता हूँ जैसे कि भूतकाल में रहो है। मैं लोगों मे नई जागृति पाता हूँ और वे पहिले से अधिक प्रसन्नचित्त, और अधिक उत्साही और साहसी मालूम होते हैं।"

जिसको कि डा० मासूर की दुखभरी कथा अच्छी तरह प्रमाणित करती है।

२९ अप्रैल

व्यायाम के समय म्यूनिच का प्रसिद्ध वकील डा० स्ट्रास अचानक ऊपर दिखाई पडा। उसकी कोठरी स्टीफैन के नीचे तीसरी मंजिल पर थी। वह ऊपर कुछ रोटिया सेविका से लेने आया था। फ्राइडमान भी उसी के पीछे-पीछे आ रहा था। दोनो का खूब स्वागत किया गया। डा० स्ट्रास ने कहा :—

"मैं नहीं समझ सकता कि वे मुझे रिहा क्यो नही करते?"

' और हम भी अभी तक यही हैं।"

"हाँ, लेकिन तुम लोग अखबार वाले हो। वे तुम लोगों से डरते हैं। लेकिन उनको मुझसे तो डरने की कोई जरूरत नहीं। मैं तो सिर्फ एक वकील हूँ।"

उन लोगो ने उसका मजाक बनाना चाहा :—"अच्छा, तुमने जरूर कुछ न कुछ करतूत की होगी, वरना तुम आज यहाँ न होते।"

वह हँसा।

"फ्रैंक, जो कि आज कल न्याय मंत्री है, अक्सर कचहरी मे मेरे खिलाफ वकील होता था, परन्तु केवल उसी कारण वे मुझे यहाँ बन्द नहीं कर सकते।"

वैरन आरटिन ने क्रोध मे भर कर फ्राइडमैन और स्ट्रैस से चिल्ला

इतना अधिक शारीरिक दण्ड और कारावास मिला ? क्या उसने राष्ट्र के खिलाफ क्रान्ति की थी ? क्या वह राजनीति में फस गया था ? क्या वह एक साम्यवादी था ? क्या वह एक घोर अपराध का भागी था ? उसने जरूर कुछ न कुछ बुरा किया होगा।

वह केवल एक नात्सी को पेन्शन कटवाने का दोषी था !

बहुत साल हुए डा० मासूर को कोबर्ग के पुराने सिपाहियों की डाक्टरी करने की आज्ञा मिली। गवर्नमेंट अयोग्य सिपाहियों की पेन्शन काट रही थी और डाक्टर को हां कहने वाली पेन्शन का तखमीना लगाना था। एक आदमी जिसकी डा० मासूर ने पेन्शन कटवाई थी इस बात को कभी नहीं भूला। उसने बदला लेने की कसम खा ली थी। और जब नात्सी सरकार आई तो उसने डाक्टर को गिरफ्तार करा दिया। उसी के हुक्म से डाक्टर के हरेक घंटे के बाद कोड़े लगवाये जाते थे।

बाद में जब डा० मासूर की आत्म-हत्या की चर्चा फैलने लगी और कोबर्ग में घर-घर उसका जिक्र होने लगा, और उसकी दर्दनाक कहानी ने स्वस्तिका के भक्तों में असंतोष फैलाना शुरू कर दिया, तब डा० मासूर का शत्रु विकल हो उठा। वह म्यूनिच की राजनीतिक पुलिस से मिला और डा० मासूर को दोबारा गिरफ्तार कराने का ढोंग रचा। वह डाक्टर का कोबर्ग में आना रोकना चाहता था जिससे कि उसकी कष्ट-प्रद कथा को कोई वहां न जान पावे। वह अपने उद्देश्य में सफल हुआ !

यह यहूदी डाक्टर दोबारा म्यूनिच की जेल में बन्द कर दिया गया। उसकी उपस्थिति अब कोबर्ग की जनता को उसकी कष्ट-प्रद कहानी की याद नहीं दिला सकती।

× × × ×

आज के अखबार में स्टीफैन ने पढ़ा कि डगलस ब्रिकले, जो कि न्यूयार्क ब्राड कास्टिंग स्टेशन का वक्ता है, जर्मनी की दशा का

पहले मैं तुमको एक खेल मे ले जाऊँगा और बेहतर यह होगा, हम चले और लूमाइन वौयर को देखे।"

"अच्छा, हम लोग भी वहाँ चलेगे ।" सब ने कहा—

"और खतम करने के लिए", क्राइगर ने चिल्लाकर कहा—

"हम माटमार्ट्री तक चलेगे और फिर वहाँ से सीधे पेरिस चलेगे।"

"अहा ! पेरिस, पेरिस... ।"

"और इतवार को हम वर्साइल को चलेगे" स्टीफैन ने स्वप्न सा देखते हुए कहा।

'हम आजादी के नाम पर मस्त हे और कल स्वतन्त्रतापूर्वक मजे लूटने का स्वप्न देख रहे हे।" क्राइगर ने अपनी मुट्ठी को मेज पर मारते हुए कहा, "लेकिन कल हम यही बैठे हुए होगे। बिल्कुल ठीक ऐसे ही जैसे कि आज यहाँ है—कमरे न० ८७ मे नर्क, और अनन्त यातना।"

क्राइगर बकता रहा। सब लोग चुपचाप बैठे रहे और उसका जी भरकर कोसना सुनते रहे।

काफी देर हो गई थी। बिजली जल्दी ही बुझा दी जावेगी। अगर व सोने की तैयारी अभी नहीं करते तो जब दस बजे वार्डर आकर बिजली बुझा देगा तो सबको अंधेरे मे ही कपडे उतारने पडे गे।

उन्होने जल्दी से जाकर पायजामा और जूतो को उतारा। उन सब के शरीर म जान सी मालूम होती थी और वे विद्यार्थी जीवन के राग अलाप रहे थे ।

गाढे गोंद से क्राइगर ने मार्लीन डाइट्रिच की उन तसवीरों को दीवाल पर चिपका दिया था जो कि उसने पत्रिकाओ मे से काटी थीं। वे स्ट्राकब्रिज की चारपाई के ठीक ऊपर लगाई गई थी। मार्लीन उनकी "प्रेमिका" थी। वे लगभग तमाम दिन उसी के बारे मे बात करते हुए गुजारते थे।

कर बोला "किस कम्बख्ती के मारे तुम यहाँ भाग आये ? भागो यहाँ से, नही तो सबकी मरम्मत कराओगे।"

आरटिन का यह ख्याल था कि ये दो आदमी चुपके से तीसरी मंजिल से बिना किसी की इजाजत से वहाँ खिसक आए थे।

फ्राइडमान ने हकलाते हुए कहा :—

"हम वार्डर की आज्ञा से यहाँ आए हैं। हमने उससे पूछ लिया था।"

डा० स्ट्रास ने रोटियाँ ली और चल दिया।

"मेरा ऐसा ख्याल है कि मैं इस सप्ताह मे छूट जाऊँगा उसने जाते हुए कहा "तब मैं तुम लोगों को जल्दी से जल्दी छुड़ाने के लिए जो कुछ कर सकता हूँ जरूर करूंगा।"

३० अप्रैल

क्राइगर ने मदिराघर से एक बोतल शराब आज मगवाई। काउट ने भी एक बोतल मँगाई थी। शराब ज्यादा अच्छी नही थी—यह पतली और पानीदार थी। परन्तु इसका जायका खराब नही था। दूसरा गिलास पीने के बाद दुनिया निराली मालूम होने लगती थी।

कैदी मेज के चारो तरफ बैठे थे और मन मौजी गप्पे लड़ा रहे थे। मालूम पड़ता था कि वे जेल मे नही थे।

"अच्छा मुझे कहना पड़ेगा", काउट स्ट्राकविज ने कहा, "कि यहाँ की शराब अच्छी नही है। लेकिन मैं एक छोटी जगह जानता हूँ......जहाँ पर शराब है.. .. शराब......और वह बहुत ही उम्दा है।".. ...

"वह छोटी जगह जिसके बारे मे मैं तुमसे कह रहा था यह मान्ट-पार्नासी मे है . .. यह उस सुन्दर रेस्टोरॉ का ज़िक्र ह जो कि पेरिस मे हैं......अनेकों लड़कियां......चलो कल वहाँ चलें......लेकिन

उन सभी बातो को विचारते हैं जिनसे कि बाहरी दुनिया आनन्दित है।

बरामदे मे वार्डर के आने की पैरों की आहट हुई। वह कभी गुप्त सुराखो से झाकता है, कभो तालों को झटकता कि कही खुले न हों या खुल न जावे। वह रोशनी इधर उधर डालकर देखता है।

उसने बिजली बुझा दी। कमरे मे अधकार का राज्य हो गया। कैदियों के पास सोने के वक्त उनके हृदय का ही प्रकाश है जिसकी सहायता से वे अपने स्वप्न देखते हैं।

"प्यारी—नमस्ते ! ‥ ‥तुमसे पेरिस मे मिलेंगे।"

१ मई

आज छः बजे कैदियो को जगाया गया। वार्डर दरवाजे से चिल्लाया।

"उठो, तुम बन्धन से मुक्त हुये।"

सब गोली की तरह कूद पड़े।

"क्या' ' कैसे ‥आपका क्या मतलब है ?"

"देखो, आज पहली मई है। बहुत से कैदी आज छोडे जा रहे हैं", उसने कहा। कैदियो को उनकी आशा-वृत्ति पर छोड़कर वह चला गया।

सब ने जल्दी से कपडे पहिने। शायद वार्डर का कहना ठीक ही हो। शायद वे असल में छूटने ही वाले हो।

दो दिन पहिले वैग्नर मन्त्री ने डाइट मे यह घोषणा की थी कि जातीय-श्रमी-दिवस के उपलक्ष मे बवेरिया मे दो हजार कैदी बन्धन से मुक्त किए जावेगे।

शायद, कैदियो ने सोचा, वे भी उन दो हजार मे शामिल हो।

प्रात:काल बिना किसी घटना के व्यतीत हो गया। कोई भी नई बात नही हुई। सिवाय इसके कि ३७ नम्बर का कैदी म्यूकनर पोस्ट नामक पत्र का सहकारी सम्पादक छोड़ दिया गया।

काउट ने कहा, "अच्छा प्यारी कहो क्या कहती हो !" हम कल वाइस जा रहे है। क्या तुम मेरे साथ आओगी ?"

"जरूर, यह छोटा जानवर जरूर साथ जायगा," क्राइगर ने कहा :—

"प्यारी, उस गॅवार की बातो पर ध्यान मत दो," स्टीफैन ने माफी मागते हुए कहा, "वह पिए हुए है। और उसे इस बात का पता भी नही है कि वह किसकी बाबत क्या बात कर रहा है।"

मार्लीन की निगाह उन सब की ठट्ठा उड़ाती हुई मालूम होती थी।

काउट ने उस तसवीर की ओर देख कर कहा :—

"हॉ प्यारी, इस समय तुम शाम को खाना खा रही होगी। तुम सफेद चीनी की तश्तरियो मे खा रही होगी और कॉच के साफ गिलास मे पी रही होगी। तुम्हारे पास ऐसे टीन के मैले कुचैले प्याले नही हैं जैसे कि हमारे पास हैं। जो तुम्हारे साथ आदमी है वे वेदाग शाम की पोशाक मे है और जब वे सोते हैं तो हमारी तरह से पुराना कम्बल नही ओढते।"

क्राइगर ने विनीत स्वर से पूछा :—

"तुम यहाँ हम लोगो को देखने के वास्ते कभी कभी-क्यो नहीं आती ? अगर आया करो तो बड़ी मेहरबानी हो।"

"लेकिन आते समय अपने साथ एक साफ तकिया लाना मत भूलना", स्ट्राकविज ने कहा।

फिर उसने तसवीर को झुक कर सलाम किया और कहा :—

"मेरी प्यारी, नाराज मत होना। जेल ने इस गरीब के दिमाग़ को बदल दिया है।"

यही खेल खिलवाडिया है जिनसे कि कैदी अपने सख्त पलगो पर भी हसने रहने हैं। वे कभी पेरिस के बारे मे सोचते है, कभी आजादी की छलागे भरते है, कभी युवतियो के स्वप्न देखते है और लगभग

सब ने दिन भर अपना दरवाजा खुलने का इन्तजार किया लेकिन व्यर्थ ! वार्डर लोग १ मई के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए चले गये थे। छुट्टी में काम करने वाले कार्यकर्ता जेल में काम कर रहे थे। उनको पहिले की तरह व्यायाम के लिए बाहर नही निकाला गया।

शाम को बहुत रात गए वार्डर लोग उत्सव को समाप्त करके आये।

"तुमने कभी ऐसा उत्सव नही देखा होगा", उन्होने बडे उल्लास से कहा। "बड़ा ही शानदार था। तमाम शहर मे लोगो की धकापेल मी·· ·· हर जगह सजावट······फूल और फूलमाला। झंडिया भी असंख्यो थी ······वास्तव में यह एक अनोखा दिन था।"

२ मई

अब तक क्राइगर अपनी स्त्री को पत्र लिख सकता था। उसकी स्त्री औरतो वाली जेल के कमरे में बन्द थी। आज यह क्रम भी बन्द कर दिया गया। भविष्य में कैदी आपस मे लिखा पढ़ी नही कर सकते थे। .. . जब कि क्राइगर ने यह समाचार सुना तो वह पागल आदमी की तरह बकने लगा। उसने अपने आपको अपनी चारपाई पर पटक दिया और क्रोध में लाल हो गया।

वह हजलर पर झल्लाया कि उसने आकर राजनीतिक आफिस की इस आज्ञा को क्यो सुनाया।

"यह अन्याय है, मै कहता हूँ, यह अन्याय है।......मान लो कि मेरी स्त्री को कुछ हो जावे......तो मुझे उस बात का पता भी न चलेगा.... वह कत्ल की जा सकती है......और मुझे इस बात का पता भी न चले।" क्राइगर सिसकियाँ भरने लगा, वह बोला, "उनको एक जर्मन अफ़सर के साथ ऐसा करने का कोई अधिकार नही हैं।"

"मैं ये पक्तियाँ म्यूनिक के पुलिस जेल की २४ नम्बर की कोठरी से लिख रहा हूँ। अपनी कैद के बाद मैं जिन कोठरियो मे रक्खा गया हूँ, उनमे से यह तीसरी कोठरी है। यह कोठरी छोटी, गदी और अधेरी है। मेरे पास न तो मेज है और न कुर्सी। वहाँ की दीवाले गदी हैं। छत के पास वाली छोटी-सी खिड़की जमाने से साफ नही हुई। गंदी दीवाल पर धूल की एक मोटी तह बिछी हुई है। उस पर किसी पहले कैदी ने उँगली से लिख दिया है, "हिटलर की जय!" उसकी सामने वाली दीवाल पर किसी समष्टिवादी कैदी ने लाल पेसिल से कम्यूनिस्ट इन्टरनैशनल का पूरा गाना लिख दिया है।

"इस कोठरी मे पहले नात्सी और समष्टिवादी रहते थे। अब मैने उनका स्थान ले लिया है। अब मै यहाँ वद हूँ, मैं जिसने कि राज-नीति मे आज तक कोई भाग नही लिया!"

"मैं यहाँ राजनीतिक कारणो से गिरफ्तार हूँ। मुझे अन्य दस हजार व्यक्तियो की तरह ब्वेरियन पुलिस ने कैद कर रक्खा है।"

"जेल के बाहर एक नई जर्मनी की रचना हो रही है। लाखो जर्मन खुशियाँ मना रहे हैं। उनके लिये हर हिटलर "लज्जा और अपमान" से छुटकारा देने वाला है। उनके लिये जातीय समाजवाद अर्थात् नात्सीवाद का अर्थ स्वतत्रता है। लेकिन साधारण जन समूह का नशा जेल के दीवालों के अदर प्रवेश नहीं कर पाता। यहाँ न तो रोशनीदार जुलूस ही है और न फूलों की माला ही हैं। यहाँ नात्सियो का नगा चित्र दीख पड़ता है। यहाँ आपको उनकी अमानुषिकता, संकीर्णता और घृणा देखने को मिलेगी।

"मेरी कोठरी तीन कदम लम्बी है। स्थान सकीर्ण है। पर ख़ुद जर्मनी भी तो संकीर्ण हो गया है!"

× × × ×

परन्तु आज शाम को ४२ नम्बर का कमरा खाली था। वे दो फौजी सिपाही जिन्होने घर में से चीजें निकाली थीं अब छोड़ दिये गये।

नात्सी सिपाहियों को अपराध करने पर कचहरी में हाजिर नहीं किया जाता। वे राजनीतिक हवालात मे रखे जाते है। थोड़े दिनो के बाद वे छोड़ दिये जाते हैं। आखिर वे हिटलर के सैनिक हैं!

इसके प्रतिकूल लाखो बेगुनाह हफ्तो ताले मे बन्द पड़े रहते हैं। न उनकी कोई बात सुनी जाती है और न इसी बात का पता चलता है कि उनको कारागार में क्यो डाला गया है। उनकी कोई भी परवाह नही करना चाहता।

४ मई

न्यूरा (स्टीफैन की स्त्री) ने अपने बच्चे को बर्लिन मे उसके बाबा। दादी के पास भेजने के इरादा किया। उसके पास धन नही था और उसके पालन-पोषण का अन्य कोई उपाय भी वह नही जानती थी। सब धन-दौलत अब तक पुलिस की हिरासत मे पहुँच चुकी थी। कोई भी इस बात की परवाह नही करता था कि उसके बाल-बच्चे किस प्रकार से रहेगे।

न्यूरा ने ठीक ही सोचा था। म्यूनिच मे सिवाय प्रतिदिन नई आपत्ति के और कुछ भी नही था। कुछ दिन पहले उसने स्टीफैन को लिखा था कि ऐडी (उनके बच्चे) का पार्क मे दूसरे लड़को ने कैसा मजाक बनाया। उसके साथ खेलने वाले छोटे-छोटे बच्चो ने कहा, "हम तुम्हारे साथ नही खेलेगे क्योकि तुम्हारा बाप जेल मे है।" ऐडी ने जोर से चिल्ला कर कहा "यह सच नही है—मेरे पिता जेल मे नही बल्कि अपने दफ़्तर मे काम कर रहे हैं।"

लेकिन बच्चों ने इस बात पर कोई भी ध्यान नहीं दिया, "तुम एक छोटे समाजवादी हो" उन्होंने कहा, "और तुम्हारे बाप 'को फॉसी' दी जाने वाली है।"

३ मई

नाई जेल मे हफ्ते मे बुधवार और शनिवार को आता था। कैदियो की तभी हजामत बनती थी जब कि वे उसको हजामत के दाम दे। स्टीफैन कमरे के बाहर बैठ कर अपनी हजामत बनवाने लगा।

इसी समय एक इन्सपेक्टर, जो कि राजनीतिक महकमे का था, अपने साथ मे ४२ नम्बर के कमरे मे से एक फौजी सिपाही को लाया। वे बिल्कुल स्टीफैन के पास खडे हुए थे, इसलिए वह उनकी बातचीत को भली प्रकार सुन सकता था।

"जब घर की तलाशी ली गई थी उस समय तुम्हारे पास कौन था ?" इन्सपेक्टर ने पूछा।

उस नवयुवक ने एक नाम बताया।

"लेकिन तुमको लावेथल की धुकधुकी वापस लौटानी पडेगी", इन्सपेक्टर ने कोमल, मधुर शब्दो मे मित्र भाव से कहा :—

"और एक केमरा भी खोया हुआ है। वह भी तुम्हे लौटाना पडेगा।"

उस नौजवान ने केवल अपना सिर हिला दिया। उसकी अवस्था लगभग २० वर्ष की थी।

"अच्छा, हम वे दोनो चीजे वापिस कर देगे।"

"क्या तुम जानते हो वे चीजे कहाँ हैं ?"

नवयुवक ने कहा, "हाँ"

उसी समय स्टर्न, जो कि कट्टर नात्सी वार्डर था, वहाँ आया। उसने कुछ इन्सपेक्टर के कान मे कहा। फिर इन्सपेक्टर और वह नवयुवक दोनों सीढ़ियों पर चढकर ऊपर चले गये। अब स्टीफैन उनकी बात-चीत नही समझ सकता था।

वह बड़ा हो गया है। तीन महीने के बाद वह ३ साल का हो जावेगा।

वे दोनों धीरे-धीरे बातें करते रहे। न्यूरा बैंच पर बैठी रही और कुछ भी नहीं बोली।

स्टीफैन ने ऐडी से पूछा कि वह हर रोज शाम को भगवान का भजन करता है कि नहीं, क्योंकि वे दोनो साथ-साथ शाम को भगवान् का भजन किया करते थे। ऐडी ने जवाब दिया कि वह अपना भजन अब शाम को जरूर किया करेगा। परन्तु बिना स्टीफैन के साथ भजन का कोई सार नहीं निकलता क्योंकि ईश्वर उसकी प्रार्थना को नही सुनेगा। उसने कहा, "अगर तुम चाहते हो कि ईश्वर मेरी प्रार्थना सुने तो तुम घर चलो।"

इस बातचीत से दोनो इस्पैक्टरो के दिल पर चोट सी लगी।

"समय समाप्त हो गया।" एक निर्दय आवाज कानों में गूँज गई। ऐडी को स्टीफैन से अलग होना पड़ा। उसने जाते समय जेल के बरामदे मे से दोनो हाथ हिलाए। यही उनकी जुदाई थी।

क्या वह दोबारा ऐडी से इस जीवन मे मिल सकेगा? या यह अन्तिम समय उसने उसका प्यारा मुँह देखा था?

× × × ×

दोपहर को स्टीफैन को बुलवाया गया।

"स्टीफैन लॉरॉ। आज तुम्हारा बयान होगा," वार्डर ने कहा

पहले तो उसने समझा कि वह मजाक कर रहा है। उसकी सुनवाई? आठ सप्ताह के बाद अचानक ही?

एक पुलिसमैन उसे राजनीतिक पुलिस के दफ़्तर मे ले गया।

उसे पहली मन्ज़िल मे एक नौजवान मिला। उसने स्टीफैन से

जर्मनी मे तीन-तीन साल के बच्चो तक मे आपस मे यही बाते हुआ करती हैं। यह खेदजनक है कि जर्मनी वालो के स्वभाव इतने क्रूर होते जा रहे हैं। वे माता-पिता कैसे होंगे जो अपने बच्चों को ऐसी बाते सिखलाते हैं—इस सब के लिए उनके माता-पिता ही उत्तरदायी हैं जो कि अपने बच्चो के दिल मे घृणा का बीज बोते हैं।

स्टीफैन ने न्यूरा को लिखा था कि बच्चे के जाने के पहले वह उसे एक बार जेल मे ले आना चाहती है। ताकि वह उसे देख सके। इसके लिये वह आज्ञा प्राप्त करने की कोशिश करेगी।

राजनीतिक पुलिस के आदमी उदार थे। उन्होने न्यूरा को ऐडी को जेल मे ले जाने की आज्ञा दे दी।

वे सुबह आए।

जैसे ही स्टीफैन को जेल के मुलाकात करने वाले कमरे मे ले जाया गया, उसका दिल धक-धक करने लगा।

वहाँ पर ऐडी खडा हुआ था। उसने स्टीफैन को देखा। आठ सप्ताह के बाद मिलने पर उसका मुँह चमक उठा। वह हँसता हुआ स्टीफैन की गोद मे दौड़ कर आया। स्टीफैन ने उसको उठा लिया और प्रेम से उसका चुम्बन किया।

"पिता जी अब तक आप कहाँ थे ?" उसने पूछा।

वह इसका बच्चे को क्या जवाब देता। वह एक उचित बहाना खोजने लगा।

"मैं काम कर रहा था।"

"क्या तुम पढ रहे थे ?" ऐडी ने पूछा।

"हाँ, मैं पढ रहा था," स्टीफैन ने जवाब दिया।

"अब घर को चलो, तुम अब बहुत पढ़ चुके,"

स्टीफैन सोचने लगा कि ऐडी कितना भोला था। जब वह ... हुआ था उस समय ऐडी इतनी बाते नही कर सकता था। अब

"मैंने इस फ़िल्म का नाम तक भी नहीं सुना।"

वह नवयुवक अपने सामने रखे हुए कागज़ात के सफ़ो को पलटने लगा। उसने एक खत को बड़े ध्यान से पढ़ा। वह एक पीले क़ागज़ पर लिखा हुआ था। स्टीफ़ैन ने फ़ौरन देख कर मालूम कर लिया कि यह वैरन हाइम का पत्र था।—उसने कभी २ ऐसे ही उस कागज पर खत लिखे थे। वे धन्यवाद, चापलूसी और नम्रता से भरे पडे थे, इस बात के लिए कि स्टीफ़ैन उसके लिखे हुए उपन्यासों को खरीद ले। लेकिन इस पत्र मे उन बातो का कहीं पता भी न होगा। स्टीफ़ैन ने इस पत्र को घूर कर देखा क्योंकि वह नवयुवक इसको ऊपर की ओर थामे हुए था। इस कागज पर दोनो ओर टाइप हो रहा था। उसने उसकी पुश्त पर हाहन के हस्ताक्षर को भी पहिचान लिया।

यह वही पत्र था जिसका कि स्टीफ़ैन ही गिरफ्तारी से पहिले दिन जस्टीजार्ट हाहन ने उसको हवाला दिया था और इसी की वजह से उसको जेल मे दो महीने रखा गया था। वह नवयुवक पत्र को चुप चाप पढ़ता रहा। फिर उसने अचानक पूछा।

"क्या कभी कोई व्यक्ति तुम्हारे पास तुम्हारे अखबार का एक सैनिक सस्करण निकालने की प्रार्थना लेकर गया था?"

"ऐसी तो कोई बात नहीं हुई।"

"मैं समझा। राइक्सावार से भी कोई नही आया?" उसने व्यंग रूप से कहा।

"नहीं।"

"अच्छा।" स्पष्टतः इस नौ जवान इन्सपैक्टर ने बहुत से लोगों की इस प्रकार से जाच नहीं की थी। वह परेशान सा था। वह नहीं जानता था कि क्या कहे, क्या पूछे। उसने फौरन एक पुलिसमैन से मुझको वहाँ से ले जाने को कहा। जाते समय उसने मुझसे कहा, "तुम्हारा बयान कल लिया जायगा।"

बैठने को कहा। स्टीफैन ने उस नौजवान को अफसर का लडका समझा।

उस नौजवान ने इस तरह शुरु किया।

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारा लडका आर्ज वर्लिन जा रहा है।"

"हाँ, वह जा रहा है।"

"तुम उससे आज मिले?"

"जी, हाँ।"

"मैंने ही उसको तुमसे मिलने की आज्ञा दी थी"।

"धन्यवाद"।

कुछ देर शान्ति रही।

और फिर वह नवयुवक बोला,

"यह क्या बात है कि तुम इतनी अच्छी तनख्वाह पाते हुए भी कुछ न बचा सके।"

स्टीफैन ने उसे घूर कर देखा। इस भलेमानस को उससे यह पूछने की क्या जरूरत थी कि उसने अपने रुपए को किस प्रकार खर्च किया।

"क्या तुमने अपनी बचत को दूर भेज दिया है?"

स्टीफैन ने उसके सवाल पर बिल्कुल ध्यान न दिया।

लडके ने अफसरो का सा मुह बना लिया। और वह उसकी ओर ताकने लगा। स्टीफैन का खयाल था कि कोई अफसर उसका बयान लेने आता ही होगा। लेकिन अब उसे मालूम हुआ कि लडका ही अफसर था!

नवयुवक ने अपने सामने के पडे हुए कागजो पर गौर किया। फिर उसने स्टीफैन से पूछा।

"क्या तुम पिस्कैटर को जानते हो?"

"सिर्फ थियेटर मैनेजर के बतौर मैं उसको जानता हूँ।"

"क्या वौल्गा वोटमैन नाम की फ़िल्म को तुमने ही लिखा था?"

फर्म मे उसे एक नौकरी दे दी थी। मालिक और नौकर मे प्रगाढ़ मित्र भाव बढने लगा; और हासलीटर अब उसी का लाभ उठा रहा थी।

हाहम जो कि दूसरा कमिश्नर था एल्फ्रेड रोजेनवर्ग का मित्र था। वह भी प्रसिद्ध नात्सी नेता हिमलर का सलाह देने वाला था और पालीटिकल पुलिस आव ववेरिया का चीफ भी था।

हालसीटर और हाहम नात्सी-नेताओं के साथ नेकी के बदले बदी कर रहे थे। ये ही उन महानुभावो को नार एण्ड हर्थ के सम्पादकों के बारे म बड़ी ही उलटी-सीधी बाते बना-बना कर सुनाते रहते थे।

नात्सी-नेता भी इन बातो के सुनने में आनन्दित होते थे।

हासलीटर और हाहम को इन समाचार पत्रो के सम्पादकों के खिलाफ आग भड़काने और समय-समय पर इन पार्टी के नेताओं को बदला लेने का ध्यान दिलाते रहने के अलावा और काम नही था। औरो का तो कहना ही क्या, हिटलर और रोहम के मुँह में भी नार एण्ड फर्थ का नाम सुनते ही झाग आ जाते थे।

उनके क्रोध का कारण बिल्कुल आसान है।

नात्सी पार्टी के हैडक्वार्टर्स बहुत दिनो तक म्यूनिच मे ही रहे।

उनमे से अधिकतर मेम्बर म्यूनिच के निवासी थे या आस पास के थे। हरेक रोज वे नार एण्ड फर्म के एक अखबार को जो कि शहर मे बहुत बड़ी तादाद मे पढा जाता था, पढ़ा करते थे। उनकी राय मे यह अखबार दुनिया भर के अखबारो मे सब से अच्छा था। उस पत्र मे कुछ पक्तियाँ नात्सीवाद के खिलाफ पढीं। उनको भय था कि उन लाइनो को तमाम ससार पढ़ेगा। वे विभिन्न स्थानो मे पढी जावेगी। इन लाइन को विभिन्न स्त्री-पुरुष पढेगे। उन पर हर जगह वाद विवाद होगा।

ऐसे अवसर को कभी भी क्षमा नही किया जा सकता।

"देखिए," स्टीफैन ने असन्तुष्ट होकर कहा, "मुझे इस जेल मे लगभग दो मास हो चुके हैं। लेकिन इस बात का मुझे अब तक पता नहीं चला कि मुझे क्यों गिरफ्तार किया गया है। मुझको कभी कुछ कहने का अधिकार नही दिया गया। राजनीतिक पुलिस ने मेरे ऊपर क्या अपराध लगाया है? मैं कभी राजनीति के मामलो मे नहीं पड़ा। इसके अलावा मै एक विदेशी हूँ। मुझे यह खबर मिली है कि हगरी की सरकार ने मुझे जल्दी छोड़ने की प्रार्थना की है।"

उस नौजवान ने केवल अपने कन्धों को हिलाया।

"क्या तुम मुझे कम से कम इतना भी नहीं बतला सकते कि अब मेरा क्या होगा? यह अनिश्चिनता मुझे पागल बना देगी।" स्टीफैन ने उत्तेजित हो कर कहा।

नौजवान ने जवाब दिया कि मेरा ख्याल यह है कि तुम जल्दी ही जर्मनी से बाहर निकाल दिये जाओगे।

"हाँ, लेकिन इसके लिए इतने समय की क्या जरूरत? मैं जर्मनी को जल्दी से जल्दी छोडने मे ही खुश हूँ।"

उस सुन्दर बालो वाले नवयुवक ने आगे कुछ भी जवाब नही दिया। कमरे से बाहर चला गया।

५ मई

पत्रों, समाचार पत्रो तथा नई जेलियो की सहायता से कैदियों ने इस बात का अन्दाजा लगा लिया कि नार एण्ड हर्थ के फर्म में क्या हो रहा है। और उनको जेल मे क्यो इतने दिन तक बन्द रखा गया। हासलीटर और हाहम नामक वर्तमान कमिश्नर ही इस बात की कोशिश मे लगे हुए थे कि वे लोग जेल मे ही रहे।

कमिश्नर हासलीटर को हिटलर के दाहिने हाथ हैस की पूरी मदद मिल रही थी। जब हैस भूखों मर रहा था तब हासलीटर ने अपने

उसने सोचने की कोशिश की कि जर्मनी वालों ने अपना हरा भरा देश हर हिटलर और उसके साथियो के हाथ मे कैसे सौप दिया। क्या उन्हे यह नही मालूम था कि उनका नेता, कवियों और विद्वानों के देश को सकीर्णता और अभानुषिकता का रगमच बना देगा?

गत वर्षों मे अभागी जर्मन जाति ने कितना दु ख सहन किया है। वह कितने दु:ख और दरिद्रता के मार्ग पर चल रही है। उसने कितनी बार अपने नेता मे विश्वास किया है! और उसे कितनी बार निराश होना पडा है!

दरिद्रता से त्रसित, कमजोर और गरीब जर्मन किसान थक कर जमीन पर बैठ गया और सिर पर हाथ रख कर बोला, "शायद हिटलर हमारी मुसीबतों को दूर कर दे। वह कोशिश कर रहा है। शायद वह सफल भी हो जाय। उसने वायदा किया है कि वह हमारी दशा बहुत अच्छी कर देगा।"

इस प्रकार के विचार हजारो, लाखो और करोड़ों जर्मनी वाले प्रकाशित करते हैं।

हिटलर ने प्रत्येक व्यक्ति को कुछ-न-कुछ देने का वायदा किया। और उन्होने उसका विश्वास कर लिया।

युद्ध, चलन, बेकारी, क्षुधा और गरीबी ने जर्मनी वालो को कमजोर बना डाला था। भविष्य काला दिखाई देता था। ऐसे समय मे एक आदमी खडा हुआ जिसने उन्हे विश्वास दिलाया, जिसने वायदा किया कि जर्मनी का भविष्य स्वर्णिल होगा, जिसने कहा कि कल की जर्मनी से बेकारी, भूक और मुसीबतें काला मुँह कर जायँगी। जर्मनी के मनुष्य हमेशा अपने को धोखा देते रहे हैं, हमेशा अपने को भ्रम मे डाले रहे हैं। उन्होने अपने को इस मनुष्य के हाथों मे छोड दिया।

हिटलर ने साधारण भाषा मे बातचीत की—उस भाषा मे जिसे सब लोग समझते थे। उसने कहा कि यदि वे चाहे, यदि वे केवल

पार्टी के नेता प्रान्तीय थे। वे ववेरिया मे अपने नाम को चमकाना चाहते थे, और इस पत्र के कारण ही वे असफल रहे।

इस लिए नार एण्ड फर्थ के सम्पादक पर गुस्सा उतारना स्वभाविक था।

हासलीटर ने हैस को फुसलाया और उसने हिटलर को पट्टी पढाई। हैहम ने ववेरिया को हिटलर और राजेनवर्ग को फुसलाया कि ये सम्पादक ववेरिया को जर्मनी से अलग करना चाहते हैं। सक्षेप मे, वे दगाबाज थे।

उनकी गिरफ्तारी के बाद हासलीटर और हाहम ने फिर उल्टा-पुलटी की। उनकी सम्पादकीय लिखा-पढी उन्होने देखी और राजनीतिक पुलिस के पास झूठी शिकायते भेजी।

हासलीटर केवल नार एण्ड हर्थ का वर्तमान मैनेजर ही नहीं था। बल्कि वह म्यूनिच की राजनीतिक पुलिस का कमिश्नर भी नियुक्त हुआ था। इसलिये अपने विपक्षी मैनेजर और सम्पादको की गिरफ्तारी का उसने आसानी से प्रबन्ध करा दिया था।

उसने अपनी स्त्री को भी राजनीतिक पुलिस मे एक नौकरी दिला दी थीं। हर एक पत्र जो कि विदेश से आता और हरेक पत्र जो कि जेल से लिखकर भेजा जाता, उन सब को पहिले श्रीमती हासलीटर पढती।

एक उसका बहुत पुराना दोस्त जिसका नाम डानर्ट था, इन सम्पादको के मामलो की जाच कर रहा था। वही घरो की तलाशी का हुक्म देता था। और जो कुछ हासलीटर उसको बतलाता था, करता था।

सिर्फ इतना ही नही बल्कि हासलीटर ने डा० वैंडलर को जो कि राजनीतिक पुलिस का एक प्रभुत्वशाली मेम्बर था नार एण्ड हर्थ का कानूनी सलाहगीर नियुक्त कर दिया था और उसको इसके लिए १५०० मार्क्स प्रति मास मिलते थे।

डा० वैंडलर हिमलर का साला और ववेरिया की राजनीतिक पुलिस

लेकिन डा० डीडशीमर ने भी यह सिद्ध किया कि उसका आर्य-वश है। उसके बाप दादा-ईसाई थे, जहाँ तक कम से कम उसको पता है।

अन्त मे डा० का प्रतिरोधी भी गिरफ्तार कर लिया और म्यूनिच की जेल मे भेज दिया गया।

× × × ×

एक हृष्ट-पुष्ट नवयुवक! सुगठित बदन, चमकीली बड़ी आँखे और देखने मे ईमानदार नौजवान केवल ३० वर्ष का था।

वह एक बढई था। ४० नम्बर के कमरे मे बद था।

"क्या तुम किसी पार्टी के मेम्बर थे ?"

"नही। मैंने कभी ऐसी बातों मे दिलचस्पी नहीं ली। बहुत साल हुए जब मैं शोसल डीमाक्रेट्स का मेम्बर था लेकिन जब मजदूरी गिरी, तब मैंने सोचा कि यह सब शोसल डीमाक्रेट्स की वजह से हुआ है। इसलिए मैंने इस्तीफा दे दिया।"

"लेकिन तुम यहाँ क्यो लाए गए हो ?"

"मै नहीं जानता! उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने बम्ब कहाँ छिपा रक्खे हैं ? ..मैंने कहा कि मुझे उनकी बाबत कुछ मालूम नही और न मैं ऐसी बातों मे कभी फसा हूँ।"

"लेकिन वे लोग जरूर किसी न किसी कारण से तुमको यहाँ लाये होंगे ?"

"हाँ' उसकी आँखे जवाब देते वक्त गुस्से से लाल हो गई। "मै यहाँ पर इसलिए लाया गया हूँ क्योंकि मैंने एक स्त्री के प्रेम को ठुकरा दिया है। एक औरत बहुत दिनो से मेरे पीछे पडी रही। लेकिन मैंने उसकी कुछ भी परवाह न की—मेरे पास पहिले से ही एक युवती थी जिससे मेरा कई सालों से ससर्ग था। इसलिए मैंने उस स्त्री से साफ

का चीफ था। डा० वैंडलर फर्म के दफ़्तर मे बैठता और उसके पास हासलीटर और हाहन बैठते। वे सम्पादको के खिलाफ काग़जो को उलटा-सीधा रँगवाते रहते। हासलीटर और हाहन ने मुकद्दमे के क़ाग़जात को वहाँ से हटा दिया था और अपने दफ़्तर मे ले गए थे। हासलीटर उनको अपने घर ले जाता था और अपने दोस्तो को पढ़कर सुनाता था।

और यह मित्र मडली ही कैदियों के भाग्य का निबटारा करती। राजनीतिक पुलिस के चीफ, फर्म के चीफ, को फासनेवाले ही कैदियो के जज थे।

और वे मुलजिम ताले मे बन्द थे। उनको किसी प्रकार की शिकायत करने का अधिकार नहीं था और न वे किसी प्रकार का वकील ही कर सकते थे। उनके पक्ष में कोई एक शब्द भी नही बोल सकता, नही तो वह खुद भी जेल की कोठरियो मे बन्द दिखाई दे।

६ मई

वैरन आरटिन के कमरे का साथी कुछ दिन पहले रिहा कर दिया गया था। अब उसकी जगह रीजेसवर्ग का डा० डीडशीमर आ गया था। जेल मे आते समय उस बुड्ढे आदमी ने आत्म हत्या करने की कोशिश की थी। उसके पास विष की एक शीशी थी। वह कहता था कि वह कभी भी जेल मे बन्द होने के अनादर को सहन नही कर सकता। तमाम रात वैरन आरटिन उसको सात्वना देता रहा।

उसकी गिरफ़्तारी का कारण?

डा० डीडशीमर रीजेसवर्ग मे एक सैनेटोरियम था। वही पर एक दूसरा डा० उसका विरोधी था जो कि नात्सी था। उसके विरोधी डा० ने जलभुन कर डा० डीडशीमर को यहूदी होना प्रमाणित किया और उसे गिरफ़्तार करा दिया।

"लेकिन मेरा बाप सत्तर साल का है। जब मैंने अपना गाँव छोड़ा था उसने कहा था, "जो तुम उचित समझो वही उस कमाए हुए रुपये का करना। तुम इसको शराब मे उड़ा सकते हो या जुए मे हार सकते हो या औरतो पर खर्च कर सकते हो, मैं कुछ नही कहना चाहता। लेकिन एक बात है जो कि मैं तुमको बतला देना चाहता हूँ, अगर तुम कभी जेल गए तो मैं आऊँगा और अपने हाथो से तुमको खत्म कर दूँगा।"

बढई ने अपना सिर हिलाया। "और अब अगर मेरा बाप सुन लेगा.... कि मैं उसका बेटा.. .जेल मे हूँ... ।"

"लेकिन तुम तो नजर कैद हो और हम भी मुलजिम नहीं हैं। इसमे तुम्हारे लिए कोई लज्जा की बात नहीं है।"

"क्या ऐसी बात है ?" उसने कहा, "तब तो मुझे खुशी है कि मैं आप जैसे लोगो की सगत मे हूँ। मैंने अपने जीवन मे कभी भी काउट और बैरन की सगत नही की। लेकिन ये सब बाते मैं अपने बुड्ढे बाप को तब तक न बता सकूगा जब तक कि मै यहाँ से न छोड़ा जाऊ .. लेकिन तब तक... मेरा बाप सत्तर से ऊपर है . हमारे घर का कोई आदमी कभी भी जेलखाने मे नही गया है. . अगर कही मेरा बाप इन बातो को सुन लेगा, तो वह जरूर मर जावेगा।"

बढई तीन सप्ताह के बाद छोड दिया गया। और निर्णय यह हुआ कि वह बिल्कुल बे कुसूर है। उसको उसी औरत ने दोषी सिद्ध कराया था जिसके कि प्रेम को उसने ठुकरा दिया था।

स्टीफैन उसके चले जाने के बाद उसके कमरे मे गया। दीवार पर अपने टूटे-फूटे शब्दों मे उसने यह लिख रखा था।

"हमैंने हैकर गिरफ्तार किया गया, लेकिन बेगुनाह था।"

इस प्रकार उसने अपनी बेगुनाही को अंकित कर दिया था।

इन्कार कर दिया। उसने मेरी पुलिस मे रिपोर्ट करने की धमकी दी। मेरा खयाल है कि यह सब करतूत उसी औरत की है।"

व्यायाम करने के वक्त वे सब खिड़की पर खड़े हुए थे। बढ़ई ने अपने चतुर हाथो से बरामदे मे खिड़की द्वारा ताजी हवा आने का मार्ग बना दिया था। खिड़की से वे चर्च की शानदार गुम्बद को देख सकते थे जो कि वहाँ से मुश्किल से १०० गज की दूरी पर थी। "ऐसी सुन्दर गुम्बद बनाना कितनी होशियारी का काम है।" बढ़ई अपने काम का शौकीन था। उसने बढ़ईगीरी का किताब को मंगा लिया था। "मैं इसको तीन बार पढ़ चुका हूँ," उसने कहा "बहुत दिनो से इसे नही पढ़ा था," वह अब जेल मे था और उसके पास धन नही है जिससे कि वह दाम देकर खाने का सामान मगा ले। अन्य कैदियो ने उसको रोटी आदि खाने को दी। वह बेचारा हमेशा भूखा सा रहता है। "अगर सिर्फ एक बार बाहर चला जाऊँ।......जाड़े भर मेरे पास कोई काम नही रहा। ठीक पिछले सप्ताह मे मुझे पुल के बनाने में काम मिला था... ..लेकिन जब मैं जेल से बाहर निकलूँगा तो वह काम भाड़ मे चला जायगा!"

स्टीफैन ने उसको खुश करने की कोशिश की। "तुम जल्दी ही छूट जाओगे। यह सब अधिक समय के लिए नही है। तब तुम्हे दूसरी नौकरी मिल जावेगी। जब तुम पुल के ऊपर बैठकर काम करो और हवा तुम्हारे चारो ओर सनसनाये तो तनिक हमारा भी खयाल करना......हम लोग उस समय जेल मे सड़ रहे होगे।"

"हाँ," उसने उदासीनता से उत्तर दिया, "मुझे इस जेल आदि की कुछ भी परवा नही। सिर्फ मेरे माता-पिता को यह बात मालूम न हो। जेल जाना बड़े अनादर की बात है।"

"यहाँ रहने मे कोई अनादर नही है," स्टीफैन ने कहा।

"मैं जानता हूँ कि ऐसी कोई बात नहीं है," उसने जवाब दिया,

वह एक पत्नी रखना चाहता तो, तो क्या नुकसान ? उसकी बीबी भी उनके गुट्ट मे शामिल हो गई।

"गैलीसिया की यात्रा मे मेरी एक स्त्री से भेट हुई जिसकी आखे इस कबूतर की सी थीं। उसका नाम बीरा था।" स्ट्राकविज ने मुँह बनाते हुए कहा।

इस लिए सबने मैक्स की स्त्री का नाम वीरा रख दिया। "मैक्स और वीरा . . .. तुम दोनों हमारे मित्र हो।.. ......तुम यहाँ कितने भले मालुम होते हो ... .।"

८ मई

आज प्रात:काल स्टीफैन को काउट आर्को से खबर मिली। वह अब भी नीचे की मजिल के कमरे नं० १५ मे था।

उसने लिखा था कि जनरल वान ऐप ने राजनीतिक पुलिस से उस मामले की सुनवाई के लिए कहा था।

घटो तक उससे यह सवाल किए गये कि वह हिटलर पर आक्रमण करना चाहा था अथवा नहीं, अब सुनवाई बन्द हो गई। उसे थोडे ही दिनों मे छूट जाने की आशा थी।

९ मई

"तुम अब तक नही छूट सकते जब तक कि वैरन हाहन जेल मे वद न हो जाय।" एक पुलिसमैन ने स्टीफैन से कहा, "वह तुमको कैद मे रखने का भरसक प्रयत्न कर रहा है।

स्टीफैन को पता चला कि उसके कुछ मित्रों ने बदमाश हाहन के खिलाफ अच्छे सबूत इकट्ठा कर लिये थे। इसका भूत काल पाप रहित नहीं था।

हाहन युद्ध के समय था और सन्देह था कि उसने जर्मनी के

कुछ दिन पहिले एक कबूतर आया और खिड़की पर आ बैठा। यह शायद थका हुआ था और आराम करना चाहता था। वे लोग खिड़की के पास धीरे से गये और उन्होंने खिडकी पर रोटी को डाल दिया। कबूतर अपने चमकीले रंग के कारण बहुत सुन्दर मालूम होता था। उसकी आखे और भी भली मालूम होती थी। वह भौचक्का सा हो कर चारो तरफ देखने लगा। फिर वह खिडकी पर इधर उधर घूमने लगा। उसने खुश होकर रोटी के टुकडे खाये और फिर उड गया।

दूसरे दिन सुबह को यह फिर आया। स्ट्राकविज ने उससे फिर रोटी के टुकडे फेके। कबूतर उनको खाकर उड गया।

तब से वह वहॉ रोजाना आने लगा। उसके आने के समय, ठीक पॉच बजे सब लोग उठ जाते। क्राइगर उसको कोसता और उस पर बड बडाता, लेकिन वह अपनी गुटरगू बन्द न करता। उनको उठ कर कबूतर को चुग्गा देना पडता। कबूतर को और अच्छा खाना देने के लिए स्ट्राकविज ने चिडियो के चुगने का माल मगाया। उसने उसका नाम मैक्स रखा। उसके आने से उन्हे बडी तसल्ली मिलती। वे उसके आने की बाट देखते रहते। और मैक्स बिल्कुल ठीक समय पर आता—ठीक सूरज निकलने के बाद वह अपना चुग्गा खाकर उड जाता।

आज मैक्स ने एक नई बात की। वह आज अपने साथ एक कबूतरी लाया। यह एक दुर्बल चिडिया थी और बदमिजाज मालूम होती थी।

काउट ने कहा, "मैक्स क्या तुम्हे इससे सुन्दर स्त्री नहीं मिली ?" मैक्स ने इस बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वह अपनी प्रेमिका से बहुत प्रेम करता था। उसने रोटी के टुकड़ों को उसे खिलाया और स्वय खाया।

मैक्स की इच्छा सब को मान्य थी। अगर ईश्वर की दया से

यही उनके कारागार के जीवन की सबसे बडी दुखप्रद बात थी—उस बात की आशा करना जोकि कभी भी नही हो सकती।

स्टीफैन को यकीन होने लगा कि उसकी सुनवाई और जाच केवल दिखावा था। हगरी की सरकार और स्टीफैन के दोस्तो ने उसके मामले की तलाशी मे कोई कसर बाकी न रक्खी थी। इस लिए उसे वहाँ लाया गया था। अब राजनीतिक पुलिस हगरी की सरकार से कह सकती था कि मामले की सुनवाई हो रही है। /

११ मई

आज जर्मन विद्यार्थियो ने बर्लिन मे २० हजार किताबे फूक दी। यह सब गैर-जर्मन वृत्ति के विरुद्ध आदोलन का परिणाम था। बाजे, मसाले, आग, किताबो का जलाना—इस प्रकार सभ्यता के के प्रतिकूल युद्ध हो रहा था। समय लौटता-सा लगता। मानों जर्मनी में फिर से जगली काल आ गया हो।

पुलिस जेल की चौथी मजिल पर वे आदमी थे जिन्होने अपना बहुत सा समय पुस्तक पढने में बिताया था और जो केवल पुस्तकों के ही प्रेमी थे। वे आज रो रहे थे। किताबो को जला दिया गया था वे अपनी दशा, निराशा और दुख को भूल गये थे, पुस्तको का भस्म होना उनके हृदय को विदीर्ण कर रहा था।

उन जर्मनों पर, जो कि इस माध्यमिक युग के पुनर्जीवित करने के जिम्मेदार है, कैदियो को भी शर्म आती। वे पुस्तको के जलने के समाचार को खेद से बार-बार पढ़ रहे थे।"

पुस्तकों की आहुति के समय विद्यार्थियों ने निम्नलिखित भाषण दिये :—

"पहला वक्ता—प्रेरणा-सघर्ष और भौतिकवाद के विरोध मे और नात्सीवाद के सिद्धान्तों के नाम पर मार्क्स और कात्सकी के ग्रन्थों की

खिलाफ़ कारवाई की थी; और उसके शत्रुओं को भी उसने दग़ा दी। इसी मामले मे उसको जेल भी काटनी पड़ी थी।

लेकिन आज कल वह सरकार का एक ख़ास आदमी था। वह नार एण्ड हर्य की फर्म का इन्तजाम करता था। वह राजनीतिक पुलिस का एक प्रभाव शाली पुरुष था। वह इस बात का पूरा-पूरा ख्याल रखता था कि सम्पादकों के मामलो की सुनवाई न हो। उसे इस बात का थी ख्याल है कि कही वे जेल से छूट न जावे। हाहन सोचता था कि वह इसी प्रकार सदैव अपने षडयत्र म सफल होता रहेगा!

जबकि राजनीतिक पुलिस को उसकी सब करतूते मालूम होगी— और वह समय अब बहुत जल्द आने वाला था, तब उसे पूरा-पूरा दण्ड भुगतना पडेगा।

लेकिन कब? जब तक वह शेतान गिरफ़्तार नहीं होगा तब तक वे लोग कै.द रहेगे और उनके मामलो की सुनाई नहीं होगी।

लेकिन क्या वह गिरफ्तार हो जावेगा?

१० मई

कैदियो को खुद की किस्मत पर भी पश्चाताप होता था। उनको सब से ज़्यादा पोलिटिकल पुलिस परेशान करती थी। झूठ बोलना, परेशान करना उनके स्वभाव मे शामिल था।

वे कै दियो के घर वालों से झूठ बोलते, वे वार्डस से झूठ बोलते। अगर कोई अफसर किसी कै दी से कहता कि "तुम कल तुम छोड़ दिए जाओगे," तब यह निश्चय होता कि वह हफ़्तों तक वहाँ रहेगा। अगर राजनीतिक पुलिस किसी से कहे कि तुम्हारी सुनवाई कल होगी तो उसे इस बात का यकीन होजाना कि उसकी सुनवाई नहीं होगी। अगर कोई इन्सपेक्टर इस बात का वायदा करता कि कल किसी को सुनवाई होगी तो इस बात को कोई स्वप्न मे भी ठीक न समझता।

कोशिश कर रहे थे . हम तैयार हो गए .....फ्रास वालो ने थोडे ही दिन पहिले एक खाई बम से उड़ा दी थी, . ..२० जर्मन हवा मे उड गये थे। मैं अपना बदला लेना चाहता था .. ।"

फ्राइगर के नेत्र रक्त वर्ण होगए। इस खयाली दुनिया मे वह फिर एक बार अपने वीरत्व के दिन व्यतीत करने लगा।

"हमने शाम तक बाट देखी। फ्रास वालो को इस बात का पता भी न चला कि वे लोग बम के ऊपर है। खाइयो मे शान्ति का राज्य था दूसरा आधा घटा बीता। तब मैंने बटन को दबाया ..जोर का धमाका हुआ . खाई मे बम फट गया २०० फ्रासीसी मारे गये।"

फ्राइगर ने एक गिलास पानी इस तरह से पिया मानो उसने शराब उडेली हो उसने कहा, "खूब मजा आया उस दिन!"

"मैं उस दिन को मरते दम तक नही भूल सकता। २०० आदमी मारे गए। इसका जिम्मेदार मैं ही था।"

१३ मई

डा० डीडशीमर को कल छोड दिया गया। उसका साला, जो कि रीकवहेर मे एक अफसर है, उसे छुडाकर ले गया। थोडे समय तक वैरन आरटिन कमरे मे अकेला रहा। मगर डीडशीमर की चारपाई मुश्किल से ही ठडी होने पाई थी कि माजेल को वह सुपुर्द कर दी गई। हमारे फर्म का सेल्स मैनेजर था और राजनीतिक मामलो मे बिलकुल भाग नही लेता था। माजेल को अपनी गिरफ्तारी के कारण का पता भी न था, लेकिन उसका ऐसा ख्याल था कि हाहन जो कि फर्म का वर्तमान मैनेजर था, उसी की यह सब करतूत थी!

हाहन! हाहन! कम्बख्त हाहन!!

वही हरेक मामले मे दखलन्दाजी करता था।

आहुति देता हूँ।" दूसरे वक्ता ने भी उसी प्रकार कुछ कह कर हाइन-रिच मान, मेजर और कास्तनर के लेखो को स्वाहा कर दिया।

इसी प्रकार के उल्टे-सीधे भाषण दे देकर नौ विद्यार्थियों ने फ्रैड-रिक विलहैम फार्स्टर, सिगमड, फ्राइड, रोमिल लुडविग, वर्नर हैगमैन, थिओडोर वुल्फ, आदि विद्वानों के ग्रन्थों की आहुति दे दी।

जितना कि अखबार मे कैदियो ने पढ़ा उससे अधिक पुस्तकों का नाश हुआ था। उनको ऐसा शोक हुआ मानो कि उन्होंने अपने मित्र की अकालमृत्यु का समाचार पढा हो। वे लोग कमरो में बैठे २ पश्चा-ताप करने लगे। कैदी लोग खिन्न हो गए। कवि तथा विद्वानों का देश जर्मनी पुस्तको की भस्म बना रहा था।

१२ मई

क्राइगर युद्ध सैनिक था। वह हरेक बात पर जिद करता था। यहाँ तक वार्डर भी उसको लेफ्टिनेन क्राइगर कह कर पुकारते है। उसकी स्त्री भी उसको लेफ्टिनेन कह कर पुकारती थी क्योकि युद्ध-काल में उसने लेफ्टिनेन के पद को ही सुशोभित किया था।

क्राइगर युद्ध-प्रेमी था। वह हमेशा पिस्तौल, बन्दूक और तमचे के बारे मे बातचीत करता। वह युद्ध की प्रतीक्षा के चाव से करता रहता, अगर वह अपना मन चाहा कर सके तो सदैव युद्ध ही करता हुआ दिखाई दे। युद्ध ही उसका जीवन था।

"जब मैं घर पर होता हूँ तो अपना भोजन वर्दी पहिने ही हुए करता हूँ," उसने कहा। "वे सन्ध्या बडे ही आनन्दपूर्ण थीं।"

क्राइगर का रोचक विषय युद्ध अनुभवो के विषय मे बातचीत करना था। आज उसने निम्नलिखित घटना का वर्णन किया :—

"हम लोग फ्रास के मोरचे पर थे। मैंने फ्रासीसी खाई के नीचे एक बड़ा बम रख दिया।था।......हम बहुत दिनों से इसकी

उसके पकडे जाने का कब तक इन्तजार करना पड़ेगा ?

× × × ×

उन्हे ज्यादा इन्तजार न करना पडा।

कल रात बरामदे मे उन्होने, एक आवाज सुनी। ४० नम्बर के कमरे मे एक नया कैदी लाया गया था। ऐसी बातो मे उनकी अब खास दिलचस्पी नही रही थी।

लेकिन नया कैदी अकड़ कर वार्डर से बोल रहा था जिससे कि उन लोगो का ध्यान उधर को गया।

उसने चिल्ला कर कहा, "एक इन्सपेक्टर को फ़ौरन् अभी ऊपर यहाँ भेज दो।"

स्ट्राकविज ने कहा, "केवल एक नात्सी ही इस तरह बोल सकता है। कैदी तो दबी बिल्ली की तरह हैं।"

सब देखना चाहते था कि यह नया कैदी कैसा था, कौन था।

जब वे शाम को पानी लेने गए तो स्टीफैन उस कमरे के पास गया जिसमे कि वह कैदी बद था। उसने जासूसी सूराख मे से झाका। अन्दर नजर पड़ते ही स्टीफैन चिल्ला उठा। वह नाचता हुआ बरामदे से नल तक गया।

उसके सब साथियो ने पूछा, "क्या मामला है? यह कैसी उमग है?"

वह खुशी के मारे चिल्लाया, "अरे भाई, अब हम सब जल्दी ही छूट जावेगे।"

स्ट्राकविज़ ने मुह बनाकर कहा, "पागल हो गया है।"

"क्या, पागल हो गया हूँ? क्या तुम जानते हो कि चालीस नम्बर की कोठरी मे कौन है? बैरन हाहन!"

सगठित होकर खडे हो, तो ससार को जर्मनी को हीन राष्ट्र कहना छोड़ देना पडेगा। उसने बताया कि यहूदी सब आफतों की जड़ हैं क्योंकि ऊँची तनख्वाह वाली सब नौकरियाँ उनके कब्जे मे हैं। अगर उन्हे मार भगाया जा सके तो सब को काम मिल सकता है। उसने मजदूरों से वायदा किया कि वह उनकी मजदूरी बढा देगा; छोटे दूकानदारों से कहा कि वह बडी दूकानो को दबा देगा, वकीलो और डाक्टरो को विश्वास दिलाया कि वह उनके मुकाबिले के यहूदियों को निर्वासित कर देगा, किसानो को बड़े-बडे फायदे का लोभ दिया, बेकारो को नौकरी दिलाने का प्रण किया, अफसरो को जन्म-पर्यंत नौकरी देने का वचन दिया। सक्षेप मे, उसने प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा पूरी करने का वायदा किया। पर साथ ही साथ उसने उद्योग-धधो वालो से करोड़ों रुपये लिये और इसके बदले में मजदूरों के खिलाफ उनके हित की रक्षा करने का वचन दिया! पर किसी जर्मन को यह न सूझा कि ये वायदे एक दूसरे के विरोधी हैं और एक साथ पूरे नही किये जा सकते। उस समय जर्मनी वाले सोचना नही चाहते थे। वे केवल विश्वास करना चाहते थे।

हिटलर ने अपने देशवासियो को सगठन का मत्र पढ़ाया। उसने सगठित जर्मनी के स्वर्णिल चित्र चित्रित किये। उसने देश भर मे यात्रा की, दिन-रात व्याख्यान दिये, मनुष्यों मे जागृति पैदा करने की चेष्टा की और उनकी बुद्धि को भयानक भावुकता और जोश के मद से मत-वाला बना दिया।

एक बार हिटलर व्याख्यान दे रहा था। उसने अपने श्रोताओ से ललकार कर कहा "जर्मनी!" फिर वह रुका। थोड़ी देर बाद, वह अधिक जोरदार आवाज मे चिल्लाया, "जर्मनी!!" वह फिर रुका। उसने फिर तीसरी बार श्रोताओं पर, बिजली की तरह कड़कती आवाज मे वह जादू का शब्द फिर फेका, "जर्मनी!!!"

थी। लेकिन मुझे होशियार रहने को कहा गया। क्योंकि वह आदमी खतरनाक था। इसलिए कमरे मे जाने से पहले ही मैंने अपनी पिस्तौल तैयार कर ली। हाहन वहाँ खडा हुआ था। मैंने उससे पुकार कर कहा, "होशियार! तुम गिरफ्तार किए जाते हो।" उसने समझा कि मैं मजाक कर रहा हूँ। मैंने दूसरी बार चिल्ला कर कहा और तब उसने अपने हाथ ऊपर को उठा लिए। जब कि उसे यह महसूस हुआ कि मैं गंभीर था। तब उसका मुँह देखने के लायक था।"

"लेकिन हाहन राजनीतिक पुलिस के लपेटे में कैसे आया", स्टीफैन ने पूछा।

"वह तुम लोगो को और फँसाने के लिए ढोग रच रहा था। उसे इस बात का स्वप्न मे भी पता न था कि वह गिरफ्तार हो जावेगा। वह आ गया लपेटे मे. . ।"

सिपाही ने सन्तोष प्रकट करते हुए सिर हिलाया।

"हाहन की स्त्री, रसोइया, नौकर और ड्राइवर—सब के सब गिरफ़्तार कर लिए गये हैं। वे नीचे के कमरों मे बन्द है।"

वह सिपाही हाहन की गिरफ्तारी पर फूला नही समाता था। दूसरे वार्डर और पुलिस की तरह से वह भी कैदियो की बेगुनाही से सहमत था और वह उनको सपादक के रूप मे फिर जल्द देखना चाहता था।

उसने कहा :—

"उस जैसे आदमी हमारे आन्दोलन के प्रारम्भिक काल मे चुपके से आ मिले थे। लेकिन अब हमे इस बात का पूरा ध्यान है कि भविष्य मे हम ऐसे आदमियो को दूर रक्खे और अपनी जाति का मस्तक उज्ज्वल करे।"

एक नात्सी का आदर्शवाद!

आनन्द कभी अकेले नहीं आते। काउंट आर्को छोड़ दिया गया। वह निर्दोष नौ हफ़्ते तक जेल मे रहा।

न मालूम उन सब की कब बारी आवेगी?

उसके शब्द बम फटने की तरह फैल गये। वे खुशी मे पागल हो गये। वह आदमी, जिसने उनको बदनाम किया था, जिसने उनको गिरफ्तार कराया था, जिसने उनको बरबाद कर दिया था, आज वह .खुद भी ४० नम्बर के कमरे मे बन्द था!

१४ मई

आज की तरह वे कभी भी कमरो के दरवाजो खुलने के लिये व्यग्र नहीं रही थी। कारण यह था कि वे लोग हाहन की गिरफ्तारी के बाबत दूसरे लोगों से कुछ सुनना चाहते थे।

वैरन आरटिन और मजिल यह सब पहिले ही ताड़ चुके थे। उन्होंने कल रात ही वैरन की आवाज से ही उसको पहिचान लिया था।

"अब सब बाते ठीक-ठीक तरीके से सामने आयेगी" यही सब की राय थी। अब उनको मामलो की सुनवाई करनी पडेगी। वे लोग आनन्द से बरामदे मे घूम रहे थे—छूटने की उम्मेद मे!

४० नम्बर का कमरा बन्द रहता था। वार्डर को इस बात का डर था कि शायद अन्य कैदी उस नये कैदी पर हाथ न छोड दे। उन्हे इन सब लोगो की बातो का पता था और वे यह भी जानते थे कि हाहन की मेहरबानी से ही वे सब यहाँ थे।

शुपिक उन सब मे उग्र स्वभाव का था। वह हाहन के कमरे तक गया और जासूसी सूराख मे से झाक कर फुसफुसाया। "क्यो बे बदमाश!"

वे आशा करते रहे। आशा पर आशा लगाए रहे।

एक फौजी ।र्हा ने व्यायाम करते समय बतलाया कि उसने किस तरह से हाहन को गिरफ्तार किया।

"कल मुझे राजनीतिक पुलिस ने बुलाया। किसी की गिरफ्तारी

म्यूनिक में उसको पुलिस जेल में ले जाया गया। अब फिर एक बार वह .कैदी हो गया।

उसको दूसरी बार गिरफ्तार होने का कारण अज्ञात था। वह बड़ा परेशान था।

१६ मई

हाहन को अभी तक अपने कमरे से बाहर आने की आज्ञा नहीं मिली थी। जब अन्य कैदी व्यायाम करते, तो उसको बन्द कर दिया जाता। वह सिर्फ शाम को बाहर निकाला जाता था जब कि बरामदे में कोई न होता। तब उसके घूमने की आवाज सुनाई पड़ती।

हर्ल, फर्म का ड्राइवर, ४२ नम्बर के कमरे में बंद था। उसने कैदियों को बतलाया कि हाहन फर्म की मोटर में कहीं दूर जाना चाहता था और उसको (ड्राइवर को) साथ में ले जाना चाहता था। शायद इसी के कारण उसको भी गिरफ्तार किया गया है।

हर्ल को मोटर लेकर पुलिस जेल के बाहर रुकने का हुक्म मिला। हाहन ने पुलिस हैडक्वार्टर्स में कुछ मामला तै करने के लिए गया। उसके वापस आने पर वहाँ से एक लम्बे सफर को चल देते। पैट्रोल काफी भरा था और एक लम्बे सफर के लिए काफी था।

लेकिन हाहन फिर वापिस नहीं आया। उसके बदले में कुछ फौजी सिपाही आए और उन्होंने ड्राइवर को भी गिरफ्तार कर लिया और मोटर को पुलिस-घर में रख दिया।

लेकिन फर्म में यह खबर फैली हुई थी कि दोनों सरदारों में चाकू चल गये थे। हरेक उनमें से दफ्तर का सिर मौर बनना चाहता था और इसके लिए वे अत्याचारी कार्य्य करने के लिए उतारु हो गये।

यह कहा जाता है कि हाहन ने हासलीटर को विष देना चाहा। विष हासलीटर के कहवे के प्याले में पाया गया। इस खोज के बाद,

१५ मई

आज एक बडे अचम्भे की बात हुई। डा० वैज, जो कि नार-एण्ड हर्थ का चीफ था, फिर जेल मे लाया गया। वह जिस मजिल मे स्टीफैन आदि थे उसी मे सुबह लाया गया और कमरा नम्बर ४१ मे बद कर दिया गया। उसने कल रात जेल की कोठरी मे बिताई। आज सुबह वह इस मजिल मे लाया गया और अब वह कमरा नम्बर ४१ मे था।

डा० वैज को अचम्भा हो रहा था कि वह दोबारा क्यो गिरफ्तार कर लिया गया। वह एक महीने तक स्वतत्र रहा। एक महीना पूरा ।

"अगर उन्होने मुझे छोडा न होता", उसने कहा, "तो मुझे इसकी लेश-मात्र भी चिन्ता नही थी। लेकिन फिर पकड़ना तो बहुत ही बुरा है, मै अभी आजादी का मजा उठा चुका हूँ, मैं जानता हूँ कि जेल से बाहर रहने मे कितना आनन्द है। अगर मुझे यह पता चल जाता कि मै फिर गिरफ्तार किया जाऊँगा तो मैं यहाँ से जाता ही नहीं ।"

ड० वैज को पिछले ईस्टर इतवार को छोड़ दिया गया था, इस शर्त पर कि वह ववेरिया को फौरन छोड दे। वह ववेरिया सीमा के पास के ही एक गाव मे चला गया था। उसकी स्त्री म्यूनिच मे अपने दोनो बच्चो समेत रहती थी। वह अपने देश से निकले हुए पति से अक्सर मिलने आया करती थी। परसो फिर वह लैटकर्च मे उसके साथ थी। उसी समय एक नौजवान दो आदमियों के साथ वहाँ आ धमका। उस नौजवान को ववेरिया की राजनीतिक पुलिस ने भेजा था। उसने कमरे की तलाशी ली। डा० वैज के पत्रो को जब्त करने के बाद उसको म्यूनिक चलने की आज्ञा दी। वे तमाम रास्ते मोटर पर आये। डा० वैज से मोटर के पेट्रोल का खर्च माँगा गया। डा० वैज ने खर्चा दिया।

"तुमको 'ब्राउन हाउस' के बारे मे कहाँ से खबर मिली ?"

डा० गैर्लिच ने शान्ति पूर्वक उत्तर दिया, "समाचार पत्र के सम्पादकीय लेखो के लिए मेरे सिवाय और कोई भी जिम्मेदार नही है।"

"तो तुम अपना भेद नही खोलोगे ?" जोर से शब्द घोष हुआ।

"नही" डा० गैर्लिच ने दृढता-पूर्वक जवाब दिया।

थोड़ी देर शान्ति रही। बिल्कुल सन्नाटा ! फिर डा० गैर्लिच को मेज पर पटक दिया गया और २५ रबड़ के कोडे उस पर लगाए गये।

डा० गैर्लिच ने आह तक न की। तब वह कुर्सी मे पटक दिया गया।

उससे फिर सवाल पूछे गये।

लेकिन डा० गैर्लिच चुप रहा।

निम्न लिखित वाक्य उसके कानो मे गूँजने लगा।

"क्या यह खबर तुमको डा० वैज से मिली ?"

लेकिन फिर भी डा० गैर्लिच मौन साधे रहा।

"अच्छा कुत्ते, तुझको अभी जल्दी ही भौकना सिखाया जावेगा।"

बदकिस्मत विद्वान् पिटते-पिटते बेहोश हो गया और बेसुध अवस्था में फिर घसीट कर कुर्सी पर डाल दिया गया।

"क्या तुम अब इकरार करोगे ?"

डा० गैर्लिच चुपचाप बैठा रहा। उसने कुछ भी जवाब न दिया। यकायक एक पिस्तौल की आवाज हुई। साथ ही साथ एक कटु शब्द ने उसे आज्ञा दी :—

"ले बदमाश, तू स्वय को गोली मारकर अपना काम तमाम कर।"

डा० गैर्लिच आखिरकार बोला। उसने दृढ़ होकर कहा:—"मैं आत्म घात नही कर सकता क्योंकि मैं एक कैथोलिक हूँ।"

हासलीटर ने अपने प्रतिरोधी को गिरफ्तार करा दिया। अब फर्म मे वही सब कुछ था। उसकी पॉचो उगली घी मे थी।

१७ मई

आज की खबर बड़ी भयानक थी। कल रात डा० गैर्लिच को फौजी सिपाहियो ने अधमरा कर दिया।

डा० गौर्लिच एक कैथोलिक साप्ताहिक पत्र का सम्पादक था, जिसने नात्सी विरोधी लेख प्रकाशित किए थे। वह अब तीसरी मजिल की अधेरी कोठरी मे ६ मार्च से बन्द था। वह खुश रह कर अपने जेल के जीवन को बिता रहा था और इस लिए सब वार्डर उसको खूब जानते थे।

कल रात एक बजे के लगभग दो फौजी सिपाही वार्डर के पास आए और डा० गैलिच को उससे मागा। उन्होने कहा कि उसकी परीक्षा के लिए उसे बाहर ले जाना है। वार्डर ने लिखित आज्ञा नही मागी। उसने डा० गैर्लिच को उनके सुपुर्द दिया। वे उसको बरामदे मे से शासन-विभाग मे ले गए। वहा उन्होंने उसकी आखो पर पट्टी बाध दी। अब कैदी देख नही सकता था और कई जीनों मे होकर उसको ले जाया गया जिससे कि उसको इस बात का पता न चले कि वह कहा ले जाया जा रहा है।

आखिरकार पट्टी खोल दी गई। डा० गैर्लिच ने अपने चारों ओर देखा। उसने अपने आपको एक बडे कमरे मे पाया। उसकी ऑखे बिजली से चुँधिया दी गई। उसके सामने बहुत से दीपको का प्रकाश कर दिया गया। उसके पीछे आदमी बैठे हुए थे जिनको वह नहीं देख सकता था। उस समय नायक तेज प्रकाश मे था और दर्शक ॲधेरे मे थे।

एक आवाज बडी जोर से डा० गैर्लिच के कानो मे पड़ी। यह दीपकों की ओर से आई थी जहॉ पर उसे लोग आते जाते मालूम पड़ते थे।

में यह खबर बात की बात में निश्चित सकेतो द्वारा फैल गई। यहाँ तक कि अनुभवी वार्डर भी अचम्भा करने लगे कि कैदियो को ऐसी बातो का पता लग कैसे जाता है।

जेल की दीवारो के भी कान होते है। आज सुबह डा० गैर्लिच की दुर्दशा का सब को पता चल गया।

सब लोग परेशान होने लगे। आज जो डा० गैर्लिच के साथ हुआ था, वही कल को उनके साथ भी हो सकता था।

उनको इस अन्याय से बचने का उपाय अवश्य करना चाहिए। लेकिन कैसे? वे लोग सोचने लगे।

नात्सी लोगो को सब से बड़ा डर खबर फैल जाने का है। वे नही चाहते कि कोई भी उनकी क्रूर नीति के बारे में कुछ जाने। .

जेल बहुत से सम्पादक थे। वे जानते थे कि यदि रात वाली घटना फैल जावे तो फिर यह दोहराई नही जावेगी। इसलिए उन्होने पिछली रात की घटना को जाहिर करने का ऐसा उपाय सोचा कि जिससे डा० गैर्लिच की दुखगाथा तमाम म्यूनिच को शीघ्र ही मालूम हो जावे।

× × × ×

दोपहर के बाद वार्डर ने सब कमरे के दरवाजे खोल दिये।

"अपने अपने कोट पहिनो। हम लोग यार्ड मे घूमने चल रहे हैं।

यार्ड मे घूमने के लिए! हवा मे! केवल आकाश का साया! यह चौका देनी वाली घोषणा थी। दो महीने से कैदियो को एक घण्टा रोज बन्द बरामदे मे व्यायाम करने दिया जाता था और अब अचानक ही उन लोगो को खुली हवा मे घुमाया जावेगा!

उनको दो पक्तिया बनानी पड़ी। उनकी गिनती हुई। तब वे

उसने घुटने के बल झुक कर भगवान से प्रार्थना की। वह मरने के लिए तैयार था। प्रार्थना करते हुए उसने उस गोली का इन्तजार किया जो कि उसका अन्त करने वाली थी।

इस भक्त का प्रभाव अन्यायी पर पड़ा। कुछ जादू सा हो गया। सिपाही स्थिति को ताड़ गए। उन्होंने डा० गैर्लिच को गोली से मारने का साहस न किया।

"परीक्षा" खत्म हुई। अब उनको डा० गैर्लिच को वहाँ से हटाना था।

सिपाहियो ने उस अधसुध आदमी को जीने पर पटक दिया। डा० गैर्लिच को कुछ होश आया। उसे कम दिखाई देता था, इसलिये उसने अपने आप को सभालने के लिए दीवाल टटोलने लगा। एक सिपाही ने अपने बूट से उसका हाथ कुचल दिया।

डा० गैर्लिच जीने से लुढक पडा।

जब गैर्लिच अपने कमरे मे पहुँचा तो वह खून से लथ-पथ था। उसने भगवान् की स्तुति की जिसने कि उसकी सहायता की क्योंकि अब भी वह जीवित था।

ज्यो ही इन्स्पेक्टर फ्रैंक ने इस बात को सुना वह सुबह होते ही रात के डा० गैर्लिच के कमरे मे दौड़ा आया। उसने इस मामले की पूरी पूरी जाच करने का वायदा किया। उसने डा० गैर्लिच के घावो को भी देखा और उन पर पट्टी बाँधी।

उसने पिछली रात की घटना की एक रिपोर्ट लिखवाई। उसके हाथ घायल थे। वह लिख नही सकता था।

३ सफे की रिपोर्ट की। लेकिन सब को लेकिन ऐसी रिपोर्टो से क्या फायदा ?

डा० गैर्लिच के साथ पिछली रात जो दुर्व्यवहार हुआ था उसकी सनसनी मजिल-मजिल पर और कमरे-कमरे मे फैल गई। कैदियो

उसके शब्दों ने आदमियों को पागल बना दिया। मालूम पड़ता था कि उन पर किसी ने जादू कर दिया हो। वे खुशी से चिल्लाये, उन्होंने सुख से किलकारियाँ मारी, वे रो पड़े। यह अपील राजनीति या अन्य किसी नीति की नही थी, यह अपील कोरी अपवित्र भावुकता की थी।

आजकल हिटलर के देशवासी सो रहे हैं। वे एक सुखद स्वप्न देख रहे हैं जिसका अंत भयानक होगा। निद्रा भंग होने पर उन्हे मालूम पड़ेगा कि उन्होंने एक बार फिर धोखा खाया है।

× × × ×

किसी ने कोठरी का ताला खोला। स्टीफैन लॉरॉ ने जल्दी से अपनी डायरी छिपा ली।

दरवाजा धड़ाम से खुल गया।

"भोजन!", वार्डर ने चिल्लाकर कहा।

बावर्चिन पुलिस के बावर्चीखाने से ठंडा गोश्त और पनीर अन्दर ले आई।

इसकी कीमत सात पैंस (लगभग सात आने) थी।

"अपने वास्ते पानी ले आओ।",

स्टीफैन ने अपना बर्तन उठाया और सुबह के लिये पानी ले आया।

कोठरी का ताला फिर बंद कर दिया गया। दिन समाप्त हो गया। सात बज गये। जेल की रात आरम्भ हुई। वार्डर की पग-ध्वनि शनै-शनै कम होती हुई, समाप्त हो गई। अब चारों तरफ शांति है। कही से कोई शब्द नही आ रहा। किसी कोठरी से किसी कैदी के कराहने की आवाज भर आ रही है। सिसकती हुई आवाज मे वह रह-रह कर चिल्ला रहा है "हे परमात्मा, मैंने क्या अपराध किया है जिसके कारण

जीने से नीचे उतरे। तीसरी मजिल पर और राजनीतिक कैदी आकर उनसे मिल गये। स्टीफैन फ्राइडमान के पास खिसक कर आ गया और दोनो मे बात चीत होने लगी।

यार्ड के दरवाजे बन्द थे। फौजी सिपाही बाहर जाने के तमाम रास्तो पर किरच निकाले खडे थे। कैदी दो-दो कर चले। यह लम्बा दुखदायी जलूस था। बिना हजामत के, दुर्बल, चिथड़े और गंदे कपडे पहिने ६० आदमी एक लाइन मे चल रहे थे।

सब खिडकियो पर विचित्र मनुष्य दिखाई देते थे। वे पुलिस के अफसर, टाइप बाबू और सिपाही थे।

चमकीली, लाल रग की मोटरकार जोकि पुलिस चीफ हिमलर की थी, यार्ड के कोने मे खड़ी हुई। वह अपने मालिक का इन्तजार कर रही थी, और हिमलर का ड्राइवर मोटर के पास खडा हो कर अजीब ढग से कैदियो की ओर देख रहा था।

वे सब टकटकी बाध कर कैदियो की ओर देख रहे थे। वे उनके अभाग्य पर खुश हो रहे थे। वे उनको अथवा उनके बारे मे कुछ भी नहीं जानते थे। वे सिर्फ इसी लिए खुश थे कि कैदियो मे बैरन, काउट, बहुत से डाक्टर, कम्पनी के डायरेक्टर और सम्पादक गण थे।

'वे काफी समय तक आराम मे ही रहे हैं," एक सिपाही को कहते हुए उन्होने सुना "इनके दिल पर जरा सा भी धक्का नही पहुँचा है।"

बैरन आरटिन क्रोधाध हो गया। "तुम फिर मुझको पकड़ कर यहाँ नही ला सकते," उसने कहा, "मैं हँसी उडवाना और इस प्रकार घूम कर देखे जाना नही चाहता।"

स्टीफैन पर ऐसा कोई प्रभाव न हुआ। वह सोचता था कि चाहे तमाम म्यूनिच वाले आवे और खिडकियो मे से झुक कर उसे कैदी बना देखे इसकी उसे परवाह नही थी। उसने महीनो बाद हवा पाई थी।

कैदियों को वापिस अपने अपने कमरों को ले जाया गया। उस समय काउट सोडन ने राजनीतिक कैदी वैरन आरटिन का अपना टोप उतार कर अभिवादन किया।

१८ मई

नात्सीदल मे भाग लेने के कारण पिछली गवर्नमेट ने आस्टवर्ग को वार्डर के पद से बरखवास्त कर दिया था। अब वह जेल का निरीक्षक बना दिया गया था। अब वह अपने आपको सर्व-शक्तिमान परमेश्वर समझता था। वह हमेशा फौजी वर्दी मे बरामदे मे चक्कर लगाता रहता। उसे यहूदियो से खास चिढ थी। वह उनको मौत के घाट उतारना अपना फर्ज समझता था। क्राति के पहले इसी ने म्युनिच के एक नामी यहूदी के वकील के साथ, जब वह पुलिस से रक्षा करने की प्रार्थना करने के लिये गया था, दुर्व्यवहार किया था। एक यहूदी वकील जो कि म्युनिच मे महकमे के स्टोर की हिदायत के अनुसार काम कर रहा था। क्रान्ति के पहिले ही दिन रक्षक पुलिस उसने उसका पाजामा फाड़ दिया और उस बृद्ध पुरुष के गले मे एक दफ्ती पर यह लिख कर लटका दिया।

"मैं एक यहूदी हूॅ लेकिन मुझे नाजी लोगो के बारे मे कोई शिका-नही है।"

तब वह वकील इस दशा मे म्युनिच की गलियो और सड़को मे घुमाया गया।

आस्टवर्ग इसे एक अच्छा मजाक समझता था और अक्सर वह इसकी बाबत शेखी बघारता था।

"यहूदी को यह जानकर आनन्दित होना चाहिए कि मैंने उसका गला नही काटा और न उसके पाजामे को ही ज्यादा खराब किया।"

आस्टवर्ग को स्टीफैन के साथी शुपिक से खास तौर से नफरत

यह उसे बड़ा अच्छा लग रहा था। फ्राइडमान ने उसे बतलाया कि तीसरी मंजिल पर के उसके साथी डा० स्ट्राक और रेव को डाचन नजर कैद में भेज दिया गया है।

"तब तो बेचारा जेल से जिन्दा बच कर नहीं आवेगा।"

"ऐसी बुरी बात मत कहो," फ्राइडमान ने कहा, "उसको क्यों नही जीवित आना चाहिए ?"

"मेरा ख़्याल हुआ कि वह नही आवेगा ?"

हम लोग बराबर चक्कर काटते रहे। हमारी टागे थक गई थी, वे इस अचानक परिवर्त्तन से अब खड़े भी नही हो सकते थे। उनके यह ताजी हवा असहनीय हो उठी थी।

अचानक आरटिन जोर से चिल्ला उठा।

उसने कुछ दूर पर काउट सोडन को खड़ा देखा। आरटिन ख़ुशी मे चिल्लाया "आगस्ट," काउट सोडन उसका मित्र था।

लेकिन काउट सोडन चुपचाप खड़ा रहा। उसने आरटिन की आवाज सुन लेने का तनिक भी परिचय नही दिया, क्योकि उसी समय यार्ड मे पुलिस चीफ हिमलर आ गया।

लम्बा काला ओवर काट और एस० एस० अफसर की वर्दी पहिने हुए वह धीरे-धीरे अपनी कार की तरफ़ बढ़ा। उसकी सकेत रहित आखे चश्मे मे छिपी थी। वह कैदियो के पास से होकर निकल गया। बिना उनकी ओर देखे हुए चुपचाप चला गया।

काउट सोडन ने आदर पूर्वक अपना टोप उतारा और हिमलर को सलाम किया।

यार्ड के सिपाहियो ने हिमलर अभिवादन के लिये अपने अपने हाथ उठाए।

हिमलर चला गया।

आगन्तुक ने सकेतों और टूटी-फूटी जर्मन भाषा मे कहा :—

"टेलीफोन-टेलीफोन ! भाई मैं एक अमेरिकन हूँ—मैं अमेरिकन काउसिल से बात करना चाहता हूँ।"

वार्डर हसा। उसे यह सुन कर बड़ा मजा आया कि अमेरिकन जेल में टेलीफोन की टटोल मे है।

अमेरिकन परेशान था। उसको क्या करना चाहिए ? उसने सहायता के लिए चारो ओर दृष्टि दौड़ाई।

स्टीफैन ने उससे अपनी जान पहिचान की।

उनका नाम टामस था। उसने फौरन ही अपना दुख रोना शुरू कर दिया।

कम से कम १५० सिपाहियों ने मुझे आ घेरा। मेरे पास म्यूनिच के बाहर एक छोटा सा बॅगला है। फौजी सिपाहियों ने मेरे घर को घेर लिया। अनेकों डाकुओं की भॉति वे मुझ पर चढ आये। टामस का चेहरा उतर गया।

"वे दरवाजे मे घुस पडे और खिड़कियों को खोल दिया। मेरी बिल्ली बाहर कूद कर भाग गई।"

स्टीफैन ने सहानुभूति पूर्वक पूछा, "यह कैसी बिल्ली थी ?"

"यह मेरी सुन्दर आगोरा थी अब वह चली गई।"

टामस ने नेत्रो मे आसू भरते हुए कहा।

स्टीफैन ने उसको सात्वना देने की कोशिश की। और कहा :—

"तुमको वह फिर वापिस मिल जावेगी।"

टामस ने केवल अपना सिर हिला दिया। और दोहराते हुए कहा :—

"मेरी बिल्ली, मेरी सुन्दर आगोरा .....।"

उसने मुझसे कहा, "मैंने अमेरिका छोड़ा था क्योंकि लोग वहाँ स्वतंत्र नहीं हैं। उनको शराब पीने की आज्ञा नही है। इसलिये मैंने

थी। वह सुबह से लेकर रात तक उस पर गुर्राता रहता। उससे हमेशा झगड़ा करने को तैयार रहता। वह उसे अपनी ताक़त का अनुभव कराना चाहता था।

× × × ×

हाहन को दूसरी मंजिल पर भेज दिया गया था। उसे सदैव के लिए चौथी मंजिल मे एकान्तवास कराना उपयुक्त नही समझा गया। वार्डर बराबर उसके कमरे पर चौकसी रखते थे। उनको आज्ञा थी कि अन्य क़ैदियों के बाहर जाने के समय वे उसको बाहर न आने दें। ४० नम्बर के कमरे की ख़ास तौर से निगरानी की जाती थी।

परन्तु हाहन को इस बात की कुछ भी परवाह न थी। पहली बात जो उसने की वह यह थी कि उसने नौकरानी को दो मार्क इसलिये दिये कि वह लोडर को, जो कि एक पत्र का सहकारी सम्पादक था, उसकी गिरफ़्तारी की सूचना दे। फिर उसने एक गुप्त पत्र अपनी स्त्री को लिखा, जो कि नीचे की मंजिल मे औरतों के विभाग मे क़ैद थी। उस पत्र मे उसने लिखा था कि परीक्षा के समय वह क्या-क्या बातें कहे।

वार्डर को हाहन की इस घूस का पता चल गया। हाहन के पास जितना रुपया-पैसा था, सब छीन लिया गया। उसकी पहले से भी कड़ी निगरानी होने लगी।

हाहन अब दूसरी मंजिल मे था। वह आर्को की पुरानी कोठरी मे बंद था।

× × × ×

व्यायाम के समय एक वृद्ध पुरुष, जो कि कोई प्रसिद्ध व्यक्ति प्रतीत होता था, उस मंजिल पर लाया गया। वह विदेशी दूत-सा जान पड़ता था। वह वार्डर को अपने बारे में समझाने का प्रयत्न कर रहा था; लेकिन वह उसकी ओर केवल ताकता भर था। और कधों को हिला कर कहता था, "मैं नही समझता।"

लेकिन शुपिक का आनन्द क्षणिक था। आज शाम को टामस को छोड़ दिया गया। मालूम होता था कि अमेरिकन पुलिस ने उसके छुटकारे के लिए जर्मनी की राजनीतिक पुलिस पर काफी दबाव डाला था।

× × × ×

न्यूरा (स्टीफैन की स्त्री) ने आज उसे लिखा—प्रिय स्टीफैन, तुम्हारे कागजात अब पुलिस के हाथ मे नही है। वे अब न्याय विभाग मे पहुँच गये हैं। अब तुम्हारा मामला कोर्ट के सामने शीघ्र ही आवेगा। मुझे विश्वास है। मैं अभी स्क्राम से बातचीत कर रही थी, उसका कहना है कि कुछ दिन मे ही तुम छोड दिये जाओगे।"

"भगवान करे स्क्राम की भविष्यवाणी सत्य हो," स्टीफैन ने अपन आप से कहा, लेकिन खत के नीचे की दो लाइने क्यो काट दी गई हैं? उनको ऐसा बुरी तरह से काटा है कि उनको पढना बिल्कुल असम्भव है। फिर पेंसिल से लिफाफे पर जो लाइन लिखी हैं उनका क्या मतलब है? सिर्फ दो लाइने—उत्तेजित शब्द, जिसका भाव समझ मे नही आता था।

स्टीफैन, निराशा न हो, अपने बच्चो के वास्ते, अपने जीवन के वास्ते—जीवन सौन्दर्य-पूर्ण हो सकता है।

"स्टीफैन···स्टीफैन··· ।"

न्यूरा ने उसके नाम को इस तरह दोहराया था। मानो उसको उसकी सहायता की आवश्यकता थी। उसको क्या हो गया?—स्टीफैन सोचने लगा।

१९ मई

आज स्टीफैन को सारी घटना मालूम हुई। अब उसे न्यूरा के कल वाले पत्र की दो अंतिम पंक्तियो का अर्थ समझ मे आया।

सोचा कि चलो कहीं स्वतन्त्र देश मे चले; जहाँ नियम-बद्धता न हो और जहाँ अच्छी शराब मिल सकती हो। इसलिये मैं म्यूनिच आया था।"

उसने उदासीनता से बरामदे में चारो ओर जेल के सींखचों की ओर देखा और कहा "यहाँ मुझे यह स्वतत्रा मिली!"

"लेकिन वे तुमसे क्या चाहते है? और उन्होने तुमको क़ैद क्यों कर लिया है?"

टामस ने स्टीफैन की ओर कारुणिक नेत्रो से देखा। "नात्सी लोग वामलर, जो कि एक समष्टिवादी लीडर हैं, की खोज मे हैं। तुम जानते हो वह डाचन मे था। परन्तु वह उस नजर क़ैद से अचानक ही नौ दो ग्यारह हो गया। जिन्होंने मुझे कैद किया उन्होंने कहा कि मैंने वामलर को अपने बगले मे छिपा लिया है। मैंने उनसे कहा कि यह बिल्कुल झूठ है; मैंने वामलर का कभी नाम भी नहीं सुना। लेकिन फिर भी वे मुझको यहाँ लाये। मै इसकी इतनी परवाह न करता अगर मेरी बिल्ली न भागी होती।"

अचानक ही टामस को कुछ याद सा आया और वह परेशान मालूम होने लगा।

"मुझे जरूर कासल से कहना चाहिए . ..मुझे उससे फौरन कहना चाहिए . ...इनको मेरी स्त्री छोड़नी पडेगी.. .. उन्होने उसको भी क़ैद कर लिया है.. ...और मेरी साली को भी .....।"

अब तक टामस सिर्फ अपनी बिल्ली के भाग जाने की ही सोच रहा था। वह उसके लिए इतना व्यथित भूल सा गया था।

टामस को ३७ नवम्बर के कमरे मे डा० माखूद और शुपिक के साथ रक्खा गया। शुपिक की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। क्योंकि अब वह अंग्रेजी सीख सकता था।

"नीचे के जनाने विभाग मे।"

स्टीफैन ने अपने आपको सभालने के लिए पूरी शक्ति का प्रयोग किया।

"लेकिन वह गिरफ्तार क्यों की गई ?"

"मैं नही जानता।"

हुजलर ने दरवाजा खोला और कमरे से बाहर चला गया।

काउन्ट स्ट्राकविज और स्टीफैन पत्थर की तरह मूक हो गये। क्राइगर कमरे में नही था। वह उस समय काम पर लगा हुआ था। वह तौलियों पर लोहा कर रहा था।

स्टीफैन को बहुत निराशा हुई। उसने मेज पर जोर से घूसा मार कर कहा, "अन्यायी, अत्याचारी, पाखडी।"

काउन्ट का चेहरा बिल्कुल सफेद पड गया। उस पर भी इस खबर का बहुत बुरा असर पड़ा था।

"अब वे स्त्रियों को भी कैद कर रहे हैं। वे हमको अब नहीं छोड सकते। कायर, बदमाश" स्टीफैन ने जोर से चिल्लाकर कहा। स्ट्राकविज ने कहा, "तुम्हारी स्त्री वास्तव मे तुम्हारी मुक्ति के लिये बहुत ज्यादा कोशिश कर रही थी। राजनीतिक पुलिस को यह सब कुछ पसद न था।"

दोनो गुस्से मे कमरे मे टहलते रहे "हम से तो जानवर अच्छे हैं। उनका समाज उनकी रक्षा के लिए सदैव प्रस्तुत रहता है। लेकिन हमारी तो कोई परवाह ही नही करता। हमको यहाँ जेल मे बन्द कर दिया गया है और हमारे मामले की कभी सुनवाई ही नही होती। कुछ पता नहीं कल क्या होना है। और अगर हमारी स्त्रियाँ हमारे छुडाने का प्रयत्न करे तो उनको भी जेल मे ठूँस दिया जाता है।"

हरेक अपनी स्त्री के बारे मे सोच रहा था जो कि न्यूरा की ही तरह शायद शीघ्र ही जेल मे बद कर दी जायँ।

जब न्यूरा अपने खत को कल पुलिस को दे रही थी, उसी समय उसको गिरफ़्तार कर लिया गया !

स्टीफैन ने निम्न लिखित ढग से इसका पता लगाया :—

पिछले सप्ताह मे स्टीफैन को जेल खर्च के लिये घर से १० मार्क्स मिले। हुजलर हर शुक्रवार की सुबह को खर्च लाता था। वह उसकी रसीद भी एक छोटी सी किताब मे लिखवा लेता था।

किताब मे बहुत से नाम थे। ये उन क़ैदियों के नाम हैं जो कि खर्च मगाते थे।

स्टीफैन ने जल्दी से वह सूची पढ़ डाली। इससे पता चल जाता था कि कौन २ जेल मे थे।

स्टीफैन ने अपने नाम के ऊपर एक नाम देखा··· ··।

वह इसे बहुत ध्यान से देखता रहा। उसका दिल काँप गया।

उसकी स्त्री का नाम उस किताब में लिखा हुआ था। उसने हुजलर से पूछा :—

"मेरी स्त्री खर्च के लिये इस किताब में दस्तखत क्यों करती है ? क्या वह जेल मे है ?"

स्टीफैन ने उत्सुकता से उसके उत्तर का इतजार किया। लेकिन वह चुप रहा।

थोड़ी देर बाद फिर उसने अपने सवाल को दोहराया।

"क्या मेरी स्त्री गिरफ़्तार की गई है ?"

हुजलर ने सिर हिलाकर "हाँ" कहा।

"कब से ?"

"कल से।"

"वह कहाँ है ?"

"वह अपने साथ के कागजों को परेशानी से मरोडने लगा। वह स्वय इस गिरफ्तारी से विचलित हो रहा था। घर की तलाशी लेते समय बिल्कुल दृढ रहता था।

"डानर्ट कमरे के बाहर चला गया। मैं उसके पीछे-पीछे गई। हम मुश्किल से बरामदे तक गये होंगे कि हेर कार्ग दौडा हुआ आया।

"श्रीमती लॉरॉ। यह लो आज्ञा-पत्र। तुम अपने पति से बातचीत कर सकती हो"

"मैं . अपने पति से बातचीत ?" मैंने जवाब दिया। "मुझे डर है कि तुम्हे अधिक देर हो गई। हेर डानर्ट ने मुझे अभी २ गिरफ्तार किया है।"

कार्ग ने उत्तेजित स्वर मे पूछा, "क्या किस बात पर ? क्या सच-मुच तुम गिरफ्तार कर ली गई ?"

"हॉ, जेल जा तो रही हूँ।"

"कार्ग ने मुझे अचम्भे से देखा।"

"आज्ञा-पत्र, नमस्ते", मैंने कहा और मैं डानर्ट के साथ जेल में पहुँची। रास्ता तो पहले ही से खूब अच्छी तरह से जानती थी। मैं यहॉ पर पिछले दो महीने से स्टीफैन के वास्ते अखबार और रसद देने के लिये बराबर आती रही। अब मुझको भी उस कैद में रहना था।

"तमाम बात स्वप्न समान थी।"

× × × ×

"जेल मे वार्डर ने मुझे नगे हो जाने का हुक्म दिया। मैं चौक पड़ी। लेकिन उस स्त्री ने मुझ पर दया दृष्टि से देखा और कहा :—

"यहॉ हरेक को अपने कपडे उतारने पडते हैं। यह जेल का क़ानून है.... ।"

१९ मई

स्टीफैन की स्त्री की डायरी का एक पेज

"मालिक मकान ने लिखा था, "चूकि तुमने मकान का किराया अभी तक नहीं चुकाया है इसलिये तीन दिन के अन्दर मकान खाली कर दो।

"मैं परेशान थी। क्या करू ? इस सामान को कहाँ ले जाऊँ ? तीन दिन मे। मेरे पास धन न था। फर्म स्टीफैन के वेतन में से एक पाई भी न देता था। सामान खराब हो गया था। पुलिस मोटर उठा ले गई थी। मेरे पास बेचने को कुछ भी न था।

"अगर मैं स्टीफैन को लिख भर दूँ तो वह शीघ्र कोई न कोई उपाय अवश्य बता देगा। मै कोशिश करूगी। शायद मुझे उससे बातचीत करने की आज्ञा मिल जावे।

"मैं पुलिस के पास दौड़ी गई। मुझे हेर कार्ग कमरा न० १४७ में मिला। मैंने उसको मालिक मकान का खत दिखलाया और स्टीफैन से बातचीत करने की आज्ञा माँगी।

"कार्ग मेरे लिये आज्ञा-पत्र बनवाने के लिये राजनीतिक विभाग में चला गया।

"उसके चले जाने पर मैं बेंच पर बैठ गई और अखबार पढ़ने लगी। मैं स्टीफैन से बातचीत करने की खुशी मे फूली न समाती थी।

"अचानक ही दरवाजा खुला और हेर डानर्ट तपाक से कमरे मे घुसा। उसने गभीरता पूर्वक कहा।"

"श्रीमती लॉरॉ, मैं तुमको गिरफ़्तार करने आया हूँ।"

"क्या . .. तुम्हारा मतलब ?"

डानर्ट ने कहा, "तुम कैद हो।"

"जब उसे इस बात का विश्वास होगया कि मैंने कुछ भी नहीं छिपा रक्खा है, तब मुझको फिर कपड़े पहिनने की आज्ञा मिल गई।

"इसके बाद वह मुझको एक पड़ोस के कमरे मे ले गई। वह स्नानागार था। वहाँ उसने मुझे अकेले छोड़ दिया। मैं बैठ गई और इन्तजार करने लगी कि देखे अब क्या होगा ?

"थोडी देर बाद वार्डर आई और उसने मुझसे कहा :—

'तुम अकेली रहना चाहती हो या अन्य कैदियो के साथ मे ?'

"'मै अकेली रहना पसंद नहीं करती।"

"वार्डर फिर कमरे में से चली गई और दो स्त्रियो के साथ लौटी।

"हमारी परस्पर भेंट कराई गई और हरेक ने अपनी सहानुभूति प्रकट करने मे कोई कसर न छोड़ी। मैंने कहा कि मेरा नाम श्रीमती लॉरॉ है और वे सुनकर बहुत ख़ुश हुई।

'श्रीमती लॉरॉ ! मेरा नाम श्रीमती क्राइगर है, शायद तुमने मेरी बाबत सुना होगा।'

'हॉ, मेरा भी खयाल ऐसा ही है। क्या लेफ्टिनेंट क्राइगर और स्टीफ़ेन एक ही कमरे मे कई हफ़्तो से नही रह रहे ?" फिर मैंने मुसकुरा कर पूछा, "मुझे आशा है कि तुम मेरा सग नापसद नहीं करोगी ?"

श्रीमती क्राइगर हस पड़ी, "मुझे विश्वास है कि हम सब साथ-साथ आनन्द से रहेंगे।"

"मेरा नाम डोरा फैडरश्मिट है" दूसरी स्त्री ने अपना परिचय दिया।

"मैंने तुम्हारी भी बाबत बहुत कुछ सुन रक्खा है। तुमको नार एण्ड हर्थ के फर्म में नौकर रक्खा गया था ? मैं तुम दोनों के साथ रहने में बहुत खुश हूॅ। हम लोग एक तरह से पुराने मित्र हैं ?"

हम लोग स्नानागार मे बैठ गये और बातचीत करने लगे। थोड़ी

तुमने मुझे यहाँ भेजा ! हे परमात्मा .....” वह करीब एक घंटे तक कराहता रहा। फिर उसका विलाप समाप्त हुआ। वह सो गया।.....

× × × ×

गिरफ्तारी

९ मार्च १९३३। स्टीफैन लॉरॉ, सम्पादक म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस।

सुबह हो गया। स्टीफैन जागने ही वाला था।

ऐंडी ने धीमे से दरवाजा खटखटाया, “पिताजी, आप जग गये या नहीं?”

नन्हा-सा ऐंडी अपने पिता की खाट पर चढ़ गया। प्रतिदिन के अनुसार उसे प्रातःकाल का मधुर चुम्बन दिया और उससे शेर और हाथी की कहानी सुनने के लिये जिद करने लगा जिसे वह हर सुबह सुनता था।

“फिर शेर हाथी के पास गया और उससे बोला—भाई हाथी, मेरे राज्य पर सौ बंदरों ने धावा बोल दिया है और वे मेरी सब चीजें खाये जा रहे हैं। क्या तुम मेरी सहायता करोगे?”

“हाथी कुछ देर तक सोचता रहा। उसने अपनी सूँड से अपना कान खुजाया और बोला—अच्छा, मैं सोचूँगा कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ.. . ”

ऐंडी स्टीफैन से चिपक गया। वह अचम्भे से आगे का क़िस्सा सुनने लगा। उसे पूरी कहानी जबानी याद थी, पर वह उसे बार बार सुनना चाहता था।

आखिरकार कहानी समाप्त हुई। स्टीफैन ने दाढ़ी बनवाई और स्नान किया। और घर के बाहर चल दिया।

घर की तलाशी के समय मौजूद होने का डर न था और कोई भी मेरे पास अब नही आ सकता था। और चाहे कुछ भी हो, मगर अब मैं यहाँ शान्ति से रह सकती थी। बुरे विचार मन मे लाना मेरा कायरपन था। लेकिन मैं बहुत बुरी तरह से थकी हुई थी।

"मैने कपड़े उतारे और चटाई पर लेट गई। मैंने अपने कान जेल के बदबूदार कम्बल से ढक लिये जो कि मुझे रडियो के कमरे मे से मिला था। मैं फौरन सो गई, खूब सोई !

२० मई

स्टीफैन न्यूरा की खबर पाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन वह असफल रहा। उसे अपनी स्त्री को कुछ भी लिखने की आज्ञा नही थी। नात्सी हरेक तरह से उन दोनो का सम्बन्ध तोड़ना चाहते थे।

वे लोग एक ही जेल मे थे; सिर्फ २ मंजिल का अंतर था—लेकिन फिर भी कितने दूर !

न्यूरा के कमरे मे कौन है ? उसके साथ कैसा बर्ताव किया जाता है ? उसकी अभी सुनवाई हुई है या नही ?

इन सवालो के हल करने में स्टीफैन परेशान रहता। लेकिन उसे कोई भी जवाब नही मिलता।

स्टीफैन आज दिन भर बूढ़ी निरिक्षिका की तलाश मे रहा। जब वह रात को गिरफ्तार की गई वेश्याओ को बंद करने ले जा रही थी, उस समय मौक़ा पाकर स्टीफैन उसके पास गया और पूछा "न्यूरा कैसी है ?"

उसने जवाब दिया।

"तुमको इतना चिन्तित न होना चाहिए..... वह जरूर अच्छी तरह है......।"

देर के बाद वार्डर हमको लेने आई और कमरे में ले गई। मैंने घुसते ही देखा कि वह खाली रेल के डिब्बा की तरह है। कमरे मे बहुत बदबू थी। लेकिन मैं अब भी हसमुख बनी रही। मैं एक सच्चे राजनीतिक बन्दी की तरह आनन्द-रूपी लहरो मे गोते लगा रही थी।

श्रीमती क्राइगर ने मुझे कुर्सी बैठने को दी। उसने मुझे बतलाया कि यह उसने नहाने के कमरे मे से चुरा ली है। वार्डर को इसके बारे मे सब पता था, लेकिन उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन यदि कही पुलिस निरीक्षक यह देख ले, तो जान आफत मे पड जाय।

"मैं कुर्सी पर बैठ गई। कागज पेंसिल माँग कर मैंने अपनी नौकरानी को लिखा कि वह मेरे तीन सप्ताह के लिये नीचे पहिनने के और अन्य कपडे ले आवे। मुझे विश्वास था कि एक बार यहाँ आने पर मैं जल्दी नही छोडी जाऊगी।

"खत लिखकर हम सोने के इन्तजाम के बारे मे बातचीत करने लगे।

"कमरे मे सिर्फ एक ही चारपाई थी जो कि दीवार से सटी हुई थी और उस पर चटाई बिछी थी। वही सोने के लिये थी। हम सबने एक दूसरे के साथ सहानुभूति प्रगट करते हुये वह चारपाई एक दूसरे को देनी चाही। आखिरकार यह तै हुआ कि श्रीमती क्राइगर को यह दे देनी चाहिए। वह बहुत दिन से जेल मे थी। यह वाजिब था कि उसे सबसे अच्छा विस्तर मिले। वार्डर ने हमको दो मैले कम्बल दिये और सोने का सामान तैयार होगया।

पहली रात जेल मे सबसे अच्छी कटी क्यों गत ३ सप्ताहो में, १४ मार्च से, मुझे प्रत्येक दिन नई-नई आपत्तियो का सामना करना पडता था और हरेक रात को निराशा की आग मे जलना पडता था। जेल मे प्रथम बार मैं नाजियो की दुनिया से अलग हुई। अब दूसरे दिन मुझे

पुलिस वालो के रहने का घर बिल्कुल ठीक उनकी कोठरी के सामने थे। उन्होंने वहाँ दो लड़कियो को धूप खाते हुए देखा। उन्हे छज्जो पर गुलदस्तो मे खिले फूल भी दिखाई दिये। क्या बसंत आ गया! बेशक पेड हरे-हरे दीख पड़ते थे। मगर उन लोगो की तकदीर मे तो दीवाल देखना ही लिखा था। और वहाँ सामने छज्जे पर बसती-बसत है?

लड़कियाँ वहाँ बैठी-बैठी उकता गई हैं। धूप मे बैठने से उकता जाना? विश्वास नही होता—कैदियो ने सोचा,

दूसरी खिड़की से ग्रामोफोन की आवाज आई कितना सुन्दर गीत था।

गाना! गाना! इसके लिये तरस रहे थे। वे सुनते सुनते मस्त से हो गये।

वे अपनी चारपाई पर पडे २ स्वप्न देखते थे।

२२ मई

पिछला मन्त्री और शोसल डीमाक्रेटिक लीडर ऐलर्ड ऑर फिर गिरफ्तार हो गया। वह आरटिन वाले कमरे मे रक्खा गया है। यह दुर्भाग्य की बात थी। दो राजनैतिक नेता जो वर्षों तक एक दूसरे से झगड़ते रहे आज एक ही कमरे मे बन्द थे। शोसल डीमाक्रेटिक ऑर और राजवादी आरटिन आज से पास-पास सोते थे।

आज सुबह स्टीफैन ने ऑर से पूछा कि "तुम्हारा आरटिन के प्रति क्या विचार है।"

बुड्ढा आदमी जोश में था।

"वह आरटिन बड़ा अच्छा आदमी है। मुझे नहीं मालूम था कि वह इतना भला मानुस है।"

स्टीफैन की स्त्री कैसे है, यह स्वय स्टीफैन को ही पता नहीं चल सकता !

वह अपनी स्त्री के दुर्भाग्य पर पछताया। उसके मन मे आपत्ति-जनक बुरी २ बाते आने लगी वे सचमुच सच नही हो सकती। लेकिन क्यो क्यों वे उसे उसकी असली हालत नही बतलाते ?

आज के अखबार मे बवेरिया के मन्त्री को विदेशी प त्रकारो के बवेरिया मे आने के समय दिया हुआ भाषण छपा था :—

"मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। मुझे खुशी है कि अपनी मातृ-भूमि मे आपको दिखलाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है आपको नात्सियो का निर्माण किया गया नवीन बवेरिया दिखाया जायगा। आप देखेंगे कि हमने आपको दिखाने मे कोई भी बात नही छिपाई है। आप यह स्वय महसूस करेंगे कि बाहर के लोग जो कुछ हमारे बारे मे बुरा-भला कहते हैं वह बिल्कुल निर्मूल है। हम बवेरिया और जर्मनी वाले अपने भाइयो के लिये रोटी, काम और स्वतन्त्रता के अतिरिक्त और कुछ नही चाहते।

"हम संसार से न्याय के अतिरिक्त और कुछ नही मागते। हम लोग शान्ति चाहते हैं। और हमारी मागे ऐसी है कि जिनके मॉगने का अधिकार हरेक आदमी को है। जो कुछ आप यहॉ देखे अपने देश-वासियो को भी बतलावे—आपको यहॉ प्राकृतिक सौन्दर्य और स्वागत-शील मनुष्यो की नवीन सम्मिश्रण मिलेगा।"

२१ मई

फिर इतवार। वे लोग खाते, पीते, पढते, सोते और दिन भर स्वप्न देखते। बस इसके अतिरिक्त और कुछ नही। वे रात के सोने के समय की बाट देखा करते।

लेकिन उदासीनता भग करने के लिये यहॉ कुछ नई बात हुई !

वे बिना कुछ कहे घूमते रहे। स्टीफैन की आखे कमरों की खिड़कियों पर थी।

स्टीफैन जानता था कि न्यूरा का कमरा पहली मंजिल मे था। क्या वह रोशनदान के पीछे वही खड़ी थी? क्राइगर भी दीवारो की बड़ी दीवाल की तरफ घूर रहा था। क्या स्त्रिया पैरो की आहट सुनती होगी— उन्होंने सोचा। उन्होने और भी जोर-जोर से पैर पीटे।

वहाँ क्या था?

रोशनदान के पीछे कुछ हिल सा रहा था। दो हाथ सल्लाखों को मज़बूती से पकड़े हुए थे। क्या वे श्रीमती क्राइगर के थे अथवा न्यूरा के? यह बतलाना असम्भव था कि सल्ज़ाखो के पीछे कौन खड़ा हुआ था। कमरे मे अधेरा था।

फिर उन्हे सिर्फ एक हाथ दिखाई दिया। एक सफेद रुमाल उनकी ओर हिलाया जा रहा था।

वे व्यग्र हो उठे। वहाँ सिपाही वार्डर और पुलिस वाले उन लोगो की व्यायाम के समय निगरानी कर रहे थे। अगर वे इस रुमाल को देख ले तो उनकी स्त्रियो को कठोर दड मिले।

वे छिपाकर खिड़की पर झाकते। वे मुसकराहट जाहिर की। और इस तरह फिर स्त्रियो को भविष्य मे जल्दी ही मिलने की आशा दिलाते।

स्टीफैन की स्त्री की डायरी

"वार्ड मे आदमियो के चलने का शब्द हो रहा है। मेरे मन में यकायक विचार आया कि कैदी लोग व्यायाम कर रहे हैं। श्रीमती क्राइगर खाट से उठ बैठी। वह झाकना चाहती थी लेकिन खिड़की बहुत ऊंची थी। हमने खाट पर सदूक, तकिये और अखबारो का ढेर लगाया। हम इस ढेर पर चढ गये लेकिन व्यर्थ। हम अब भी बाहर न देख सके।

स्टीफैन की स्त्री कैसे है, यह स्वय स्टीफैन को ही पता नहीं चल सकता !

वह अपनी स्त्री के दुर्भाग्य पर पछताया। उसके मन मे आपा जनक बुरी २ बाते आने लगी वे सचमुच सच नही हो सक लेकिन क्यो क्यों वे उसे उसकी असली हालत नही बतलाते

आज के अखबार मे बवेरिया के मत्री को विदेशी प बवेरिया मे आने के समय दिया हुआ भाषण छपा था :—

"मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। मुझे खुशी है मातृ-भूमि मे आपको दिखलाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ नात्सियो का निर्माण किया गया नवीन बवेरिया दिख आप देखेंगे कि हमने आपको दिखाने मे कोई भी ब है। आप यह स्वय महसूस करेंगे कि बाहर के ल बारे मे बुरा-भला कहते हैं वह बिल्कुल निर्मूल है जर्मनी वाले अपने भाइयो के लिये रोटी, काम औ रिक्त और कुछ नहीं चाहते।

"हम संसार से न्याय के अतिरिक्त और कु शान्ति चाहते हैं। और हमारी मागे ऐसी अधिकार हरेक आदमी को है। जो कुछ वासियो को भी बतलावे—आपको यहाँ प्र शील मनुष्यों की नवीन सम्मिश्रण मिलेगा

२१ मई

फिर इतवार। वे लोग खाते, स्वप्न देखते। बस इसके अतिरिक्त समय की बाट देखा करते।

जेल भरपूर था। परसों १६६ दूधवाले और ग्वालिन दाम बढ़ाने के कारण से गिरफ़्तार हुए थे। स्त्रियों का बिलखना तमाम जेल में सुनाई पड़ता था। उनमें से बहुत सी डाचन के डेरे में आज भेज दी गईं।

फ्राइगर की आज पेशी हुई। जाच दो घंटे तक रही। उसको अपने जीवन भर का हाल लिखाना पड़ा। वह बहुत प्रसन्न था। वह स्वतंत्र पुरुषों की भाँति सोचने लगा। जाच कल भी होगी।

वे लोग खेल खेल रहे थे कि यकायक उन्होंने बरामदे में जोर की आवाज सुनी। ध्यान से सुनने पर मालूम हुआ कि डा० मासूर छोड़ दिया गया है।

काउंट ने फ्राइगर से कहा, "तुम दरवाजे से वह एन बातें नहीं सुन सकते। आओ चलो खेलें।"

लेकिन फ्राइगर बहुत ही उत्सुक था। उसने काउंट से कहा, "चुप रहो ...", वह बरामदे में की आहट को सुन रहा था।

काउंट स्ट्रार्कविज ने मेज पर घूसा मारकर कहा—"भविष्य में तुम फिर इस तरह से मुझ से बातें न करना।"

दोनों में झगड़ा होने लगा। स्टीफ़ेन ने उन्हें चुप करने की वृथा ही कोशिश की। खेल बन्द हो गया। फ्राइगर ने अपनी दो नींदें लाने वाली टिकिया खाईं और अपनी चारपाई पर लेट गया। उसने अपना मुँह जाकट से ढक लिया और चुप हो गया।

× × × ×

रात को पानी लाते समय उन्होंने सुना कि डा० मासूर को छोड़ दिया गया। बेचारे बुड्ढे को यह स्वीकार करना पड़ा कि वह नात्सी सरकार के सब कामों को ठीक समझता है। तभी वह छोड़ा गया। शुपिक ने उन्हें बतलाया कि जब डा० मासूर ने यह खबर सुनी कि वह छोड़

न हमारे पास कुर्सी थी न मेज थी जिस पर हम खडे हो सकते। हम परेशानी से कमरे मे इधर-उधर दौड़ने लगे। क्या करते ?

"बाहर पैरो की आहट हो रही थी। धम धम, एक, दो, धम धम। आदमी व्यायाम कर रहे थे। क्या हमारे पति भी वहाँ थे ?

हम उनको कैसे देखे ?

श्रीमती क्राइगर के दिमाग मे एक ख्याल आया। हम एक दूसरे के कधे पर चढ़ सकते थे। यह तै हुआ कि हममे से हरेक पाच मिनट तक सहन मे देखता रहे।

पहले श्रीमती क्राइगर मेरे कधे पर चढ़ीं। मैंने दिल मे सोचा कि हे भगवान्, कितनी भारी औरत है।

उसने खिड़की मे झाक कर कहा :—

"हमारे पति वार्ड मे हैं। वे एक दूसरे के पीछे चल रहे हैं।" मेरा दिल बुरी तरह धड़कने लगा। मैंने अपनी घड़ी को देखा। दूसरी तीन मिनट के बाद मैं स्टीफैन को देख सकूंगी। अब ढाई मिनट रहे। दो, एक। श्रीमती क्राइगर समय हो गया।

वह मेरे कन्धो पर से उतर पड़ी और अब मैं उसके कधो पर चढ़ी।

मैंने स्टीफैन को दूसरे जेलियो के साथ चलता हुआ देखा मैंने अपना रुमाल उसकी ओर हिलाया।

मैने हॅसने की चेष्टा की। मै उसके साहस को बढ़ाना चाहती थी।

हम चार बार एक दूसरे के कन्धे पर चढ़े। मेरे कन्धे सूज गये और दुखने लगे। वह किसी भी हिसाब से हलकी न थी। लेकिन मैंने स्टीफैन को तो देख लिया। वह मेरी तरफ हॅसा। शायद उसने कुछ सुना है। शायद वह जानता है कि हम कब छोडे जावेगे ?

× × × ×

प्रातःकाल वडा सुहावना था। सूर्य चमक रहा था। वसत की सुगध वायु को मतवाला वना रही थी। वृक्षों की शाखाओं पर छोटी-छोटी हरी-हरी कलियाँ खिल रहीं थीं। 'इगलिश गार्डिन' मे क्रॉकस खिलने ही वाले थे। उनके खिलते ही म्यूनिक के नागरिक एक दूसरे से कहेगे, "वसत आ गया! वसत आ गया!!"

स्टीफैन ने मैक्सिमीलियन मोनूमेट के पास ट्रैम छोड़ दी और सड़क पर धीरे-धीरे चलने लगा। सडक लगभग पूर्णतया खाली थी। होटल मे कुछ अमेरिकन युवक प्रवेश कर रहे थे। नेशनल थियेटर के सामने एक बुड्ढा फकीर वैठा-वैठा कबूतरों को खाना दे रहा था। चिडियाँ उड जाती और फिर आ कर उसके सिर और हाथों पर वैठ जाती।

शाति—पूर्ण और सुदर। म्यूनिक की शाति

स्टीफैन लॉरॉ 'नॉर एण्ड हर्थ' के फर्म के सामने जाकर खड़ा हो गया। इस फर्म मे दो हजार आदमी नौकर थे और एक दूसरे से घनिष्ठता के सूत्र मे वॅधे हुए थे। वे एक कुटुम्ब के सदस्य के समान हिल-मिल कर रहते थे। इसका मतलब यह नहीं कि उन सब के राज-नीतिक मत अभिन्न थे। खासकर जर्मनी मे ऐसा होना बहुत मुश्किल है। पर उनमे नात्सी दल के सदस्य या समष्टिवादी नहीं थे।

यह फर्म ४ अखवार निकालता था। पहले का नाम था म्यूकनिर न्यूस्टिन नैक्रीक्टिन। यह जर्मनी का शक्तिशाली दैनिक पत्र था और यह कजर्वेटिव, कैथोलिक और राजवादी था। इसके सम्पादक व्यूकनर का ब्रूनिग सरकार से घनिष्ट सम्बध था। इसको प्रमुख राजनीतक लेखक आरटिन ववेरियन रायलिस्ट लीग का नेता और क्राउन प्रिस रूप्रैन्ट (Rupprecht) का सलाह-कार था।

दिया गया है तो वह खुशी के मारे फूल गया। वह मारे खुशी के तैयार भी न हो सका। उस व्यग्र अवस्था मे उसने खाली बोतल अपने थैले मे रख ली, पाजामे की जेब मे अडे डाल लिये और अपने भजन को बखेर दिया।

शुपिक अपने कमरे के साथी से अलग होकर बडा दुखी हुआ। वे साथ २ उस कमरे मे सात सप्ताह रहे थे। उससे उसकी जानकारी हो गई थी। अब दिन मे दो बार उसके शरीर की डाक्टरी कौन करेगा ?

शुपिक रोगी था। भगवान ने डा० मासूर को उसके कमरे मे भेजा था। डाक्टर प्रति दिन उसकी परीक्षा किया करता था और उसे विश्वास दिलाया करता था कि वह बहुत मजबूत है और अभी बहुत वर्ष जीवित रहेगा।

२४ मई

फ्राइगर और काउट स्ट्राकविज आपस मे नही बोले। उन्होने तमाम दिन चारपाई पर पड़े २ चुपचाप किताबे पढ़कर बिताया।

आज दोपहर के बाद मालूम हुआ कि दूध वालो को छोड दिया गया। हिटलर ने स्वय उनके छोडने की आज्ञा दी थी। नात्सियो को बाद को पता चला कि उन्होने चीजो के दाम नही बढाये थे। उन्होने मक्खन पर नाम मात्र का मुनाफा लिया था।

२६ मई

कल रात से वार्डर का स्वभाव बहुत बदला हुआ सा लगता था। उनमे दयालुता तो नाम को भी नहीं रह गई थी। उन्होने मित्र भाव को छोड़ कर गभीर स्वभाव बना लिया था। अचानक ही ऐसा हुआ था। वे आदमी जो कल तक कैदियो के साथ मित्रता का व्यवहार करते थे आज वे उन पर चिल्लाते और बडबड़ाते। वे दरवाजो को खट-खटाते। और कैदियो के सवालो का जवाब तक न देते।

उसने वार्डर से स्ट्रास का पूरा नाम पूछा—

वार्डर ने जवाब दिया,

"यह वही आदमी है .....।"

डा० स्ट्राम कुछ सप्ताह पूर्व इस जेल से डाचन कैम्प में भेज दिया गया था। वहाँ से वह परलोक को गया। उसे मार डाला गया। कितना घृणित कार्य है! ज्यों ही डा० स्ट्रास पुलिस जेल से डाचन लाया गया, उसको अँधेरी कोठरी मे बन्द कर दिया गया। उन्होंने उसकी टागे तोड दी, मारते-मारते अधमरा कर दिया और उसको खाना नहीं दिया। अभागे को घोर दुख सहन करना पडा। फिर भी वह नही मरा।

उसने दो सप्ताह तक मृत्यु से युद्ध किया। उसके पश्चात् अत्याचारियो ने दो गोली उसके सिर मे दाग दी।

उसका शरीर कफन मे लपेट कर डाचन से हटा दिया गया। उसके सम्बन्धियों को आज्ञा दी गई कि वे कफन न हटावे।

लेकिन दफन करने से पहिले कफन हटाया गया। स्टीफैन ने एक आदमी से जिसने कि मृतक शरीर को स्वय अपनी आँखों से देखा था, इस विषय मे बाते की। मृतक की शारीरिक चोटों का वर्णन करते समय उसके रोम रोम काँप रहा था।

डा० स्ट्रास की वह माता अभी जीवित थी जिसको वह बहुत चाहता था। वही सिर्फ उसका इकलौता बेटा था। आनन्द से माँ बेटे साथ-साथ रहते थे। बेचारी दुखिया माँ को अपने बेटे की मृत्यु का समाचार इस प्रकार मिला :—

एक फौजी सिपाही ने उसके घर पर आवाज दी और उससे (माँ से) पूछा, "क्या यह सच है कि अक्सर उसके लडके को दिल की बीमारी हो जाती है?"

माँ ने सोचा कि अगर वह हाँ कह दे तो शायद उसे जल्दी छोड दिया जाय। उसने फौरन कहा—

उन्हे क्या हो गया ?

असल में राजनीतिक पुलिस ने उनके साथ कुछ खेचातानी की थी। डा० गैर्लिच के साथ किये गये कठोर व्यवहार का पता बाहर चल गया था और यह बात घर-घर मे फैल गई थी। उस सम्बन्ध का पत्र किसी वार्डर के द्वारा ही बाहर जा सकता था, अन्यथा नही।

इस सदेह के लगाये जाने पर वे बहुत क्रुद्ध हुए। उन्होने अपने बचाने का प्रयत्न किया। उन्होने इस बात पर जोर दिया है कि इतने दिनो की नौकरी में उन्होने सिवाय कानून के मुताबिक काम करने के और कोई हरकत नही की। लेकिन राजनीतिक पुलिस का अफसर इस बात को नही मानता था।

वह एकत्रित वार्डरों पर चिल्लाया।

"अगर फिर कभी ऐसा हुआ तो मैं तुम लोगो को जेल मे सड़ा दूँगा।"

इसी कारण से सब वार्डर बिगडे हुए थे। इसीलिए कैदियो के साथ भी कठोरता का व्यवहार किया जा रहा था। व्यायाम भी बन्द कर दिया गया। अब उन्हे तमाम दिन कोठरी मे बिताना पड़ता। चाहे जो कुछ हो, वे लोग हमसे डा० गैर्लिच के साथ किये गये दुर्व्यवहार का समाचार शहर मे पहुँचाने का भेद नही पा सकतेः—कैदियों ने सोच रक्खा था।

२७ मई

स्ट्राकविज आज का अखबार पढ़ रहा था। सहसा उसने स्टीफैन से पूछा—

"डा० स्ट्रास का पूरा नाम क्या था ? क्या तुम जानते हो ?"

"क्यों ?"

स्ट्राकविज ने उसे एक मृत्यु-समाचार दिखायाः—

"अल्फ्रेड स्ट्रास वकील की अकाल मृत्यु।"

उसके सिपाही उस दुखिया को सहन मे ले गए। उसे एक मोटर मे बैठाया गया। उसकी आँखो मे पट्टी बॉध दी गई और म्युनिच की सड़कों से वे इसको ले गये ताकि उसका घोर अनादर हो। सिपाहियों ने उसको पानी मे फेकने की धमकी दी। उन्होने उसको पीटा और अगली सुबह को वह अपनी जेल की कोठरी में वापिस लाई गई। उसकी हालत मृतक अवस्था से भी गई गुजरी थी।

ऐसी श्रीमती हीमर्ल की दुख कथा है, जो बिना निम्नलिखित घटना के पूरी नही हो सकती, जिसको मैंने स्वयं अपनी आखों से देखा। आज हम जेल के सहन मे व्यायाम कर रहे थे कि उसी समय पुलिस का चीफ हिमलर उस इमारत से निकला अपनी मोटर पर जा बैठा। श्रीमती हीमर्ल ने उसे ताका और चिल्लाकर कहने लगी, "यही है, यही है वह जिसने मुझे मारा था।" वार्डर दौडा और उसने फौरन् उस स्त्री को कमरे मे बन्द कर दिया।

३० मई

कल रात स्टीफैन स्ट्राकविज और क्राइगर नींद से यकायक चौक पडे। कोई सहन मे चिल्ला रहा था। क्राइगर खिडकी के पास दौडा गया। रोने की आवाज समय २ पर आती थी।

"आह .. आह.... आह!"

"वे आह की आवाज फिर आने लगी", क्राइगर ने निराशा से कहा—

"कोई पीटा जा रहा।"

"आह—आह—आह।"

चिल्लाहट दर्दनाक थी।

क्राइगर ने अपने कानों को बन्द कर लिया। "मैं इस आवाज को सहन नही कर सकता। हैं इस आवाज . " उसने कहा।

"हाँ, मेरे लड़के का दिल सदैव से कमजोर था।"

सिपाही ने कहा, "अच्छा, तो कल उसके दिल की गति यकायक रुक गई और वह इस कारण मर गया।"

२७ मई

स्टीफैन की स्त्री के डायरी से

श्रीमती हीमर्ल एक भटियारे की स्त्री है और उस पर यह लाछन लगाया गया है कि उसने वामर नामक समिष्टवादी नेता को शरण दी थी। वह स्टैंडिलहैम दो बार जा चुकी है; और न्यूडैक की जेल में दो बार उससे सवाल पूछे जा चुके हैं। लेकिन दोनो जगह से वह पुलिस जेल फिर वापिस लाई गई। मैंने उसको लौटने के बाद देखा। बेचारी दुखिया की दुर्गति थी। उसके हाथ और मुख सब सूज गये थे। उसकी आँखे लाल होगई थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। उसकी नाक से खून बह रहा था। वह दुख की प्रतिमा थी। मुझे उसके लिए कुछ गर्म पानी ले आने की इजाजत मिल गई। मैं उसके लिए एक साफ तौलिया लाई, उसके घावो को धोया और उन पर अच्छी तरह से पट्टी बाँध दी।

श्रीमती हीमर्ल ने हमको बतलाया कि कुछ दिन पहिले उसको पुलिस जेल कुछ सवालो का जवाब देने के लिए बुलाया गया था। वहाँ से पाच फौजी सिपाहियो के साथ वह अपने घर गई। रात को दस बजे का समय था। उसका पति, भटियारा, पहले ही सो गया था। वह जगाया गया। इसके बाद का दृश्य अवश्य ही भयानक होगा। क्योंकि वह स्त्री भी उस घटना को कहने लगती तो रो पड़ती। वह इतना रोती कि साफ-साफ बोल भी न पाती। इसलिये उसके घर मे क्या दुर्घटना हुई इसका मैं पता न लगा पाई। ११। बजे वह फिर वापस लाई गई। वह परीक्षा के कमरे मे ले जाई गई। एक अफसर ने उससे कुछ सवाल पूछे। उत्तर न मिलने पर उसने उस औरत के मुँह पर कोडे मारे।

नात्सी मत्री फ्रैंक के वियना जाने के कारण ही यह सब उत्पात हुआ। वहाँ पहुंचने पर आस्ट्रिया की सरकार ने उसे सूचित किया कि वह आस्ट्रिया मे कोई आम भाषण नही दे सकता क्योकि वे भयाप्रद थे।

इसलिये फ्रैंक को अपना मतलब बिना पूरा किए ही लौटना पडा। इससे जर्मनी के नात्सी प्रेस को बहुत बुरा लगा।

जर्मन राजनीतिज्ञो का विचार था कि आस्ट्रिया अपने आप ही जर्मनी से मिल जावेगा।

अगर वास्तव मे आस्ट्रिया मे नात्सी दल के हाथ मे शक्ति आ गई तब सब ठीक हो जावेगा। तब लीग आव नेशन या कोई बडा राष्ट्र कुछ भी नही कर सकता।

कूट नीतिज्ञों को कभी यह खयाल भी नही हुआ कि आस्ट्रिया जर्मनी मे शामिल न होने की बात सोच भी सकती है। उन्होंने सोचा था कि सब काम आसानी से हो जावेगा।

चासलर डालफस ने उन्हे इस आसानी से आस्ट्रिया को निगलने न दिया। उसने आम चुनाव होने पर जोर दिया और उसको महत्व-शाली माना। इससे नात्सियों मे बहुत कुछ हलचल मची।

इस्ब्रूक मे ६ मई को दगे हुए। क्रिश्चियन शोसलिस्ट पार्टी के जलसे को नात्सियो ने गडबड करने की कोशिश की। मगर सिपाहियो ने अपने रबड़ के हटरो को खूब इस्तेमाल किया। फौज ने अपनी मार से नात्सियों को मार भगाया।

जर्मनी के अखबार ने प्रकाशित किया कि इस्ब्रक में बहुत बेचैनी फैल रही है और परिस्थिति बहुत नाजुक है।

डाल्फस ने इस आस्ट्रियास्थित अखबार को इस प्रकार की डरावनी खबरें छापने के अपराध मे जब्त कर लिया।

लेकिन झगड़ा बढ़ता गया। जर्मनी मे खलबली मच गई। आस्ट्रिया की तबियत ठीक करनी चाहिये। मगर कैसे?

स्ट्राकविज़ और स्टीफैन एक दूसरे को देख रहे थे। स्टीफैन का शरीर काँपने लगा। कोई नीचे पीटा जा रहा था। हम यहाँ असहाय हैं; हम उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते—इन तीनों ने सोचा।

चिल्लाने का शब्द रुका लेकिन फिर शुरू हो गया।

"आह—आह—आह।"

उनके सिर घूमने लगे। किसी को पागल बनाने के लिये यह सब काफी था।

क्राइगर ने कान लगाकर सुना। सहन में चिल्लाने की आवाज अब कुछ बदली सी मालूम पड़ती थी। नीचे बिल्ली बोल रही थी।

वे तमाम रात न सो सके। वे बिल्ली की आवाज को आदमी की आवाज समझ कर बहुत डर गये थे। उनकी नसें इतनी कमजोर हो गई थी कि वे अब जरा सी भी तकलीफ बरदाश्त नहीं कर सकते थे।

३१ मई

आज प्रातःकाल फौजी सिपाही डा० वैज को लेने आये।

उसको अचानक ही स्टैडिलहीम के जेल में भेज दिया गया। यह बेचारे के लिये बहुत बुरा था।

वह ग्रीक भाषा में अपने कमरे की दीवाल पर लिखा छोड़ गया था—

"कष्ट सहन करना शिक्षा प्राप्त करना है।"

उसी के नीचे उसने अपने जेल में रहने का समय लिख दिया।

"२६ मार्च से १५ अप्रैल तक और १४ मई से ३१ मई तक।" उसने इसी रूप में अन्य कैदियों से बिदा ली।

× × × ×

पत्रों में आस्ट्रिया के विरुद्ध सप्ताहों से प्रोपैगेंडा हो रहा है।

"१० साल पहिले हिटलर की बगावत के समय मैंने १५ नात्सियों का खून किया। ऐसा नात्सी कहेगे। और मुझे फांसी का दड देंगे।"

अन्य कैदियो ने उसे बहुत सात्वना दी। लेकिन वे स्वय उसके लिये चितित थे। गोबिल्स अपने साथियो से कहेगा, "महाशयो, आप लोगो के सामने वह आदमी मौजूद है जिसने दस साल पहिले नात्सियों पर गोली बरसाने का हुक्म दिया था। हमने उसको गिरफ्तार कर लिया है। अब हम अपनी निरपराध पार्टी के खून का बदला लेगे। उसको इसका दड अवश्य भोगना पडेगा।"

१० साल पहले बैरन गाडिन पुलिस का अफसर था। ६ नवम्बर, सन् १६२३ को हिटलर की बगावत के दिन म्युनिच मे उसको हुक्म मिला कि वह आडिस्प्लाज के शहर मे १०० सिपाहियो को लेकर जाये। और नात्सियो के जलसे को भग कर दे। उस भीड़ के नेता हिटलर और लुडेडर्फ थे।

अचानक भीड़ मे से गोली के छूटने का शब्द हुआ। गाडिन सबसे आगे था। वह गोली चलाने का हुक्म देने मे हिचक रहा था। उसने गोली चलाने की आज्ञा नही दी। लेकिन उसके आदमी उतावले हो गये। अचानक ही सब दिशाओं मे गोलिया चलने लगी।

१५ नात्सियो के शव जमीन पर पडे रह गये। हिटलर भाग खडा हुआ। लुडेडर्फ गायब हो गया। नात्सियो की शक्ति कुचल दी गई।

आज दस वर्ष बाद वही पुलिस का अफसर गिरफ्तार कर लिया गया था। और उसे अपनी हरकत के लिये दड दिया जाने वाला था। जाच के समय उसने व्यर्थ ही प्रार्थना की कि वह केवल आज्ञा का पालन कर रहा था और उसके बडे अफसर ने किसी न किसी तरह से उस जलसे को भग करने का हुक्म दिया था। लेकिन फिर भी गाडिन को कैद मे डाल दिया गया।

ऐसा जबरदस्ती या शक्ति से किया जा सकता। इसलिय उनकी आर्थिक मार द्वारा ऐसा करने पर मजबूर करना चाहिए।

बस, जर्मनी से कोई भी आस्ट्रिया न जावे। इस तरह आस्ट्रिया का आवागमन का व्यापार बन्द हो जावेगा।

जर्मनी के अखबारो में छपा।

"डाल्फस के अत्याचारी कार्यों का जर्मनी का यह जवाब है। पहिली जून से आस्ट्रिया मे स्थित जर्मनो की रक्षा, आस्ट्रिया जाने के लिये आज्ञापत्र लेना और १००० मार्क्स का टैक्स देना जरूरी है।"

१ जून

वैरन आरटिन के कमरे मे परसों एक कैदी आया। उसका नाम वैरन गाडिन था।

उसको जर्मनी और आस्ट्रिया की सीमा पर गिरफ़्तार किया गया था। गाडिन का घर आस्ट्रिया की सीमा पर था। वह अक्सर किसी काम से या मित्रो से मिलने के लिये जर्मनी आया करता था। क्रान्ति के बाद वह कई बार अपनी मातृ-भूमि आया था उसे ख्याल तक न था कि उस पर आफत आ सकती है।

और अब वह हवालात मे है।

खाकी सूट पहिने वह बरामदे में परेशानी में घूम रहा था।

"अगर मैं जर्मनी न आया होता ।"इसी बात को वह बार बार दुहराता रहा।

अभी वह जेल रोग के प्राथमिक दर्जे में था जब कि रोगी केवल यही सोचता है कि किन २ उपायों से वह जेल से बच सकता था।

वह तमाम दिन परेशान रहता। जितना अधिक वह अपनी गिरफ़्तारी के बारे मे सोचता है उतना ही वह अधिक दुखी होता। उसका विश्वास था कि वह इस जेल से जीवित नही जावेगा।

"अन्यायियो, तुमने मुझको इस तरह बन्द क्यों कर दिया?" उसने चिल्ला कर कहा—

उसका साहस छूट गया। स्टीफैन सब कुछ देख रहा था। लेकिन वह चुप रहा। वह चाहता था कि क्राइगर यदि स्वय ही सभल जावे तो अच्छा हो।

स्ट्राकविज ने उसको चुप करना चाहा।

उसने कहा, "इस तरह से जीवन बिताने मे कोई लाभ नहीं।"

क्राइगर का तमाम गुस्सा अब स्ट्राकविज पर उतरा। उसने कहा:—

"मुझसे इस तरह बाते न करो। मैं चार साल तक पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध मे लड चुका हूँ।"

स्ट्राकविज ने कहा, "तो क्या हुआ?"

"पश्चिमी और पूर्वी मोर्चों पर लडने वालों मे बहुत भेद होता है।"

यह बात स्ट्राकविज को चिढाने के लिये कही गई थी, क्योंकि स्ट्राकविज पूर्वी मोर्चों पर लड़ा था।

फिर वे इस बात पर वाद-विवाद करने लगे कि पिछली लडाई में हार किसके कारण हुई। क्राइगर ने कहा कि यह सब कसूर आस्ट्रिया वालों का था। स्ट्राकविज इस बात को सहन न कर सका। आस्ट्रिया की रैजीमेंट के अफसर का यह विचार था कि कि उस लड़ाई की हार के लिये जर्मन ही उत्तर दायित्व हैं।

स्टीफैन ने उनमे मेल-मिलाप कराना चाहा। लेकिन उन्होने उसकी बात पर ध्यान ही न दिया। वे आपस मे वाद-विवाद करते रहे और एक दूसरे को चिढाते रहे।

स्ट्राकविज ने कहा, "हरेक जगह सब तरह के अफसर होते हैं; कुछ निडर और कुछ डरपोक।"

अन्य वर्तमान पुलिस के अफसर गार्डिन की गिरफ्तारी के कारण परेशान हो उठे।

"अगर ऐसा ही कायदा बना रहा तो इसका मतलब यह है कि हम भविष्य में अपना कर्तव्य पालन नहीं कर सकते।" उनमें से एक ने कहा, "अगर दूसरी पार्टी का राज्य हो गया तो अपने पूर्व के हाकिमों की आज्ञा मानने के कारण हमको भी जेल मे बन्द कर दिया जावेगा।"

दूसरे वार्डर ने कहा, "पुलिस मैन का काम ही आज्ञा मानना है। अगर हम सिर्फ आज्ञा पालन के ही लिये जेल में डाले जाया करेंगे, तो फिर क्या होगा ?"

× × × ×

वैरन आरटिन को स्टैडिलहैम को जेल मे भेज दिया गया। उसके कुटुम्बियों के प्रार्थना करने पर राजनीतिक पुलिस ने उसे यह सुविधा दी थी।

लेकिन वास्तव मे वहाँ वह दण्ड के तौर पर भेजा जा रहा था। राजनीतिक पुलिस को सन्देह था कि आरटिन ने ही डा० गैर्लिंच के साथ किये गये दुर्व्यवहार का पत्र लिख कर बाहर भिजवाया था।

आज व्यायाम करते समय सब लोग बहुत दुखी थे। उन्हे आरटिन की बहुत याद आती थी। वह उनका बहुत अच्छा साथी था—समझदार और बुद्धिमान! अब वे उससे फिर कब मिलेंगे ? और कहाँ ?

जब चलने का समय आया तो उन्होंने उनके हाथ को प्रेम पूर्वक दबाया—"फिर मिलेंगे !" ईश्वर करे वह समय जल्दी आवे।

२ जून

क्राइगर 'पागल की तरह दरवाजे पर झपटा। उसने अपनी मुट्ठी लोहे के दरवाजों पर दे मारी। जेल शब्द से गूँज उठा।

क्राइगर ने गरज कर कहा, "इससे तुम्हारा मतलब ?"

स्ट्राकविज ने शान्ति पूर्वक उत्तर दिया, "मेरा मतलब इससे यह है कि तुम कमजोर हो। और तुम अपने को सँभाल नही सकते और अपने पड़ोसियो को भी कमजोर बनाते हो।"

क्राइगर को यह बहुत बुरा लगा। उसने चिल्ला कर कहा, "मैं बच्चा नही हूँ॥ मैं तुम्हारा व्याख्यान नही सुनना चाहता।"

स्ट्राकविज ने शान्ति-पूर्वक कहा:—

"मैं तुम्हे व्याख्यान नही सुनाना चाहता। मैं तुमको मित्र की हैसियत से एक सलाह देना चाहता हूँ। तुम सदैव अपने को ससार के सब से बड़ा आदमी मत समझो। नही तो जेल से निकलने के पहले तुम पागल हो जाओगे।"

इस उचित वाक्य से क्राइगर प्रभावित हुआ। वह सोचने लगा। बहुत देर तक कोई न बोला। क्राइगर मित्रता रूप मे इस वाद-विवाद को समाप्त करना चाहता था। आखिरकार उसने धीरे से कहा:—

"हम दोनो अड़ियल टट्टू हैं। हरेक अपनी २ बात पर डटा रहता है।"

दोनो का गुस्सा शान्त हो गया। फिर शान्ति हो गई।

२ जून

स्टीफैन की स्त्री के डायरी से

दोपहर के बाद एक दिन जब हम लोग व्यायाम कर रहे थे हमने उसे पहली बार देखा। वह हृष्ट-पुष्ट थी परन्तु रोते-रोते उसकी आँखे लाल हो गई थी। वह हमारी ओर शून्य दृष्टि से निहार रही थी। फिर उसने हमे बतलाया कि वह भी एक राजनैतिक बन्दी है यद्यपि उसने कोई भी राजनीतिक अपराध नही किया। दो रात उसको वेश्याओं के कमरे मे भूल से रखा गया था। दूसरे दिन स्थान की कमी के कारण उसको हमारे कमरे मे रख दिया गया। इस प्रकार एक कोठरी मे हम

इसके विरुद्ध, इस फर्म के साप्ताहिक पत्र और इसके सम्पादक शूपिक की नीति लोकतन्त्रवादी और लिबरल थी।

शाम को निकलने वाले पत्र का नाम टैलीग्राम जीटग था और इसका सम्पादक रेव था। इसकी नीति कुछ-कुछ समाजवादी थी।

फर्म का चौथा पत्र 'म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस" था। यह दक्षिणी जर्मनी मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण सचित्र साप्ताहिक पत्र था। यह राजनीति से बिल्कुल अलग रहता था। वैसे इसका नात्सीवाद मे विश्वास न था। यही बात जर्मनी के अन्य बडे-बडे अखबारो के विषय मे भी कही जा सकती थी। इसका सम्पादक था स्टीफैन लॉरॉ।

इन विरोधों के रहते हुए भी चारों पत्र एक ही फर्म के थे और सब में बहुत घनिष्टता थी। वे सब जर्मनी को प्यार करते थे और जो कुछ करते थे जर्मनी के भले के लिये करते थे।

स्टीफैन अदर आया। लिफ्ट ने उसे उसके आफिस में पहुंचा दिया। उसकी चिट्ठियॉ उसकी मेज पर पड़ी हुई थीं। ससार के कोने-कोने से पत्र, फोटोग्राफ और तार आये हुये थे। उसके टाइपिस्ट अपनी-अपनी कापियॉ लिये हुये तैयार थे। स्टीफैन ने लिखाना शुरू किया। ....

कम्पोजिटर के कमरे से प्रूफ आने लगे। उसके कमरे का दरवाजा बार-बार खुलता और बद होता। रह-रह कर कोई आदमी अन्दर आता, और मेज पर कुछ चीज रख कर अदृष्य हो जाता।

टैलीफोन की घटी बजी। पैरिस के एक बड़े अखबार के प्रतिनिधि ने पूछा, "जर्मनी मे क्या होने वाला है ?"

"कुछ भी तो नहीं," स्टीफैन ने उत्तर दिया, "सब बाते साधारण तौर पर हो रही हैं।"

जीवन बिता रही है। लेकिन लीज ने यह सुनकर अपने हाथ पटक कर पूछा कि वह क्या बकवाद कर रही है। उसने कहा कि वह मामूली-तौर से हरेक ऐरे-गैरे के साथ काम करने को तैयार नही हो जाती। जो कुछ वह करती है वह यह······या वह · · !

"इस कहानी को सुनकर ही बेचारी स्त्री लगभग बेहोश हो गई चूंकि उसका लीज को सुधारने का उद्योग पूर्णतया निष्फल हुआ।

"और तब उस स्त्री ने, एक और कहवे के प्याले को पी लेने के बाद कहा कि वहाँ पर अर्थात् वेश्याओ की कोठरी में एक दूसरी स्त्री भी थी जो तमाम रात ऊपर के कमरे के एक सैपिल नामक बर्दा से बात करती रही।

"ओ सैपिल! लड़की ने पुकारा, "अरे तुम फिर यहाँ आ गये ?"

"हाँ" उसने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे टहलुआ बनकर आया हूँ !"

"अच्छा ! इस बार तुम्हे क्या इनाम मिला ?"

"ज्यादा नही, सिर्फ २ साल। कल स्टैडिलहाइम जेल जा रहा हूँ। वहाँ मुझसे मिलने आओगी न ?"

"हाँ, मैं आऊँगी. सैपिल।"

"अब तक तुम कहाँ थी ? तुम्हारा क्या हुआ ?"

"चूल्हे से निकाल कर मै भाड़ मे झोक दी गई।"

"तब तुमको किसने सताया ?"

"एक अन्यायी ने ··।"

"कैसे ?"

"चुप, शैतान ··।"

"अच्छा, अच्छा ! अब खुश हो जाओ ····।" पीछे से हँसी का शब्द आया।

"अच्छा, भूलना मत वह बात—हाँ······।"

लोग चार व्यक्ति हो गये हैं। जेल की बूढी दीवालो ने शायद ही किसी और दिन इतनी हँसी सुनी हो ?

"पहली तै करने की बात यह थी कि यह नई स्त्री कहाँ पर बैठे। उसका शरीर इतना भारी था कि उसे फर्श पर पडी हुई चटाई तक झुकना कठिन था। हमारे कमरे मे केवल एक ही कुर्सी थी जो मेज की तरह इस्तेमाल होती थी। इसके अलावा यदि वह कुर्सी पर बैठती तो वह उसके बोझ के कारण टूटे बिना न रहती। केवल एक ही बात सम्भव थी—हमारे पानी का बर्तन का प्रयोग। मैंने उसके बर्तन को उलट करके उसके सिरहाने पर तकिया लगा दिया और अब यह उसके लिये बडी अच्छी बैठने की जगह बन गई।

"हमने उस बेचारी को जितना भी आराम दे सकते थे, देने की कोशिश की। उसको कुछ कहवा मगा कर दिया और उसको यह सुनाकर खुश किया कि वह ६० दिन से अधिक जेल मे किसी भी दशा मे नही रक्खी जा सकती।

"तब उस अभागिन ने अपने दुख की कथा सुनाई। उसको एक दिन सन्ध्या के समय गिरफ्तार किया गया और राजनैतिक कैदी की तरह उसको ले जाया गया। एक वार्डर ने भूल से उसको पुलिस हैडक्वार्टर्स मे वेश्या समझ कर वेश्या के कमरे मे बन्द कर दिया। वह—पवित्रता की देवी—एक वेश्या के कमरे मे। यह बात ऐसी बुरी थी कि उस धर्म की मूर्ति के हृदय पर बडा भारी धक्का लगा। और वहाँ उसने क्या देखा ! नहीं, ये बाते वह कोशिश करने पर भी हमे नही बतला सकी। वे शब्दो के लिये बहुत भयातुर है।

"उदाहरण के लिये, वहाँ पर एक लडकी थी, जिसका नाम लीज़ था जो कि वहाँ की समस्त स्त्रियो मे अच्छी प्रतीत होती थी। वह इस लड़की के पास गई। वह उसका सुधार करना चाहती थी। वह लीज को इस बात को समझाना चाहती थी कि वह कैसा पाप पूर्ण

दिये थे। परन्तु उसको इस बात का पता न था कि वे सज्जन वहाँ पर किस लिए गये।

फिर अचानक उससे पूछा गया क्या हिटलर के लैंड्सवर्ग आने पर उसने हिटलर को गाली दी थी? हीर्ल वास्तव में कुछ साल पहले उस मोटर की ड्राइवरी कर रहा था जिसमें हिटलर लैंड्सवर्ग की जेल मे ले जाया गया था।

जाच समाप्त होने पर हीर्ल बहुत रंजीदा हालत मे अपने कमरे मे वापस आगया।

उसने कहा, मैं महीनो बाद छोड़ा जाऊगा। वे मेरे विरुद्ध न जाने कैसे-कैसे अपराध लगा रहे है।"

उस दिन ६ बजे वार्डर आया और हीर्ल से कहा कि वह छूट गया—वह जा सकता था। हीर्ल को पहले-पहल इस बात पर विश्वास ही न हुआ।

उसने कहा "क्या मैं वास्तव मे अपनी चीजें अपने साथ ले जा सकता हूँ—अपना थैला, कम्बल और हरेक चीज?

उसने अपने कमरे को इस तरह छोड़ा मानो कि वह नीद में चल रहा हो।

× × × ×

डा० ऐफ०, जिसने बहुत सी जर्मन स्त्रियों के साथ सभोग किया था, को भी निम्नलिखित शर्तों पर छोड़ दिया गया :—

(१) फिर कभी किसी जर्मन स्त्री के हाथ न लगाना।

(२) अपनी कैद की अवधि किसी को न बताना।

(३) अपनी मोटर के सम्बन्ध मे जुर्माना देना।

जब सुपरिंटेंडेंट आस्टवर्ग को डा० एफ० के छूटने का हाल मालूम हुआ तो वह पागल सा होगया।

"उस स्त्री ने इस सम्भाषण को वेदना से कई बार दुहराया और फिर इसके बाद वह चुप हो गई।"

३ जून

जेल से अचानक बहुत से कैदी छूटे। आज प्रातःकाल स्टीफैन के कान मे जेल के नौकर इग्नाज के, मोटी भद्दी आवाज मे, ये बचन पडे।

"हम सिर्फ ६३ कैदी चाहते हैं।" यहाँ पर केवल ६३ कैदी थे। इतने थोडे कैदी इस जेल मे कभी नही रहे। अब तक कैदियो की सख्या हमेशा १५० के लगभग रही। क्या यह शुभ दिन की निशानी है ? क्या अब वास्तव मे मुसीबतो का अन्त होनेवाला है ? या राजनीतिक पुलिस ह्विटसन त्यौहार के उपलक्ष मे जेल खाली कर रही है ? ये विचार कैदियो मे आने लगे।

कल स्टीफैन के फर्म का ड्राइवर हाहर्ल छोड़ दिया गया।

शाम को उसकी जाच हुई। उससे पूछा गया कि उसने वैरन हाहम की मोटर के पेच ढीले क्यो कर दिये थे। परन्तु वह डर के मारे कुछ भी जवाब न दे सका। अन्त मे उसने कहा, "मुझे किसी भी मोटर के पेचो के ढीले करने का पता नही है।" उससे पूछा गया कि दो साल पहले वह डाइरेक्टर डा० वैज को प्रान्तीय सीमा के बाहर मोटर मे क्यों ले गया था। और दो सताह पहिले वह वैरन हाहम, हासलीटर और डा० वेडलर को इतनी तेज मोटर मे गार्मिश नामक स्थान को क्यों ले गया था। क्या उसने यह नही देखा कि दूसरी मोटर उसका पीछा कर रही थी ? हॉ, उसने यह देखा था, उसने उत्तर दिया। लेकिन उसने इस विषय मे कुछ भी सोच विचार नही किया था। और हर डा० वैंडलर के बारे मे वह जानता था कि हासलीटर और डा० वैंडलर का राजनीतिक पुलिस से सम्बन्ध था और वैरन हाहम की दोनों व्यक्तियो से मित्रता थी। हाहम ने मोटर यात्रा समाप्त होने पर उसे २० मार्क्स

को यह डिब्बा मिला। उसने फौरन् चोकोलेट को अपने साथियों मे बॉटना शुरू कर दिया। उसके हरेक साथी को एक एक चोको-लेट मिला।

स्टीफैन के पास केवल दो बचे। बिना किसी प्रकार का भ्रम किए हुए उसने चोकोलेट पर लगा हुआ कागज़ खोला। और वह काग़ज़ फेकने ही वाला था कि उसकी दृष्टि एक छोटे से कागज़ के टुकड़े पर पड़ी जो कि उसके निचले भाग मे रक्खा हुआ था। इसमें नन्हे २ अक्षरो मे कुछ लिखा हुआ था। वह न्यूरा का संदेश था।

उसने लिखा था:—

"मुझे सदैव ऐसा आभास होता है कि तुम मेरे पास हो, हालांकि हम अलग हो गये हैं। मैं आपका साथ देने मे बहुत खुश हूॅ। मै हर समय आपके साथ हूॅ। मुझे नही मालूम कि मैं जेल मे क्यों हूॅ। मुझे कुछ भी नही बतलाया गया।"

उसकी गिरफ्तारी के बाद उसका यह पहिला संदेश था।

स्टीफैन बरामदे मे दौड़ा गया और उसने दूसरे कागज़ के टुकड़ो को भी इकट्ठा किया जिनको कि उसके साथियों ने लापरवाही से फेक दिया था। लेकिन उनमे उसे कुछ भी न मिला।

५ जून

जेल मे कभी इतने कम कैदी नही रहे थे। ३८, ४०, ४२, ४३, ४४ और ४५ नम्बर के कमरे बिल्कुल खाली थे। पिछले दिनो मे बहुत से आदमी छूट चुके थे। सिर्फ स्टीफैन और उसके साथी तथा अन्य थोड़े से अभागे क़ैदी ही रह गये थे।

शुपिक अब भी ३७ नम्बर के कमरे में था। हैन्स लैक्स और रशियन पैट्रोलियम कम्पनी की म्यूनिच शाखा के मैनेजर भी उसी के साथ थे।

"उन्होंने एक यहूदी सुअर को छोड़ दिया और वे भले मानुषों को यही रख रहे हैं।"

वह डा० एफ० के पीछे दौड़ा, उसको सीढियों मे जा पकड़ा, और उसको एक व्याख्यान सुनाया :—

"डा० एफ०, मैं तुमको बताए देता हूँ कि अगर मैंने फिर कभी तुमको एक जर्मन लडकी के साथ देखा तो मैं तुम्हे हिजडा बना दूँगा—समझे।"

डा० एफ० जेल को छोडने मे बहुत खुश था। आस्टवर्ग की धमकाहट से उसके कानो पर भी जू न रेगी। फौजी सिपाही चाहे जितना उसे कोसे परन्तु वह स्वतन्त्र था।

४ जून

आज ह्विटसनडे त्यौहार था। स्टीफैन ने गत सप्ताह मे कितनी बार यह सोचा कि यदि वह स्वतन्त्र होता तो इस दिन को कितने ठाट बाट से मनाता क्योकि उसे विश्वास था कि इस त्यौहार तक वह छोड़ दिया जायगा।

गिरजे के घटे बजने लगे और वे ह्विटसनडे त्यौहार के आगमन की सूचना देने लगे।

और स्टीफैन अब भी जेल मे बद था!

उसे आज बहुत आश्चर्य हुआ जब कि उसे उसकी स्त्री न्यूरा ने व्हिटसनडे के उपलक्ष मे चोकोलेट का एक डिब्बा भेट भेजा।

कैदी परस्पर पत्र व्यवहार नही कर सकते और न एक दूसरे को कोई चीज ही भेज सकते थे। परन्तु अब न्यूरा लगातार जेल मे रहते-रहते जेल की पक्की हो गई थी और वह जान गई थी कि चीजे किस प्रकार से भेजी जाती हैं।

जब कि वे बरामदे मे व्यायाम कर रहे थे उसी समय स्टीफैन

बाद हमने यह चर्चा चलाई कि अगर हम तीनो को शासन-यत्र का अधिकार मिल जावे तो हम नात्सी नेताओं के साथ कैसा व्यवहार करेगे। मेरी युक्तिया बहुत भयानक थी। वे रक्त पिपासा पूर्ण थी। परन्तु श्रीमती 'क्राइगर न्यायपूर्ण व्यवहार के पक्ष मे थी। डोरा मुझसे सहमत थी परन्तु वह इतनी भयानक वृत्ति की न थी जितनी कि मै। उसका विश्वास था कि नात्सी उन्नति की बाढ़ रुक गई है। इसी समय दरवाजा खुला। इन्सपेक्टर फ्रैंक सामने खड़ा था। वह देखने मे क्रोधित मालूम होता था।

उसने डोरा से कहा :—

"जल्दी तैयार हो जाओ। तुम्हे स्टेडिलहैम जाना है।"

डोरा पीली पड़ गई और वेहोश सी हो गई।

"लेकिन क्यो ?…क्यों फ्रक महाशय ?" उसने भय से आहत अवस्था मे पूछा। फ्रैंक ने कहा, "मैं स्वय नही जानता। ऐसी ही हिदायत है।" थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहा, "तुम ३ बजे तैयार रहना।"

फ्रैंक कमरे से चला गया। डोरा के सामान को बाधते वक़्त हम ख़ूब रोये।

डोरा स्वय मेरी चटाई पर लेट गई और फफक-फफक कर रोती रही।

"देखती हो, मैं जानती थी कि ऐसा ही होगा .....अब और भी बुरा समय आने वाला है . इन लोगो ने अभी तक हमारा पीछा नही छोड़ा है।"

हमने कुछ न कहा। हम उसको छुटकारे का किस तरह यकीन दिला सकते थे ? हम उसे स्टेडिलहैम जाने का क्या मतलब होता है, यह कैसे बताते ?

कौन बतला सकता था ? शायद कल को हमारी ही बारी हो। शायद हमारे पति स्टेडिलहैम में पहुँचा भी दिये गये हों। हमे कुछ भी पता नही... और वे हमे कुछ बताने भी क्यो लगे ?

वैंक अब एक कैमिस्ट के साथ ३६वे कमरे मे था जो कि यहाँ पर कल स्टेडिलहैम से लाया गया था।

डा० अर्स्ट अब भी अपनी पुरानी कोठरी नम्बर ४६ मे था। स्टीफैन, काउट स्ट्राकविज और फ्राइगर ४७ नम्बर के कमरे मे बन्द थे।

यही चौथी मजिल के राजनैतिक कैदियों की फहरिस्त थी।

कैदियों की कम तादाद ने इन शेष बदियो के हृदय मे आशा की ज्योति जगा दी थी। वे आनन्द मे मग्न थे। उन्हे विश्वास था कि उनके छूटने के दिन भी अब समीप हैं।

× × × ×

आज दोपहर के बाद ३६ नम्बर के कमरे वालो ने नम्बर ३७ के कमरे वालो के साथ शतरज खेली।

यह अनोखा खेल था। खेलने वाले एक दूसरे को नहीं देख सकते थे। वे अपने २ कमरो मे बन्द थे। सलाखदार खिडकियो मे से वे अपनी चाले बोलते जाते थे।

दोपहर बाद तमाम दिन वे अपनी-अपनी चाले बोलते रहे।

खिलाड़ी अपने-अपने कमरो मे दूर बैठे हुए थे। वे तख्ते की ओर देख रहे थे। गोटो को चलते थे, और खिडकी मे से अपनी चाले बोल-बोल कर बताते थे।

आज उन्हे किसी बात का डर न था। आज त्यौहार था। इने-गिने वार्डर वहाँ मौजूद थे। खिलाडियो की तरफ किसी ने भी ध्यान न दिया। बहुत रात तक दोनो कमरेवाले शतरज खेलते रहे। जेल मे गोटो के नाम गुजारते रहे।

५ जून

स्टीफैन की स्त्री के डायरी से

"आज का दिन हमेशा की तरह आरम्भ हुआ। कलेवा करने के

"क्या म्यूनिक मे शाति है ?"

"बिल्कुल",

"पैरिस में अफवाह है कि म्यूनिक की सड़कों पर युद्ध छिड़ा हुआ है। इसीलिये मैंने आपको तकलीफ़ दी।"

"स्टीफैन ने हँसकर कहा, "यह सब बेवकूफी है। यहाँ पूर्ण शाति है।"

वह सोचने लगा कि आदमियों मे कैसी गलत फ़हमियाँ फैल जाती हैं। आखिर म्यूनिक की सडकों पर युद्ध छिडने का क्या कारण हो सकता है ?

वह यह सोच ही रहा था कि टैलीफोन की घंटी दुबारा बजी, "पहला पृष्ठ शीघ्र भेजिये। दस तो बज चुका।"

स्टीफैन सोचने लगा कि पहले पृष्ठ पर किसका फोटो दिया जाय। गत सप्ताह की घटनाओं के सम्बन्ध की ही कोई तस्वीर होनी चाहिये। सहसा उसे हिटलर का खयाल हुआ। हिटलर अभी चासलर हुआ था। उसकी ही तस्वीर प्रथम पृष्ठ पर होनी चाहिये।

उसने हिटलर का एक फोटो निकाला। उसने अपने सहायक सम्पादकों को बुलाया और पूछा, "इस फोटो को पहिले सफे पर छाप दिया जाय ?"

वे सब एक साथ बोल पडे, "इस बेवकूफ़ गधे को कोई नहीं देखना चाहता। दो ही दिनों मे इसकी चासलरी समाप्त हो जायगी।"

स्टीफैन ने कहा, "मगर आधे से ज्यादा आदमियों ने उसे वोट दिया है।"

"आदमियों को मालूम ही नहीं था कि वे क्या करे। वे दिल्लगी कर रहे थे।"

"जब इन्स्पैक्टर फ्रैंक हमारे खत लेकर आया, तो मैं फौरन उसके पास दौड़ी-दौड़ी गई और उससे अपने पति का कुशल समाचार बतलाने की प्रार्थना की और यह भी पूछा कि क्या वे अब भी यहीं हैं। फ्रेक ने मुझे विश्वास दिलाया कि स्टीफैन अब भी इसी जेल में है और सबूत के लिये उसने एक अखबार मुझे लाकर दिया जिस पर स्टीफैन ने मेरा नाम अपने हाथो से लिख दिया था।"

६ जून

डा० वी० की अभी सुनवाई नही हुई। बेचारा वृद्ध आधा पागल सा होगया था।

उसके कमरे के साथी वैक ने हमे बतलाया कि वह तमाम रात नही सोता। वह सदैव कान लगा कर यही देखता रहता कि वे कहीं उसे लेने के लिये तो नहीं आ रहे।

आज रात को बरामदे मे पैरो की आहट हुई। डाक्टर बी० यकायक चिल्ला उठे, "अब वे मुझे लेने आ रहे हैं! मुझे पीट २ कर मुर्गा बनाया जावेगा!"

उसने दरवाजे को बन्द रखने के लिये उसके आगे कुर्सी, स्टूल, मेज आदि सब चुन दिये। वह कमरे के एक कोने मे जा दुबका। वह भय से काँप रहा था। वह कभी झुक कर भगवान् का भजन करता, कभी दरवाजे की ओर घूर २ कर देखता और अपने जल्लादो की बाट जोहता।

परन्तु कोई बात न हुई। सिर्फ एक वार्डर बाहर से जा रहा था।

डाक्टर बी० कुछ सप्ताह पहले पीटा गया था। तभी से उसके दिल मे यह डर बना रहता। तब से ही वह डरता था, काँपता रहता था कि कही वह फिर न पीटा जावे। वह इसी डर से व्यायाम के समय वह इधर-उधर निराश होकर दौडता फिरता, और शून्य दृष्टि से सिपाहियो की ओर पाषाण-शाति से ताका करता।

सिर्फ जेल से जो मिलता उसी पर गुज़र करनी पड़ती। व्यायाम को सिर्फ एक घटा रोज मिलता।

कुछ ही दिनो मे जब से वह स्टेडिलहैम आया है, उसका ६ पौड वजन घट गया।

७ जून

आज कैदियो की खुशी का दिन था। आज शाम को डाक्टर बी० को छोड दिया गया। बेचारा बूढा इस खुशी की खबर पाकर खुशी से फूला न समाया।

रशियन पैट्रोलियम कम्पनी का डाइरेक्टर भी जो शुपिक की कोठरी मे था जेल से छोड़ दिया गया।

वैंक ने कहा कि वह अपने साथियों का सौभाग्य था क्योंकि जो कई भी उसके साथ कमरे मे रहा अवश्य मुक्त कर दिया गया। पहले ड्राइवर फिर डाक्टर ऐफ० और अब डाक्टर बी० भी छूट गये।

शुपिक अब अकेला रह गया था। उसने वार्डर से प्रार्थना कि वे वैंक को उसके साथ रख दे। शायद वैंक के कारण उसके अच्छे दिन फिर आवे।

वक ने भी यही प्रार्थना की। और यह स्वीकार भी हो गई। वैंक शुपिक के कमरे न० ३७ मे भेज दिया गया।

ये बहुत खुश हुए। वैंक कई सप्ताह पहले से शुपिक के कमरे मे जाना चाहता था। वह शुपिक की ही तरह शतरज का खिलाड़ी था और वह भी प्रग शहर से आया था। दोनों का अपनी-अपनी बहुत सी बाते याद थी, दोनो के बहुत से पुरुष मित्र थे, और वे दोनों शतरंज के खिलाड़ी थे।

वैंक उसके कमरे मे आने ही पाया था कि शुपिक ने शतरज मेज पर लाकर रख दी। आज उन्होंने कुछ काम नही किया। बस वे

उसका दिल टूट गया था। उसका जीवन दुख-पूर्ण कहानी थी।

२० साल पहिले उसने रसायनिक अनुसन्धान करके एक चीज खोज निकाली और इसको पेटेंट करा ली।

कुछ विरोधियो ने उस रसायनिक खोज को चुरा लिया। इस प्रकार उसके फर्म के लाभ से उसको वंचित कर दिया।

डाक्टर बी० ने कानून की शरण ली। २० साल तक मामला चलता रहा। आखिरकार उसके पक्ष मे मामला तै हुआ। इस मुकदमे में उसकी आय का सर्वश्रेष्ठ भाग बीत गया। अब वह बुड्ढा हो गया था, परन्तु उसे सतोष था कि उसकी बात रह गई।

डाक्टर बी० को बहुत धन मिला। उसके बाद नात्सी क्रान्ति हुई। उसके दुश्मन क्रान्तिकारियो के साथ थे। वे अब स्वस्तिका धारण करते थे। वे अब देशभक्त थे।

जर्मनी मे एक देशभक्त को जब किसी का धन देना हो तो उसको क्या करना चाहिए ? तो वह उस धनी व्यक्ति को गिरफ़्तार करा देता है। और इसलिये डाक्टर बी० को भी हिरासत में ले लिया गया।

वह "समाज शत्रु" था। उसने एक नात्सी से रुपया मांगने का साहस किया था। अब वह जेल मे ताले मे बन्द है। उसके मुकदमे की कोई पूँछ ताछ नहीं। उसके विरोधी अब केवल उसका मजाक बनाते हैं। कैदी को भी कोई रुपया देता है ? अच्छा रुपया मिला !

× × × ×

आज स्टीफैन को वैरन आरटिन से यह सदेश मिला। स्टेडिलहैम एक भयानक जेल है और घोर यातना पूर्ण। वह दूसरे जेल को जाने के लिये छटपटाता था। स्टेडिलहैम जेल मे कैदी सिगरेट तम्बाकू नहीं पी सकने। केवल एक माह में एक बार रसद लेने का अवसर दिया जाता है और तब भी ५ पौंड से अधिक रसद नहीं ली जा सकती।

जब नहाने के बाद वे अपनी कोठरियों को जा रहे थे, उसी समय औरते पहली मजिल मे व्यायाम कर रही थी। स्टीफैन की आखे न्यूरा को ढूँढने लगी। क्या वह उन स्त्रियो मे थी ?

हॉ, यह बरामदे मे टहल रही थी। वह एक रोगी की तरह दुर्बल हो गई थी।

उसने स्टीफैन को देख लिया वह चिल्लाई और दौड़ कर उससे लिपट गई। वे कुछ न बोले। उन्होंने केवल एक दूसरे को हृदय से लगा लिया।

यह एक सिनेमा का सा दृश्य था। एक जेल मे भेट... .

यह केवल एक सेकड तक रहा। न्यूरा प्रेमावेश मे स्टीफैन की भुजाओ मे बेहोश-सी होगई। इतने ही मे वार्डर आई और उसको ले गई।

९ जून

कुछ दिनो से सिम्प्लिजिस्मस ससार-प्रसिद्ध म्यूनिच कावरैट का मैनेजर ४२ नम्बर के कमरे मे बद था। वह भालू की तरह हृष्ट पुष्ट था। और कवि फ्रैंक वैडकादड की अब भी उसे याद थी। सिम्प्लिजिस्मस सुडौल और सब काम जानता था। कलाकारों से उसकी अच्छी जानकारी थी।

उसने घोर अपराध किया था। उसने कावरैट से एक शराबी को नौकरी से निकाल दिया था। वह शराबी एस० ए० का आदमी था।

दूसरे दिन सिम्प्लिजिस्मस को गिरफ्तार कर लिया गया।

उसको बुलाकर पूछा गया कि उसने एक एस० ए० के आदमी को नौकरी से क्यो हटा दिया और उसको क्यों पीटा।

उसने जवाब दिया, "वह मुझे ढूढता-ढूढता मारने को आया। मैं क्या करता ? मैंने उसको एक ओर को हटा दिया। यह मेरा

खेलने में मस्त थे। जेल का भय इस समय के लिये उनके दिमाग से निकल गया था।

८ जून

आज क़ैदियो को स्नानागार मे ले जाया गया। यह नीचे की मजिल में था। यह बहुत गन्दा था। फकीर और बदमाश आदमियो को जेल मे दाखिल करने से पहले यहाँ स्नान कराया जाता था।

वार्डर उनको वहाँ पर ले जाने से पहले तो हिचकिचाये। उन्होंने कहा, "वह सज्जनो के लायक नही है।"

पर स्टीफैन ने उत्तर दिया, "यह जेल भी तो सज्जनो योग्य नहीं है, लेकिन फिर हम यहाँ बद हैं। न नहाने से तो ऐसे गन्दे स्नानागार मे भी नहाना कही अच्छा।"

यह सुनकर वार्डर शात हो गये। वे उनको नहाने के कमरे में ले गये।

जब से वे यहाँ आए थे, वे कभी भी अच्छी तरह से न नहाए थे। प्रात.काल को वे केवल हाथ मुँह धो लिया करते थे। और छोटे से स्नान के बर्तन मे खड़े हो कर बदन पर पानी चुपड़ लिया करते थे। नहीं तो उनके शरीर पर अब तक जूं दौड़ने लगती।

स्टीफैन को दो मास के बाद आज नहाने की आज्ञा मिली थी। यह उसके नहाने का दूसरा अवसर था।

आज खुशी के मारे क़ैदियों का दिमाग सातवे आसमान पर था। वार्डर ने उनको स्नानागार मे कर दिया और आध घटे तक उन्हे लेने नही आया। स्ट्राक्जि, क्राइगर और स्टीफैन बच्चो की तरह गर्म पानी में क्रीड़ा करने लगे। उन्होंने अपने पैरो को इञ्च भर कीचड़ मे घुसे रहने की लेशमात्र चिन्ता नही की। फुव्वारे का पानी साफ़ और गर्म था।

१० जून

४१ नवम्बर मे एक नया क़ैदी आया था। वह परसों से आया था। उसका नाम डा० शैलहेज था जो कि नार एण्ड हर्थ के फर्म के रेकार्ड डिपार्टमेंट का हेड था। यह असम्भव प्रतीत होता था कि एक दिन वह भी यहाँ आवेगा। डा० शैलहेज नात्सी था। वह उस पार्टी का सबसे पुराना मेम्बर था। उसका रजिस्टर नम्बर लगभग दो हजार के था। उसने १६२३ की क्राति मे हिटलर के साथ भाग लिया था। उसने पार्टी के लिये वर्षो तक अपूर्व त्याग किया था। और अब वह राजनीतिक बन्दी है।

डा० शैलहेज हासलीटर का परममित्र था। वह और उसकी स्त्री हासलीटर के कुटुम्ब मे मेल जोल से रहते थे। उसने समय समय पर हासलीटर की सहायता की जो कि सदैव तगी मे रहता था।

क्राति के बाद हासलीटर नार एण्ड हर्थ के फर्म का मैनेजर होगया। डा० शैलहेज अपने रेकार्ड महकमे मे काम करता रहा। वह इस काम के करने मे सन्तुष्ट था। उसका विचार राजनीतिक बातों मे फसने का नही था।

वह स्टाफ का मैनेजर चुना गया। यही उसको पार्टी की ओर से पुरस्कार मिला था। उसको नौकर और मालिक के बहुत से झगडो का निपटारा करना पड़ा। उसका काम था कि किसी का काम छुडाने से पहले उसके अपरावों पर ध्यान दे ताकि सब बात के कारण ठीक ठीक मालूम हो जावे। उसके साथी जिन्हे नौकरी छूटने का डर था, उससे आकर अपील करते थे और वह न्याय सब के साथ पक्षपात रहित होकर करना चाहता था। उसको कुछ नौकरों के कुटुम्बो के कागज मिले जिनको कि आर्य न होने की वजह से निकाल दिया गया था। इनमे से एक व्यक्ति का कुटुम्ब ३०० साल से कैथोलिक था परन्तु फिर भी

अपराध नही कि वह ज़रा से धक्के को वह सहन न कर सका और गिर पड़ा। बस इसी कारण से उसके सिर में चोट आ गई।"

आज दोपहर के बाद सिम्प्लिजिस्मस अपने कमरे से बाहर व्यायाम करने नहीं आया। वह ख़ूब सो रहा था। स्टीफ़ैन ने उसके कमरे में पुकारा :—

"तुम्हे क्या हुआ ? आज व्यायाम नहीं करोगे ?"

उसने उसकी ओर नींद भरी आंखों से देखा।

"मैं तमाम रात न सो सका।"

"क्यो ? क्या गड़बड़ी थी ?"

"मेरी आज सुबह तक जाच की गई थी।"

उसने बतलाया कि उसको आधी रात बीतने पर उसके कमरे से ले जाया गया। उसे राजनीतिक पुलिस को जो वास्तविक घटना एस० ए० के आदमी के साथ घटी थी दोहरानी पड़ी।

"लेकिन जाच इतनी देर तक कैसे रही ?"

उसने गुनगुना कर कहा :—

"तुम जानते हो कि कल रात अमेरिका में मैक्सवियर और स्मैलिग मुक़ाबिला का हुआ था। रेडियो में इस लड़ाई की घटनाएं बताई जा रही थीं और राजनीतिक महकमे के आदमी बडे खिलाड़ी हैं। वे रेडियो को सुनने लगे। बीच बीच में जांच भी करते रहे और अमेरिका की लड़ाई भी सुनते रहे। वास्तव में यह बड़ा मनोरजक था। हमें हरेक बात साफ़-साफ़ सुनाई देती थी। परन्तु अभाग्यवश दसवे चक्कर में वियर ने हमारे खिलाड़ी श्मैलिग को हरा दिया। ज्योही लड़ाई ख़त्म हुई मेरी जांच भी ख़त्म हो गई। मै फिर लगभग ४ बजे सुबह अपने कमरे में ले जाया गया।"

कुछ घटे पश्चात् उसको मुक्त कर दिया गया। उसने श्मैलिंग की लड़ाई के वक्त इन्सपेक्टरो से मित्रता कर ली थी।

ऐ० के आदमी इधर-उधर दौड़ रहे थे। मोटरे कैदियों से भरी हुई आ रही थीं। इस प्रकार बहुत देर तक जेल मे चहल-पहल रही।

सुबह को मालूम हुआ कि यद्यपि कैथोलिक मजदूर दिवस मनाने की आज्ञा दी जा चुकी थी, परन्तु एस० ए० के आदमियों और कैथोलिक मजदूरो में झगड़ा हो गया। ऐस० ए० के आदमियों ने उन मजदूरो की कमीज फाड डाली जो कि सभा मे से लौट रहे थे। आपस मे कई झगडा हुआ। और इसके फलस्वरूप लगभग दो सौ घायल व्यक्ति म्यूनिच के अस्पताल मे पडे हुए थे।

ऐस० ऐ० के आदमियों ने कैथोलिक मजदूर के लीग पर भी हमला किया और उनका सब सामान नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

१३ जून

नार ऐएड हर्थ के रेव और फ्राइडमान को तीसरी मजिल से उक्त फर्म के अन्य सदस्यो के पास भेज दिया गया।

उन्होंने ऐसा कमरा मागा था जिसमे अधिक प्रकाश हो। उनको ४२ नम्बर का कमरा दिया गया था। उन दोनो का वहाँ आना बहुत अच्छा हुआ। परिचित पुरुषों के साथ मे रहने से दण्ड सहनीय हो जाता है।

१४ जून

कैदी बड़ी उत्सुकता से इस दिन की बाट देख रहे थे। उन लोगो का विश्वास था कि राजनीतिक कैदी ३ मास से अधिक रक्षित दशा मे नही रह सकते। ३ मास के बाद एक मजिस्ट्रेट उनकी जाच अवश्य करेगा।

आज से तीन मास पहले स्टीफैन गिरफ्तार हुआ था। उसका चौथाई वर्ष जेल मे बीत चुका। वह यही सोचता था कि न मालूम आज क्या हो। परन्तु बिना किसी घटना के वह दिन व्यतीत हो गया।

वह निकाल दिया गया था। डा० शैलहेज ने इस व्यक्ति का निकाला जाना अन्यायपूर्ण ठहराया।

उसने हेलेन रैफ का, जो कि साठ वर्षीय काव्यरचिता थी, पक्ष लिया जिसके चरित्र पर आक्षेप करके अलग कर दिया गया था। अनेको पदच्युत नौकरो को उसने दोबारा नौकरी दिला दी।

स्टाफ मैनेजर और मैनेजर में इन बातो पर कुछ मतभेद हो गया।

दो पूर्व मित्र शत्रु हो गए।

हासलीटर पक्षरहित और न्यायपूर्ण स्टाफ मैनेजर को नही चाहता था। उन दोनों मे बहुधा झगडे होते रहते।

एक बार वाद-विवाद में डा० शैलहेज ने क्रोध में भरे हुए हासलीटर से पूछा :—

"आप दफ़र मे किस अधिकार से आज्ञा दे रहे हैं ? मैनेजर बनकर अथवा राजनीतिक पुलिस के इन्सपेक्टर बनकर ?"

हासलीटर उसके जाने के बाद बड़बड़ाया,

"मैं जल्दी ही तुमको सब कुछ दिखला दूँगा।"

उसी सन्ध्या को डा० शैलहेज गिरफ़ार कर लिया गया। न नाजी मेम्बरपन और न पुराने मेम्बरपन ने उसकी सहायता की। वह नार एण्ड हर्थ के फर्म का बारहवॉ मेम्बर था जो कि गिरफ़ार किया गया था। उससे पहले प्रोफेसर कासमान, डा० वैज, बैरन आरटिन, ब्यूकनर, रेब, शुपिक, स्टीफैन लॉरॉ, फ्राइडमान, फैडरश्मिट, मौजल, और बैरन हाहन उसके पहले ही गिरफ्तार हो चुके थे।

११ जून

पिछली रात राजनीतिक कैदी बिल्कुल भी न सो सके। सहन में, भीतर-बाहर मोटरें आ जा रही थीं। आज्ञाएँ दी जा रही थीं। एस०

काउट स्ट्राकविज़ और क्राइगर ने शाति के साथ भगवान् की प्रार्थना की।

सुबह को वार्डर ने उन लोगों को बरामदे मे टहलने के लिए थोडी देर के वास्ते बाहर निकाल दिया।

अधिक समय नही हुआ था। जब कि उन को वहाँ एक चीत्कार सुनाई दी। जरूर कोई न कोई बात तीसरी मजिल पर हुई थी। इन्होंने डा० गैर्विल की आवाज सुनी, "जल्दी! प्रोफेसर मेयर के वास्ते जल्दी डाक्टर को बुलाओ।"

वार्डर दौड़ता हुआ, हाँफता हुआ इस मजिल से दूसरी मजिल को जा रहा था। कैदियो को उनके कमरो मे शीघ्र ही बन्द कर दिया था।

उन्होंने यह सुना कि जब प्रोफेसर मेयर ने अपने साथियों के बाहर घूमते समय अपना अग-भग कर डाला।

बेचारा प्रोफेसर मेयर! उसकी सूरत देखकर कोई भी समझ सकता था कि वह अब और अधिक जेल काटने योग्य नही था।

प्रो० मेयर की हर रोज जाँच की जाती थी। वह इतना कमजोर हो गया था कि वह सब बातो का जवाब स्वीकार वाचक शब्दों मे ही देता था। अगर उस पर सम्राट मैक्समीलियन की हत्या का अपराध लगाया जाता तो वह उसे भी स्वीकार कर लेता।

इस्पेक्टरों ने देख लिया था कि प्रो० मेयर को इन सवालात से बहुत कष्ट होता था। इसी लिये वे उससे प्रति दिन सवालात किया करते थे।

"आओ थोड़ा-सा उसका यहूदीपन निकाल दे उसने पर्याप्त धनोपार्जन किया है।"

प्रोफेसर मेयर एक धनी व्यक्ति था।

न वह मजिस्ट्रेट के सामने ही ले जाया गया और न बन्धन से मुक्त ही किया गया।

कुछ नहीं, कुछ नही, कुछ नहीं ..।

× × × ×

डा० गैर्लिच के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया था उसका सब को पता चल गया था। आस्ट्रियन समाचार पत्र बराबर इस विषय पर लेख निकाल रहे थे। उन्होंने इस दुखात घटना के और भी चार चाद लगा दिये थे।

टाइरौल के कैथोलिक समाचार पत्र ने लिखा था कि डा० गैर्लिच को इस असहनीय दण्ड के कारण ही बहुत कम दीखने लगा है। और किसी अखबार मे तो उसके मरने का समाचार भी छप गया। परन्तु इन समाचारों की असत्यता सिद्ध करने में पुलिस को अधिक कठिनाई न पड़ी। राजनीतिक पुलिस ने डा० गैर्लिच को बुलवाया और उसे एक बयान पर दस्तखत करने को मजबूर किया।

वह बयान यह बतलाया था कि डा० गैर्लिच को अभी तक आँखों से दीखता है और उसके मृत्यु दण्ड की बात असत्य है। वह अब भी जीवित है।

यह बयान वाल्किशर ब्युवेचर अखबार मे प्रकाशित किया गया।

१५ जून

आज प्रातःकाल गिर्जे में घटे बज रहे थे। ,कैदियों के कमरे भी गुंजार रहे थे। वे यह सब गुजार अस्पष्ट रूप से सुन सकते थे। जलूस वाले अपना राग उसी के साथ अलाप रहे थे। सुगध आकाश की ओर उड़ रही थी। और मोमबत्ती के जलने की गध कमरे को भी प्रभावित कर रही थी।

उसने म्यूनिच के संसार प्रसिद्ध म्यूजियम मे बहुमूल्य चित्र एकत्रित किये थे। वह मुख्यतः स्पेन के चित्रो और कला का अच्छा जाता था और उसकी प्रसिद्ध तमाम ससार मे थी। उसको राय देने के लिये बहुत ऊँची फीस मिलती थी।

प्रो० मेयर झूठे चित्रों को सच्चा बताने मे भी दक्ष थे और रिश्वत भी खूब लेता था। उसकी गिरफ्तारी इसलिये हुई कि उसने, यह अफवाह थी, कि अपना धन विदेश भेज दिया है। यह भी कहा जाता था कि उसने धोखे से टैक्स नहीं दिया।

यदि ये उड़ी हुई बाते सच भी हो'''तब भी वह कचहरी मे क्यों न लाया गया और कानून के अनुसार उस पर कार्यवाही क्यो न हुई? उसको राजनीतिक जेल मे क्यो ले जाया गया? उसको निस्सहाय पाकर इस प्रकार क्यो सताया जाता था?

वह दो बार आत्महत्या करने का प्रयत्न कर चुका था। परन्तु हरेक बार उसको वार्डर ने पकड़ लिया और आत्महत्या करने का उद्योग रोक दिया गया। कुछ दिन पहले उससे एक वार्डर ने कहा था, "प्रोफेसर अधिक दिनो तक जीवित नहीं रह सकता। वह अपनी आत्म हत्या अवश्य कर लेगा।"

× × × ×

घटे पहले से अधिक जोर से बजने लगे। अब जलूस लौट रहा था। अब गिरजा के सामने का गाना साफ सुनाई देता था।

"ऐ भगवन्! ·।"

लड़कियो का सुन्दर राग पुरुषो के गाने मे मिल रहा था। उन्हे केवल यही शब्द सुनाई दिये जोकि बार २ दोहराये गये थे :—

" ·····भगवन्। ओ भगवान्! · ·· ।"

और इस राग से आकाश गूजता था।

काइगर कुर्सी पर से उठ बैठा और सुनने लगा और धीरे २ वह भी उस राग को अलापने लगा।

टेलीफोन की घंटी फिर बजी। "प्रथम पृष्ठ शीघ्र भेजिये।"

स्टीफेन ने सोचा कि हमारा अखबार राजनीतिक नहीं। हिटलर चान्सलर हुआ है। यह सबसे महत्वपूर्ण घटना है। पहले पृष्ठ पर उसका फोटो होना ही चाहिये।

घड़ी ने बारह बजने की सूचना दी। आर्थिक विषयों के लेखक लियो हासलीटर ने कमरे में प्रवेश किया। स्टीफेन ने कहा, "सब अखबार एस० ए० और एस० एस० * के विषय में बातचीत कर रहे हैं। जातीय-समाजवादियों को इन पर बड़ा गर्व है। पर वास्तव में यह कोई भी नहीं समझता कि ये हैं क्या। इनके विषय में एक मजेदार लेख तो लिख दो।"

हासलीटर ने ध्यानपूर्वक सुना। फिर कुछ घबराहट के साथ बोला, "हाँ, विचार तो अच्छा है। . . पर मुझे इसके लिये अपनी पार्टी की आज्ञा लेनी पड़ेगी।"

"कैसी पार्टी?" स्टीफेन ने अचम्भे से पूछा।

"जातीय-समाजवादी पार्टी।"

"तुम से जातीय-समाजवादी पार्टी का क्या सम्बंध?"

"सच बात.. यह है कि मैं जातीय समाजवादी हूँ"

"मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता!"

"हाँ, यह सच है"

"क्या? तुम जातीय-समाजवादी हो? कब से?"

"बहुत दिनों से।"

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया?"

"मुझे नौकरी छूट जाने का भय था"

---

* ये दोनों [illegible] S. [illegible] = Protective Guards । S. S. = Storm Troopers

उन लोगों को गदी टीन की प्लेट में खाना मिलता। गदी टीन की चम्मच और काटो मे जूटन चिपकी रहती।

मगर लाचारी से खाना पड़ता और धीरे २ आदत भी पड़ गई।

× × × ×

हैंस लैक्स को आज जाच के लिये लाया गया। राजनीतिक पुलिस ने उससे पूछा कि वह मजिस्ट्रेट के सामने पेश होना चाहता है अथवा नहीं। परन्तु लैक्स चुप रहा। उसकी समझ ही मे न आया कि वह क्या उत्तर दे।

वह जानता था कि अगर वह एक मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया तो वह अवश्य छूट जावेगा।

मगर इसके बाद क्या होगा ?

उसका शत्रु आयर फिर उसको गिरफ़ार करा देगा। उसके पीछे वह अपने एस० ए० के आदमियो को भेजेगा, और तीसरी बार वह उसे गिरफ़ार कर लेगा।

उसी सन्ध्या को रसद का एक बड़ा पार्सल शुपिक और बैक को जो उसके कमरे के साथी थे, मिला।

यह हैस लैक्स ने भेजा था।

वह छोड़ दिया गया था और अब स्वतन्त्र था।

१७ जून

कल दोपहर म्यूकनर पोस्ट नाम के शोसल-डीमाक्रेटिक अखबार का स्टाफ ४४ नम्बर के कमरे मे बद था। और उनमे से केवल गोहरिग अपनी पहली वाली ३७ नम्बर की कोठरी मे भेज दिया गया था।

निम्न लिखित कारणो से ये शोसल-डीमाक्रेटिक समूह कैद किया गया था :—

स्ट्राकविज और स्टीफैन चुप थे। राग समाप्त हुआ। पूजा करने वालों ने गिरजा मे प्रवेश किया।

और ३६ नम्बर के कमरे मे प्रोफेसर मेयर मौत से कुश्ती लड रहा था।

उन्होंने आज रात को सुना कि प्रोफेसर मेयर अब भी जीवित था। वह स्पताल मे ले जाया गया था। और आशा की जाती थी कि वहाँ उसका जीवन बच जायगा।

१६ जून

स्टीफैन के पास अब एक भी पैसा न था। अब वह होटल के खाने को दाम देकर नही खरीद सकता था। इसलिये उसने अब जेल का खाना आरम्भ कर दिया।

खाना इतना रद्दी था कि वह अक्सर खाने को खिडकी के बाहर फेंक देता था। मगर जेल के खाने मे लाभ यह था कि उसके लिये कुछ देना नही पड़ता था।

दोपहर का खाना बड़ा खराब था।

सोमवार को सिवई, मगल को आलू, बुध को गोभी, वृहस्पति को चावल, शुक्र को सेवरक्राट, शनिवार को मटर और इतवार को चावल वा शोरबा मिलता।

प्रति दिन हमेशा एक सा खाना रहता। पतला शोरबा और रोटी के टुकडे खाने को मिलते। यद्यपि स्टीफैन को सदैव करारी भूक लगती, फिर भी वह शाम का खाना न खा सकता क्योकि वह इसकी बदबू से घबराता था।

हरेक खाने के साथ एक फौजी रोटी दी जाती थी जो कि काली और मोटी होती थी। परन्तु खाने मे अच्छी मालूम होती थी।

जान ल्यूवाटर का राग और है जो कि १८६२ में निकल चुका है। जल-सेना ने भी इसको बहुत पसन्द किया है और केवट राग भी है जो कि वैस्ट प्राइमनिज से उद्धृत किया गया है। और अन्त छात्र राग अति उत्तम है। ये सब राग हास्ट वैजिल अर्द्ध भाग से मिलते जुलते हैं और ऐसा मालूम होता है कि उसने ही स्वय इन सबकी रचना की थी।"

यह रही अखबार की बात।

लेकिन बाकी भाग हार्स्ट वैसिल का चुराया हुआ है। क्योंकि कल वाल्कीशर व्युओवैक्टर मे यह निकला था :—

"छात्र राग और सैनिक राग की समानता नहीं मिलती परन्तु बाकी आधे भाग में कोलोन ग्रामीण राग की स्पष्ट झलक है जिसको फ्रा हानरमान ने रचा था। इनमे केवल थोड़ा सा अन्तर है और सैनिक राग की वास्तविकता से समानता की अधिक सम्भावना है।"

१९ जून

आज हिटलर की क़ैद के बारे में जब वह लैंडसवर्ग के क़िले में बन्द था वाल्कीशर व्युओवैक्टर में कुछ समाचार निकला।

यह लेख रुचिकर था और इसमे भूतपूव जर्मनी राज्य की अदूरदर्शिता दिखाई गई थी। हिटलर और उसके साथी १९२३ ई० में क्रांति को घोषित करना चाहते थे और इस कारण क़ैद कर लिये गये और जेल मे भेज दिये गये।

वे लैंडसवर्ग के किले मे कैदी बन कर रहे।

आज के लेख मे ऐडमड ने लिखा :—

लैंडसवर्ग किले मे हमने हिटलर का जन्म दिवस किस प्रकार मनाया।

आपत्तिकाल की एक स्मृति

'१९२४ मे लैंड्सवर्ग की बात है। वसत का दिन ढल रहा था।

कल-वे एक सभा मे गये थे जिसमे पिछले वेतन की अदायगी का सवाल तै होने वाला था। अचानक ही राजनीतिक पुलिस वहाँ आ धमकी। और उन्होने घोषणा की, "बडा अच्छा हुआ कि तुम सब एक जगह मिल गये। इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है? अब आप लोग सब कोतवाली चलिये।"

सर अखबारनवीस मोटर मे बैठाकर पुलिस हैडक्वार्टस मे पहुचा दिये गये। इन्स्पैक्टर माइसिगर ने कहा, "आप लोगो को आपकी कार्य-वाही का अवश्य इनाम मिलना चाहिए। उसका जवाब गिरफ्तारी है।"

इस्पैक्टर दरवाजा बन्द करके चला गया।

इन सम्पादको को जेल हुआ क्योकि उन्होने पिछली तनखाह मागी थी।

इन मे से बेचारे वृद्ध पुरुषो का मामला बड़ा बेढब था। ये एक कमरे मे सात थे। जेल का निरीक्षक उनसे जलता था। वह दूकान से उनके वास्ते खाना नही जाने देता था और उन्हे सिगरेट भी नहीं पीने देता था।

१८ जून

हार्स्ट वैसिल राग नात्सियो ने अपनाया है। इसको हार्स्ट वैसिल ने बनाया था। यह विज्ञप्ति वाल्कीशर वियोबैक्टर अखबार में निकली थी।

नात्सियों को अपने राग का बडा अभिमान है।

दूसरी जून को उक्त अखबार ने लिखा :—

"प्रोफेसर डा० यूजेन ने ड्रेस्डनर नैक्रीश्टन नामक पत्र मे राग की बनावट के विषय में छानबीन शुरू कर दी है। पाठकगण अपनी २ सम्मति भेज रहे हैं। मगर हरेक ने पहले अर्द्ध भाग को ही अलापा है जिसको सब कोई जानते हैं। हार्स्ट वैसिल के राग के समान एक

सब लोग एक स्वर से चिल्लाये, "हाँ, हाँ।"

२० जून

आज म्यूकनर गेस्ट के कार्यकर्ताओ को प्रथम बार व्यायाम करने की आज्ञा मिली। अन्य कैदियो ने उन्हें घेर लिया और उनपर प्रश्नों की वर्षा की। उसी समय जेल का सुपरिटेडेट आया और गरज कर बोला—

"एक कमरे के जेलियों को दूसरे कमरे के जेलियों से बातचीत करने की कोई अवश्यकता नही। हम यह सब नही चाहते।'

उसने हमको एक के पीछे दूसरे को चुपचाप चलने की आज्ञा दी। आज्ञा की अवहेलना पर कठोर दड मिलने की सम्भावना थी।

२१ जून

डाकिया हुजलर छुट्टी पर था। इस्पैक्टर फ्रैंक कैदियों के खत लाया। स्टीफैन ने उससे पूछा कि उसकी स्त्री कब तक जेल मे रहेगी। उसने सान्त्वना देते हुए कहा कि अब वह अधिक दिन तक न रहेगी। उसने कहा कि स्वय स्टीफैन के मामले की तहकीकात हो रही है और उसकी मिसल लीपजिग के कोर्ट मे भेजी गई है। या तो उसे बड़ी सजा मिलेगी और या मुक्ति।

× × × ×

क्राइगर को अब जेल मे तीन मास हो चुके।

आज सुबह को उसने राजनीतिक पुलिस को लिखा कि उसकी स्त्री को छोड दिया जावे। इस पर क्राइगर से बहुत से सवाल पूछे गये। उसने १० सफो मे अपनी जीवन की कहानी लिखवाई। केवल एक पेज और लिखाना शेष रहा था। पर उसे अपनी कोठरी में यह कह कर भेज दिया गया कि उसे पूरा करने के लिये वह फिर बुलाया जावेगा।

नीला आकाश हमारे सिर पर शामियाना ताने था और किले की दीवारों पर सूर्यास्त के समय की किरणें झलक रही थी। और हमारे नेता का जन्म दिवस १६ तारीख का था।

"हमने जल्दी से शाम का खाना खाया, और आध घटे बाद अपने खाने को पचाने के लिये किले के सहन मे खेलने लगे। हमने अपने मुह काले किए ताकि कोई पहिचान न सके और लकड़ी के अस्त्र लेकर हम अपने नेता के पास गये। हमने उसका दरवाजाख टखटाया। दरवाजा खुलने के बाद वह हमको देखकर भौंचक्का हो गया।

कमाडर हाइस ने फौरन कहा :—

"एडोल्फ हिटलर, तुम कहाँ हो ?"

नेता ने हास्यपूर्वक कहा, "यहाँ"।

"अपनी प्राचीन प्रथा के अनुसार हम तुम्हारा स्वागत करने को खडे हैं।"

फिर हाइस ने अपने साथियों से कहा, "तुम्हारे सामने एक मनुष्य खड़ा है जो हमारे पवित्र गिरजे पर आघात करने वाला है। और हमारे मित्र श्वायर, काहर और लासा का दमन करने वाला है। हालाकि काहर दढ़ता पूर्वक कहता है कि वह इस बारे मे कुछ नही जानता परन्तु हिटलर और उसके साथी दढतापूर्वक कहते हैं कि उपरोक्त तीनो व्यक्ति बदमाश है। यह हिटलर कहता है कि वह देश से यहूदियों को निकाल देगा और फिर हमारे धन को कोई हडप न करेगा मै तुम लोगों से पूछता हूँ कि इस ववेरिया के इतिहास को कलकित करने वाले के साथ न्याय किया जाना चाहिये अथवा नही ?"

एक स्वर से आवाज आई, "हाँ।"

यह सुनकर हाइस ने सजा सुनाई कि हिटलर को फौरन लैंड्सवर्ग जेल से निकाल दिया जाय और स्वतन्त्र वायु की रक्षा मे भेज दिया जाय।

इंस्पैक्टर फ्रैंक ने क़ैदियों को बतलाया "मोल्स" के ख़िलाफ़ कार्रवाई की जानेवाली है।

मोल्स से आशय कैथोलिक से था जो नात्सियो के खिलाफ थे। कल से ववेरियन कैथोलिक के विरुद्ध बढ़ी कार्रवाई की जा रही थी। डाइट, वोरिश कुराइर के दफ़्तर और सदस्यो के घरो की तलाशी ली गई थी।

डा० हुंडमार, कैथोलिक डिपुटी, पहला कैथोलिक था जो जेल भेजा गया। वह कल रात गिरफ़्तार किया गया।

आज उसे अकेली कोठरी मे बद कर दिया गया। "ऐसे गुनहगारों को अन्य क़ैदियो के साथ नही रक्खा जा सकता।" जेल सुपरिंटेंडेंट ने कहा।

प्रधान मत्री डा० हैल्ड का लड़का तीसरी मजिल में बद था। उसने ख़ुशी से अपने पिता के बदले अपने आप को समर्पण कर दिया था। उसका पिता जर्मनी के बाहर था।

बहुत सम्भव था कि ववेरियन पार्टी के सब लोग जेल मे भर दिये जावें। इससे सहल तरकीब उस पार्टी के भग करने की दूसरी नही हो सकती।

× × × ×

वैंक डाचन जाने वाला था।

वह आज सुबह बुलाया गया। और यह मजिस्ट्रेट और इसपैक्टर दोनो के उसको छोड़ने का वायदा कर लेने के बाद हुआ।

वार्डर ने बतलाया कि वैंक डाचन इसलिये भेजा गया था कि ताकि वह दूसरे कैदियो के साथ आस्ट्रिया भेजा जा सके।

सब जानते थे कि वार्डर सच नही बोल रहा।

वैंक आस्ट्रिया नही जा रहा था।

यह तीन सप्ताह पहले की बात है।

तब से क्राइगर के रोजाना बुलाये जाने की आशा लगी रहती। वह जानता था कि पुलिस को उसको छोड़ने या न छोड़ने का निश्चय करना पडेगा। परन्तु अभी तक तबसे उसे बुलाया ही नहीं गया।

२२ जून

आज मेह बरसने लगा। और कैदी लोग यातना से पीडित थे।

दोपहर को म्यूकनर पोस्ट अखबार के कार्यकर्ता छोड़ दिये गये। हरेक की जाच की गई, उससे एक बयान पर दस्तखत कराये गये और उसे छोड़ दिया गया।

उनका छूटना पुलिस सुपरिटेडेड को बहुत बुरा लगा।

उसने गुस्से मे कहा, "मैं आज ही नेता को लिखूँगा—ताकि उनमे से कुछ को फिर जेल हो। बिना उनके जेल मे लाये शाति नहीं हो सकती।"

× × × ×

आज दोपहर के बाद कैदियो के पास एक नोटिस आई।

"बवेरियन राजनीतिक पुलिस की आज्ञानुसार आज से एक सप्ताह मे एक से अधिक खत लिखने की आज्ञा नही है। कोई किसी भी दशा मे मिल भी नहीं सकता —फ्रैंक"

क्यो? उन्होने एक दूसरे से इसका कारण पूछा।

अब क्या होने वाला था?

क्या लीपजिग से कागजात वापस आगये? क्या उनको अब और भी अधिक यातना भोगनी पड़ेगी?

२३ जून

आज ऐस० ए० के आदमी सहन मे ड्रिल कर रहे थे। यह नई गिरफ्तारियो की निशानी थी। कुछ न कुछ जरूर होने वाला था!

स्टीफेन का गुस्सा तेज हो गया। वह कडक कर बोला, "तुम बदमाश हो। तुम सालो से उस फर्म का नमक खा रहे हो जिसकी नीति कजर्वेटिव और कैथोलिक है। तुम जानते थे कि हम लोग जातीय-समाजवाद के विरुद्ध हैं। अब क्योंकि हिटलर चुनाव मे विजयी हो गया है, इसलिये तुम कहते हो कि तुम जातीय-समाजवादी हो ? . ..."

हासलीटर चुपचाप कमरे के बाहर हो गया।

स्टीफैन के काम करने मे तबियत न लगी। वह सोचने लगा कि अब हजारो जर्मन हासलीटर की तरह ही पेश आॅयगे। वे मधु-मक्खियो की तरह अपनी पार्टी के छत्ते के चारों ओर इकट्ठे होने लगेगे। ये भविष्य के जर्मन हैं।

फर्म के मैनेजर डाक्टर वैज ने टेलीफोन पर कहा, "क्या तुम पहिले पृष्ठ पर हिटलर का फोटो देना चाहते हो ?"

"जी हाँ।"

"क्या यह नादानी नहीं है ?"

"क्यो ? हिटलर चासलर है।"

"तो क्या हुआ ?"

"और शायद म्यूनिक पर भी वह अब आ धमके।"

"बस, बस, मुझे यकीन है ये बाते इतनी जल्दी नही होतीं"

"आप तो कुछ समझते ही नही।"

"तुम तो झूठे भय से डर रहे हो खैर खाने के वक्त बाते की जायगी। हम लोग खाना साथ ही साथ खायेगे।"

डाक्टर वैज और स्टीफैन लॉरॉ साथे-साथ खाने चले। लॉरॉ ने हासलीटर का कुल किस्सा कहा। डा० वैज को भी इस पर कुछ भी अचम्भा न हुआ।

अन्य कैदियो ने उससे हाथ मिलाये। शुपिक की आँखों में आँसू थे। यह विरह शरीर कष्ट से अधिक दुखदायी था।

वैक मुसुकराता हुआ भारी बक्स को लेकर चला गया।

प्रत्येक कैदी सोच रहे थे, "क्या हम उससे फिर मिलेंगे ?"

× × × ×

आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण घटनाओं का था।

वैक के जाते ही एक नया आश्चर्य हुआ। ४५ नम्बर का कमरा फिर भर गया था।

कैदियो ने सूराख से झाका और एक चारपाई पर एक नौजवान को बैठा पाया

एक-एक करके सब ने देखा। आखिरकार वैरन गाडिन ने उसको पहिचान लिया।

उसने कहा:—

"क्या कार्ल तुम हो ?"

"हाँ।"

यह ववेरियन पीपुल्स पार्टी का नेता राजकुमार वेड था।

वार्डर ने कैदियो के प्रार्थना पर उसको बाहर आने दिया। उसने बतलाया कि ८० फौजी सिपाहियो ने उसे ऐलिगन-कैसिल से बाहर निकाला और उसे गिरफ़ार कर लिया। गिरफ़ारी का कारण उसको नही बतलाया गया।

बात करते समय ववेरियन पोलिटिकल पुलिस का एक निरीक्षक वहाँ से गुजरा। उसने वार्डर को प्रिंस वेडे को बाहर निकालने के लिये खूब फटकारा। प्रिंस को अन्य कैदियो से बात करने की आज्ञा नही देनी चाहिए थी। उसे अपना कमरा नहीं छोड़ना चाहिए था। उसको फ़ौरन् ही फिर बन्द कर दिया गया।

पुलिस अफसर हुजलर आज दोपहर के बाद आकर कहने लगा:—

"मोटरो को कौन धोना चाहता है ?"

क्राइगर और स्टीफैन तैयार हो गये। एक अस्त्र सुसज्जित फौजी सिपाही उनको सहन मे ले गया और क्राइगर ने जल्दी उसे अपना परिचय देना शुरू किया।

जब कि स्टीफैन कीचड से भरे पहिये को धो रहा था, तब उसने कहा, "एक जर्मन अफसर कभी काम करने मे सकोच नही करता।"

इसी बहाने आज उन्हे ताजी हवा मिली।

एक ओर के पर्दे मे सूराख था। मोटर के ड्राइवर ने इसमे गोली चलाई होगी।

श्रीमती क्राइगर और न्यूरा ने उन्हे खिड़की मे से ऊपर से देखा। उन्होंने भी उनकी ओर देखा और हाथ का इशारा किया।

वे स्त्रिया हसती थी। और प्रसन्न मालूम होती थी। वे तमाम घटे उन्हे देखती रहती और जब तक वे मोटर धोते रहे वे भी टकटकी लगाये रहती।

२५ जून

आज का इतवार स्टीफैन के लिये बडा ही शुभ था। आज उसे मेस्टर लायक की कल की एक प्रति मिली। जब से वह यहाँ आया था तब से मैंने अपनी मातृ-भूमि का कोई भी समाचार-पत्र नही पाया था।

उसे विश्वास था कि इस अखबार मे उसके बारे मे जरूर कुछ निकला होगा चूंकि यह व्यक्तिगत रूप से उसके पास भेजा गया था।

उसने जल्दी २ तमाम अखबार देख डाला। मगर उसे कुछ न

२४ जून

सुबह के कहवे पर रेव का ऐनी नामक नौकरानी से झगड़ा हो गया। कहवा ठडा था। रेव इसको न पी सका। "जब मैं ५० फेनिग देता हूँ तो कम से कम गर्म कहवा तो मिले।"

उसने कहवा वापस करा दिया। और साथ ही कहला दिया कि अब वह उस दूकान से कुछ भी नहीं मँगायेगा।

अब तक कोई दिलचस्प बात न हुई। लेकिन रेव की शिकायत का परिणाम निराला था।

रेव ने जेल के सुपरिटेन्डेन्ट को लिखा कि यदि उसको सुबह का कहवा जेल के भोजनालय से मिल सके तो बहुत अच्छा हो। वह इस बात को जानता था कि जेल का भोजनालय जेल के सुपरिटेन्डेन्ट की स्त्री चलाती थी। उसने पूछा कि क्या उसे श्रीमती आस्टवर्ग के हाथो का तैयार किया हुआ कहवा प्रति दिन सुबह मिल सकता है ?

रेव की बात का सुपरिणाम हुआ।

उसी दोपहर के बाद कहवा आ गया। यह देखकर अन्य कैदियों ने भी बाहर की दूकान से कहवा मँगाना बन्द कर दिया और सबने जेल के भोजनालय से कहवा पाना चाहा।

आस्टवर्ग ने चीनी के प्याले, तश्तरी और चम्मच खरीदे और ठीक जिस तरह होटल मे कहवा दिया जाता है उसी तरह कहवा भेजा। अन्तर केवल इतना था कि अब नौकरानी के बदले वार्डर कैदियों से दाम लेने लगे।

आस्टवर्ग जो कि आज तक कैदियो से सीधे मुह नही बोलता था आज उनके कमरे मे आया और उनसे पूछा कि यह कहवा उन लोगों को पसंद था या नहीं।

यह पुरुष जो कि कैदियों को विष रूप समझता था अब उनका मित्र हो गया क्योकि अब वे उससे कहवा मोल लेते थे।

× × × ×

"अन्तर राष्ट्रीय नियमावली को सोवियट रूस भी मानता है। मगर जर्मनी उसे नही मानता। लॉरॉ एक खत मे लिखता है कि विदेशी मत्री को मेरा नमस्ते कहना। मुझे पता नहीं कि किस कारण से मैं जेल मे हूँ। और पता नही अकारण ही जेल मे कितने दिन और रहना पडेगा।"

लॉरॉ ने आगे चलकर लिखा है, "मुझे ऐसा जतलाया गया था कि राजनैतिक कैदी कभी भी ३ मास से अधिक नही रक्खे जाते। परन्तु मुझे ३ महीने हो चुके क्योकि मेरी गिरफ्तारी १४ मार्च को हुई थी।"

डिपुटी मास्को—"विदेशी मत्री को उसकी गिरफ्तारी का कारण जरूर मालूम होगा।",

डिपुटी लैजार—"मैं हगेरियन और हगेरियन अखवारनवीस की हैसियत से इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाता हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि अपने एक देशवासी सम्पादक के साथ ऐसा अन्याय क्यो हो रहा है।"

स्टीफैन ने आँसू भरी आँखों से रिपोर्ट को पढा। उसे मालूम हुआ कि वे अभी उसे भूले नही। एक अज्ञात साथी ने उसका साथ दिया। वह उसके लिये हगरी की पार्लियामेट मे कोशिश कर रहा है।

डि० लैजार को धन्यवाद। भगवान उसका भला करे।

२७ जून

सब जेल की कोठरिया पार्टी लीडरो, भूतपूर्व मिनिस्टरों और दूसरे ववेरियन प्रजातत्र दल के कार्य कर्त्ताओ से भरी है।

पन्द्रह से अधिक ४४ नम्बर मे हैं।

गुप्त-छिद्र से स्टी फैन केवल भूतपूर्व मिनिस्टर ऐनिगर और रिटन

मिला। फिर उसने उसे शुरू से देखा तब उसे पार्लियामेंटरी रिपोर्ट मे अपना नाम मिला :—

"डिपुटी लैजार ने भरी सभा मे जर्मनी मे एक हगेरी के अखबार नवीस की ३ मास की गिरफ्तारी का हाल सुनाया। उसे जेल मे रखने का कारण अज्ञात है यद्यपि उसे ३ महीने जेल म सड़ते हो गये। डिपुटी ने कहा कि स्टीफैन लॉरॉ म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस का सम्पादक था जो कि डा० हैल्ड की आज्ञा से निकाला गया था। स्टीफैन उसके साथियो सहित आधे मार्च के लगभग म्यूनिच पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया यद्यपि उसका अखबार सचित्र पत्र था और राजनीति से उसका कुछ भी लगाव न था। लारॉ ३२ वर्ष की अवस्था में ही नामी हो गया है। अब वह ३ मास से जेल मे है। अब तक उसकी सुनवाई नही हुई बल्कि दो सप्ताह पहले उसकी नौजवान स्त्री को भी जेल में भेज दिया गया है। हगरी के कौसिल जनरल और वैदेशिक मत्री का उसके छुटाने का परिश्रम विफल रहा। सम्पादक सभा का प्रयत्न भी असफल रहा। इसलिये वह अभागा अब भी जेल मे है।"

डिपुटी ने कहा, "हगरी के कौसिल जनरल ने म्यूनिच से जो पत्र स्टीफैन की माँ के पास वूडापेस्ट भेजा है वह मेरे पास है। उसमे लिखा है कि वह म्यूनिच जाकर अपने बेटे से मिल सकती है लेकिन वह उसे म्यूनिच जाने की राय नही देता।"

× × × ×

डिपुटी रैसे—"और ऐसी सरकार को ससार मानता है और उसकी तारीफ के पुल बाँधे हुए हैं?"

डिपुटी लैजार—"कौसिल जनरल ने यह भी लिखा है कि वह मामले की जाँच का भरसक प्रयत्न कर रहा है। लेकिन उस मुकदमे के काग़ज़ लीपजिप के कोर्ट मे भेज दिये गये हैं। और उस कोर्ट ने अभी तक फ़ैसला नही सुनाया।"

२८ जून

कई दिन से स्टीफैन की आखे दर्द कर रहीं थी। उसने अधिक पढकर उन पर ज्यादा जोर डाला था।

उसने डाक्टर से मिलना चाहा।

पुलीस मैन उसे औरतो के सेक्शन से होकर पहली मंजिल पर ले गया। वहॉ की वार्डर लोहे के फाटक को खोलने के लिये जो पोलिटि-कल डिपार्टमेंट की ओर था वहॉ पर मौजूद नही थी। वह उसे बुलाने गया।

स्टीफैन ने इसका फायदा उठाया और वह लपक कर ११ नम्बर की बैरक पर पहुचा और गुप्त छिद्र से देखने लगा।

न्यूरा वहॉ पर बैठी रो रही थी।

उसने धीरे से दरवाजा खटखटाया। न्यूरा उठी। वह फौरन दर्वाजे पर आ पहुँची और उस छेद को अपने हाथों से उसने ढक लिया।

उसने लोहे के दर्वाजे मे से धीरे से कहा कि वह स्टीफैन है।

न्यूरा ने अपना हाथ हटा दिया और उसे बडा आश्चर्य हुआ। न्यूरा न अपना हाथ हिलाया। वह उसे न देख सकी। वह केवल उसकी एक ऑख मात्र देख सकी जिससे वह उसे आश्वासन दिलाना चाहता था।

वार्डर दिखलाई पड़ी और वह बैरक के दर्वाजे से कूदकर अलग खडा हुआ और कोई कुछ न देख सका।

वह डाक्टर के कमरे मे ले जाया गया। पुलीस-डाक्टर ने कुछ मलहम उसकी ऑखो मे भर दी। उसकी आखे जलने लगी, और उनमे दर्द भी पैदा हो गया। वे फिरती सी मालूम पडने लगी। दोपहर मे वे बिल्कुल लाल हो गई। शाम तक दर्द असह्य हो गया वह बिस्तरे

चॉन लेवल को ही पहचान सका। वे सब उस दिन सुबह वहा से स्टेडिलहैम को जेल मे भेजे जाने वाले थे।

प्रिस रेडे, बेरन हर्श और डाक्टर फिफ़र को भी स्टेंडिलहैम को जाना था। वे, जैसा प्रकट होता था सब पार्टी लीडरो को एक साथ रखना चाहते थे ताकि वे जेल मे रहकर भी जब निश्चय करते अपनी पार्टी भङ्ग कर सकते।

× × × ×

क्राइगर छूट गया था। उस दिन सुबह वह राजनीतिक पुलीस द्वारा बुलाया गया। उसने अपने बयान पर रेकर्ड रखने के लिये दस्तखत किये। उसने उस आम दस्तावेज पर यह लिखा कि उसे केवल नजरबन्द उसी की रक्षा के लिये रक्खा गया था, और छूट जाने के बाद वह गवर्नमेंट के विरुद्ध किसी भी कार्यवाही मे भाग न लेगा।

उसी दिन दोपहर को राजनीतिक पुलीस का एक अफ़सर आया और उसने क्राइगर को बतलाया कि वह जा सकता है। उसने यह भी बतलाया कि उसकी पत्नी भी छोड़ दी गयी है और वह सीढियो के नीचे उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

क्राइगर ने बड़ी खुशी से यह सुना। उसने अपनी चीजे सूटकेस मे फेकनी आरम्भ की। उसका चेहरा उत्सुकता के मारे पीला पड़ गया।

क्राइगर की पत्नी भी उसी समय छोड़ दी गयी। वह न्यूरा वाले बेरक मे ही थी। वे न्यूरा के साथ क्या करेगे? वह ही अब सिर्फ़ एक स्त्री राजनीतिक कैदी उस बैरक मे बच गई। दूसरी बैरको मे वैश्याएँ और चोर स्त्रिया थी। क्या न्यूरा उन्ही के साथ 'बैरक' मे रख दी जायेगी? या वह अकेली ही रहेगी? यह बड़ी भयानक बात थी।

"लेकिन उसने यह बोतल अपनी स्त्री के लिये खरीदी थी। क्या उसे इसको लेने की स्वीकृति नही दी गयी।" स्टीफैन ने पूछा।

उत्तर मिला, "वह उसे अवश्य ले सकती थी। परन्तु जल्दी के सबब से वह पी न सकती थी, इसलिये उसने वापस कर दिया।"

"वह इतनी जल्दी मे क्यों थी?" स्टीफैन के ऐसा पूछने पर वाड्रेस लाल हो गयी। क्योंकि उससे इतनी भूल हो गई थी। उसे बिना कुछ कहे ही बोतल वापस कर देनी चाहिए थी।

उसने वही प्रश्न फिर पूछा और आग्रह किया।

वाड्रेस ने झिझकते हुए सीखचों के पास जाकर धीरे से कहा कि उसकी पत्नी छूट गयी!

३० जून

स्टीफ़ैन की पत्नी की डायरी से

वह अकेली ही अपनी कोठरी मे कुछ दिनों तक थी। श्रीमती क्राइगर छोड़ दी गई थी। डोरा बहुत दिनों मे सेडिलहैम मे थी। केवल वह ही एक अकेली राजनीतिक क़ैदी जेल मे थी।

उसे खाना कम्बल और गर्म पानी कैदियो को बाँटने का काम करने की स्वीकृति मिली थी।

२६ की शाम को जब वह अपनी कोठरी के खटमलों को मार रही थी कि वाड्रेस फूलती हुई दम से आकर उसके सामने कोठरी का ताला खोलकर खडी हो गयी।

"श्रीमती लॉरॉ, मेहरबानी करके जल्दी कीजिये। आपका बयान लेने को बुलाया गया है," उसने कहा।

"शाम के वक्त, छः हफ्तों की कैद के बाद, केस का बयान होगा?" लॉरॉ ने कहा।

पर छटपटाने लगा। दर्द बढ़ता ही गया। उसने सोचा कि शायद डाक्टर भूल न कर गया हो।

डाक्टर बुलाया गया।

रात १ बजे एक कोठरी का दरवाजा खुला। बिजली जलाई गयी। पुलीस सर्जन अन्दर आया। उसने उसके बिस्तरे पर बैठ कर उसकी आँख की परीक्षा ली।

"यह उतनी खराब नही हैं। वह सुबह अच्छी हो जायगी। दर्द शारीरिक न होकर मानसिक अधिक है ऐसा मालूम पड़ता है।" यह कह कर वह चला गया।

२९ जून

आज के दिन दोपहर के बाद उन्हे एक और बेरक के लिये साथी मिले। वे डा० स्टैंज बवेरियन प्रजा दल के थे जो बवेरियन डायट के प्रेजीडेन्ट रह चुके थे। वे बडे शक्की मिजाज थे और वे उन लोगो से केवल उस समय बोलते जब कि वे कुछ सहायता कर सकते।

आने के बाद ही उन्होने अपने घरवालो को उनके शिष्यो के लेख और लाल और हरी स्याहियो को भेज देने को लिखा। क्योकि डा० स्टेञ्ज म्यूनिच के एक सार्वजनिक स्कूल के हेडमास्टर थे।

उनकी कापियाँ आज ही शाम को पहुंच गयी और वे चुपचाप उन्हे देखने लगे। उनकी शाति-प्रियता ने स्टीफैन पर बहुत प्रभाव डाला।

३० जून

इस शाम को स्टीफैन ने मदिराघर से एक बोतल मदिरा मंगवाई और उन्होने टहल करनेवाली से अपनी पत्नी के पास ले जाने को कहा।

एक घटे बाद स्त्री-विभाग को वार्ड्स ने आकर बोतल उसे वापस कर दी।

वह सड़क पर खडी हो गयी और बाहर का जीवन देखने लगी। कितना झूठा और अनोखा अब वह उसे मालूम पड़ा .

अत मे वह घर पहुँची। उसने अपने प्यारे घर को चारो ओर देखा। उसकी दरिया लपेटी हुई थी, सामानो और किताबों से स दूकों के ढेर लगे थे। सब कुछ बर्बाद था। वह शयनागार मे पहुची। खाट सूनी पडी हुई थी। उसे विश्वास था कि वह अपने छोटे बच्चे की मौजूदगी महसूस कर सकेगी।

वह रसोई घर मे गयी। वहाँ से वह नौकरानी के सोने के कमरे मे गयी और वही पर उसके बिस्तरे पर पड़ रही। वह आजाद थी किन्तु बिल्कुल बेजार। .

१ जुलाई

रात को स्टीफैन की कोठरी के दोनो सहवासी सो रहे थे। केवल वह एक कागज पर लिख रहा था। उस दिन उसकी आख नहीं लगी। वह अपनी न्यूरा के छूट जाने की प्रसन्नता मे जाग रहा था।

वे कैसी पागल दुनिया मे बसते थे, स्टीफैन सोच रहा था।

न्यूरा लाल क्राति से बच कर रूस से बर्लिन आई। और वह श्वेत क्राति के कारण हगेरी से निकाली गयी।

न्यूरा कीव से अपने माता पिता के साथ भागी थी। वह उस समय केवल दस ही वर्ष की रही होगी। कम्यूनिस्टो ने उसके पिता का कार-खाना जब्त कर लिया था और उसके पिता को कैदखाने मे डाल दिया था वह बिल्कुल गरीबी मे अपने मुल्क से बचकर आ सका। वह भागकर पौलैंड गया परन्तु वहा से भी राजनैतिक सकटों के कारण निकाला गया। तब वह पेरिस गया जहा उसे जीविका प्राप्त करना दुरूह होगया। आखीर मे उसे बर्लिन मे ही शाति मिली।

अब १३ वर्ष पश्चात् उसकी लड़की एक राजनीतिक बदी होगयी।

अपना कोट पहिनकर जल्दी पुलिस के साथ जाने को वाड्रेस ने उससे कहा और यह भी कह दिया कि इतने प्रश्न का समय नहीं।

"शायद आप छोडी जाने वाली हैं" वाड्रेस ने उससे कहा जब कि पुलीसमैन उसे लोहे के फाटक से ले जा रही थी।

जब वे राजनीति-विभाग या पोलीटिकल डिपार्टमेंट पहुंचे तब बहुत से लोग श्रीमती लॉरॉ की ओर देख रहे थे। धीरे-धीरे सब चले गये। केवल डानर्ट जो हमेशा घरो की तलाशियां लिया करता था रह गया।

वह छोड़ी जा रही थी, उसने कहा—

"और मेरे पति ?" उसने पूछा।

"तुम्हारा पति बहुत समय तक नहीं छुटेगा। उसको पहिले कोर्ट के फैसले का इन्तज़ार करना पड़ेगा।" ऐसा उत्तर मिला।

डानर्ट मुह बनाकर हंसा। वह कमरे के बाहर गया और वह प्रति दिन वाला फार्म लेकर आया! उसे यह वायदा करना पड़ा कि वह जर्मनी के, विरुद्ध किसी भी गैरकानूनी कार्यवाही मे भाग न लेगी और न वह जर्मनी से कही जायगी और वह रोज पुलिस के हेडक्वार्टर मे रिपोर्ट करेगी। जैसे ही श्रीमती लॉरॉ ने उन कागजों पर हस्ताक्षर कर दिये बस वह फिर अपनी कोठरी को ले जायी गयी और उसे अपना सामान बाधने की इजाजत मिली।

वह ठीक अपनी कोठरी के दरवाजे पर थी और खड़ी पीछे की ओर देख रही थी। वहा की चटाई और दीवालों से बिदा ले रही थी कि वाड्रेस शराब की बोतल लेकर आयी। स्टीफैन ने उसे भेजा था। उसने उसे स्टीफैन के पास वापस ले जाने को कहा ताकि वह भी इस तरह जान ले कि वह छोड़ दी गयी।

पुलिसमैन उसे कपड़े के गोदाम मे ले गया। उसने अपने कपड़े पहिने और सूटकेस लिया जो आते वक्त जमा करा लिया गया था। कुछ सीढ़ियो के बाद वह बाहर थी।

लेकिन इस बार सजा देने वाले कम्यूनिस्ट न थे बल्कि नेशनल सोसियलिस्ट थे। क्या दुनिया है !

वह बरामदे मे पैर की आवाज सुन रहा था। नये कैदियो का गिरोह आ रहा था।

उसके विचार मे ये चित्र-पट की भाति आ रहे थे। चित्रपट उसका और न्यूरा का था।

एक फोटोग्राफर ने स्टीफैन के पास रूस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का चित्र लाया। उसने उसे खरीद कर म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस के टाइटिल पेज पर छाप दिया।

अब तक के उसके जीवन मे कोई विशेष बात न थी। वह बड़ी सख्या मे प्रति दिन तस्वीरे खरीदता और प्रतिदिन सब चित्र उसके दिमाग मे विस्मृत हो जाते। लेकिन इस चित्र ने उसे मुग्ध कर लिया। वह रात दिन इसी के सम्बन्ध मे विचार करने लगा।

आखिरकार वह फोटोग्राफर के पास पहुँचा और उसने उस सुदरी के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त की कि वह कहाँ निवास करती थी। उसे बतलाया गया कि वह फ्रालीन नार्स्कोजा रूस के एक बडे धनी कारोबारी की पुत्री थी जो अब रूस से बर्लिन समय के फेर मे पड़ कर आया था और वही रहता था।

उसने फोटोग्राफर से फ्रालीन नार्स्कोजा को पत्र लिखने को कहा कि वह उसके दफ़्तर मे उससे मिलने के लिये प्रार्थना करे। उसने एक बहाना भी बतलाया कि वह उसके ऊपर एक लेख लिखना चाहता था।

कुछ ही दिनो मे न्यूरा स्टीफैन के पास पहुँची और तीन सप्ताह पश्चात् वह उसकी पत्नी थी।

एक साल व्यतीत हुआ। एन्डी पैदा हुआ था उसका जीवन कुछ सप्ताह बाद बडे खतरे मे था। केवल ऑपरेशन और एक जादू सी बात ही उसे बचा सकी। ऑपरेशन किया गया।

नात्सीदल वालों की चरित्र हीनता उसके अचम्भे का विषय नहीं था। उसने कहा, "हमारा फर्म नात्सीदल के सदस्यों से भरा है।"

"ये लोग हम से चाहते क्या हैं, "लॉरॉ ने पूँछा।

"वे कहते हैं कि हम विटिलस्वैच की राजसत्ता फिर क़ायम करना चाहते हैं और बवेरिया को जर्मनी से अलग करना चाहते हैं। इसी लिये वे हमसे लड़ रहे हैं।"

वास्तव मे हमारा अखबार म्यूकनर न्यूस्टिन नैक्रीक्टिन बवेरिया में हिटलर के वाल्किशर व्युश्रोवैक्टर से मुकाबला करता है। नात्सीदल का इलस्ट्रीट व्युश्रोवैक्टर हमारे म्यूनिक इलस्ट्रीट प्रेस की बराबरी नहीं कर पाता। इसीलिये नात्सीदल हमसे नाराज है। वे हमें अपने मार्ग से हटाना चाहते हैं। लेकिन इस प्रश्न का एक व्यक्तिगत पहलू भी है दस साल पूर्व हिटलर की असफलता पर हमारा जो रुख था, उसे नात्सीदल विस्मृत नही कर सकता।"

× × × ×

आफिस को वापिस जाते समय पुलिस के दफ़्तर के सामने खड़ी हुई एक बड़ी भीड़ उन्हे दिखाई दी। लोहे के मजबूत दरवाजे वंद थे। स्टीफैन दरवाजे पर खड़े हुये पुलिसमैन के पास पहुंचा और उससे पूछा कि दरवाजा क्यों बद है। इसका वह कोई उत्तर न दे सका।

"दरवाजा कब्र खुलेगा ?"

"जैसे ही नया पुलिस का सभापति आवेगा," भीड़ मे से एक आदमी ने उत्तर दिया। वे लोग बैचैनी से आफिस के तरफ लौटे। दफ़्तर पर स्वस्तिका का झडा फहरा रहा था। आदमी उसे अचम्भे से देख रहे थे। आखिर क्या होने वाला है !

"उपन्यास लिख रहे थे ?" स्ट्राक्किज ने स्टीफैन से पूछा।

"नही। मैं सो नही सका इसलिये इधर उधर की लिख रहा था" उसने उत्तर दिया।

"तो उसे फ़ाड़ डालो," उसने कहा "नही तो पकड़ जाने पर गोली मार दी जायगी।" उसने अपना सिर ठोका।

नहीं! नही!! स्टी.फैन बोला। लेकिन यदि वह अपने नोट आज रात तक जेल के बाहर न भिजवा सका तो वह उसे फाड डालेगा उसने कहा। लेकिन वह इसका प्रबन्ध कैसे करेगा ? स्टीफैन विचार में पड़ गया। एकाएक उसे न्यूरा का ध्यान आया। वह छूट गयी थी न ? न्यूरा उसके कागज बाहर ले जायेगी, ऐसा सोचकर उसने उसे लिफाफे में बन्द कर दिया और उसे जेब मे छिपा लिया। अब तक उसने अपने नोट अपनी चटाई के नीचे छिपा रक्खे थे।

यह स्टीफैन के लिये आश्चर्य की बात नहीं मालूम पड़ी जब हुज़लर पुलीस अफ़सर ने कोठरी का दरवाज़ा खोला और दोपहर के समय उससे आकर कहा कि उससे कोई मिलना चाहता है।

हुजलर उसे दर्शको के कमरे में ले गया। न्यूरा वहा बैठी हुई थी। लेकिन वह बहुत बदल गई थी। वह ४३ वर्ष की मालूम पड़ती थी। जेल जीवन ने उसका स्वास्थ्य चौपट कर दिया।

वह जेल को अकेले ही नही छोड़कर जाना चाहती, न्यूरा ने उससे कहा। वह श्रीमती फ्राइगर की तरह छूटना चाहती थी। अपने पति के साथ।

वह यह न सोच सका कि न्यूरा से क्या बात करे। इस अचानक पुर्नमिलन ने उसे अवाक कर दिया। उसने कुछ पूछने के लिये पूछा कि क्या उसे पता चला कि वह क्यो पकड़ी गई थी।

उसे कुछ भी नहो मालूम, न्यूरा ने जवाब दिया।

इसी समय दरवाजा खुला और एक नौजवान अंदर आया। वह

पौन घटे स्टीफैन और उसकी पत्नी दोनों बैठे रहे। वे पौन घटे एक जीवन काल से भी बडे थे। जैसे बच्चे का रोना और उसका सिसकना धीमा पडता वे घबड़ा जाते। वे एक दूसरे को देखते बिना कुछ बोले हुये।

ऑपरेशन समाप्त हो गया। एक दाई एन्डी के बिस्तरे के पास बैठी एक शीशा उसके चेहरे के सामने पकडे हुई थी। यदि शीशे पर कालापन मिट जाता तो उसका मतलब था कि एन्डी की सास रुक गई। डाक्टर फौरन केम्फर का इजक्शन देता जो उसे फिर चला देती।

केम्फर और आक्सिजन आदि की सहायता से ४ पौड वजन का एन्डी बच गया।

एक माह बाद न्यूरा भी मौत से सघर्ष करने लगी। एक दिन सुबह उसने उसे कमरे की फर्श पर बेहोश पड़ा हुआ पाया गया। डाक्टर फौरन बुलाया गया उसने कहा कि यदि उसका ऑपरेशन करके उसके शरीर मे खून जल्द ही न भर दिया गया तो वह दो घटे के अन्दर समाप्त हो जायगी।

बड़ी कठिनता से O Group के रक्त वाला आदमी जो प्रसन्नता-पूर्वक रक्त देने पर तैयार था मिला। उसे फौरन लिटाया गया। खून न्यूरा के शरीर मे डाला गया और फिर ऑपरेशन हुआ। न्यूरा का जीवन बच गया।

अब उसकी बारी थी। क्या वह भी न्यूरा और एन्डी की भाँति बच जायगा।

ताले मे कुँजी के घूमने की आवाज हुई। वार्डर ने द्वार खोला।

"उठो अपना पानी लो" वार्डर बोला--

सुबह हो गया था और दिन निकल आया था।

३ जुलाई

आज हंगेरियन कौसल ने स्टीफैन से भेंट की। यह उसकी गिरफ़्तारी के बाद उसके मिलने का पहिला मौका था। ३।। मास पश्चात् आज ही सिर्फ़ उसे मिलने का कार्ड मिल सका। वह अपने साथ प्रश्नो की तालिका लाया था जो राजनीतिक पुलिस द्वारा पहले ही स्वीकृत हो चुका है।

वह अकेला या कई लोगो की कोठरी मे था? क्या यह दिये जाने वाले भोजन से सन्तुष्ट है? क्या वह पुस्तके चाहता है? आदि ये ही प्रश्न थे।

वह यह जानना अधिक पसंद करता है कि वह यहा पर क्यो है? स्टीफैन ने पूछा।

और कितने दिन उसे सजा भुगतनी पडेगी?

काउसल ने कहा उसे इनमे से कुछ नही मालूम है। हगेरियन गवर्नमेंट उन्हे छुड़ाने मे कोई कसर न बाकी रक्खेगी।

स्टेट कोर्ट से क्या काग़जात वापस आ गये? स्टीफैन ने जानना चाहा।

जहा तक उसने सुना वे आ गये और स्टेट कोर्ट ने यह घोषित किया है कि कोई भी वजह नही मालूम पड़ती जिसके अनुमार राजद्रोह का दोषारोपण किया जा सके।

इसलिये उसके खिलाफ़ राजद्रोह का मुकदमा नहीं चलेगा? स्टीफैन ने पूछा।

वह ऐसा नहीं सोचता, काउसल ने जवाब दिया।

तब उसे क्यों नहीं छोड़ दिया जाता जब कि जर्मनी की सब से बड़ी अदालत ने भी उसे निर्दोप करार दिया है?

स्टीफैन ने काउसिल से जानना चाहा कि क्या उसे इस बात का

वही व्यक्ति था। जिसने स्टीफैन का बयान लिया था। न्यूरा चिल्ला पड़ी "हर डेनर्ट।"

उसने क्रोध भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा। और कटु आवाज मे न्यूरा से पूछने लगा कि उसने जगह का क्या किया। किराया अदा कर दिया गया या नही।

तुम अपना काम देखो, स्टीफैन बिगड़ कर बोला।

डार्नेट कुछ न बोला और इन्सपेक्टर फ्रेक को साथ लेकर जो इनकी बात चीत की देख-भाल के लिये तैनात हुआ था कमरे के बाहर चल दिया।

यह उनका मौका था। वे अकेले थे। जल्दी से स्टीफैन ने डायरी के पन्नों वाला लिफाफा न्यूरा के जेब मे रख दिया और कान मे उसे छिपा लेने को कहा।

"हर डार्नेट ने मुझे यह आज्ञा दी है कि तुम लोग ५ मिनट से अधिक बात नही कर सकते।" फ्रेक ने कहा।

५ मिनट बाद न्यूरा को बिलखते हुए चला जाना पडा। लेकिन उसकी जेब मे स्टीफैन की डायरी के पन्ने थे।

२ जुलाई

यह सरकारी तौर पर घोषित किया जाता है कि अधिकारी वर्ग इस प्रश्न पर विचार कर रहा था कि राजनीतिक नजरबद क़ैदियों के व्यय को कौन बरदाश्त करे। इस पर उचित फैसला यह किया गया कि टेक्स देने वालो पर यह टेक्स न डाला जाय। यह केवल राजनीतिक वदियो से ही विशेपत सम्बन्ध रखता है। इस प्रश्न का हल स्वीकृत होने पर सम्पन्न राजनीतिक वदियो से धन मागा गया है।

रेव सम्पन्न व्यक्ति है। वाल्कीशर व्युओवैक्टर मे इस पैराग्राफ को पढकर वह डरता है कि उसकी सम्पत्ति कही छीन न ली जायगी।

दूसरा ऐस० ए० का आदमी गिरफ़ार हो गया। वह ब्राउन हाउस में रक्खा गया। कुछ सप्ताह पूर्व वह एक कमरे की ड्यूटी पर था जिसमें केप्टेन शेहम और दूसरे नेशनल सोशलिस्ट लीडर दावत खा रहे थे। अचानक हिटलर दरवाजे पर आ पहुंचा। उन्हे उसके आने की कोई भी आशा नही थी। आनन्द निमग्न मजलिस में सन्नाटा छा गया। हिटलर ने ताना दिया—

राष्ट्र बाहर भूखों मर रहा है और यहाँ तुम मजे कर रहे हो ? यह कह कर वह चल दिया।

लेकिन वह वहाँ कैसे पहुँचा ? स्टीफ़ैन ने प्रश्न किया।

बस यही कुल हुआ, उसने उत्तर दिया।

जैसी कि ऐस० ए० के आदमी की कहानी मालूम पड़ती है शायद यह बिल्कुल सच है। इसकी तसदीक वाल्कीशर व्युओ वैक्टर के पैराग्राफ से भी मालूम होती है जो कि २३ जून को पार्टी के विशेष कार्यकर्त्ता द्वारा घोषित की गयी है।

"ऐम० ए० क्वार्टर कहता है :—

"ऐस० ए० हेड क्वार्टर मे ऐसी सूचना बराबर मिलती रही है कि ब्राउन हाउस अथवा दूसरी पार्टी की इमारतो मे घटित घटनाओ के बारे मे नई नई अफवाहे उड़ती जा रही हैं और वे फैलती भी जाती हैं।

"इन अफवाहो में कोई भी सत्य नही है। और ये जानबूझ कर भाड़े के टट्टुओ द्वारा फैलाई जा रही हैं।

"ऐस० ए० के सब मेम्बरो को मिलकर इनका विरोध करना चाहिए और अफवाहो को फैलाने वालो को पकड़ कर पुलीस के हवाले कर देना चाहिए।

(हस्ताक्षर) Seydel

चीफ आव स्टाफ़

ग्रुप लीडर एन्ड चीफ आव दि डिपार्टमेन्ट।

भी पता था कि लियो हासलीटर (नेशनल सोशलिस्ट कमिश्नर आव नार एण्ड हार्थ) क्या उस समय मे राजनीतिक पुलिस के अफसर थे और उसके साथियो के छुटकारे का विरोध कर रहे थे ? और हासलीटर की पत्नी उसके पत्र व्यवहारो को देखा करती थी ।

हासलीटर और उसकी पत्नी राजनीतिक पुलीस का दफ्तर हफ्ते पहले छोड़ चुके थे, ऐसा काउसिल ने बतलाया ।

तब उनके छुटकारे मे कोई बाधा डालने वाला न था। यह सोच कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई ।

इन्सपेक्टर फ्रेंक ने काउसिल के जाने पर बात करनी शुरू की। उसने उससे फर्म के अदर उसकी कार्यवाही के बारे मे प्रश्न किये और उनके विषयों मे भी जो उसके साथी जेल मे थे।

उसे इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि वे सब निर्दोष जेल यातना भुगत रहे थे। इसलिये वह शर्मिन्दा होकर स्टीफैन से कहने लगा कि वह डा० वेन्डलर से बात करेगा जो कि उस समय राजनीतिक पुलिस का अध्यक्ष नियुक्त हुआ था। उसे पूरा विश्वास था कि डाक्टर वेन्डलर उन सबो को अवश्य मुक्त कर देगा।

४ जुलाई

डा० स्टेग उनमे से तीसरे व्यक्ति थे जो फ्राइगर के मुक्त होने के बाद आज स्टैडिलहैम बदल दिये गये थे और उनके साथ उनकी बवेरियन पीपल्स पार्टी के दूसरे मेम्बर भी थे। उन्होंने स्टीफैन आदि से बतलाया कि वे जेल मे एक आवश्यक बैठक करेगे और उसको खत्म कर देने पर वोट लेकर अनुमति देगे।

वे बवेरियन पीपुल्स पार्टी के सदस्य हैं। वे अब भी यह नहीं मानते कि वे असफल रहे। वे फिर भी समझते हैं कि अभी भी उनकी कुछ आवाज अडोल्फ हिटलर के मुल्क मे है।

प्रमुख व्यक्तियो को और इस आन्दोलन के नेताओ को इन प्रतिबन्धो को अपने पद का कर्त्तव्य समझना चाहिये। उन्हे दावतो से दूर रहना चाहिये। इस प्रकार उन्हे एक नेता का सा आदर्श जीवन व्यतीत करना चाहिये जो यह बना ले कि उसके मान के सिद्धान्त के लिये इन दावतो मे न शामिल हो और कभी भी अपने दैनिक सरल जीवन मे परिवर्तन न आने दे।

यह साबित करो कि तुम्हारे अन्दर से वह क्राति की भावना नेशनल सोशलिस्टो की विजय के साथ ही नही समाप्त हो गयी। यह भी दिखा दो कि नेशनल सोशलिज्म के साथ जीवन का नया ढग भी आ गया है। यह भी साबित करो कि नेशनल सोशलिज़्म का चिह्न सादगी और यितव्ययिता है, शिष्टता और आत्मनियन्त्रण है। समाज का हित व्यक्ति के पहिले है और इसलिये एक हित की भावना अपने उन लोगो के प्रति है जिन्हे उसकी आवश्यकता है।

उन सब बातो मे जिन्हे तुम सोचो और करो तुम हमेशा उन कार्य कुशल लोगो का ध्यान रक्खो जो विजय प्राप्त करने के लिये, महान् कष्ट, विच्छेद, निर्वासन और बड़ी २ यातनाऍ जेल की दीवारो के अदर भोग चुके हैं और जिन्होने अपना रक्त और जीवन दे दिया।

तुम अपने को उन सा ही योग्य प्रमाणित करो।

(कामयाब नेशनल सोशलिस्ट इन्कलाब, जिन्दाबाद।

सफल नेशनल सोशलिस्ट क्राति, दीर्घजीवी हो।

(हस्ताक्षर) एडोल्फ हेस

५ जूलाई

रविवार को वाल्किशर बोवेक्टर ने एक लम्बा लेख प्रोफेसर बुशिग के दुर्व्यवहारो पर छापा जो गत सप्ताह से ३७ न० की कोठरी मे थे। वह सब घूँस के व्यवसाय के बारे में था। उसमे यह बतलाया गया था कि

तीन दिन बाद २६ जून को ईजर मिनिस्टर आव स्टेट ने एक भाषण रोजेन हाइम मे दिया जिसमे उन्होंने वेहूदी अफवाहों का जिक्र किया जिसके अनुसार स्टेट के चासलर ने शेम्पेन की दावत पर कोडो के साथ हमला कर दिया था।

दूसरे ही दिन २७ जून को अडोल्फ हिटलर को यह आवश्यकता महसूस हुई कि वह वाल्कीशर व्युओवैक्टर मे एक नोट द्वारा स्वय अफवाहो का खडन करे।

"अभी हाल मे एक अफवाह ववेरियन प्रजादल और मार्किस्टो के सहयोग से म्यूनिच मे फैलाई गई है कि मेरे पिछली वार यहा आने पर मैंने ब्राउन हाउस के भोजनालय मे शेम्पेन की दावत चलती हुई देखी और मै नेशनल सोशलिस्ट मिनस्टरो के साथ सख्ती करके उसे वद करने की कोशिश की।

"यह बयान शुरू से आखीर तक वनावटी है और यह उन कुमार्गगामी दलो के लोगों द्वारा केवल इसे फैलाई गयी है ताकि लोग उनके द्वारा किये जानेवाले बदअमनी के कार्यो की ओर ध्यान दे।

"यह प्रत्येक नेशनल सोशलिस्ट का कर्तव्य है कि वह पता लगा कर इस ओर ऐसी अफवाहे फैलानेवालो को उपयुक्त अधिकारियो के सुपुर्द कर दे।

(हस्ताक्षर) आडोल्फ हिटलर

क्या हिटलर का यह भ्रम निवारण सत्य था? स्टीफैन को इस पर सदेह था। यदि वह था तो उसका सहायक एडोल्फ हैस कभी भी इस नोट को ता० २८ जून को ठीक दूसरे दिन वाल्कीशर व्युओवैक्टर मे प्रकाशित होने को भेजता।

"पार्टी के सभी मेम्बरो को—पुरुष स्त्री दोनो—चाहिये कि वे इस कठिन अवसर पर साधारण और सीधीसादी रीति से जीवन बितावे।

वे लोग दौड़ कर आफिस पहुचे। वहाँ खबर पहले ही आ चुकी थी। एस० ए० के सरदार, कैप्टेन रोहम और एस० एस० के सरदार हिमलर दोपहर के समय ववेरिया के प्रधान मन्त्री डाक्टर हैल्ड के पास पहुचे और उससे कहा कि जनरल वॉन ऐप को जनरल स्टेट कमिश्नर नियुक्त कर दो। हैल्ड ने ढाई बजे कैविनट की मीटिङ्ग बुलाने का वचन दिया। आफिस मे घुसते समय ठीक ढाई बजे थे।

आफिस के सब आदमी अपना अपना टेलीफोन कान से लगाये बैठे थे। मिनट-मिनट पर खबरे आ रहीं थी। सब भयभीत हो रहे थे।

कौन विजयी होगा ? क्या रोहम ववैरिया की सरकार को त्याग पत्र देने पर बाध्य कर सकेगा ? या डा० हैल्ड और उसकी सरकार ववेरिया की स्वतन्त्रता पर कुठाराघात होने से रोक सकेगे ?

कैबिनट की मीटिङ्ग चार बजे समाप्त हुई। नात्सीदल के प्रतिनिधि कैप्टेन रोहन, जनरल वॉन ऐप, वैगनर और हिमलर विदेशी आफिस मे दाखिल हुए। डाक्टर हैल्ड ने उनसे स्पष्ट शब्दों मे कह दिया कि ववेरिया की सरकार एस० ए० की धमकियों से भयभीत नहीं की जा सकती।

रोहन ने उत्तर दिया, "तब एस० ए० को म्यूनिक पर हमला करना पडेगा, और सारे रक्तपात की ववेरियन सरकार उत्तरदायी होगी।"

× × × ×

नात्सीदल की आज्ञानुसार कई सौ आदमी म्यूनिक मे इकट्ठा हो गये। उसके प्रतिनिधि ने टाउन हाल पर स्वस्तिका की पताका फहरा दी और घोषणा कर दी कि शहर को नात्सी सरकार ने ले लिया है।

कुछ मिनट बाद शहर के लार्ड मेयर ने वह झडा टाउन हाल से हटवा दिया। लैक्स की अध्यक्षता मे ववेरिया की फौज शहर के बाहर तैयार खडी थी। केवल आज्ञा की देर थी।

× × × ×

कितना अधिक रुपया उसने इधर उधर कर म्युनिसिपल हाउसिग स्कीम के सिलसिले मे पैदा किया था। ये सब उसकी गैरकानूनी आमदनी थी। समाचार पत्र के अनुसार प्रोफेसर बुशिग की कार्यवाहिया बिल्कुल फौजदारी के कानूनो मे आ जाती थी।

नेशनल सोशलिस्ट पार्टी के मुख-पत्र द्वारा लगाये गये आरोप पूर्णरूप से न्याय सगत नही मालूम पडे क्योंकि प्रोफेसर ठीक उसी दिन छोड़ दिया गया।

उसे केवल एक प्रतिज्ञापत्र पर दस्तखत करना पडा जो कि इस बात का वायदा था कि उसने अपने पूर्वगत सारे कारबार भविष्य के लिये छोड दिये। जैसे ही उसने उस दस्तावेज पर दस्तखत कर दिये वह छोड दिया गया। वोल्किशर व्युओ वेक्टर प्रकाशित लेख का अभिप्राय केवल उसको बदनाम करना था। लोगो को अब यकीन होगया कि प्रोफेसर बुशिग एक बदमाश और धोखेबाज था।

इसी ढग से यह सब किया जाता था। किसी आदमी को जेल मे ठूस देना, उसको अखबार मे जलील कर उसकी इज्जत उतारना, उसकी नोकरी छुडाना और इकरारनामों को झूठा और नाकामयाब करार दिलाना और उसकी सम्पत्ति जब्त करा लेना रोजमर्रे का काम है। दोषी अपनी बचत नही कर सकता। वह अदालतो मे अपील नही कर सकता। उसके ऊपर कोई सरकारी जुर्म नही लगाया जाता।

राजनीतिक पुलिस तो केवल यह चाहती है कि कैदी अपनी मर्जी से अपना कारबार छोड़ देने का एलान कर दे जिस पर सब कोई तैयार हो जाता था।

प्रोफेसर बुशिग मुश्किल से छुटकर बाहर ही निकल पाये थे कि डा० शेवेयर यू० पू० बवेरियन मिनिस्टर अदर लाये गये। वे बेरन गर्डिन के साथ ३९ न० मे रक्खे गये। वे उसी कोठरी मे रक्खे गये।

६ जुलाई

सुपरिन्टेन्डेन्ट आस्टवर्ग और डाक्टर श्वेयर मे शत्रुता थी। वह नौकरी से निकाल दिया गया था जब श्वेयर पुलीस का प्रधान था। आस्टवर्ग भू० पू० पुलिसमैन अब डा० श्वेयर से अपने बरखास्त करने का बदला निकालना चाहता था।

डा० खान यहूदी वकील डाशाऊ को बदल दिये गये। उनकी कोठरी खाली हो गयी। आस्टवर्ग ने डा० श्वेयर को इसी अधेरे और कष्ट-प्रद अकेली कोठरी मे रक्खे जाने की आज्ञा दी।

बवेरियन प्रजा दल के द्वारा जब कि वह स्वय भग हो जाने की बैठक कर रही थी उसमे उसने राजभक्ति की घोषणा की जिसमें बवेरिया के बहुत से भू० पू० शासक उपस्थित थे उससे सभी को बडा आश्चर्य हुआ।

खासतौर से उन्हे जिनको श्वेयर-शासन याद था उनको बडा आश्चर्य हुआ कि क्यो यह आदमी जिसके कार्य बवेरियन और जर्मन जागृति के लिये बहुत खतरनाक था, बहुत दिनों तक ताले मे बन्द नहीं करके रक्खा गया। इस कानूनी कार्यवाही जो अब उसके विरुद्ध लिया जा रहा था। उस कहानी को प्रकट कर दिया जिसमे उस चतुर शत्रु की—जो उन कठिन दिनो मे जर्मनी की स्वतन्त्रता चाहते थे—साजिश थी। अब यह स्पष्ट था कि सन् १९२३ की पुलीस का प्रधान उन दिनो की गुप्त कार्यवाहियों का पता लगाने के लिये नाजी दल के विरोध मे नियुक्त था।

डा० श्वेयर ४५ न० मे बीमार था, और उसकी हालत बड़ी नाजुक थी जो उसके बीमार पुत्र की चिन्ता के कारण हुई थी जो मृत्यु शैय्या पर पडा था। वह बराबर अपने छुटकारे की प्रार्थना करता रहा।

जिसमें केप्टेन रोहम दस वर्ष पूर्व वद किये गये थे जब कि हिटलर का असफल रहा।

डा० श्वेयर बुड्ढे और बडे उदास व्यक्ति थे। वे उस समय गिरफ़्तार किये गये जब कि उनका पुत्र मृत्युशैय्या पर था। उनका पुत्र हफ़्तो से जीवन और मरण के बीच सघर्ष करता रहा। उसके फेफड़े खराब हो गये।

हेन्स लक्स फिर गिरफ़्तार हो गये। वे केवल १७ दिन बाहर रहे। वे अपने कारखाने मे जाकर काम करने लगे। लेकिन उनके शत्रु शीयर एस० ए० के नेता ने उन्हे फिर गिरफ़्तार करवा दिया। यह तीसरा मर्तबा था।

लेक्स स्टीफैन की कोठरी मे ले जाये गये। वे आखों मे आसू भर कर उसकी तरफ देखने लगे। इसी प्रकार उसने उनसे अभिवादन किया। वह कुछ न बोल सका।

उसी शाम को लेक्स ले जाया गया और वह अपनी पुरानी कोठरी ३७ नम्बर में रक्खा गया।

४५ नम्बर कोठरी मे एक यहूदी वकील था। उसका नाम डा० खान था। वह व्यायाम के समय भी नही निकाला जाता था। सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उसकी चटाई भी कोठरी के बाहर फेकवा दी थी और यह कहा था कि सुअर को सख्त बिस्तरे पर ही पड़ा रहने दो। डा० खान अपने चबूतरे के पटरे पर पड़ा रहा। उन्होने उसे पीटा भी था नही तो वह ऐसी दशा में न पड़ा रहता जैसे वह सख्त लकड़ी पर पड़ा हुआ था।

वार्डरो ने बड़ी मुश्किल से डा० खान को चटाई देने की इजाजत सिर्फ रात भर के लिये पायी। दूसरे दिन चटाई को फिर हटवा लेने की आज्ञा आस्टवर्ग ने दी थी।

वे एक दरवाजे के सामने पहुँचे।

नवयुवक ने कुजी से ताला खोला और फिर चला गया। दोनों एस-एस० के आदमी कमरे के अदर गये। वह भी अफसर के पीछे गया। उन एस-एस० आदमियों मे से बडा वाला एक डेस्क् पर शान के साथ बैठा और उसने एक पत्र अपनी फाइल से निकाला और स्टीफैन से पूछने लगा कि उसने अपना केमरा कहा रक्खा है?

स्टीफैन इस प्रश्न की आशा न करता था। वह उस पर आवाक् होकर गौर से देखने लगा। वह उसका केमरा चाहता था।

दूसरा एस-एस० आदमी जो नवयुवक सा, जिसकी शक्ल गला काटनेवाली सी लगती थी उसे घूर-घूर कर देख रहा था। उसके हाथ मे एक रबड का हटर था।

वह उस रबड के हंटर से दूसरे ही क्षण उसके मु ह पर मारेगा, यह स्टीफैन ने विचार किया।

केमरा मेरी कोठरी मे है, वह बोला।

वहा नहीं था, एस-एस० के आदमी ने जवाब दिया।

तब मुझे नही मालूम। शायद पुलिस ने उसे जब्त कर लिया हो। स्टीफैन बोला।

एस-एस० के आदमी ने-पुलिस अफसर से कहा कि वह जाकर देखे कि केमरा वहा पर था या नही।

अब स्टीफैन के समझ मे खेल आया।

एस-एस० के आदमी पुलिस अफसर को वहाँ से हटाना चाहते थे। यह केवल बहाना मात्र था?

यदि अफसर ने कमरा छोड़ दिया होता तो वह उन दोनों की मेहरबानी पर रहता। वे उसके समक्ष मारने का साहस न कर पाते थे। लेकिन उसके जाते ही वे स्वच्छन्द हो जाते।

आज दोपहर को स्टीफैन राजनैतिक पुलीस के पास ले जाया गया। वह अपनी कोठरी को हँसते हुए छोड़ कर गया। उसने सोचा कि अब आखिरकार उसके मुकद्दमे की सुनवाई हुई। वह १६७ न० मे ले जाया गया।

दो एस० एस० आदमी उस कमरे के कोने में खड़े थे। वे बड़े ग़ौर से उसे देख रहे थे। उनमे से छोटा मुँह बनाकर हँस रहा था और बाद में उसने अपना मुँह घुमा लिया।

अन्त मे एक नवयुवक जो टेलीफोन का कार्य समाप्त कर चुका था उसे बिना देखे हुए कुजिया लेकर चल दिया और उसने स्टीफैन को भी पीछे-पीछे चलने का आदेश दिया।

वे लोग बहुत देर तक सीढ़ियो पर ऊपर नीचे चलते रहे। एस०-एस० के आदमियों ने भी पीछे पीछे चलना शुरू किया।

वह कहाँ ले जाया जा रहा था, यह प्रश्न स्टीफैन के दिमाग मे चक्कर काट रहा था। राजनीतिक विभाग के दफ़र पहली मजिल पर थे। वह क्यों ऐसी सुनसान जगह पर ले जाया जा रहा था।

एकाएक उसे समझ मे आ गया। वह पीटे जाने के लिये वहाँ ले जाया जा रहा था। उसने धीरे से अपना सन्देह पुलिस अफसर से कहा। उसने आंख से इशारा किया पर जवाब नहीं दिया। बरामदे का कही छोर नहीं था। उन्हे कोई भी न मिला। पुलिस का अफसर बराबर चुपचाप ही रहा। लेकिन जब वे एक कोने पर मुड़ कर जा रहे थे तब पुलिस के अफसर ने अपने कोट का पिछला पल्ला उलट दिया। स्टीफैन ने एक छोटा सा बैज देखा जिसमे बवेरियन के शाही घराने का चिह्न नीचे की ओर छिपा हुआ था।

उस शाही ताज को जो कि नेशनल सोशलिस्ट पुलीस अफसर की वर्दी में लगा था उसके दिखलाने का मतलब यह था कि वह स्टीफैन को बचाने जा रहा था।

उसने उसे सब बतला दिया। एस-एस० आदमियों को मामले की सुनवाई और बयान से कोई सम्बन्ध नही। यह सख्त आज्ञा है कि राजनीतिक पुलीस अफसर के इन्सपेक्टर के अतरिक्त कोई मुकदमा नहीं सुन सकता।

उसने उसे खूब समझ लिया। निस्संदेह अधिकारी वर्ग राजनीतिक कैदियों की मरम्मत नहीं चाहता।

७ जुलाई

स्टीफैन आज फिर दोपहर बाद बुलवाया गया। इस बार एक नवयुवक पुलीस उसको ले गया।

जैसे वे इन्सपेक्टर के कमरे से गुजरे उसने उससे कहा कि यह इन्सपेक्टर फ्रेक को सूचित कर दे कि वह फिर ले आया जा रहा था। पुलीसमैन ने बतलाया कि उसे स्टीफैन को राजनीतिक विभाग आज्ञा पत्रानुसार ले जा रहा था।

फ्रेक ने उससे कहा कि कैदी के साथ कोई भी दुर्व्यवहार न हो। इसके लिये सारी जिम्मेदारी उसी के सर पर थी। उसने पुलिस से कहा कि वह उसे एक छड़ के लिये भी कहीं छोड़ कर न जाय और उसे बयान दिला चुकने के बाद पहिले फ्रेक के कमरे मे लाये।

वे लोग कमरे मे पहुँच गये। एस० एस० आदमी जो पिछले दिन उसकी जॉच करना चाहते थे उसके सामने आ कर खडे हो गये। उनके पीछे हर डेनर्ट आया। वे ठीक जजो की भॉति धीरे-धीरे गये। और उन्होने स्टीफैन को घृणा और कटु दृष्टि से देखा।

वह अपना बयान दे अफसर ने स्टीफैन से कहा।

किसके बारे मे ? उसे उत्तर मिला।

अपने केमरे के बारे मे।

डेनर्ट और दोनों एस० एस० आदमी बिना कुछ कहे स्टीफैन का चेहरा देखने लगे।

स्टीफैन ने उसकी ओर घूम कर देखा कि क्या वह जाने वाला था। सब कुछ उसी के भरोसे पर था।

उसने कोई निश्चय नहीं किया और उसे यह न सूझ सका कि वह क्या करता। कुछ देर तक चुप्पी रही। तब उसने कहा कि वह राजनीतिक विभाग का मार्ग नही जानता।

~ ये सब उसे जल्द बता देगे एस-एस० आदमी ने अधीर होकर कहा :—

लेकिन उसे कही छोड़ कर जाने की आज्ञा नहीं थी, ऐसा पुलीस अफसर ने उसे जवाब दिया।

एस-एस० के आदमी अपने आपे को खो उठे। वे भुनभुनाए कि यह अफसर उसे अकेला नहीं छोड़ेगा।

वह स्वय जायगा और केमरा स्वय तलास करेगा कि वह कहाँ है। ऐसा कह कर वड़ा व्यक्ति चल दिया।

स्टीफैन बच गया। जब वह जा रहा था पुलीस अफसर ने कहा कि वह उसे अपने सामने पिटने न देगा।

स्टीफैन ने उसका हाथ दाबा। वह नही समझ सका कि वह क्यो इतना कृतज्ञ था।

जब स्टीफैन अपनी कोठरी मे पहुँचा वह थक चुका था, वह बिस्तरे पर जाकर पड़ रहा। स्टेशविज ने उससे उत्सुकता पूर्वक मामला पूछा। लेकिन वह उलझनों के कारण न बोल सका।

कोठरी के दर्वाजे खुले परन्तु वह व्यायाम करने न जा सका। उसके सहवासी उसे देखने के लिये आये किन्तु वह थकावट के कारण कुछ भी न बोला।

वार्डस भी परेशान थे। उन्होंने इसपेक्टर फ्रेक को सूचना दी जो ख़ुद भी जल्द उसे देखने पहुँचा।

उन्होंने उसकी कार छीन ली, उसकी तनख्वाह जब्त कर ली। उन्होंने उसका मकान भी अपने हाथो मे ले लिया। उसे यह उम्मीद थी कि एक दिन यह सब उसे फिर वापस मिल जायगा।

क्लर्क ने उसका बयान अपने टाइप राइटर पर लिखा। उसने उसे पढा जो कुछ उसने लिखा था।

यदि केमरा उसकी कोठरी मे नही था तो उसकी स्त्री ने जरूर उसे बेच दिया होगा। यदि केमरा न मिला तो उसकी पत्नी फिर पकड कर लायी जावेगी, और तब तक नजरबद रक्खी जावेगी जब तक कि उसका पता न लग जायगा। उसने कहा।

स्टीफैन की नजरो के सामने केमरा नाचने लगा। वह भुनभुनाया कि वह छूटते ही केमरे का मूल्य अदा कर देगा।

डेनर्ट ठीक उसके पास जाकर पूछने लगा कि क्या अभी भी उसे यह आशा थी कि वह वहा से छूट जायगा।

स्टीफैन सब समझ गया और उसने प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए कहा नही, अब उसे कतई यह विश्वास नही था कि वह कभी भी फिर छूट सकेगा।

एक बार वह फिर सोच समझकर जवाब दे कि केमरा कहा था फिर से अफसर ने प्रश्न किया।

स्टीफैन ने उत्तर दिया कि उसने उसे पहले ही बतला दिया था कि वह उसके कमरे मे था। इसके अतिरिक्त उसने यह भी सुना था कि बहुत सी चीजे घर की तलाशी के सिलसिले मे उठा ले जाई जा चुकी थी।

डेनर्ट चुप न रह सका। वह बीच ही मे बोल उठा कि क्या उसके कहने का मतलब यह था कि वे ही केमरा चुरा लाये थे।

स्टीफैन ने जवाब दिया कि उसका यह अभिप्राय नही था।

उसने सुना कि उसकी स्त्री को पकड लाने की आज्ञा दी गयी।

यह स्पष्ट था कि डेर्नट झल्लाया हुआ था और उसका कारण भी स्टीफैन को मालूम हो गया। इन्सपेक्टर फ्रेक ने सारे मामले की रिपोर्ट राजनीतिक पुलीस से कर दी थी। डेनर्ट अब इस दुबारा के बयान से यह साबित करना चाहता था कि उनका कभी यह विचार न था कि वे स्टीफैन को पीटते बल्कि वे केवल बयान चाहते थे।

वह उसकी कोठरी में था, स्टीफैन ने उत्तर दिया।

वहा नहीं था, यह कह कर डेर्नट बीच मे चिल्ला पड़ा।

तब वह नहीं जानता, उसने कहा !

डेनर्ट आपे के बाहर हो गया। वह जोर से चिल्ला कर बोलने लगा कि केमरे के पैर नही होते। वह भाग नही जा सकता।

न वह भी भाग सकता था, जो कि चार महीने से वहाँ नजरबन्द था, स्टीफैन ने जवाब दिया।

उसे बदमाशी से भरे जवाब न दे, डेनर्ट ने बिगड़ते हुए कहा, नहीं तो वह फौरन ही उसकी आवाज बदल देगा।

उसे उसका भय नही और उनको उसके केमरे से क्या प्रयोजन। केमरा तो उसकी निज की वस्तु है। स्टीफैन बिगड़ कर बोला।

किन्तु अभी उसने उसका मूल्य नहीं चुकता किया था। एक एस० एस० आदमी बोला।

यह उनका कर्तव्य नहीं था, फिर भी उसने अपने गिरफ्तार होने के कुछ ही पूर्व केमरा खरीदा था। उसे सारे धन पैदा करने के साधनों से वचित किया गया और यही कारण था कि वह उसका रुपया चुकता नहीं कर सका। लेकिन वह छूट जाने पर फौरन चुकता कर देगा। ऐसा स्टीफैन ने उत्तर दिया।

वह कैसे उसका मूल्य अदा करने की बात सोचता है, कह कर डेनर्ट ने ताने भरी हुई नजरो से उसे देखा।

लगी कि वे उसे नही जाने देगे उसे अपने बच्चे को देखने के लिये। और वह जोर-जोर से रोने लगी, और उसे फिट आ गया।

जब न्यूरा कुछ होश मे आई तो अफसर ने कहा कि वह यह नहीं यकीन कर सकता कि डा० वेन्डलर ने जो अब पुलिस का प्रधान है और उसने बर्लिन जाने की आज्ञा अपने बच्चे को देखने के लिये दी थी। इसलिये अब वह यह उससे समझ ले कि वह वहाँ तक जा सकेगी।

हाँ, यदि हर डेनर्ट ने उसे बीच मे ही गिरफ़ार न कर लिया न्यूरा ने सिसकते हुए कहा।

वह उसकी आज्ञा के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकता, अफसर ने उसे समझाया।

डा० वेन्डलर के पास जाने के लिये स्टीफैन ने न्यूरा से कहा और यह भी कहा कि वह उससे बर्लिन जाने के लिए दुबारा पूछ ले। यही एक उपाय था यदि गिरफ़ार हो गयी तो कोई चारा नही था। याद उसने इज़ाजत दे दी तो वह जा सकेगी और ईश्वर उसका साथ दे।

वह चली गयी।

व्यायाम जारी था जब स्टीफैन अपनी मजिल तक पहुँचा। उसके साथियो ने उसे घेर लिया और उसे सारी बाते उनसे बतलानी थीं। उसे बड़ी निराशा थी। वह यही सोचता था डा० वेन्डलर न्यूरा का क्या करेगा। एक वार्डर उधर दिखलाई पड़ा। स्टीफैन ने लपक कर उससे पूछा कि क्या उसकी पत्नी गिरफ़ार हो गयी।

वार्डर सहानुभूति प्रकट करता हुआ स्त्री-विभाग में गया और उसने लौट कर प्रसन्नता पूर्वक बतलाया कि वह अभी तक वहाँ पर नहीं पहुँची।

कुछ देर बाद कोठरी का दरवाजा खुला। वही मोटर अफसर फिर आया जो उसके साथ बाहर तक गया था। उसने उसे बरामदे में

वह बड़ी ही कठिनता से बयान पर हस्ताक्षर कर सका। उसकी उगलियों में शक्ति नही थी। उसे दो बार प्रयत्न करके अपना हस्ताक्षर दस्तावेज पर घसीटना पड़ा।

वह कमरे के बाहर आया और पुलिसमैन उसे फ्रेक के कमरे की ओर ले गया। इन्सपेक्टर की आवाज दूर से ही आई।

क्या बात ? उसने पूछा—वह क्यो कागज की भाति सफेद पड़ा जा रहा है।

स्टीफैन अटकते हुए बोला कि उसकी स्त्री फिर गिरफ्तार की जाने वाली है।

फ्रेक को इस पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन जो पुलिसमैन उसके साथ गया था उसने फ्रेक को यकीन दिलाया कि डेनर्ट ने दो हुक्मनामे न्यूरा को लाने के लिये दिये थे। फ्रेक केवल माथा ठोंक कर रह गया।

एक घटे बाद पुलिसमैन फिर उसे ले गया। वे नीचे उतर कर पहिली मजिल पर स्त्री-विभाग मे गये।

न्यूरा वहा पर खड़ी थी।

क्या वह गिरफ़्तार हो गयी, उसने बडे दुःख से न्यूरा से पूछा।

न्यूरा ने शाति पूर्वक उत्तर दिया कि वह गिरफ्तार नहीं की गयी। वह यहा भली प्रकार बात कर सकती थी। इसीलिये यहाँ आई थी और उसे एन्डी के पास जाने की आज्ञा मिल गई। इसलिये अब वह यह जाहिर करने आई थी कि वह अब जा रही है।

यह सत्य नहीं था। डेनर्ट ने घटे भर पूर्व उसे गिरफ़्तार करने की आज्ञा दी थी। अब वह नहीं जाने पावेगी। ऐसा स्टीफैन ने न्यूरा से कहा।

न्यूरा उदास हो गयी और उसका मुख पीला पड़ गया। वह कहने

बुलाया और कहा कि डा० वेन्डलर ने उसके द्वारा यह कहलाया कि उसकी स्त्री को आज बर्लिन जाने की आज्ञा मिल गयी।

स्टीफैन की चिन्ता दूर हो गयी। उसने डा० वेन्डलर से धन्यवाद कह देने को कहा क्योंकि उसने उस पर बड़ी कृपा की थी।

८ जुलाई

डा० स्ट्रॉयिगर स्विस बैंकों के सलाहकार वकील ४० नं० मे थे। वे स्विट्‌जरलैंड से म्यूनिच "ब्लाक मार्क" समस्या हल करने आये थे। व्यापारिक बात-चीत करने के बाद म्यूनिच बैंक के डाइरेक्टर ने पूछा वह नेशनल सोशलिस्ट जर्मनी को कैसा पसन्द करता है। क्या उसने तरक्की की है ?

तरक्की की है ! डा० स्ट्रॉयिगर ने ताना मारते हुए कहा। शायद डाचाइ का कान्सेंट्रेशन केम्प ही इस तरक्की का उदाहरण था, उसने कहा।

वह उसी शाम को गिरफ़्तार कर लिया गया।

९ जूलाई

आज स्टीफैन को न्यूरा के पास से एक पोस्टकार्ड मिला। वह बर्लिन पहुँच गई और बच्चे से दुबारा मिलकर प्रसन्न थी।

हर एक ने उसकी इस ख़ुशी में हिस्सा बटाया।

गर्मी बहुत थी। वार्डरों को उनके लिये काफी दुःख था। उन्होंने दरवाजे की तालियाँ खुली छोड़ दीं। इससे उन्हे कुछ हवा मिल सकी।

१० जूलाई

वार्डर शोडर अपने उत्तरदायित्व पर उसके साथी ओस्टहवर को आज बयान के लिये ले गया। ओस्टहवर "बेरिश कुरियर" का सम्पा-

स्टीफ़ैन की आफिस की घड़ी ने ६ बजने की सूचना दी। एक टाइपिस्ट हॉफती हुई उस कमरे मे आई और घबराई हुई आवाज मे बोली, "एस० ए० के आदमी 'वेयरशेन कुराइर' के दफ़्र पर चढ़ आये है।"

लॉरॉ ने नीचे देखा। इस अखबार का दफ्तर बगल मे ही था। सड़क पर एस० ए० की एक ट्रूप खड़ी हुई थी। खाकी कमीज पहिने हुए नवयुवक बिल्डिंग मे घुसते, अखबारो के बडल लेकर बाहर आते, और एक बड़ी लारी मे फेक कर चले जाते। वे अपने भारी फौजी जूतो से अखबारो को कुचलते और खुशी स खिलखिला कर हॅसते।

ये अखबार वेयरशेन कुराइर की प्रतियॉ नही थी। वे डाक्टर गैरलिच के साप्ताहिक पत्र की प्रतियॉ थी। डाक्टर गैलरिच अपने अखबार मे नात्सीदल के विरुद्ध आग उगल रहे थे। नात्सीदल गैलरिच से बदला लेने का मौका ढूॅढ रहा था। अब उसके आदमी उसके दफ्तर को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे थे और उसका नामोनिशान मिटा देने की तैयारियॉ कर रहे थे।

और वर्वेरिया की पुलिस क्या कर रही थी? पुलिसमैन चुपचाप अपने-अपने स्थानो पर खडे हुए यह सब गुश्ताखी देख रहे थे।

एक सहकारी सम्पादक ने प्रधान मत्री को फोन किया और सब घटना बताई, और प्रार्थना की कि पुलिस को गोली चलाने की आज्ञा दी जाय।

डाक्टर हैल्ड ने उत्तर दिया, "एक बडल अखबारों के लिये पुलिस को गोली चलाने का हुक्म नही दिया जा सकता!"

× × × ×

कितनी आसानी से ओस्टर हबर छूट गया यह देखकर सारे कैदी आपस में सीधे पुलीस के पास जाने की सलाह करने लगे। इस कार्य के लिये वार्डर तक पहुँच की गई। सारी लाइन में आशा का संचार हो गया।

वार्डरो ने मौका दिया। कॉउन्ट स्ट्राकविज ले जाया गया। वह यहा सब से अधिक दिन रहा था। तीन दिनो में उसका चौथा महीना बीतने वाला था। अभी तक वह सुनवाई के लिये कभी नहीं गया था।

कुछ मिनट बाद स्ट्राकविज फिर अपनी कोठरी में वापस आया। वह बहुत दुखी था। उसे पुलिस ने यह उत्तर दिया था कि जब वह छोड़ देने को कहा जायगा वह छूट जायगा।

सब की आशाओ पर पानी फिर गया।

११ जुलाई

आज स्टीफैन और उनके साथियो की कोठरी मे एक नया साथी आया। एक हृष्ट-पुष्ट वृद्ध भला मनुष्य गिहमर्ट वाचर वेम्बर्ग का भू० पू० मेयर। वह बहुत सी एलेक्ट्रिक्ट सप्लाई कम्पनियों का डाइरेक्टर था। वे उसके धन और उसकी मर्यादा के पीछे पड़ गये थे।

बृद्ध आदमी की आज शाम को ही सुनवाई हुई। उसके ऊपर एक नेशनल सोशलिस्ट नौकर को एक वर्ष पूर्व एलेक्ट्रिक कम्पनी से निकाल देने का अभियोग था। उसने अपने डाइरेक्टर के कार्य मे एक कपनी के मामले मे दिलचस्पी ली थी यही और दूसरों ने उतनी भली प्रकार भाग नहीं लिया था। यही उसका दोष था।

उन्होने उसे बहुत ढाढ़स बधाया। वे केवल उसकी डाइरेक्टर के पद से अलग करना चाहते हैं। जितनी जल्दी वह त्याग पत्र दे देगा उतनी ही जल्दी वह मुक्त भी हो जावेगा। स्टीफैन और उनके साथियों ने उसे त्याग देने के लिये कहा।

दक था जो म्यूनिच का सब से अधिक प्रभावशाली कैथोलिक पत्र था। वह कुछ दिन ४२ न० मे रहा था। वह इस लिये सरक्षण में लिया गया था क्योकि उसके मकान पर बिगड़ी हुई जनता ने छापा मारा था।

यह इस प्रकार हुआ—एस० ए० के आदमियो का एक झुड गुजरते हुए ओस्टर हबर के मकान के सामने इकट्ठा हो गया। वे यूरप की वर्दी मे नही थे। मजदूरों के कपडे उन्हे उस मौके के लिये दिये गये थे। इस वेष मे उन्होने बिगड़ी हुई जनता का काम किया। वे सब उसके घर पर चिल्लाने लगे कि धोखेबाज को मार डालो। उसकी मरम्मत करो आदि।

दस मिनट बाद वहाँ पर पुलीस आ गयी। भीड़ को बजाय दूर करने के उसने ओस्टर हबर को कैद करना चाहा, उसी आदमी को जिसके विरोध मे भीड़ यह प्रदर्शन कर रही थी।

ओस्टर हबर के न मिलने पर उसके लडके को वह गिरफ्तार करके ले गयी। और उसके वहाँ जाने पर पुलीस ने उसके लड़के को छोड़कर उसे पकड़ लिया। यह सब उसके शत्रुओ के षड़यत्र का परिणाम था।

जब ओस्टर हबर राजनैतिक पुलिस के पास पहुँचा तो पुलीस ने जवाब दिया कि उस पर कोई जुर्म नही लगाया गया था।

तो वे उसे क्यों नही जाने देते? उसने आश्चर्य से पूछा।

जहाँ तक उससे ताल्लुक था यदि वह उन्हे यह यकीन दिला सके कि वह अपनी रक्षा अपने आप कर सकता था तो पुलीस को छोडने मे कोई इतराज नही। पुलीस ने जवाब दिया।

उसने गारटी दे दी जो उससे चाही गई थी। और वह एक घटे बाद छोड़ दिया गया।

वार्डरों के पोते उसकी देख भाल पर होंगे और वे उनसे कहेंगे कि अच्छा-अच्छा वे उनके बाबा को जानते थे। वह बड़ा अच्छा आदमी था। वह उनकी १६३३ से ३८ तक देख भाल करता रहा।

वे इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते थे।

रेब बीमार था। वह इधर उधर लड़खड़ाता फिरता। वह धीरज से अपनी कोठरी में खेलता। क्या वह अब से लेकर पहली अगस्त तक में छूट जायगा? यदि वह बाहर नहीं आता और क्रुद्ध रहता है तो उसके साथी उससे नहीं बोलते। मगर उसकी हालत गिरती जा रही थी। वह कभी-कभी बच्चों की तरह चिल्ला पड़ता था।

वह अपने परिवार को फिर देखना चाहता था, अपनी स्त्री और छोटी लड़की को जो तीन वर्ष की थी।

गिहआर्ट वाचर जल का अभ्यस्त नहीं हो सका। वह फौरन उधर देखने लगता जब कि वार्डर अपनी कुंजियाँ हिलाता हुआ आता वह फिर पीला पड़ जाता और वह कुछ मन ही मन कहता सा है कि राष्ट्र रसातल को जा रहा है।

१६ जुलाई

कल रात लोगों में बड़ी सनसनी थी। जब वे अपना पानी लेने के लिये गये, किसी ने स्टीफैन के हाथ में एक काग़ज सरका दिया। डा० शेलहेज का नाम उस पर लाल पेंसिल से लिखा हुआ था। और काग़ज़ के दूसरी ओर यह टाइप किया हुआ था, "लॉरेन्ट, रेब और क्रिडमन की बदली......" उसी कोने पर काग़ज़ फटा हुआ था। सिर्फ़ तारीख़ बाकी बची थी—१६ जूलाई।

यह उसने कहाँ से पाया? स्टीफैन ने अपने साथी से पूछा।

यह बड़ी विचित्र बात है।

परन्तु उसे विश्वास न हुआ। वह केवल माथा ठोंक कर रह गया।

नये डाइरेक्टर, नये एकाउन्टेट, नये क्लर्क और अयोग्य व्यक्ति जिनकी योग्यता यही है कि उन्होने सबसे पहिले नेशनल सोशलिस्ट पार्टी की सदस्यता स्वीकार करली वे अपने उच्चाधिकारियों को गिरफ़ार करवा लेते थे। एक अधिकारी गिरफ़ार हुआ। उसका पद खाली हुआ। उसके स्थान पर नेशनल सोशलिस्ट ही केवल स्थान पा सकता था और इस तरह वह डाइरेक्टर हो जाता था।

१३ जुलाई

वे जेल से निकलने के पागलपन से भरे हुए उपाय सोचते रहे। हर एक के विचार दूसरे के विपरीत थे। परन्तु वे स्वतत्र होना चाहते थे।

१४ जुलाई

गर्मी पड़ रही थी। नियन्त्रतण मे भी ढील होगयी ठीक उसी तरह जैसे कि गर्मी के वार्डरो का दिल भी पिघला दिया। वे लोग मजाक कर रहे थे कि २५ वर्ष मे जेल मे क्या होगा।

'लम्बी नाक', जो उन्होने हिटलर का नाम रख छोडा था, उन लोगो से मिलने जावेगा अपना बुड्डा सिर हिलाते हुए, उनमे से एक कह रहा था। उसके बाल सफेद होगे और वह लकडी टेक कर चलेगा। वह बरामदे मे चलता हुआ आवेगा और उनसे कहेगा। ओह-ओह-तो आप लोग १९३३ के कैदी थे। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा वह उनके लिये एक वस्तु सजाने के लिये लाया है कि वे अपनी रजत जयबी मना ले अपने यहा रहने के लिये और वे यहीं पर बहुत दिनो तक मजे करे।

वे हंसते थे और वह आगे कहता था कि पच्चीस वर्ष पश्चात्

उसकी भाग्य सख्या थी। इसी के अनुसार वह एक महीने से दूसरे महीने की २१ ता० को देखता था। बृहस्पतिवार का दिन भी छूटने का भाग्यवान दिन था।

हर एक केवल एक दिन निराश होता था। केवल बृहस्पति की शाम को। जब कि उसे विश्वास हो जाता उनके छुटकारे का भाग्य आगे बढ़ गया है।

१९ जुलाई

दो नवयुवक जो वेष-भूषा से भले मालूम पड़ते थे और जो बर्लिन के फिल्म सम्बन्धी कार्य करनेवाले बड़े आदमी लोथर स्टार्क के पुत्र थे कल रात से साम्प्रदायिक कोठरी मे बदमाशो के साथ में बन्द कर दिये गये। वे अपने खर्चे से बर्लिन से म्यूनिच वायुयान द्वारा लाये गये थे। उन्हे केथोलिक-लो-फिल्म कम्पनी के मुकदमे में गवाही देनी थी। उसमें उन्हे यह बतलाना था कि वे उसके मैनेजर रेवरेन्ड डा० अर्न्स्ट को जानते थे। यह दीवानी का कैथोलिक मुकदमा था।

दोनो स्टार्क की आज सुबह गवाही हुई। उन्होने लो कम्पनी पर अपने रुपयो का अधिकार छोड़ दिया और वे आज ही शाम को छोड़ दिये गये। हर्शफील्ड फिल्म-ब्रोकर भी जो इसी सिलसिले में हिरासत में था छोड़ दिया गया, जैसे ही उसने अपने हक़ खतम कर दिय और जिन बिलो को उसने बनाया था उन्हे दे दिया।

फिल्म कपनी के दो डाइरेक्टर सरक्षण के लिये हिरासत मे ले लिये गये। इस मुकदमे मे मोसिन्योर वाल्टर वेच और रेवरेन्ड डा० अर्न्स्ट थे। कपनी अलग कर ली गयी। इस मुकदमे मे लो फिल्म कम्पनी के नये डाइरेक्टर पुलिस द्वारा नियुक्त कर दिये गये नेशनल सोशलिस्ट पुलिस कमिश्नरो से मिल जुलकर कार्य करते थे। कम्पनी के ऋणदाता और लेनदम् गिरफ़्तार कर लिये जाते थे। इस मुकदमे में वे

कल डा० शोलहेज को कपडे से बंद एक पार्सल मिला था। उन कैदियों के नाम वाला कागज उस पर चिपका हुआ था ताकि देने मे भूल न हो। और डा० शोलहेज के पार्सल पर यही का कागज चिपका हुआ। जिस पर उनकी भावी किस्मत का फैसला था।

डा० शेलहेज ने संदेह और उत्सुकता से दूसरे कैदियो की भाँति लेबिल निकाला। उन्होंने उसमे कुछ छपा हुआ देखा। वे उसे देखने को उत्सुक हुए और उन्होंने होशियारी से उसे निकाला ताकि वह फटे न। और वही पर उसने उन लागो के नाम पढ़े जिनकी बदली होनी थी। लेकिन वहाँ उसी जगह लेबिल का कागज फटा हुआ था। वे तीनों दुविधा मे पड़ गये।

जब अफ़सर हजलर चिट्ठियाँ लेकर आया तो स्टीफैन ने उससे पूछा कि क्या वह और कही भेजा जाने वाला था। उसे मालूम था या नहीं।

हजलर को आश्चर्य हुआ और उसका चेहरा लाल हो गया।

किसने उसे बतलाया कि उसकी बदली की जा रही थी, उसने पूछा।

स्टीफैन ने कहा, किसी ने नहीं।

हजलर सावधान हो गया था। वह यो बतला देने वाला नही था। उसने यह बहाना किया कि उसे कुछ नही मालूम था परन्तु उसकी मुखाकृति इसका विरोधी-भाव प्रदर्शन कर रही थी। वह उसकी मुखाकृति से ही समझ गया कि वे लोग बदल कर भेजे जा रहे थे।

आने वाले दिनो मे क्या होनेवाला था। डेकाऊ या स्टेडेलहेम कन्सेंट्रेशन केम्प या जेल।

१८ जुलाई

उनमे से हर एक का एक अपना भाग्यवान दिन या संख्या थी। स्टीफैन का यह विचार था कि वह २१ ता० को छोड़ा जायगा, यही

लीडर उसकी जमानत ले चुका था। हिमलर ने जो पुलिस का प्रधान था लिश्टेनवर्ग को बुलाकर उसे छूट जाने का समाचार दिया।

२० जुलाई

सारे लोग उस मंजिल के अँग्रेजी सीख रहे थे। जेल में अँग्रेज़ी सीखना उनके समय व्यतीत करने का सब से सुन्दर साधन था। हरएक को एकाग्र होना पड़ता था। अध्ययन में निमग्नता होती थी। हर कोई यह भी भूल जाता है कि कौन कहाँ पर था। शुपिक उनमें सब से उत्सुक और प्रयत्नशील था। वह एक पुराने कोष से शब्दों को याद करता था। स्टीफ़न के विश्वास के अनुसार वह सन् १८७० की थी। उनका सब से नवीन तमाशा अँग्रेजी में सब से असाधारण शब्द का ढूंढना था।

सचमुच किसी अँग्रेज को उनकी अँग्रेजी सुनकर प्रसन्नता होती। स्टीफ़न के विचार से वह यही समझता कि वे सब चीनी भाषा बोल रहे थे। शुपिक की अँग्रेजी बड़ी मजेदार थी। उसका उच्चारण कुछ ह्वाइट-शपेल और कुछ ज़ेक के पड़ोस का होता था। वे सब अँग्रेजी बोलना सीखना चाहते थे कि बाहर निकलने के पहले अच्छा अभ्यास हो जाय क्योंकि वे सब इङ्गलेंड जाना चाहते थे।

२१ जूलाई

गर्मी प्रति दिन अधिक असहनीय होती जा रही थी। वार्डर सीधे थे। वे कोठरियों का द्वार खुला रहने और उन सब को बरामदे में घूमने देते थे। जेल का नियन्त्रण तब से ढीला हो गया था जब से हेड-वार्डर से कैदी कहवा लेने लगे थे। उनको घंटों बरामदे में रहने की सुविधा थी और वे एक दूसरे की कोठरी तक भी आ जा सकते थे। दिन जल्द बीतते गये। जेल जीवन बड़ा सहनशील होता था!

स्टीफ़न लेक्स के साथ खिड़की पर आज खड़ा था। वे बाज़ का

दोनो स्टार्क और हर्श फील्ड थे। उन्हे अपना अधिकार छोड़ देना पडा जिसकी सम्पत्ति सत्तर हजार मार्क होती थी।

हिटलर क्या कहता था—व्यवसायिक कारखानो के कार्यों में दखल करना मना था।

व्यायाम के समय स्टीफैन वार्डर से बात-चीत कर रहा था। वार्डर भला आदमी था। बहुत दिनो तक पुलीस की नौकरी करने के बाद अभी हाल मे वह नेशनल शोशलिस्ट हो गया था। वे सब उन कैदियों के बारे मे वार्त्तालाप कर रहे थे जिनका डेकाऊ मे देहावसान हो गया था। स्टीफैन उस पुलीसमैन की भावनाए जानना चाहता था। उसने उसके विचार लिख लिये। उसने कहा था कि डा० स्ट्रेअस और मेजर हम-सिगर को गोली से मार डालना चाहिए।

[डा० स्ट्रेअस और हमलिगर पुलिस मेजर डेकाऊ के कन्सेंट्रेशन केम्प मे मार डाले गये थे।]

लेकिन क्यो उन्हे मार डाला जाय ? स्टीफैन ने कहा, यदि उन्होंने कोई कसूर किया था तो उन्हे कोर्ट के सामने ले जाकर सजा देनी चाहिए थी।

इसमे और उसमे कोई अन्तर नही, वार्डर ने उत्तर दिया। उन जैसे आदमियो के साथ वैसा ही करना चाहिए था। उसे आश्चर्य था कि शुपिक और डा० जरलिच ऐसे व्यक्ति जिन्होने नेशनल सोशलिस्टों का इतना गहरा विरोध किया था अभी तक जीवित थे।

स्टीफैन ने सोचा कि एक सहृदय व्यक्ति यह वार्डर भी कसाईयों के झुड मे परिवर्तित हो गया था। वह अँधेरे मे घूमता हुआ और विचारों मे डूबा हुआ अपनी कोठरी मे फिर चला गया।

आज मेजर लिश्टेनवर्ग स्टेह्लहेम के लीडर जो स्टेन्वंर्ग मे था और जिसे एक सप्ताह से ऊपर हो गया था छूट गया। स्टेह्लहम का एक

शहर के कोने-कोने मे नात्सी ही नात्सी ! स्थान-स्थान पर स्वस्तिका !! टाउन हाल पर दोबारा स्वस्तिका पताका फहराने लगी। इस बार उसे उतारने वाला कोई न था। पुलिस के प्रधान दफ्तर पर एस० ए० ने अधिकार कर लिया था। कैप्टेन रोहम, वैग्नर, हिमलर और जनरल वान ऐपन विदेशी आफिस पर जा धमके। दफ्तर मे एक चीटी तक न थी। सुनसान इमारतों पर उन्होने अधिकार कर लिया यह नात्सीदल का विजय-दिवस था। नवयुवक हर्षपूर्वक राष्ट्रीय गान गा रहे थे।

ववेरिया का भविष्य निश्चित हो गया। उसने जातीय-समाजवाद स्वीकार कर लिया !

× × × ×

तीन दिन बाद !

प्रत्येक घर पर स्वस्तिका का झंडा फहरा रहा था। प्रत्येक सडक पर एस० ए० के सिपाही घूम रहे थे।

नौर एण्ड हर्थ के फर्म का प्रत्येक व्यक्ति घबड़ाया हुआ था। सुडेस स्टागपोस्ट के सम्पादक शुपिक को शुक्रवार के सुबह गिरफ्तार कर लिया गया था और अब तक नही छोडा गया था। इसका कारण ? यह किसी को नही मालूम !

आफिस का काम शुरू भी नही हुआ था कि खबर मिली कि म्यूकनर न्यूजटिन नेक्रिक्टन के सम्पादक व्यूकनर और उसके सहायक आरटिन को भी कुछ मिनट पूर्व कैद कर लिया गया है।

- फर्म के अब केवल दो ही सम्पादक जेल के बाहर थे—रेव और लॉरॉ।

गुम्मद के चारो ओर मडराना देख रहे थे। एकाएक लेक्स बोला। यह ठीक उसी प्रकार हुआ मानो वह बोलता हुआ सोच रहा हो। उसका हृदय अफसोसे से भरा हुआ था। स्टीफैन ने कभी उसे हँसते हुए नही देखा था। उस भयानक घटना की स्मृति जब वह पीटा गया था उसके दिमाग मे ताजी बनी हुई थी। वह उस भयानक और दर्दनाक घटना को नही भूल सकता। वह ३३ से अधिक नहीं और वृद्ध पुरुष था।

वह जीवन मे गलत ढग मे चला था। उसने परिश्रम किया, सेवा की परन्तु जीवन मे कुछ भी न पाया—वह कहने लगा। वह नीचे की ओर ध्यान पूर्वक देखने लगा।

बीस वर्ष की आयु तक वह प्रातः से रात्रि गये तक काम करता था। वह प्रातः होने के बहुत पूर्व ही से पियानो सीखना प्रारम्भ करता। कमरा बहुत ठढा था और पियानो के पास एक छोटा सा स्टोव था। जब वह उस पर एक हाथ की उ गलियो का अभ्यास करता तो दूसरा स्टोव पर गर्म किया करता। उसकी जवानी सुखमय नही थी। वह हमेशा काम मे लगा रहता था। लेकिन अब उसका काम और काम पाने की आशा सभी जा चुकी थी। वह अब यही सोचता कि क्या वह जीवित छूट सकेगा। उसका शत्रु उसे फिर जेल मे डलवा देने की चेष्टा करता।

स्टीफैन ने अपना हाथ उसके हाथ पर रक्खा। वह कुछ शब्दों से सात्वना न दिला सका। वह उसका हाथ दबा भर ही सका और वे जीवन मे यातनाओ के मारे हुए एक बधन मे बधे एक साथ खडे थे।

आज दोपहर बाद बोहमर जो सेक्सोनी का हथियार बनाने वाला था उसी कोठरी मे एक सप्ताह से था जिसमे रेव और फ्राइडमन थे, छोड दिया गया।

बोहमर ब्राउन हाउस मे लीपजिग से आया था और उसके पास अच्छे-अच्छे प्रमाण पत्र थे। वह हथियारो का आर्डर लेने आया था।

ब्राउन हाऊस मे उत्तर मिला।

शुपिक—यही कैदी का नाम था—नेशनल सोशलिस्ट था। वह एक एस० ए० आदमी था। उसके साथियों ने उसे ब्राउन हाऊस के गोदाम मे ढकेल कर उसकी यह दशा की थी।

"लेकिन क्यो ऐसा क्यो हुआ ?" स्टीफैन ने पूछा।

वह उसके प्रश्न का उत्तर नही दे सका। उसने कहा कि वह नेशनल सोशलिस्ट था इसलिये वह अपने साथियों को धोखा नही दे सकता था। लेकिन वह इसकी शर्त करने को तैयार था कि वह उनसे इसका प्रतिकार अवश्य करेगा।

वार्डर ने आकर बतलाया कि डा० शेलहेज बदल कर स्टेडेलहम भेजे जाने वाले थे।

आज दोपहर के बाद स्टीफैन ने सुना कि उन सभी को स्टेडेलहम जाना था। हर सुबह और शाम उनमे से एक सम्पादक पुलिस लारी मे ले जाया जाता था। डा० शेलहेज से श्री गणेश हुआ था।

आज शाम को वार्डर ने बतलाया कि कल आठ बजे सुबह स्टीफैन को भी स्टेडेलहम जाना था।

क्या बदले जाने का अभिप्राय अधिक सख्ती करने का था या अब वह जल्द ही छूट जाने वाला था।

स्टीफैन रात भर न सो सका और उसने देखा कि काउन्ट स्ट्राकविज भी जग रहा था। गेहीम्रट भी नहीं सो सका।

वे सब सारे दिन के बारे मे सोच रहे थे और स्टेडेलहम के।

स्टेडेलहम के कैदखाने से

२५ जुलाई

सात बजे हैड वार्डर आया और उसने कहा कि स्टेडेलहम को

उन्होंने उसके साथ वार्ता की लेकिन बाद मे वह वार्ता भग होने के फलस्वरूप गिरफ्तार कर वहा पर भेज दिया गया। राजनीतिक पुलिस ने उसे खुफिया करार दिया। जाच करने पर यह पता पाया कि वह नेशनल सोशलिस्ट पार्टी का सदस्य था। वह फौरन छोड़ दिया गया।

२२ जुलाई

स्ट्राकविज आज मुकदमे की सुनवाई के लिये ले जाया गया। आज उसे अपने वकील से बात करने की इजाजत दी गयी थी। आज वह पहली बार ऐसा कर सका। अब तक उनके वकीलो को उनसे मिलने की आज्ञा नहीं थी। उन्हे यह बतलाया गया था कि वे केवल संरक्षण के लिये हिरासत में हैं, इसलिये कानूनी मदद की जरूरत नही।

अब चुप्पी समाप्त हो गयी। काउन्ट स्ट्राकविज का वकील कई वर्षों से नेशनल सोशलिस्ट था। इसीलिये उसे विजिटर्स-कार्ड मिल गया।

उसने बतलाया था कि ५ जुलाई को उनके कागजात सरकारी अदालत लीपजिग को दुबारा भेज दिये गये। इसलिये हजलीटर ने मामला खतम नही किया। उसने मामले को राजद्रोह का अपराध करार देकर उन पर मुकदमा चलाने का इरादा कर लिया था।

२४ जुलाई

एक आदमी जिसकी खूब मरम्मत की गई थी और जिसके पट्टिया बधी हुई हैं ४० नम्बर मे था। उसका शरीर मार के निशानों से भरा था। उसका मुख बुरी तरह कुचला गया था। उसे बाहर निकलने की आज्ञा नहीं दी गयी। स्टीफैन ने दरवाजे से उससे पूछा कि क्या उसे किसी वस्तु की आवश्यकता थी।

"सिर्फ एक किताब" उसने कहा।

"कहा पर उन्होने उसकी यह दशा की," स्टीफैन ने पूछा।

कोट भी नही उतार सकता था। वह बहुत सी चीजों से लदा हुआ था।

दूसरी पुलिस की मोटर भी वही खड़ी हुई थी। वे सब उसमे बैठे। स्टीफैन आखीरी था। लेकिन उसने क्या देखा कि मोटर मे सीट नहीं थी। वह एक काल कोटरी थी जिसके बीच मे छोटा-सा रास्ता था।

उसको अपना सामान रास्ते मे रखना पडा। वार्डर ने एक छोटा दरवाजा खोला और बोला जल्दी खसको।

स्टीफैन हिचकिचाया, उसके ऊपर आश्चर्य छा गया वह बोला "इसमे ?"

स्टीफैन ने यह महसूस किया कि वह कफन मे था। वह चारों ओर से दबा जा रहा था। हिलना-डुलना बिल्कुल असम्भव था। उसकी कोटरी मुश्किल से २ फीट चौड़ी थी और जिसमे जरा भी हवा और रोशनी नही थी ! ऊपर से गर्मी भी बहुत थी।

स्टीफैन अपना जाडे का ओवरकोट इस बडी गर्मी मे पहिने हुए था और वह पसीने से नहाया हुआ था। वह उसे उतार नही सकता था। उसे हाथ हिलाने तक की जगह नही थी। उस जगह की हवा गदी थी। उसमे खिडकियाँ नही थी। सिर्फ छत मे कुछ हवा के लिये छेद बने थे। वह बेहोशी की दशा मे लड़ रहा था। उसने अपनी सारी शक्ति केंद्रित की लेकिन वह उसे नही सह सका। उसने सोचा कि यदि दरवाजा न खुला तो वह मर जायगा।

खोलो" वह मर रहा है, स्टीफैन ने अपने लिये कहा।

दूसरे हिस्सो के लोग हँस रहे थे कि उसके साथ क्या माजरा था।

वह बीमार पड़ रहा था। स्टीफैन ने कहा।

सब हिस्सों मे खटखटाहट मचने लगी। वार्डर, कोई बीमार है, किसी ने कहा।

जाने का समय हो गया। स्टीफैन की वस्तुए पहले से ही बंधी हुई थी। उसने जल्द ही अपने सहवासियों से दरवाजो की शलाखों मे हाथ डालते हुए हाथ मिलाया और उनकी शुभकान्ताएं लेकर चल दिया।

सब से नीचे की मंजिल मे दफ़्तर में उसे उसकी कुजियां, हैट और दूसरी वस्तुए दे दी गयी जो उससे ४॥ मास पूर्व उसके शुरू दिन आने पर रखवा ली गई थी। पुलिस की मोटर खुले हुए दरवाज़े के साथ खड़ी हुई थी। वे सब उसके अदर घुस गये। उसमे उतने ही आदमी थे जितने उस किस्म की छोटी मोटर मे ठूँस-ठूँस कर भरे जा सकते थे। मोटर चल दी। वे केवल दूसरी मोटरो की आवाज मात्र ही सुन सकते थे परन्तु अपारदर्शी शीशे की खिड़कियों के कारण वे देख न सकते थे।

मोटर रुक गयी। यह पहिली मजिल थी। कार्नेलियस स्ट्रेंजे की जेल से दो कैदी उनकी सख्या में और बढ़े। वे मामूली कैदी थे। एक बिल्कुल नवयुवक था। उसके बटन पर स्वस्तिका बना हुआ था। वह पकड़ लिया गया था।

"उसे क्या मिला ?" स्टीफैन ने पूछा।

"अभी तक कुछ भी नही" उसने जवाब दिया। वह निर्दोष था। जहा से वह आ रहा था वहाँ एक लड़का मार डाला गया था और वे कहते थे कि वह उसी की करतूत है। परन्तु वह वहा पर उस समय था ही नहीं।

मोटर फिर रुकी। दरवाजे खोले गये। यह दूसरी मजिल थी। यह न्यूबेक जेल था, यह स्टीफैन को दूसरे कैदियों ने बतलाया। वे यहां पर रह चुके थे। इसलिये वे रास्ता जानते थे।

सभी को उतरना पड़ा।

स्टीफैन बड़ी मुश्किल से चल सका। उसके पास दो सूट केस और एक बड़ा पार्सल था जो वह ले जा रहा था। सूरज चमक रहा था। बेहद गर्मी थी। लेकिन वह कुछ नहीं कर सका। वह अपना ओवर

स्टीफैन ने कहा कि वह नहीं देखता कि वह खत्म हो रहा था।

वह बिलकुल परेशान सा था। इस बार उसने दरवाजा नहीं बंद किया बल्कि उसने स्टीफैन को उसके सूटकेस पर बैठने को कहा। जो कि बीच शस्त्रों मे पड़ा था। मोटर चल दी। वे अब स्टैंडेलहम की ओर जा रहे थे—जो उनका नया घर—जेल था।

वार्डर स्टीफैन से बात करने लगा। उसने पूछा कि वे सब क्यों अब स्टेंडेलहम ले जाये जा रहे थे।

स्टीफैन ने उससे सब का अभिप्राय पूछा।

उसने कहा कि वे सब सम्पादक और सम्वाददाता को जो नार एण्ड हर्थ प्रकाशक के यहाँ से आये थे, हर बारी मे वह एक सम्पादक को ले जाता था। वे सब बिलकुल सब से अलग रक्खे जाने वाले थे।

स्टेंडेलहम जेल आ गया। स्टीफैन एक बीमार की भाँति मोटर से उतरा। जो बहुत ज्यादा बीमार हो—दुनिया उसकी आँखों के सामने नाचने लगी। वह बहुत अजीब मालूम होता था। उसकी चिथडे २ कमीज उसे कमर तक नगा किये हुये थी। ओवर कोट कधे पर पड़ा था। एक वार्डर ने दया दृष्टि करके उसकी मदद की और उसका सूट-केस ले जाने मे मदद पहुंचाई और वह उसके साथ इमारत के अन्दर भी गया।

लोग प्रारम्भिक आफिस मे पहुँचे। उसके साथी कैदियो ने अपने नाम एक एक करके दर्ज कराये। अफसर ने एक से कहा :---

उसे तीन महीने की सजा थी और वह २५ अक्टूबर को छूट जाने वाला था। उसकी सजा ८४५ नम्बर पर प्रारम्भ होती थी।

वह दूसरे से बोला कि उसे एक साल की सजा मिली और वह २५ जूलाई १६३४ को मुक्त हो जाने वाला था।

स्टीफैन उनसे ईर्ष्या करता था क्योंकि वे जानते थे कि वे कब मुक्त

वह कहाँ है ? किसी की कटु आवाज स्टीफैन ने सुनी।

नम्बर ६ मे, किसी ने चिल्ला कर कहा।

उसकी हालत क्या खराब है ? वार्डर ने स्टीफैन से बिगड़ते हुए पूछा। उसने उसे पकड़ा और फिर- दरवाजा बद करके अँधेरा कर दिया।

उसने चिल्लाकर कहा कि वह बहाना कर रहा था।

किसी ने दूसरे हिस्से से कहा कि उठने की कोशिश करे तो हवा मिल सकती थी।

उसने कोशिश की परन्तु हिल न सका, कोठरी बहुत छोटी थी। उसकी ताकत समाप्त हो रही थी लेकिन अभी तक मोटर नही चली थी। उसने बेहोशी की अवस्था में दरवाजे को पीटना शुरू किया।

"दरवाजा खोलो निर्दयी। मुझे बाहर मरने दे। मैं अन्दर नही मरूँगा।

दूसरे हिस्से मे बैठे हुए लोगो ने समझा कि यह केवल बहाना नही था। इसमे असलियत भी थी।

उन्होंने मोटर को अपनी ओर घूसो से ठोकना और खटखटाना शुरू किया। आखिरकार स्टीफैन ने पैरो की आवाज सुनी।

उसका दरवाजा खोला गया। वार्डर उसके सामने खड़ा हुआ। वह उसे समझाने के लिये आया था। लेकिन स्टीफैन की दशा देखकर उसके पैर पीछे पड गये। एक ही झटके मे स्टीफैन ने अपना ओवर-कोट, अपनी वास्केट फाड़ डाली और उसने टाई उतार कर कमीज को फाड़ते हुए खोलकर वार्डर के सामने सीना खोलाकर खड़ा हो गया।

स्टीफैन ने उस निर्दयी से कहा कि वह देखे कि उसका कलेजा कैसा धडक रहा था।

वार्डर के होश गुम थे। वह यह न सोच सका कि क्या करे। उसने उसके सीने पर हाथ लगाया।

स्टीफैन ने अपना मुँह खोला—उसका शरीर ऐंठ रहा था, वह बोलना चाहता था—उसने बडी कोशिश की—मेरा नाम—वह इससे अधिक न बोल सका। उसने बड़ी कोशिश की परन्तु वेकार। उसके हृदय से टूटी हुई आवाज निकल रही थी जिसको उसने सुन लिया था। वह सिसकता ही रहा।

अगर वह उसको नाम नही बतलायेगा तो वह उसकी सहायता नहीं कर सकता, यह उस आदमी ने विगड़ते हुए कहा स्टीफैन ने उसकी वात अच्छी तरह सुन ली।

उसके ओंठ फिर हिले परन्तु उनसे स्पष्ट आवाज न निकल सकी।

आखीर मे उस आदमी ने स्टीफैन को एक कागज दिखलाया जिसमे उसका नाम लिखा था और पूछा क्या यह वही है ?

स्टीफैन ने अपना सिर हिलाया।

वह अपने डेस्क पर वापस चला गया और एक बडे रजिस्टर में लिखने लगा। तव उसने स्टीफैन का वजन लिया और उसकी नाप ली।

एस० ए० आदमी उसे एक बडे बरामदे से होकर फिर ले गया।

एक वार्डर ने एक कोठरी का दरवाजा खोला। वह एक बडे अँधेरे से कमरे मे था। दो नवयुवक मेज पर बैठे हुए थे—एक दुबला अच्छा सा था और दूसरा मोटा और हँसमुख मुद्रा का था। वे अब उसके कमरे के नये साथी थे। उन दोनों ने मुझे बडे गौर से देखा।

वह ठीक दशा मे मालूम होता था। क्या उसी की परीक्षा हो रही थी। उन्होने जानना चाहा।

नही-नही उसकी तबियत दुरुस्त नही थी। कुल बात यही थी। स्टीफैन ने जवाब दिया।

क्या उसका (दिल) जिगर खराब था। मोटे आदमी ने सहानुभूति प्रकट करते हुए पूछा।

होंगे। परन्तु वह यह भी नहीं सोच सकता था कि वह दो महीने में छूटेगा या १।वर्ष मे।

जैसे ही उसकी बाबत सब बाते लिख ली गईं वह दूसरे कमरे मे ले जाया गया।

वहाँ पर जेल मे आने वाले कैदियों को अपनी कमीज की तलाशी देनी पड़ती थी। उन्हे सब कुछ जो वे लेकर जाते, सिगरेट, रुपया पैसा, पेंसिल, टाई, हैट सभी कुछ दे देना पड़ता था। अफसर उन्हे एक बक्स मे रख कर उनकी एक सूची तैय्यार कर लेता था। नये कैदियों को जूते, कोट, और पायजामे जेल से पहिनने को दिये जाते थे। जिन्हे कम सजा होती वे अपने कपड़े पहिनने की स्वीकृति पा जाते थे।

उसकी बारी सब से आखीर में आई। स्टीफैन के बेग की तलाशी ली गयी। उसे सब चीजे छोड़ देनी पड़ीं। लेकिन उसे उसके कपड़ो की स्वीकृति दी गयी।

उसे एक एस० ए० आदमी अपने साथ ले गया। स्टीफैन पहिले डाक्टर से मिलना चाहता था। वह इतना कमजोर हो गया था कि बड़ी कठिनता से सीढ़ियों पर चढ़ सका और उन्हे कई जगह रास्ते में ठहरना पड़ा।

वे डाक्टर के कमरे मे पहुँचे। बडी प्रतीक्षा के पश्चात् द्वार खुला। स्टीफैन अन्दर कन्सल्टिग-रूप में गया। एक आदमी सफेद कोट पहिने हुए डेस्क के पास खड़ा होकर लिख रहा था उसने यह भी नहीं देखा कि कब स्टीफैन अन्दर गया। वह उसकी तरफ बढ़ा लेकिन उसने इशारे से रोक दिया और कहा कि उसे खडे होकर इन्तजार करना चाहिए जब तक वह उससे न बोले।

कुछ समय बीतने पर उसने जोर से घुड़क कर स्टीफैन से पूछा कि उसका क्या नाम था।

गोदाम से निकाल पायी थी। युर्नियर नहीं चाहता था कि उसका वृद्ध पिता गिरफ्तार हो। इसलिये उसने यह घोषित किया कि वह ही उन बेकार हथियारो का स्वामी था जो वह देना भूल गया था। वह कई हफ्तों से जेल मे मुकदमे की तारीख की प्रतीक्षा कर रहा था।

२६ जुलाई

स्टीफैन आदि को ७ बजे उठना पडा। उन्हे एक बर्तन में मुह धोने के लिये पानी मिला। तब उनका नाश्ता आया।

साढ़े आठ बजे के व्यायाम करने गये स्टीफैन को उसके साथियों ने पहिले ही बतला दिया था कि प्रोफेसर कोजमेन् और डा० वेज और वैरन आटिन अस्पताल मे थे लेकिन वे व्यायाम साथ मे करने वाले थे। यदि स्टीफैन कुछ भी चतुर हुआ तो वह भी उसके बाद ही जाकर कतार मे खड़ा हो जा सकता था।

अस्पताल के मरीज पहिले ही से बरामदे मे कतार बाँधे खडे हुए थे जब कि वे लोग कोठरी के बाहर निकले।

स्टीफैन ने देखा कि डा० वेज और वैरन आटिन सब से आखिरी उस हिस्से मे थे। वे सीढियो से नीचे उतरे और स्टीफैन आदि उनके पीछे चले। वे कई कमरो से गुजरे उनका अन्त दिखलाई पड़ा—अब वे कम रह गये और आखीर मे वे जेल के अन्दर के मैदान मे पहुँचे।

लगभग १०० आदमी दो-दो की कतार मे मार्च कर रहे थे। वे सब हिरासत मे थे। उसने कई पूर्व-परिचित लोगो को पहिचान लिया। मिनिस्टर श्वेयर भी वही पर थे। वह इतना अधिक बीमार और कमजोर था कि वह ठीक ठीक पैर भी नही रख सकता था। उसे एक स्टूल पर बैठने की स्वीकृति मिल गयी। उन लोगों ने मैदान मे दो ही चक्कर लगाये कि प्रोफेसर कजमन भी जाकर वही बैठ गया। वह भी बिल्कुल थक गया था।

नहीं उसे एक झटका लग गया था स्टीफैन ने उत्तर दिया कि अब वह अच्छा है और वे उसे कहीं लेटने दे ।

इसकी आज्ञा नहीं है। वह सिर्फ ६ बजे शाम के बाद ही ऐसा कह सकता था। मोटे आदमी ने उत्तर दिया।

लेकिन उनके पास वहा पलग थे, स्टीफैन ने पूछा।

हा, उन्होने उत्तर दिया। परन्तु उन्हे लेटने की इजाजत नहीं थी। एस-ए० के आदमी ख़ुफिया छेदो से देखते रहते थे।

उन्होंने कोने मे स्टीफैन के लिये पलग लगा दिया और कम्बलों को साफ चादर से ढॅक दिया जो कि वार्डर ने उन्हे दी थी। वे रहम दिल और शीलवान थे। वे उनके नये साथी बडे ही हृदय स्पर्शी थे।

वे नेशनल सोशलिस्ट थे। मोटा आदमी निर्दोष था। उसके शत्रु नाजी मेयर ने उसे गिरफ्तार करवाया था। यह पतला आदमी भी पार्टी का सदस्य था और पेलेटिनेट से आया था। वह पूर्ण रूप से यह नही बतला सका कि वह यहा पर क्यों लाया गया था। वे कई हफ्तो से वहा पर थे और उनके मुकदमे की कुछ भी सुनवाई नही हुई थी। दोनो के स्त्री और बच्चे थे। दोनों जल्दी मुक्त होने की आशा करते थे।

दोपहर बाद उनके तीसरे साथी दिखलाई पडे। वह एक छोटा-सा आदमी था और उनकी शक्ल चासलर डॉल्फज से मिलती जुलती सी थी। वह बवेरियन प्रजादल का डिप्टी था। उसका नाम ब्रुनियर था। उसने काम चाहा था। सारे दिन भर तक वह फर्शों और कमरों को झाड़ता रहा जो एक अस्पताल की थी। वह कमरे मे सिर्फ खाने और सोने आता था।

वह हफ्तों से जेल मे था। उसके खिलाफ़ कार्यवाही चल रही थी। पुलिस ने दो पुरानी बदूके जो लडाई की थी उसके पिता के अनाज के

बाकी सब चलते ही रहे ।

स्टीफैन ने डा० बेज को अपने कुछ सप्ताहों का जो उसने स्ट्रेज में बिताये थे, उनके बारे मे बतलाया । उसने अपने साथियों और वहाँ की हालत के बारे मे बात की । उसने स्टीफैन को बतलाया कि वह प्रो० कजमन और वेरन आर्टिन के साथ एक अस्पताल के कमरे मे था । उसने सुन रक्खा था कि उन लोगो की सजा अधिक दिन नही चल सकती थी ।

समय समाप्त हो गया । ताजी वायु ने स्टीफैन को जो कई महीने के पश्चात् मिली थी स्वस्थ बना दिया । व्यायाम समाप्त होने पर स्टीफैन प्रसन्न था । वैरन आर्टिन ने जो उसके पीछे चल रहा था उसके कानों मे कहा कि वह कल उनके भाग के सिरे पर मिले ताकि वे साथ-साथ मार्च कर सकते ।

कोई भी इन्तजाम न चल सका क्योकि जब ये सीढ़ी पर थे जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट वही पर था और उसने स्टीफैन से कहा कि उसे दूसरे हिस्से मे जाना था इसलिये वह अपना सामान बाध ले ।

"यह क्यो ?" स्टीफैन ने पूछा—

" एक आर्डर ऐसा आया था कि जिसके अनुसार सम्पादक सब से अलग रक्खे जाने वाले थे" सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बतलाया ।

"बिल्कुल अकेले मे अब ?" स्टीफैन ने पूछा—शायद ।

सुपरिन्टेडेन्ट ने जवाब दिया ।

स्टीफैन ने वहाँ रहने के लिये हजार कोशिशे की परन्तु व्यर्थ रही । उसे जाना ही पड़ा । उसने अपना सामान बाधा और वृद्ध आदमी के पीछे-पीछे चला । वे कई बड़े-बड़े बरामदे से होकर निकले जो लोहे के फाटकों द्वारा एक दूसरे से अलग थे । सुपरिन्टेन्डेन्ट बराबर दरवाजा खोलता चलता था उन कुँजियो से जो उसके हाथ मे थी । ३०३ कोठरी स्टीफैन को दी गयी । वह एक तग कमरा था । पलंग दीवाल पर

लॉरॉ रेव के दफ्तर मे गया। वह बैठा हुआ शातिपूर्वक अपना काम कर रहा था।

"क्या तुम भी गिरफ्तार किये जाओगे ?" लॉरॉ ने पूछा।

"मुझे अचम्भा है कि वे लोग अभी तक मुझे लेने क्यो नहीं आये।"

"अगर तुम्हारी गिरफ्तारी इतनी निश्चित है, तो तुम भाग क्यों नहीं जाते ?"

रेव ने मेज पर हाथ पटक कर कहा, "मैं ऐसी कायरता नहीं कर सकता। मैं यहाँ से हिलूँगा तक नही।"

प्रातःकाल शाति पूर्वक बीत गया। नौर एण्ड हर्थ फर्म के गिरफ्तार किये गये सम्पादक—अर्थात् शुपिक, वैरन आरटिन और न्यूकनर—के विषय मे कोई समाचार न मिला। लेकिन सब को आशा थी कि वे शाम तक छोड दिये जायँगे।

दोपहर के समय फर्म का वकील, हाइम, हाँफता हुआ स्टीफैन लॉरॉ के कमरे मे दाखिला हुआ। उसकी आवाज कॉप रही थी। उसने सावधानी से चारो ओर देखा कि कोई वहाँ मौजूद तो नहीं है। अपने को अकेला पा कर वह स्टीफैन से बोला, "मैंने अभी सुना है कि तुम भी गिरफ्तार किये जाओगे।"

लॉरॉ ने अविश्वास की हँसी हँसते हुए कहा, "लेकिन मेरा तो राजनीति से आजतक कोई सम्बन्ध ही नही रहा।"

"इससे क्या हुआ। बेहतर तो यही होगा कि तुम कुछ दिन के लिए जर्मनी के बाहर चले जाओ।"

"इस तरह भागने का मै स्वप्न तक नहीं देख सकता। मैं सब बातों का जवाब दे लूँगा। पर इस तरह पोच की तरह भागना तो मेरे बस का काम नही।"

एक आगन की दीवाल पर .खून के छींटे थे। जो आदमी स्टीफैन को ले जा रहा था और जो जेल को भली भाति जानता था उसने धीरे से कहा कि वह नल वहाँ पर फासी दिये जाने वालों के रक्त को धोने के लिये था।

पहिले स्टीफैन ने सोचा कि वह मजाक कर रहा था। लेकिन फिर उसने यह समझाया कि वहाँ पर फासी कैसे दी जाती थी। १० वर्ष पूर्व के क्रातिकारियो को वही पर गोली से उड़ाया गया था।

उसने कहा कि एक दिन हमारे आज के लीडर भी वही पर खडे होंगे जो उसकी भविष्यवाणी सत्य निकली।

आखिरकार वे सर्जरी पहुँचे।

इस बार स्टीफैन की भेट डाक्टर ही से हुई। वह वृद्ध और कुरूप व्यक्ति था। उसने गुर्राते हुए पूछा कि वह उसे क्यो परेशान कर रहा था।

स्टीफैन ने उससे परीक्षा लेने की प्रार्थना की। किन्तु डाक्टर ने स्टीफैन से तीन गज़ फासिले पर खडे होकर कहा कि वह बिल्कुल स्वस्थ दिखाई पड़ता था। कुछ भी तो नही था।

स्टीफैन ने उससे कहा कि वह उसके लिये साधारण वार्ड मे ले जाने की सिफारिश कर दे। उसने कहा कि उसकी हालत इतने दिनो तक जेल मे रहने के कारण बिगड़ गयी थी और वह अफसर बेहोश हो जाता था।

उसने उसकी प्रार्थना बिल्कुल ठुकरा दी और उसने कहा कि यहाँ उसे अपनी मर्जी के विरुद्ध निर्वाह करना था।

लेकिन वह साढे चार महीने वैसे ही रहा था। स्टीफैन बोला—

कुछ लोग साढ़े चार वर्ष रहते हैं लेकिन वे कैसे निर्वाह कर लेते हैं ? डाक्टर ने कहा।

लटका था कमरे मे एक छोटी फोल्डिग मेज और एक फोल्डिग बेच, एक बाल्टी और एक कपडे रखने की अलमारी थी। उसमे कुल इतना ही सामान था।

कमरा साफ था और उस पर आयलपालिश की हुई थी। बाल्टी का भीतरी भाग फ्लोर पालिश मे क्लोराइन मिलाकर उसके अन्दर के कीडे मारने के लिये उसी से रगी हुई थी। कमरा बन्द था और उसमे दम घुटने लगती थी। स्टीफैन सास लेने के लिये लडने लगा और फर्श पर बेहोश होकर गिर पडा।

उसे यह नहीं पता था कि वह कितनी देर तक वहाँ बेहोश पडा रहा। अन्त मे बड़ी मुश्किल से वह हिम्मत करके उठा और उसने अपना सामान खोला। एक पार्सल बडी मजबूत रस्सी से बधा हुआ था उसने पागलपन मे एक झटके मे तोड दिया। एकाएक बडे लकड़ी के दरवाजे मे सास हुई। न्यूरा का पत्र आया था। उसने अपने प्यारे बच्चे के बारे मे लिखा था और वह अपने पिता के बारे मे पूछा करता था।

दोपहर बाद उसे एक प्लेट मे कुछ सब्जी और रोटी का एक टुकडा मिला। जब तक दिन रहा बराबर पढता रहा, नहीं तो वह व्यर्थ की बात सोचता।

पाच बजे वार्डर आया और उसकी खाट दीवाल से उतार गया तब दरवाजे की खिड़की खुली और उसे रोटी और सूप मिला। दिन बीत गया था। परन्तु कमरे मे रोशनी नही जलाई गई थी।

२७ जूलाई

कल स्टीफैन ने डाक्टर से मिलने की अर्जी दी थी और वह जेल के डाइरेक्टर से मिलना चाहता था। आज आठ बजे सुबह वह ले जाया गया। उसे कई मजिले पार कर जाना पडा। डाक्टर का कमरा पुरानी इमारत मे था।

"मैं मामूली कैदियों से भी गया बीता हूँ जिन्हे कम से कम काम करने की तो स्वीकृति मिली है परन्तु उसे तो केवल निराशा में रात दिन बन्द पड़ा रहना पड़ता है।" स्टीफैन ने बिगड़ कर कहा।

डाइरेक्टर ने कहा कि उसे केवल एक छोटा सा काग़ज़ राजनैतिक पुलिस को अपनी शिकायत लिखने के लिए दिया जा सकता था और उसने उसके लिये अपनी स्वीकृति लिख दी।

जब स्टीफैन अपनी कोठरी को ले जाया जा रहा था उसने शुपिक को देखा जो अपना हाथ पार्सलों से भरे हुए जा रहा था। वह अभी ही आया था। दूसरी तरफ से उसका साथी फ्राइडमन डाक्टर से मिलने जा रहा था।

वहाँ पर डा० जरलिश, शुपिक, फ्राइडमन, रेब, डा० शेलहेज़ काउन्ट स्ट्रेशविज़ और स्टीफैन थे। वे ही केवल वहाँ पर राजनैतिक क़ैदी थे। जो नई इमारत मे थे। शेष अन्य क़ैदी थे।

वे सब अलग-अलग क्यो रक्खे जा रहे थे ? राजनैतिक पुलीस की यह कौन सी चाल थी।

जब स्टीफैन अपनी कोठरी मे पहुँचा उसे कागज का टुकड़ा, स्याही और क़लम दी गयी।

उसने एक बड़ा ही आवश्यक पत्र डा० वेन्डलर को जो राजनीतिक पुलिस का प्रधान था यह प्रार्थना करते हुए लिखा कि वह उसकी बदली फौरन डेकाऊ के कन्सेन्ट्रेशन कैंप मे कर दे। वह वहाँ पर और लोगो के साथ खुली हवा में काम कर सकता था।

२८ जुलाई

कपड़े की आलमारी मे स्टीफैन को एक छोटी सी किताब मिली जिसकी जिल्द काली दफ्ती की थी। वह जेल के कैदियो के नियम की किताब थी।

दूसरे को डाक्टर ने बुलाया।

स्टीफैन ले जाया गया। वह नीचे अपनी मुलाकात करने गया। और भी कैदी जो डाइरेक्टर से बात करना चाहते थे दो पक्तियो मे खडे थे।

स्टीफैन ने अपने सहवासी रेव को भी उन्ही मे देखा। वह कल के पहिले ठीक था लेकिन अब उसका चेहरा निर्भीक और उसकी आँखें लाल थी उसके चेहरे पर पीलापन था। उसके साथ क्या बीती थी। उसने बडे अफसोस के साथ स्टीफैन की ओर देखा और सिर हिलाया। स्टीफैन डाइरेक्टर के पास ले जाया गया। उसने डाइरेक्टर से कुछ काम करने को आज्ञा मागी।

नजरबन्द कैदियो को काम करने की कोई आज्ञा नही थी। यह डाइरेक्टर कोच ने जवाब दिया।

लेकिन यदि वह स्वय प्रार्थना करे। और वह बाग मे अथवा झाड़ू लगाने का काम चाहता था। स्टीफैन बोला कि वह कोई भी काम कर सकता था।

वह उसे इसकी आज्ञा नही दे सकता। अधिक से अधिक वह जो कर सकता था वह यह कि स्टीफैन कागज के बेग बनाता।

लेकिन वह तो बाहर काम करना चाहता था। ताकि वह लोगों से मिल सके, केवल कुछ ही दिनों तक। स्टीफैन ने कहा।

वह उसे इसकी आज्ञा नही दे सकता था। ऐसा डाइरेक्टर ने कहा। उन्हे सब कैदियों से अलग रक्खे जाने की आज्ञा थी।

कम से कम उसे कुछ कागज और पेंसिल दी जाय ताकि वह कुछ साहित्यिक कार्य करके ही अपना समय बिता सकता, स्टीफैन बोला—

वह उसकी भी स्वीकृति नहीं दे सकता था। उसे इसके लिये राजनीतिक पुलिस को लिखना चाहिए था ऐसा डाइरेक्टर ने जवाब दिया।

२—चार हफ्ते तक अधिक से अधिक रोशनी का समय निश्चित कर देना या बिल्कुल बंद कर देना।

३—चिट्ठियो और पार्सलों की आमदरफ़्त बंद कर देना या उनमे कमी कर देना या मिलना जुलना बिल्कुल बंद अथवा उनपर प्रतिबन्ध लगा देना। किन्तु तीन महीने से अधिक समय तक नहीं।

४—पुस्तकालय का लाभ बिल्कुल बंद अथवा कम कर देना जो अधिक से अधिक तीन महीने तक।

५—नई सुविधाओ की कमी अथवा उनकी वापसी जो ३ महीने से अधिक नहीं चल सकती है।

६—जेल के संचय को बेचने या हटाने के अधिकार को छीन लेना या उनपर प्रतिबन्ध लगाना जो ४ हफ़्ते से अधिक नहीं चल सकता।

७—अधिक से अधिक एक सप्ताह तक खुली हवा मे बिल्कुल निकलना बंद कर देना या समय मे कमी करना।

८—अधिक से अधिक एक सप्ताह तक सोने की व्यवस्था को दूर कर लेना।

९—एक हफ्ते तक भाड़ा देना बिल्कुल बंद कर देना।

१०—बिल्कुल अकेले अंधेरी कोठरी मे ज्यादा से ज़्यादा ४ सप्ताह तक बंद कर देना।

स्टीफैन ने इसे पढा परन्तु उसे यह विश्वास न हुआ कि वे सन् १९३३ मे थे।

वार्डर शेलर जो उसके विभाग का उत्तरदायी था भला और नेक था। वह दिल से नेशनल सोशलिस्ट था।

वह स्टीफैन की बड़ी परवाह करता था और दरवाजा खोलते ही वह उसकी हालत पूछता।

नीचे उसी मे से कुछ भाग दिये गये थे जो रक्षा के नियम और सजाओं के बारे मे थे।

रक्षा के नियम

५४—बोर्ड को यह अधिकार है कि यह निश्चित अवकाश के बाद और किसी खास समय मे किसी भी घटे दिन या रात तलाशी ले सकता है।

५५—कैदी जो भाग ने अथवा आत्म-हत्या अथवा किसी अधिकारी पर हमला करने का प्रयत्न करेंगे अथवा किसी प्रकार शाति और रक्षा भग करेंगे तो उनके साथ ये नियम लागू हो सकते हैं—

१—वह वस्तु या फर्नीचर या कपडा जिसके द्वारा दुरुपयोग का सन्देह किया जायगा अथवा आत्म-हत्या के कार्य मे सहायक हो सकते हैं उन्हे दूर कर देना।

२—कुछ दिनों तक बिल्कुल अकेले अथवा सब के साथ रखना।

३—दूसरी कोठरी मे बदली जहा वह दुरुस्त किया जा सके।

४—हथकड़ियाँ डालना।

हथकडिया उसी कैदी को पहिना दी जावेगी जो भाग ने अथवा खुद ही अपना जीवन समाप्त करने का प्रयत्न करता है या जिसने किसी आदमी या वस्तु के साथ हिसा की है या जब यह साधन कैदी को दुरुस्त कर देने अथवा उसे दुबारा भागने से रोकने के लिये अनिवार्य हो जाय। अगर कैदी जेल के कानूनो का विरोध करता है तो उसे सजा मिलेगी।

५६—सजाए निम्नाकित हैं।

१—उसकी आसानियो और आरामो को जो जेल के नियमानुसार मिल रहे हैं उन्हे कम कर देना।

ओर खडे होकर, अन्दर जो मुलाकात हो रही थी उसकी समाप्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे खडे-खडे इन्तजार कर रहे थे। एक बुड्ढा वार्डर गश्त लगा रहा था। एकाएक वह स्टीफैन के सामने आकर रुक गया। और उसकी ओर देखता हुआ क्रिद्धता पूर्वक बोला कि वह अपना रूमाल अन्दर रखले, वह जेलखाना था।

स्टीफैन टस से मस न हुआ।

वह उस पर चिल्ला पड़ा कि क्या उसने उसे रूमाल अन्दर रखने को करते हुए नही सुना ?

स्टीफैन धीरे से बोला कि उसे उसके रूमाल से क्या करना था। यह किसी भी जेल के कानून मे नही लिखा था कि कोई अपने ऊपर के जेब मे रूमाल न रक्खे।

वार्डर को अपने कहने पर सन्देह हुआ और वह मन ही मन भुन-भुना कर रह गया और कुछ अधिक न कह सका। कतार के दूसरे क़ैदी यह देखकर खुश थे।

वे लोग वहीं पर खडे इन्तजार करते रहे।

स्टीफैन की कतार मे उससे पाँचवाँ व्यक्ति एक पतला दुबला, पीला चेहरा वाला आदमी था। उसके कपडे फटे हुए थे। और उसकी आँखे सहमी और घबड़ाई हुई थी जिन्हे वह कभी नहीं भूल सकता था। वे भूख, तकलीफ और एक निराशा पूर्ण जवानी की चिह्न थीं। उसमे केवल हड्डियो के और कुछ शेप न था जो कि ठीक ताजगी देनेवाली वस्तुओं की कमी के कारण था। उसके पैरो मे उसे सभाल सकने की शक्ति नहीं थी और यह पहली ही दृष्टि से स्पष्ट था कि वह घुला जा रहा था।

वह यार्ड की दीवाल से १ गज के फासिले पर खड़ा था। स्टीफैन उसे बिना देखे न रह सका। उसका चेहरा सफेद पड़ता जा रहा था। बरामदे मे चारों ओर से बन्द होने के कारण ताजी हवा की कमी थीं।

उसने कहा कि आज स्टीफैन की आखे ठीक नही थी। वह यह नही समझता था कि स्टीफैन को यहा रख कर अधिकारी क्या लेगे। उसने कहा कि स्टीफैन विश्वास करे कि इस दुर्भाग्य मे भी एक सौभाग्य की रेखा रहती है। 'वह जरा मजबूत रहे। उसका अभ्यास पड़ जायगा।

उसने उसे एक किताब जेल के पुस्तकालय से लाकर दी। वह जार्ज एबर्स का उपन्यास था। इस दशा मे भी एक सजा मे गुजरना था। लेकिन उसे एक किताब उसके सूट केस मे मिल गयी—फ्री एयर वे० सिक्लेयर ल्विस उसने इसी को पढकर अपना समय व्यतीत किया।

२९ जुलाई

स्टीफैन और उसके साथी यहा पर अलग २ मंजिल और विभागों मे थे। इरादा सबको एक दूसरे से दूर रखने का था। उन्हे व्यायाम के समय भी एक साथ मिलने की आशा नही थी। उसे बरामदे के एक कोने मे इधर-उधर टहलना पडता। फ्राइडमन घास के मैदान मे बीच मे टहलता था और डा० जरलिच बरामदे मे दूसरी तरफ। रेव कागज के कारखाने के पास टहलता था। केवल काउन्ट स्ट्रेशविज और शुपिक एक साथ टहलते थे। वे कधा हिलाकर एक दूसरे को इशारा करते और कभी हाथ या सिर हिलाकर।

४ अगस्त

स्टीफैन की ऑखे फिर दुख रही थी वह। अब उनसे कुछ भी नहीं देख सकता था। उसकी आखो पर यह असर रातदिन पढ़ने के कारण हुआ था। उसने आज डा० से कुछ बोरेफिक पाउटर लेने के लिये कहलाया था।

वहॉ पर बीस आदमी बरामदे मे डाइरेक्टर के कमरे के बाहर की

लॉरॉ ने कुछ देर बाद पूछा, "तुम्हे मालूम कैसे हुआ कि वे मुझे भी गिरफ्तार करना चाहते हैं ?"

"अभी मै वैरन हॉन के पास से आ रहा हूँ। उसने मुझसे कहा कि तुमने कुछ दिन पहले कहा था कि जर्मनी के यात्री ले जाने वाले वायुयान रातोरात फौजी मशीनो मे बदले जा सकते हैं।"

"तो ?"

"वैरन हॉन इसी बात पर तुम्हे पुलिस के हवाले करा देगा।"

"और तुम्हारा यकीन है कि वे मुझे ऐसे बेवकूफ अभियोग पर गिरफ्तार कर लेगे ! ह: ह: ह:।"

वैरन हान एक उपन्यास लेखक था। उसने अपने उपन्यास लॉरॉ के पास प्रकाशित होने के लिये भेजे थे। पर वे अच्छे न होने के कारण अस्वीकार कर दिये गये थे। लॉरॉ को क्या पता था कि इस निर्दोष काम के फलस्वरूप उसे जेल का नारकी जीवन व्यतीत करना पडेगा !

× × × ×

दूसरे दिन प्रातःकाल, १४ मार्च।

स्टीफैन अभी सो रहा था कि उसके दरवाजे पर किसी ने जोर से खटखटाया।

"क्या है ? इतने सुबह कौन खटखटा रहा है ?"

"पुलिस के दो आदमी आये हैं। क्या उन्हे अदर बुला लूँ ?" बावर्ची ने पूछा।

"हॉ, उन्हे अदर ले आओ।"

शयन-गृह मे धुंधलापन छाया था। स्टीफैन ने चारपाई से उठ कर किवाड़ खोले। इस समय सवेरा हो रहा था। उसने अपनी घडी पर दृष्टि फेरी। ६ बज रहे थे।

सारी खिड़कियाँ बन्द थी और वह आदमी वेहोशी से लड रहा था। उसकी आँखे कहती थीं कि वह सब से मजबूत था। वह दीवाल के सहारे पड़ रहता कि वह गिर न पडे और उसने अपनी आँखे बन्द कर लीं।

स्टीफैन उसकी मदद न कर सकता था क्योंकि उन्हे न तो पक्ति भग करने की और न बोलने की ही इजाजत थी। वह बोल न सकता था इसलिये उसे चुपचाप खड़े होकर देखते रह जाना पडा।

उसके पैर घुटनो पर झुके जा रहे ये। वह अपने हाथ के सहारे दीवाल से टिका हुआ था उसकी पैर के नाखून मुडे हुये थे। उसकी आँखे बन्द थी।

'दीवाल से हटकर खडे हो तुम, हम लोग यहा पैरो के निशान यहाँ नही पड़ने दे सकते।' चौकीदार ने उससे कहा।

उस मरीज ने आजा मानने की कोशिश की। बडी मुश्किल से वह दीवाल के सहारे अपने को ठेल सका और उसने अपने को दीवाल से हट कर अपने सहारे खडे होने की कोशिश की, वह पक्ति मे फिर इस तरह हिल रहा था जैसे हवा मे अनाज के दाने। उसके मुह पर एक बूद रक्त भी नही रह गया था। वह केवल खड़िया की भाँति सफेद चेहरे का हो गया था जिसमे केवल दो आखे चमकती थी जिसमें क्रोध की चिनगारिया थी।

स्टीफैन अब अपने को न सभाल सका। वह वार्डर से चिल्लाकर बोला क्या वह नही देखता कि वह वेतहाशा बीमार था। उसे बैठ जाने दे क्या वह यह नही कर सकता।

वार्डर ने जवाब नही दिया। उसने धीरे से कहा कि वह अपना काम देखे।

उस बीमार का बदन ऐठ रहा था, उसका सिर ऊपर नीचे हिल

५ अगस्त

स्टीफैन को खाने का एक पार्सल मिला। उसे इतनी भूख मालूम पड़ने लगी कि वह सब ५ पौंड एक ही बार मे खा गया सिर्फ इसीलिये कि वह यह तो महसूस कर सके कि उसे खाने की कमी नहीं थी। उस एक दिन के सुख का ध्यान उसके हृदय मे ३० दिन तक बना रहेगा क्योंकि एक माह मे केवल एक बार ही ५ पौंड का पार्सल आ सकता था।

६ अगस्त

उसे वह बतलाया गया कि डा० गारलिच एटेस्ट्रेंज मे वापस पहुच गया था। एक बार वह फिर अपनी तीसरी मजिल की कोठरी मे पहुँच गया था। वह गलती से स्टेंडेल्हेम बदल दिया गया था। वह केवल नार एण्ड हर्थ के सम्पादको के लिये ही था जिन्हे सख्त कैद की सजा खास तौर से भुगतनी थी।

१२ अगस्त

स्टीफैन की कोठरी से दसवी कोठरी एक सुन्दर बालो वाले नवयुवक की थी। वह हमेशा स्टेंडेल्हेम आया करता था। इस बार उसकी सजा पाच हफ्ते की थी।

वह अकसर गाया करता था। उसे गाने का बडा शौक था। वह नये नये गाने गाता।। उसका सबसे सुन्दर "ओह मोना" था। हर शाम को वह उसी से शुरू करता था।

"टा, टा, टा, ट—ा.. ओह, मोना.. . "
"टा, टा, टा, ट—ा ओह, मोना "

उस मजिल के दूसरे कैदियों ने गाने को सीख लिया। कल जब उसने गाना शुरू किया तो सबने उसका साथ दिया।

रहा था और उसका सास शरीर थर्रा रहा था। वह हवा के लिये परेशान था। उसे गश आगया और वह बंद खिड़की से जा लड़ा।

'हवा-हवा ! मैं मर रहा हूँ' उसके ओठों से यह आवाज निकली। तब उसने जान की बाजी लगाई। वह खिड़की के ऊपर उछल कर चढ़ गया और उसका हाथ सिटकिनी पर था। क्या वह खतरा उठाकर सिटकिनी खोल सकता था। वार्डर चुपचाप देखता रहा। उसने फिर दूसरे क्षण सिटकिनी पकड़ी। वह बिलकुल मृत्यु के निकट था। उसमे खतरनाक काम था। वह बारबार हाथ उठाता और फिर नीचा करता था। स्टीफैन सास रोक कर देख रहा था। खिडकी खोलने का साहस न कर सका। उसने हाथ गिरा लिया।

वह बेचारा हार गया। वहा के नियत्रण कायदे और कानूनों ने उस पर विजय पायी। वह गिर पड़ा। वे लोग उसे उठाकर नल पर ले गये। उसने खूब ठढा पानी पिया।

खिड़की बंद ही रही।

'उसे पहिले डाक्टर से कहना चाहिये था' वार्डर ने भुनभुनाकर कहा। अभी तक उनकी रिपोर्ट समाप्त नही हुई थी।

एकाएक स्टीफैन ने डा० गारलिच को देखा। एक वार्डर उसे किसी विगरूम से ले जा रहा था वह अपना ओवर कोट पहिने था और अपने बक्स और पार्सल लिये हुये था। वह स्टेडेलेम छोड़ रहा था।

स्टीफैन ने उसे पुकार कर कहा 'गुड लक डा० गारलिच'

लेकिन डाक्टर अपने विचारो मे डूबा हुआ था और वह उसे बिना देखे ही चला गया। स्टीफैन को एकाएक विचार हुआ कि अब फिर नहो मिलेगें।[१]

१—डा० गारलिच ३० जून १९३४ को गोली से उडा दिया गया था।

बड़ी कतार मे मार्च कर रहा था। उसका शरीर टूटा हुआ मालूम पड़ने लगा। उसके बाल सफेद हो गये थे और कमर झुक चली थी। उसका साथी रेव भी अब अपने शरीर की छाया मात्र हो गया था।

१७ अगस्त

रेवरेंड शोवेल से एक सप्ताह मे एक बार धीरज बधाने आया करते थे। कैदियो मे से प्रोटेस्टेन्ट्स एक एक कर उससे मिलने जाते और वह उनसे बिल्कुल अकेला बात करता था। कोई वार्डर भी वहाँ पर नही रहता था।

पोस्टर शोवेल ने स्टीफैन को बतलाया कि कुछ दिन पूर्व वह सयोग से एक राजनीतिक पुलीस के सदस्य से मिला जिसको वह पहिले से जानता था। उसने उस अवसर से लाभ उठाया और उसने कमिश्नर से यह कहा कि कैदियो की मानसिक दशा जाच करने योग्य है और यह बडे अन्याय की बात थी कि कैदियो को उनके भाग्य को फैसले से वंचित रक्खा जाय।

कमिश्नर चुपचाप सुनता रहा। तब उसने कहा कि पोस्टर उन कैदियों की दशा पर आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखकर बात कर रहा था। लेकिन उनके विचार दूसरे थे। वह उसे बहस न करने की सलाह देता था। लेकिन नही तो उसकी भी वही दशा होती जो उनकी थी जो उसके आध्यात्मिक सरक्षण मे रक्खे गये थे।

यही वह ढाढस था जिसे वह उनको दिलाना चाहता था।

स्टीफैन ने पोस्टर शोवेल से पूछा कि उसकी सजा कब तक चलने वाली थी।

इस पर शोवेल ने केवल सिर हिलाते हुए उत्तर दिया कि वह कुछ नही बतला सकता। इस विषय मे उसने कुछ भी नही सुना था।

वह इतना मजेदार मालूम पड़ा कि वे बिना हंसे न रह सके। नवयुवक गाता ही रहा और जितनी बार वह आता ३० कैदी उसके स्वर से स्वर मिला कर गाते। उनमे से हर एक अलग था। दीवालो ने उन्हे अलग कर रक्खा था। कोई किसी को नही देख सकता था। लेकिन वे सब एक साथ हृदय से स्वर मिला कर साफ साफ गाते थे।

१३ अगस्त

हर रविवार को कई विभागो के कैदी एक साथ कसरत करते थे। वे एक बड़ी भारी पंक्ति बनाकर खडे होते। वहाँ पर दो सौ से अधिक आदमी होते जिनमे से कई राजनीतिक कैदी थे जिन्हे सजा मिल चुकी थी कुछ कम्यूनिस्ट थे जो एक प्रतिबन्ध लगे हुए समाचार-पत्र को बेच रहे थे। कम्यूनिस्ट आशा वादी, प्रसन्न और सतुष्ट मालूम पड़ते थे मानो उन्हे पूरा यकीन था कि वे अधिक दिन कारागार मे नही रहने वाले थे।

स्टीफैन के साथी अभी भी वही पर थे। शुपिक उत्सुकता और खोज भरी आँख से देखता और हाथ के इशारे से पूछता कि स्टीफैन को कुछ उनके मुक्त होने के बारे में पता था या नही।

वह कुछ समय तक कागज के कारखानो मे काम करता रहा। अब उसे कागज के थैले चिपकाने की इजाजत मिल गयी। उसे दूसरो से मिलने की भी इजाजत थी। लेकिन स्टेडेल्हेम मे वह ही एक राजनीतिक कैदी था जिसे काम करने की आज्ञा मिल गई थी। उसे यह छूट मामूली नियमों से उसके स्नायु सम्बन्धी रोग की वजह से मिली थी स्टीफैन यह सुनकर प्रसन्न था क्योकि शुपिक बहुत दिनो तक अकेला रहना सहन नही कर सकता था। वह पागल हो जाता।

काउन्ट स्ट्रेशविज स्टीफैन का पुराना कोठरी का साथी कैदियों की-

स्टीफैन मन मे सोचता था कि वह किस प्रकार जाकर अपने उस छोटे से बच्चे से जा मिले।

वार्डर रोज मेयर ने जो कि शेलर की जगह पर एवजी मे काम कर रहा था (जो स्टीफैन के विभाग का वार्डर था और छुट्टी पर गया था) आठ पत्रो का एक पुलिदा लाकर स्टीफैन को दिया। वे सेसर टेबिल पर कई दिनों से पडे हुए थे। उसका सदेह ठीक था कि कोई छुट्टी पर गया था और इसी कारण पत्र नहीं बॅटे थे।

स्टीफैन आज दोपहर बाद बुलाया गया। कोई उससे मिलने आया था। कोई कौन यह किसी ने नहीं बतलाया। कोई क्या जानता। उसे तो जाना ही था।

वे कई ऑगनो से होकर गुजरे और पुरानी इमारत मे दर्शकों के कमरे मे एक स्त्री उसकी प्रतीक्षा कर रही थी—उसकी माता थी। वह हगेरी से उसे देखने के लिये आई थी।

स्टीफैन ने उसे कई वर्षो से नही देखा था और अब वह उसे जेल मे देखने आई थी। वे एक दूसरे के आमने सामने खडे हो गये। बीच मे लोहे की छडे (शलाखे) थी। उसके हृदय को कितना दर्द पहुँचा होगा। वह वीर थी। उसने अपनी व्यथा छिपाने का प्रयत्न किया।

उसने उसे यह कह कर दिलासा दी कि अब वह शीघ्र ही छूटने वाला था और वह तब तक म्यूनिच मे ठहरेगी जब तक वह छूट नहीं जायगा।

२८ अगस्त

स्टीफैन की आज उसकी मॉ से दूसरी मुलाकात हुई। उन दोनो के बीच मे अब लोहे की पटरिया न थी। उन्हे केंटीन मे बातचीत करने की स्वीकृति मिल गयी थी। उसका विश्वास था कि स्टीफैन एक सप्ताह के अन्दर ही छूट जायगा। हगेरियन सलाहकार जो म्यूनिच मे

१९ अगस्त

आज सुबह जेल के डाक्टर ने बिना स्टीफैन की प्रार्थना के ही उसे बुला भेजा। उसका दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया था। उसके पास एक कागज पड़ा हुआ था जो देखने से ह गेरियन गवर्नमेंट का मालूम पड़ता था। उसे पढ़ने के बाद उसने विनम्रता से स्टीफैन से पूछा कि वह उसके लिये क्या कर सकता था।

स्टीफैन ने कहा कि यदि वह उसके लिये कोई काम करना चाहता था तो वह उसे छुड़वा दे। इसके अतिरिक्त वह कुछ भी नहीं चाहता था।

वह हँसा और उसने कहा कि उसे भय है कि वह उसके लिये यह नहीं कर सकता। वह उसके अधिकार के बाहर था।

स्टीफैन बोला तब वह उसके लिये कुछ भी नही कर सकता था।

२२ अगस्त

अभी तक कोई खबर नही आई और पत्र भी बहुत दिनो से नही मिले। यह या तो जेल के अधिकारियो द्वारा लगाई गयी नई सख्ती थी या कोई सेसर डिपार्टमेट से छुट्टी पर है और इसी कारण से उन्हे पत्र नही मिल रहे थे।

२४ अगस्त

स्टीफैन इस दिन की प्रतीक्षा न जाने कब से कर रहा था। उसका विश्वास था कि वह २४ अगस्त तक छूट जायगा। उसका पुत्र आज तीन वर्ष का हो जाने वाला था। वह उसे कभी नहीं पहिचान सकेगा। यदि वह कभी सौभाग्य से जेल से मुक्त हुआ तो! जब वह वहा लाया गया था इसका बच्चा बोलने लगा था और वह सारे जीवन के बारे मे सैकड़ो प्रश्न पूछा करता था। वह बातों क समझने भी लगा था और अब वह तीन वर्ष का हो गया था।

उसने उससे सामान बाधने को कहा। अब स्टीफैन सर्वसाधारण कोठरी मे अपने साथियों के साथ रक्खा जानेवाला था, ऐसा सुपरिन्टे-न्डेट ने बतलाया।

उनके लिये ३०४ न० की कोठरी खाली की गई थी। उसमे तीन पलग थे और उसमे दो बड़ी खिड़किया थी जिसमे से काफी रोशनी आती थी। बिजली भी ढग से लगी हुई थी।

शुपिक बीच से ही मिल गया। एक कैदी ने उसे पार्सल ले जाने मे सहायता की और वहा पर काउन्ट स्ट्राकविज भी था। वे इतने प्रसन्न थे कि आपस मे अभिवादन करना भी भूल गये। वे हसते रहे और अपने इस कमरे के खजाने की वे प्रशसा करते रहे।

उनको पांच सप्ताह तक अकेले बन्द करके रखने का अभिप्राय उस समय के पश्चात् एक बार फिर एक साथ मिलाने का था।

दोपहर बाद वे सदा की भाति घूमने गये। रेव, फ्राइडमन, और डा० शेलहैज एक दूसरे के पीछे घूमते थे और उनके बीच मे काफी फासला था। लेकिन स्टीफैन, स्ट्राकविज और शुपिक एक साथ घूम रहे थे और बाते भी कर रहे थे। परन्तु उन तीनो को बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि स्टीफैन आदि कैसे साथ घूम रहे थे।

'उन्हे भी एक साथ मिलकर रहने की स्वीकृति मिल जायगी' स्टीफैन आदि ने धीरे से उनसे कहा। 'उन्हे इस भाति निराश होने की आवश्यकता नही।'

इस आश्चर्य की चरम सीमा इस बात पर होगयी कि उन्हे ९ बजे रात तक रोशनी जलाने की भी आज्ञा मिल गयी।

२ सितम्बर

वे तीनों फ्राइडमन, डा० शेलहेज और रेव भी अब एक ही कमरे मे रक्खे गये। अब सब को सरकारी तौर से आपस मे व्यायाम के समय बात करने की स्वीकृति मिल गयी थी।

था हर हिमलर से वार्तालाप कर रहा था जो बवेरियन राजनीतिक पुलिस का प्रधान था। हिमलर ने स्टीफैन को इस शर्त पर छोड़ने की ख्वाहिश की कि यदि उसे कोई विश्वास दिलाया जाय कि वह अपने छूटने के बाद जर्मनी के विरुद्ध किसी कार्यवाही मे भाग न लेगा।

उसकी माता ने गैर सरकारी ढग से यह सुना था कि लीपजिग के स्टेट कोर्ट ने दुबारा फिर उस पर कठिन राजद्रोह के जुर्म को खारिज कर दिया था। अन्त में यह स्पष्ट स्वीकार किया गया कि वह इसलिये इतने समय तक कैद रक्खा गया ताकि वह दूसरे मुल्कों मे जर्मनी की बातो के बारे मे अपनी सम्मति न दे सके।

लगभग ४ बजे वह और उसके साथी कोठरियो से निकाले गये। एक वार्डर उन लोगो की देख भाल करने के लिये बीच मे खड़ा हुआ। वे सब बरामदे मे २० गज के फासले पर एक के पीछे एक घूम रहे थे। उन्हे बात करने की मनाही थी। वे एक दूसरे की तरफ देख कर हँस रहे थे।

यह एक अजीब दृश्य था कि जहाँ २०० आदमी कसरत करते थे वहाँ आज ६ ही घूम रहे थे। वार्डर भी यह देख कर हँस पड़ा। उन्होने धीमी आवाज मे दुआ सलाम की।

डा० शेल हेज आँखे नचा रहा था। काउट स्ट्राकविज मुस्कुरा रहा था। फ्राइडमन धीरे से उछल पड़ा। शुपिक यह जानना चाहता था कि उन्होने छूटने के बारे में कुछ सुनाया था। रेव ने केवल सिर हिलाया।

स्टीफैन ने अपने साथियों को कानाफूसी की आवाज से अपनी मां की कही बात बतलाई। खबर उस छोटी सी टोली मे शीघ्र फैल गयी। हर एक बहुत खुश था।

३० अगस्त

जेल सुपरिन्टेन्डेट स्टीफैन के कमरे मे दोपहर के बाद आया और

शुपिक ने स्टीफैन के दोनो हाथ पकड़ लिये और भावावेश में बोला "लॉरॉ मुझे मत भूलना। नही तो वे मुझे जिन्दा ही गाड़ देगे और कोई भी नही जानेगा कि मेरा क्या हुआ ?"

५ सितम्बर

मूलर, पुलिस सुपरिन्टेन्डेन, ने आज उन्हे बतलाया कि काउन्ट स्ट्राकविज और स्टीफैन दोनो सर्व-साधारण कोठरी मे रक्खे जाने वाले थे।

वार्डरो मे से एक ने उन्हे कारण बतलाया जो बिल्कुल गुप्त रखना था वह यह कि दो कैदी एक कोठरी मे नहीं रक्खे जाते। चाहे वे अकेले हो या तीन या उनसे अधिक।

७ सितम्बर

कल डा० बर्च होल्ड फर्म का प्रतिनिधि रेव से मिलने आया। उसकी मुलाकात करने का कारण खास था। उसने वार्डर को दर्शकों के कमरे से बाहर हटा दिया।

वह स्वय कैदी को बहस कर लेने के बाद वापस पहुचा देगा, उसने कहा। वार्डर सलाम करके चला गया।

६ महीने तक उन्हे अपने प्रतिनिधि से मिलने को इजाजत नहीं मिल पाई थी। लेकिन नई कम्पनी नार एण्ड हर्थ के लिये जेल का फाटक भी कोई रुकावट नही थी।

डा० बर्चहोल्ड के आने का अभिप्राय रेव को एक निश्चित धन दिलवाने का था ताकि वह जेल से छुटने के बाद एक दम निराश न रहे।

यद्यपि फर्म को बिना सूचना दिये हुए ही उन्हे निकाल देने का अधिकार था, उसने रेव को समझाया, परन्तु फर्म अपनी मर्यादा के

इस पर भी डा० शेलहेज गिरता ही जा रहा था।

४ सितम्बर

आज नया सप्ताह शुरू हुआ था।

शुपिक आज सुबह चला गया। वह उठा और दिन निकलने के थोड़ी देर मे अपना सारा सामान बाध चुका। स्टीफैन सो न सका था। वह बिस्तरे मे पड़ा हुआ गौर से देख रहा था।

उनका योग्य साथी वाल्टर उसके पलंग के सामने खड़ा था और शुपिक की बड़बड़ाहट सुन रहा था।

शुपिक का मस्तिष्क बड़ी तेजी से उड़ा जा रहा था। वह बात करता ही रहा।

यह इस प्रकार विछोह को कम शोक प्रद स्वय के लिये और उन लोगो के लिये बना रहा था। वह उन लोगो पर यह स्पष्ट नही होने देना चाहता था कि उसे उनसे बिछुड़ना कितना अखर रहा था। वह आखिरी मिनट तक बात कर लेना चाहता था। उसने उस कार्ड को जिसको वह सदैव टगा रहने देता था, उठा कर अपने बक्स में रक्खा। उस पर लिखा था—

याद रक्खो कि दूसरे तुम्हारे भाग्य के साझीदार हैं। तुम्हारे साथी रेव, फ्राइडमन, स्ट्राकविज, शेलहेज, आर्टिन, क्रासमन, बेज और लॉरॉ सब वही कष्ट उठा रहे हैं जहाँ तुम।

उसने एक रस्सी अपने जेब मे रक्खी और गहरी श्वास लेकर बोला कि वह उसको लटकाने के लिए थी। वह नहीं जानता था कि उसे कब इसकी आवश्यकता पड जाती।

वार्डर ने दरवाजा पीटा।

"हर शुपिक, तैयार हो जाओ। तुम इटेस्ट्रेज जानेवाले हो।" उसने कहा।

लिये उनके त्याग-पत्र देने पर उन्हे एक निश्चित रकम कृपा की भाँति देने को तैयार थी।

रेव ने आश्चर्य से पूछा कि फर्म को बिना सूचना दिये हुये अलग कर देने का किस प्रकार अधिकार था।

उसे उत्तर मिला, क्योंकि वह जेल मे था।

लेकिन वह जेल के अन्दर अपनी वजूहातो से नही था। और वह यह जानता था कि फर्म भी इस मामले के अधिकार मे नही थी, कुछ भी नही थी। कुछ भी सही अभी उसकी सुनवाई भी तो नही हुई थी और वह स्वय यह नही जानता था कि वहा यह पर क्यो था।

"क्योंकि उस पर किसी प्रकार सदेह होगया था।" उसने जवाब दिया, "उसे उसके पद से राष्ट्र के कारणों से निकाला जा रहा था।"

"क्या फर्म स्टेट की है" रेव ने पूछा

"नही" उत्तर मिला

"तब मैं स्टेट के कारणो पर क्यो निकाला जाऊ ? रेव ने पूछा।

रेव और उसका प्र तनिधि यों हीं काफी देर तक बहस करते रहे।

डा० बर्चहोल्ड ने रेव को यह सूचित किया कि उसने पहिले ही डा० बेज् प्रो० कॉसमन और बैरन आर्टीन से बातचीत कर ली थी। पहिले दों ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था। केवल बैरन आर्टिन ने बिगड़ कर अस्वीकार किया था। लेकिन उसने भी उसपर दुबारा विचार करने का वायदा किया था।

डा० बर्चहोल्ड ने उसे दबाने की कोशिश की। लेकिन रेव ने उससे प्रार्थना की कि वह उसके प्रतिनिधि से बात कर ले। यदि वह स्वीकार कर ले तो उसे भी स्वीकार था।

अंतिम प्रश्न जो रेव ने डा० बर्चहोल्ड से पूछा वह था कि क्या

"इतने सवेरे किसी का मुझसे क्या काम? .. ..

"सिपाही !" स्टीफैन ने घबड़ा कर कहा "सिपाही—" सिपाही !

अब स्टीफैन की निद्रा बिल्कुल जाती रही। वह सोचने लगा।

"परमात्मा की बड़ी विचित्र लीला है। सिपाही मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये है !

स्टीफैन का निद्रामय आलस्य दूर हो चुका था। वह गाउन पहन कर घबडाया हुआ अपनी स्त्री के कमरे मे पहुँचा।

"उठो, पुलीस आई है।"

न्यूरा ने घबड़ाकर स्टीफैन की ओर देखा। वह कुछ समझ न सकी कि आखिर बात क्या है। उसने निद्रित गम्भीर आवाज मे पूछा, "पुलीस को तुमसे क्या मतलब है ?"

इसी बीच बावर्ची दो अधिकारियो के साथ अन्दर आ पहुँचा। उनमे से बडे वाले ने स्टीफैन से कहा, "हम तुम्हारे घर की तलाशी लेने आये हैं। तुम्हारे कागजात कहाँ है ?"

"डैस्क मे।"

"हम उन्हे देखेगे।"

स्टीफैन ने डैस्क खोल दिया। बडा अफसर चिट्ठियां और लेखो की जॉच करने लगा और छोटे अफसर ने अलमारी की ओर अपनी दृष्टि फेरी जिसमे किताबे रक्खी थी।

एक घण्टा व्यतीत होगया—दो आदमियो ने प्रत्येक वस्तुये देख डाली।

"कृपया जरा कपडे पहन लीजिए" बड़े अफसर ने कहा, "हमे आप के आफिस की भी तलाशी लेनी है। आपको साथ चलना होगा।"

"क्या मैं गिरफ्तार कर लिया गया हूँ ?" स्टीफैन ने उनसे पूछा।

उसके अतिरिक्त कोई उसके छुटकारे पर हस्ताक्षर करने का उत्तरदायित्व नहीं हो सकता था। इसलिये उसे अपने हृदय को उचित रूप से धीरज मे रखना चाहिये था।

यदि यही बात थी तो उसे अब शीघ्र ही एटेस्ट्रेज को समय आने के पहिले वापस जाना चाहिए था। स्टीफैन ने अपनी माता से कहा।

माँ ने यह मामला राजनीतिक पुलीस के सामने रखने का वायदा किया।

म्यूनिच पुलीस कारावास

२० सितम्बर

आज सुबह स्टीफैन एटेस्ट्रेज को बदल दिया गया।

वार्डर शेलर ने पहिले सोचा कि वह पुलीस हेडक्वार्टर केस की सुनवाई के लिए जा रहा था। इसलिये उसने उसे अपनी चीजे साथ नही ले जाने दी।

यहाँ तक कि रिसीविग आफिस मे जब वह अपना हैट और कुछ दूसरी कीमती वस्तुएँ लेने गया जो उसने जमाकर दी थी तो भी उसे न मिल सकी। उसे उन लोगो ने उसका बक्स भी एटेस्ट्रेज को ले जाने से रोका।

वह आज ही रात यहाँ फिर वापस आ जायगा वार्डर ने स्टीफैन से कहा।

स्टीफैन ने उसे समझाया कि वह ऐटेस्ट्रेज छोडे जाने के लिए जा रहा था परन्तु व्यर्थ रहा।

आदमी स्टीफैन के ऊपर चिल्लाकर बोला, "चुप रहो! तुम अपने को भले आदमी समझ कर जो चाहो कर सकते हो, तुम क्या यह सोचते हो?"

स्टीफैन क्रुद्ध होकर बोला, "मैं एक मामूली कैदी हूँ। तुम्हें मेरे

इस प्रस्ताव को स्वीकार करने का अभाव उसकी नजरबन्दी पर भी पड़ता था। क्या वह छोड़ दिया जाता यदि उसने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया होता।

डा० बर्च होल्ड ने कहा कि इस बात का नजरबन्दी की अवधि पर कोई प्रभाव नही पड़ता। हा इतना अवश्य था कि वह पुलिस के प्रधान हिमलर का कानूनी सलाहकार था।

यह एक विचित्र अवस्था थी। फर्म के प्रतिनिधि उन्हे इस प्रकार मजबूर करने आते थे ताकि ये अपने कानूनी अधिकार छोड़ दे। फर्म अपने पुराने लोगो की मानसिक परिस्थितियों से लाभ उठाना चाहती थी और इसीलिये जेल मे अपने प्रतिनिधि भेजती थी ताकि वे अपने अधिकार इस समय के दबाव मे आकर छोड दे।

९ सितम्बर

स्टीफैन की माता को अब अक्सर उससे मिलने की इजाजत थी। वह तीन बार इन थोडे से दिनो मे आ चुकी थी। उसकी आशा चलती ही जाती थी। उसका कहना था कि वह कुछ ही दिनो के भीतर छूट जाने वाला था।

स्टीफैन को विश्वास नही होता था। उसके साथी भी निराश थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो कभी यह कारावास समाप्त होने को ही नही था।

१४ सितम्बर

आज से ६ मास पूर्व स्टीफैन गिरफ्तार किया गया था। उसकी माँ कल फिर आई थी। उसने उसे सूचित किया कि उसका छुटकारा निश्चित था। वे केवल पुलीस के प्रधान हिमलर के हस्ताक्षर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

लेकिन हिमलर जिस पर स्टीफैन का भाग्य निर्भर था वह अवकाश पर था और कोई नही जानता था कि वह कब वापस होगा।

वह चौथी मजिल पर ले जाया गया। जैसे ही वह वहा पर पहुँचा, कैदी बरामदे मे व्यायाम करने को आ रहे थे। उनमे से बहुत पुराने मित्र थे।

शुपिक ने स्टीफैन को गले से लगा लिया, डा० अर्न्स्ट ने उसके हाथ हिलाये, लेक्स ने उसकी पीठ ठोकी, वैरन गाडिन, वेरन आर्टिन और बहुत से दूसरो ने उसे घेर लिया।

स्टीफैन का जेल के बरामदे मे ऐसा स्वागत हुआ मानो कोई बादशाह निर्वासन के बाद लौटकर आया हो।

सबकी आखो मे आसू थे एक दूसरे से मिलकर और इसे सम्भव देखकर।

तब स्टीफैन को सब बतलाना पड़ा। उसने दूसरो के बारे मे जो पीछे छूट गये थे। काउट स्ट्राकविज अपनी कोठरी मे अकेला था। रेव और फ्राइडमन और स्टेडेल्हेम के बारे मे उसने अनुभव बतलाए।

उसकी पुरानी कोठरी ४७ न० भरी हुई थी। वह पर शुपिक, लेक्स और फ्रोग्लियस था जो आपरेटिव सोसाइटी का था। स्टीफैन आर्टिन और गाडिन के साथ ३६ न० मे रक्खा गया। वहा पर दो के ही सोने का प्रवन्ध था उसे फूस की चटाई ज़मीन पर मिली लेकिन उसे बजाय अकेले रहने के यही रुचिकर प्रतीत हुआ।

वैरन आर्टिन ने स्टीफैन को बतलाया कि वह वहा पर कल ही भेजा गया था क्योकि कल उसकी वर्षगाठ थी। उसके स्त्री बच्चे उसे एटेस्ट्रेज मे देखने गये। उसे आशा हो रही थी कि अब वह स्टेडेल्हेम नही भेजा जायगा।

वैरन गाडिन बुरी दिल्लगी मे फसा था। उन्होने उसे प्रति दिन शीघ्र छुटकारे की आशा में रक्खा। उसका मुकदमा साफ होगया था उसने सूचित किया। और यह निश्चय हो गया था कि उसने ६ नवम्बर

साथ अच्छी तरह व्यवहार करना चाहिये । मुझे शीघ्र गवर्नर के पास ले चलो या उनसे ऐटेस्ट्रेज से पूछ लो कि क्या मैं अपना सामान ले आ सकता हूँ ।"

स्टीफैन की इस जोश और रोब से भरी आवाज ने अपना काम किया । वार्डर ने कोई जवाब नही दिया । कुछ देर बाद वह दूसरे कमरे मे टेलीफोन करने लगा ।

जब वह वापस आया वह बिलकुल शिष्ट था ।

'क्या आपको मालूम है कि उन्होने अभी मुझे वैरन आर्टिन के सामान एटेस्ट्रेज भेजने को कहा है ।" वार्डर ने जवाब दिया ।

"क्या आर्टिन एटेस्ट्रेज मे है ?" स्टीफैन ने पूछा ।

"हा । वह वहा कल पहुँच गया । इ ट्रक्शन कार्ड पर सिर्फ मुकदमे की सुनवाई के लिए लिखा था । वह भी अपने साथ सामान ले जाना चाहता था । अब हमे उसका सामान भेजना पडेगा, जिसका अर्थ हम पर दोहरी मेहनत है । पुलीस हेडक्वाटर के नये लोग अभी बदली का आज्ञापत्र भी ठीक से नहीं बनाना जानते ।" उसने कहा ।

"तो क्या मै अपनी चीजे ले जा सकता हू ।" स्टीफैन ने पूछा ।

"हा, हमे आज्ञा मिल गई ।" उसने कहा ।

स्टीफैन फिर मध्यकालीन मोटर लारी मे सवार हुआ लेकिन इस बार उन्होने दरवाजा बद नही किया । वार्डर ने उसे अन्दर नही बद किया उसने दरवाजा खुला ही रक्खा । तिसपर भी उसके हृदय मे पिछली घटनाओ के कारण भय समाया हुआ था और उसका हृदय जोरों से धडक रहा था ।

न्यूबेक पर उन्होंने नई मोटर मे बदली की ।

वे एटेस्ट्रेज पहुच गये । परिचित मुखों ने अभिवादन किया । इन्सपेक्टर फ्रेंक ने स्टीफैन को बतलाया कि अब वह थोडे ही समय मे मुक्त हो जायगा ।

सोशलिस्ट थे। ३७ न० मे एक एस० ए० का आदमी था, न० ३८ मे था केप्टेन रोह्वेन जो नाजी दल का प्रभावशाली नेता था। रोह्वेन अभी डकाऊ के केंप से आया था। वह वहाँ पर पाँच सप्ताह से था।

४० नं० मे रूसी कर्नल होगोटॉफ था जो जेनरल बिस्क बॉस्की के दल का था। वहाँ पर श्वेत रूसियो का सगठन कर रहा था और वह एल्फ्रेड रोज़ेन बर्ग का राजनीतिक सलाहकार था जो हिटलर का पर-राष्ट्र मन्त्री था। जेनेरल बिस्क बॉस्को परसो ही तीन मास के कारावास के बाद मुक्त हुआ था। वह ३६ न० मे स्टीफैन आदि के साथ था।

कर्नल होमोटॉफ़ कल वहाँ बर्लिन से लाया गया था। जहाँ वह कुछ सप्ताह तक पुलीस हेडक्वार्टर मे गिरफ्तार था और अब वह मुकदमे के लिये म्यूनिच मे था। ४१ न० मे एक नेशनल सोशलिस्ट बड़ा भारी व्यवसायी था। वह फर्थ के पास पैक कर भेजने वाले कारखाने का प्रमुख डाइरेक्टर था। उसका अपराध यह था कि उसने पुराने शेयर होल्डरो से व्यवहार रक्खा था जो यहूदी थे।

हर फ़ेहलर म्यूनिच के वर्तमान नेशनल सोशलिस्ट मेयर का भाई ४२ न० मे था। फेहलर नेशनल सोशलिस्ट आदोलन की प्रमुख कर्त्ता-धर्ता था। वह न पत्र लिख सकता था और न उसे पत्र मिल ही सकते थे। उन सब से वह अलग रक्खा गया था।

४३ नं० मे एक आस्ट्रियन पुलिस कमिश्नर था जो एक फरार की खोज में आया था। वह इसलिये गिरफ़ार किया गया था कि वह गुप्त रीति से यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहा था कि लेचकेल्ड के कैम्प में क्या दशा थी जहाँ अस्ट्रिया के बहुत से वेकार नेशनल सोशलिस्ट संरक्षण पाते थे।

४४ न० खाली था। वह भी अकस्मात्।

डा० स्टेनिजर बोहेनिया का नेशनल सोशलिस्ट था और वह ४५ नं० मे था। कुछ दिन पूर्व उसकी आँखो मे पट्टी बाध कर उस सीढ़ियों के नीचे ले जाया गया।

१६-२२ को नेशनल सोशलिस्टों पर गोली चलाने की आज्ञा नहीं दी थी।

उसकी पहिली स्त्री उस पर आरोप पर आरोप लगा रही थी। इस प्रकार वह आशा करती थी कि बच्चा उसके सरक्षण मे चला जायगा जो बाडिन के मकान पर था।

२१ सितम्बर

कल शाम को वैरन आर्टिन मुकदमे के लिये बुलवाया गया—जो पहिली बार ६ महीने के बाद था। वह साढ़े नौ बजे रात तक वापस नही आया। खुशी से उसने बतलाया कि उसने अपने राजनीतिक जीवन का व्यौरा लिखा दिया। उससे अफसर-इन्चार्ज ने कोई भी सवालात नही किये और उसके साथ शिष्टता पूर्वक व्यवहार हुआ। दूसरे दिन मुकदमा फिर चलने वाला था दूसरी पेशी के लिये।

श्रीमती फेडर्शमिड भी एटेस्ट्रेज आगयी थी और उसका भी बयान हुआ था। उमके सामने एक टाइप राइटर किया गया ताकि वह फौरन अपने बयान की जल्द ही एक साफ कापी बना सके।

स्टीफैन ने सुना कि पाल वान हाहन, पर इसकी फर्म का भूतपूर्व नेशनल सोशलिस्ट कमिश्नर जिसके खबर देने से ये सब जेल भेजे गये थे, किसी ने हमला करके डकाऊ मे उसे मार डाला।

वह आदमी जो उन लोगो के वहाँ जाने का जिम्मेदार था मर गया, यह उसके दिमाग मे जल्दी नहीं समा सका। लेकिन यदि वह मर गया तो उसे शाति मिले क्योंकि स्टीफैन को किसी से कोई खास नाराजगी नही थी। उसे अपने पापो की अच्छा बदला मिल गया। अब उनके छूटने के रास्ते मे कोई रोडा नही था।

२२ सितम्बर

एटेस्ट्रेज मे स्टीफैन के जाने के बाद बडे परिवर्तन हो चुके थे। अब सरकार के विरोधी नहीं पकडे जा रहे थे। बहुत से कैदी अब नेशनल

ओबस्टर उनका जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट था। वह कैदियो को कहवा देकर जो रुपया पैदा करता था जो इस प्रकार के कार्ड के प्रकाशन में व्यय होता था। उसने मन वाक्याशो का अनुवाद दुनिया की प्रत्येक भाषा मे करा रक्खा था।

स्टीफैन के साथी कैप्टेक हेल्डबेन को जबरदस्ती मदद करनी पड़ी। उसे अपना दात पीसते हुये इन झूँठो को फ्रेंच मे अनुवादित करना पड़ा क्योकि ओस्टबर्ग को मालूम था कि वह फ्रेंच बोलता था।

ऑस्टवर्ग ने इन कार्डो को होटलों और रेस्टरॉ के लिये पेरिस भेजा। उसने ऐसी घृणापूर्ण विरोधी बातो को मामूली लोगों के पतो पर भी भेजा जो उसे टेलीफोन बुक से मिल गये थे।

२५ सितम्बर

दिन चढ रहा था परन्तु कुछ भी न हुआ। स्टीफैन ने आशा त्याग दी। सुबह वह आर्टिन से बहस कर रहा था कि अब उनके साथ क्या होने वाला था। एकाएक दरवाजा खुला। वार्डर फिशर ने स्टीफैन को आवाज दी। वह हाफ रहा था। उसने उससे सामान बाधने को कहा।

स्टीफैन कॉपने लगा। उसने पूछा, "अब मैं कहाँ जाऊँगा? डाकाऊ?" यही समय लारियो को कैदियो के ले जाने का होता था।

"नही तुम छोडे जा रहे हो!"

"मेहबानी कर मजाक मत करो हर फिशर।" स्टीफैन ने कहा।

"लेकिन ऐसी ही बात है, मैं बतलाता हूँ। नही तो मुझे चौथी मजिल तक आने का क्या काम था जब मुझे नीचे ही बहुत काम रहता है?"

स्टीफैन ने जल्दी २ अपना सामान भरा लेकिन उसे फिर भी यकीन नहीं होता था कि वह छूटने वाला था।

'तुम अभी इतजार करो, तुम यहूदी। तुम अभी साग मजा चख लोगे' उससे कहा गया।

डा० स्टेनिजर ने लिफ्ट मे ही सफाई दी कि वह यहूदी नही था।

'चुप रह कुत्ते।' उसने सुना

डा० स्टेनिजर ने लड झगड कर यह समझा दिया कि वह यहूदी नही था। अत मे यह पता चला कि वह डा० स्टेनिजर नही था जिसे पीटा जाता था क्योकि वह यहूदी नही था और उसका नाम स्टेनिकी के स्थान पर भूल से लिया गया था।

डा० अर्न्स्ट ४६ न० मे था।

न० ४७ मे नेशनल सोशलिस्ट कोटिलयस था जो कोआपरेटिव सोसाइटी का डाइरेक्टर था और उसके साथ शुपिक और लेक्स थे।

ज्यादातर कैदी नेशनल सोशलिस्ट थे। दूसरे नाजियो के कारण जो बडे पद पर थे और उनको जिनसे दुश्मनी थी वे बन्द किये गये थे।

२४ सितम्बर

कल स्टीफैन ने फिर मा से बात की। उसने बतलाया था कि उसके छुटकारे का फैसला होगया। हगेरियन गर्वनमेट ने ही अपनी तरफ से उसकी जमानत ली। पेपन, वाइस चासलर, बुडापेस्ट गया और उसने हगेरियन जर्नलिस्ट-यूनियन की कार्यसमिति से यह वायदा किया कि स्टीफैन छोड़ दिया जायगा। हिमलर के हस्ताक्षर की ही बस आवश्यकता थी। हिमलर शहर के बाहर था। वह बर्लिन मे था। उससे और गोरिग प्राइम मिनिस्टर मे झगडे चल रहे थे। वह अपने पद के लिये लड रहा था।

४४ न० के दरवाजे पर एक कार्ड आधा फटा हुआ लगा था जो यहूदी लोगो से सावधान रहने की सूचना देता था। उसमे मजेदार बात वह थी कि उसके प्रकाशक का नाम नीचे कोने मे था, ओबस्टर म्यूनिच।

"नहीं" हम महज कुछ सवालो के जवाब चाहते है।"

"क्या आपको मालूम है कि मैं हगेरी की सरकार के अन्तर्गत एक परदेशी आदमी हूँ ?"

"हॉ, हम जानते हैं।"

"और फिर भी आप मुझे गिरफ्तार कर रहे हैं ?"

"हम तुम्हे गिरफ्तार नही कर रहे है। बल्कि केवल थाने तक ले चल रहे हैं।"

स्टीफैन टेलीफोन करने चला।

"तुम किसे फोन करने जा रहे हो ?" वे दोनो एक साथ तेज आवाज से बोल उठे।

"अपने प्रतिनिधि को। मैं उससे इन सब बातो की रिपोर्ट करने जा रहा हूँ।"

"मैं ऐसा करने की इजाजत नहीं दे सकता," बडे अफसर ने कहा, और टेलीफोन को दबा कर बन्द कर दिया। "बिना पुलिस-स्टेशन पहुँचे हम तुम्हे कोई बात नही करने दे सकते। वहाँ पहुँचने पर हम तुम्हारी स्त्री को प्रतिनिधि को फोन करने से रोक भी नही सकते। अभी फोन नहीं।"

स्टीफैन अपने शयन-गृह मे कपडा पहनने के लिए चला गया। क्षण भर के लिए उसके बदन मे स्फूर्ति आ गई। उसने सोचा, "यहाँ से भाग जाना क्या ठीक न होगा ?"

दोनों अफसर पुस्तकालय मे बैठे हुए स्टीफैन का इन्तजार कर रहे थे। स्टीफैन अपने कमरे मे अकेला था। वह आसानी से पिछले दर्वाजे से निकल जा सकता था। किन्तु, इतना होते हुए भी, वह भागता क्यों ? उसने कोई अपराध तो किया नही था। कपडे पहन कर वह लाइब्रेरी मे उनके पास फिर चला गया। दोनों अफसर उसके अगल-बगल हो लिए।

आटन और गार्डिन अवाक् थे। उसने जल्दी २ उन सब से हाथ मिलाया और बरामदे मे झपटा। वह शुपिक से विदा लेना चाहता था। लेकिन वह कैसे कर सकता था ? उसे एक किताब वापस करनी थी। जो उसने उससे पढने को ली थी।

'जल्दी करो' फिशर पीछे से चिल्लाया। 'मुझे बेकार समय नहीं है।'

८७ न० की खिड़की खुली थी। उसने उसी से किताब अन्दर डाल दी। तीन शक्ले उसे देखने लगी। वह कहाँ जा रहा था ?

वह छोडा जा रहा था स्टीफैन ने कहा।

शुपिक खिडकी से देख रहा था। उसने देखा कि वह ओवर कोट लिये था और बेग उसके साथ था। तब उसने उसका विश्वास किया। उसमे उसके दोनो हाथ पकड लिये। और उन्होने नमस्ते की। स्टीफैन ने देखा कि उनमे से किसी ने उसका हाथ चूम लिया।

उसने आखिरी बार देखा। बरामदा खाली था। ४७ न० मे केवल एक हाथ हिल रहा था। इस तरह उसने अपने साथियो से विदा ली।

वह क्यो जेल मे ६ महीने तक रक्खा गया जब वह बिना मुकदमा चलाये छोड़ दिया गया। स्टीफैन ने अफसर से पूछा।

"क्या तुम फिर अपनी कोठरी मे जाना चाहते हो। बेवकूफी के सवाल मत पूछो।" उसने कहा।

वार्डर स्टीफैन का सामान जल्दी मे देखना भूल गया। स्टीफैन के बक्स मे डायरी का दूसरा भाग था। यदि वे देख पाते तो वह उसे नही जाने देते। वह उसे छिपा न सका था क्योकि उसका छुटकारा अचानक हुआ था।

सूरज चमक रहा था। सड़के पहिले की भाँति मालूम पडती थीं। शात और अब सारी व्यवस्था हो रही थी। अब भी कुछ ही गज की दूरी पर सैकडो हजारो बेगुनाह आदमी कोठरियो मे बन्द थे। इस शाति पूर्ण वातावरण से कुछ ही गज दूर पर नेशनल सोशलिस्ट कैदी

"तुम कौन हो" एन्डो ने स्टीफैन से पूछा।

"तुम्हारा पिता।"

"हर कोई ऐसा कह सकता है

"लेकिन मैं सचमुच तुम्हारा पिता हूँ। क्या तुम मुझे अभिवादन नही करोगे।"

"अच्छा" छोटे बच्चे ने कहा। उसने अपना हाथ उठाया और उसने अपनी पूरी आवाज मे जर्मन सलाम देते हुए कहा --

"हेल हिटलर।"

वह एन्डी का उसके पिता के प्रति अभिवादन था जो हिटलर का ६॥ मास तक कैदी था।

स्टीफैन स्तब्ध रह गया। लेकिन एन्डी ने उसे गभीरता पूर्वक कहा।

वह सारे समय तक वर्लिन मे रहा था और उसने इसी तरह सब को अभिवादन करते हुये देखा था इसलिये यह उसके लिये स्वाभाविक ही था।

'अच्छा' स्टीफैन ने कहा, 'तुम्हे कुछ और कहना है?'

'हेल हिटलर!' वह पुनः चिल्लाया।

'अच्छा इसके बाद! इसके बाद!' स्टीफैन ने पूछा। वह उसे चुमकारना चाहता था।

जेल मे बन्द थे जिन पर दूसरे उन्ही के भाई-बन्धु नेशनल सोशलिस्ट अत्याचार कर रहे थे।

अब स्टीफैन की समझ मे आया कि लोग जो जर्मनी की यात्रा करते हैं क्यों लिखते है कि यहा पूर्ण शाति है।

वे केवल ऊपरी चीजे देखने पाते थे। किसको जेलो के अन्दर का जीवन मालूम था। बाहर सूरज चमक रहा था। यहा पर जेल की शलाखे नही थी। अब उसे अपनी कोठरी मे नहीं जाना था। स्टीफैन ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

उसने अपना बैग एक टेक्सी पर रक्खा और हगेरियन दूतावास पहुँचा। उसकी मा उसे वहां मिली। उसे एक कागज पर हस्ताक्षर करना पड़ा कि वह आज ही जर्मनी छोड़ कर हगेरी जा रहा था। इसी शर्त पर उसकी रिहाई हुई थी।

उसके पास पासपोर्ट नही था परन्तु एक विशेष प्रमाण-पत्र के कारण वह हगेरी की यात्रा कर सका जो केवल एक दिन के लिये मिला था। अब वह स्वतत्र था।

उसके जेब मे बीस फेनिगज थी जिसको उसने जर्मनी की सीमा पार करते समय रात को रेल के डिब्बे की खिड़की से फेक दिया। वह सूट मे था और उसके बेग मे कुछ कितावे थी। और कुछ नही।

उसने सब सम्पत्ति पीछे छोड़ दी थी।

अब ट्रेन स्वतत्र राष्ट्र में दौड़ रही थी। तारे चमक रहे थे। उसे अपने जेल मे बन्द कैदियो की याद आ गयी। जो केवल आकाश को सीखचो के बीच से ही देख सकते थे।

२७ सितम्बर

वह अपनी स्त्री से बुडापोस्ट स्टेशन पर मिला। एक छोटे व्यक्ति ने उसे नही पहिचान पाया। ६॥ मास काफी समय होता था।

एन्डी यह देख कर फूट-फूट कर रोने लगा जैसे कि उसका कलेजा फटा जा रहा हो। उसने अपने पिता को इतने सवेरे घर से बाहर जाते कभी न देखा था।

"आज अभी तक आपने मुझे कोई किस्सा नहीं सुनाया।"

"प्यारे बच्चे, किस्से मैं दोपहर बाद तुम्हें सुनाऊँगा। रोओ मत। उस समय मैं तुमसे हाथी की एक मजेदार कहानी कहूँगा।"

"और शेर की भी," एन्डी ने आँसू गिराते हुए कहा "और समुद्री घोड़ा, तोता और बन्दरों की भी?"

"हाँ, हाँ, मैं तुम्हे इन सब की कहानी लौट आने पर सुनाऊँगा। अभी मत रोओ।"

बच्चा शान्त हो गया। उसने सीढ़ी के नीचे खड़े हुए अपने पिता को बुलाते हुए कहा—

"ध्यान रहे, दोपहर के बाद आना भूल न जाइयेगा।"

"नही, मैं न भूलूँगा।"

दोनो अफसर स्टीफन के साथ आफिस की ओर रवाना हुए। आफिस के दरवाजे पर सशस्त्र पुलिस खड़ी हुई पहरा दे रही थी। किस लिए?

दोनो अफसर और स्टीफन उसके आफिस मे घुसे।

दोनों अफसर डेस्क के कागजों की छान-बीन करने लगे।

"आप वास्तव मे क्या खोज रहे हैं?" स्टीफैन ने उनसे पूछा। "क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ?"

"हम क्या ढूँढ रहे हैं?" उनमें से एक ने क्रोध मे स्टीफैन के शब्द को दुहराया। दूसरे ने उसी के शब्द को चिल्ला कर कहा, "हम क्या ढूँढ़ रहे हैं?"

वे दोनों कुछ परेशान से मालूम पड़ रहे थे। उन्हे उस समय अपनी भी सुध न थी।

वाले कमरे के दरवाजे पर खड़ा होगया। एक अफसर पहले ही से दरवाजे पर हाथ रक्खे हुए भीतर जाने को तैयार था। यकायक उसके विचार मे न जाने क्या आया और उसने उसे धक्का देकर दरवाजे से दूर ठेल दिया।

"मैं तुमसे पूछने का भूल गया कि क्या तुम्हारे पास कोई हथियार तो नही है।"

"मै हथियार कभी नहीं रखता।" स्टीफैन ने जवाब दिया।

उसने जल्दी से हाथ बढा कर स्टीफैन की कलाई पकड ली और उसे तब छोडा जब कि तलाशी लेने पर कोई पिस्तौल न मिली।

स्टीफैन कमरे के अन्दर ले जाया गया। यह कमरा नवयुवको से खचाखच भरा हुआ था जो कि अपनी अपनी तकरीरे सुना रहे थे। भीड़ इतनी अधिक थी कि कभी कभी कोई कोई कमरे के बाहर निकल पड़ते थे। नवयुवको को वहाँ के व्यवहारो का जरा भी ज्ञान न था। किसी ने स्टीफैन की ओर सिर उठा कर भी न देखा।

वे कुछ देर तक वही इन्तजार करते खड़े रहे।

तब बडे अफसर ने उनमे से एक जवान आदमी का ध्यान स्टीफैन के उपस्थिति की ओर दिलाया। उसने कुछ देर तक स्टीफैन की ओर देखा, इसके बाद एक कागज पर कुछ लिखकर दूसरे कमरे में ले गया और थोड़ी देर बाद लौटने पर कागज डिटेक्टिव के हाथ मे देते हुए मेरी तरफ इशारा करके बिगड़ कर कहा :—

"उसे ले जाओ।"

"क्या मैं अब गिरफ्तार कर लिया गया हूँ ?" स्टीफैन ने उससे पूछा।

"तुम पुलिस की निगरानी मे रक्खे जा रहे हो।"

"किस अपराध मे ?"

"हमे इन्सपेक्टर को फोन करना चाहिए," छोटे अफसर ने कहा।

बड़ा अफसर इस पर राजी हो गया। उसने पुलिस के बडे दफ्तर मे फोन किया, "हमने अपनी तलाशी समाप्त करदी है नही, हमे उसके विरुद्ध कोई भी सूत्र नही मिला .क्या हमे किसी खास चीज की तलाशी लेनी है ? मैं समझ गया।"

स्टीफैन हँस पडा।

"आपको सरकार के विरुद्ध बगावत का कोई सबब यहाँ नही मिला। दि म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस, जैसा कि आप को मालूम होगा, कोई राजनैतिक विषयो से सम्बन्धित नही है।"

"हाँ, हाँ, मालूम है वह मुझे सब, " अफसर ने प्रत्युत्तर मे कहा, "किन्तु फिर भी हमे इन्स्पेक्टर को सन्तुष्ट करने के लिए कोई न कोई मसाला तो निकालना ही होगा।"

"शायद आप तसवीरो की यह टोकरी लेजाना चाहते होंगे ?" स्टीफैन ने मजाक के तौर पर कहा, और रद्दी कागजो तथा तसवीरो से भरी हुई टोकरी की ओर इशारा किया।

अफसर ने सन्तुष्टि सूचक तौर पर सिर हिलाते हुए कहा "वह भी उनके कुछ न कुछ काम की निकल ही आएगी।"

तलाशी समाप्त हो गई।

इस समय आठ बजे थे।

वे मकान के बाहर रवाना हुए।

पहरे वालों ने जब दोनो अफसरो को रद्दी तसवीरो की टोकरी और स्टीफैन को लेकर बाहर निकलते देखा, तो फौजी ढङ्ग से सैल्यूट किया।

× × × ×

जब स्टीफैन थाने पहुँचा, तो दो पुलिस के जासूस उसे राजनीति विषयक आफिस की तरफ ले गये। स्टीफैन एक सौ सैतालिस नम्बर

खुला हुआ था। स्टीफैन ने दरवाजे की ओर देखा। दरवाजे के पास ही लकड़ी का एक तख्ता फर्श मे लगा था। करीब ही मे एक जंजीर भी थी जो इसी तख्ते से लगी थी। यहाँ न तो कोई खिड़की ही थी और न कोई प्रकाश ही।

"क्या मुझे इस प्रकार की गुफा मे भी रक्खा जायगा?" स्टीफैन ने पूछा। चौकीदार हँस पड़ा। "क्यो, यह अँधेरी गुफा शराबियो के लिए है। वे अपनी शराब से अलग इसमे सोते है। तुम तो चौथी फर्श पर राजनीतिक कैदियो के साथ रक्खे जाओगे।"

वे सीढ़ी से ऊपरी मंजिल पर गए।

प्रत्येक मंजिल पर वही दृश्य—एक लम्बा चौड़ा मार्ग, जिसके दोनो ओर वही लोहे के दरवाजे और दरवाजों के बाद फिर वही छोटे-छोटे गुफा जैसे कमरो की कतारे।

वे चौथे मंजिले पर पहुँचे। हाल मे कुछ कैदी खडे थे। वार्डर ने प्रत्येक को उनके कमरे की ओर इशारा किया।

"वह तुम्हारा है", उसने कहा "नम्बर ४७"

कोठरी साफ की जा रही थी। तीन लम्बी-लम्बी दाढ़ी वाले कैदी खडे थे। स्टीफैन भी उनके ही बीच खड़ा कर दिया गया।

जैसे ही नौकर कोठरी साफ कर चुके वे सब उसके भीतर चले गए।

इसके बाद फाटक मे ताला बन्द कर दिया गया। अब वे लोग सचमुच ही कैदी थे।

स्टीफैन की यह परिस्थिति बड़ी ही हास्यास्पद जान पड़ी।

स्टीफैन को वे दिन याद आने लगे जब कि वह लड़को की तरह बड़ा नटखट था। शरारत करने पर वह इसी भाँति कभी-कभी कमरे के अन्दर ताले मे जकड़ भी दिया जाता था। किन्तु फिर भी उसे

नवयुवक अफसर बिना स्टीफैन की बात का उत्तर दिये ही चला गया। अब स्टीफैन इस उधेड़-बुन मे पड़ गया कि क्या वह अफसर स्वय ही नहीं जानता कि मैंने उसे किस अपराध मे गिरफ्तार किया है।

दो डिटेक्टिव स्टीफैन को लेकर हवालात की ओर बढ़े। यह कमरा अजब कायदे का बना या। चारो ओर लोहे की छड़े जड़ी थीं। इन छड़ों के बीच से होकर बगल के कमरे मे जाने के रास्ते बने थे।

एक सिपाही ने स्टीफैन का हैट उतारकर एक ताक पर रख दिया। लकड़ी की दराज मे वहाँ और भी बहुत से हैट रक्खे हुए थे। जिनमें बहुत से भले आदमियो के कीमती मालूम पड़ रहे थे और बहुत से खराब भी थे। ये सभी अपने-अपने मालिक की बाट जोह रहे थे जो कि कैद मे थे। सभी चित्रवत् किन्तु सजीव मालूम हो रहे थे।

स्टीफैन का फाउन्टेन-पेन, पेन्सिल, चाभी और जेबी नोट-बुक भी ले लिये गये। एक अफसर ने उसकी जेबो की तलाशी ली। साथ ही साथ उसने अपना हाथ उसके बदन के अन्य हिस्सो पर भी यह देखने के लिए कि उसने कोई चीज छिपा तो नही रक्खी, घुमाया।

स्टीफैन को कोई बयान देने के लिये न पूछा गया। उसको गिरफ्तार करने का आज्ञा-पत्र साफ अक्षरो मे टाइप किया हुआ उनके सम्मुख पडा था। स्टीफैन ने अफसर के कन्धो पर निगाह दौड़ाई, इसी बीच उसकी दृष्टि कुछ शब्दो पर पडीं। लिखा था—"गिरफ्तारी का कारण : देश निकाला।"

इसलिये वे उसे जर्मनी से निकालना चाहते थे। किस लिए?

× × × ×

एक चौकीदार स्टीफैन को लोहे के दरवाजे के भीतर ले गया। अब वह हवालात मे बन्द था।

इसके बाद स्टीफैन एक लम्बे चौडे कमरे मे ले जाया गया। उसके दोनो तरफ लोहे के दरवाज़े थे। दाहनी ओर का दरवाजा

हर लिन्क को ले जाने के लिए आ पहुँचा। हर लिन्क को अपना सामान बाँधना था क्योकि वह उस जगह से हटाकर स्टेडिलहेम भेजा जा रहा था। उसने उन लोगो से प्रार्थना की कि यदि उनमे से कोई जल्दी मुक्ति-भोगी हो तो वह उसकी स्त्री को उसके वर्तमान निवास-स्थान की सूचना दे दे।

उसके चले जाने पर उस कोठरी मे तीन और बच रहे—स्टीफैन, कार्ल वेक और काउन्ट स्ट्रैक्विज।

वेक की चारपाई दरवाजे के पीछे थी और स्टीफैन तथा स्ट्रैकिज की चारपाई कोठरी की एक दीवार के बगल मे। वे सब बाते करने के लिए चटाई पर बैठ गए।

हर वेक जो म्यूनिक की सबसे बड़ी सिलाई की कम्पनी का मालिक था, इस समय बिल्कुल निराश था। चार दिन पहले वह गिरफ्तार हुआ था। किन्तु उसके बयान की अभी कोई सुनवाई भी न हुई थी। अपनी गिरफ़्तारी का कारण जानने के लिए वह व्यर्थ ही सिर पटक रहा था।

"तो क्या तुमने कभी राजनीतिक मामलो मे डटकर काम नही किया था?" स्टीफैन ने उससे पूछा।

"कभी नही! मै केवल एक व्यापारी आदमी हूँ। मुझे राजनीतिक कार्यों से क्या मतलब!"

"तब तो मेरी भी समझ मे नही आता कि तुम क्यो गिरफ्तार किए गए हो।"

"ऐसा केवल इस लिए हुआ कि मैं एक यहूदी हूँ।" हर वेक ने दबी हुई जबान मे कहा।

काउन्ट स्ट्रैक्विज ने हर वेक को खुश करने की बड़ी कोशिश की। "देखना हर वेक", उसने कहा, "तुम कल छोड़ दिए जाओगे।"

उसका अकेलापन इतना दुखदायी न मालूम होता था जितना कि आज ताले के भीतर मालूम हो रहा था।

स्टीफैन यकायक हँस पडा।

उसके तीनो साथियो ने चौक कर उसकी ओर देखा।

उन सबो ने फिर एक दूसरे से अपना-अपना परिचय कराया।

"मेरा नाम कार्ल वेक है।"

"मेरा नाम लिंक है।"

"काउन्ट स्ट्रैकिज" तीसरे साथी ने भी अपना नाम बताया।

एक दूसरे का परिचय पाकर हवालात चहारदीवारी के अन्दर भी उनका चेहरा पुलकित हो उठा है।

जो सभ्यता उन्होने स्वतन्त्रता पूर्वक समाज से प्राप्त की थी हवालात की कोठरी का उस पर कोई प्रभाव न पडा।

"तुम किस अपराध मे गिरफ्तार किए गए हो?" स्टीफैन के साथियो ने उससे पूछा।

"मुझे स्वय ही ज्ञात नही।"

स्टीफैन का जवाब सुनकर उसके साथी टकटकी लगाकर उसकी ओर देखने लगे।

"और तुम क्यो गिरफ्तार किए गए हो?" स्टीफैन ने पूछा।

"हम तुम से अधिक थोडे ही जानते हैं," काउन्ट स्ट्रैकिज और कार्ल वेक साथ-साथ बोल उठे।

इन सबो मे केवल हर लिन्क, जो कि एक लोहार था और बुढापे के कारण जिसकी दाढी-मूँछे सफेद हो चली थी, ऐसा था जो अपनी गिरफ्तारी का कारण जानता था।

"मैं समाजवादी प्रजातान्त्रिक मजदूर सभा का एक अफसर हूँ।" उसने कहा। उन लोगो ने बाते आरम्भ ही की थी कि इतने मे वार्डर

बजने की ध्वनि लगातार सुनाई पड़ रही थी। सभी कैदी यही चाहते थे कि उनके मामलों की सुनवाई हो।

वार्डरों की समझ में न आता था कि वे क्या कहे। वे बार-बार एक ही जवाब दोहराते :—

"जब तुम्हारी जरूरत पड़ेगी, तुम भेज दिए जाओगे।"

कैथड्राल के घण्टे प्रत्येक पन्द्रह मिनट पर बज उठते—एक, दो, तीन, चार। दूसरा भी घण्टा समाप्त हुआ किन्तु फिर भी कोई खबर नहीं।

हर वेक ज्यो-ज्यो घण्टे व्यतीत होते अधिक निराश होता जाता था। दोपहर के बाद का समय बड़ी मुश्किल से कटा।

वे सब लेट गये और सोने की चेष्टा करने लगे।

× × × ×

स्टीफ़ैन का साथी काउट स्ट्रैक्विज आस्ट्रिया का एक धनी व्यक्ति था। वह सुदर, आकर्षक और सभ्य था। वह समस्त ससार का भ्रमण कर चुका था और भॉति-भॉति की भाषाएँ बोलता था। उसने केवल एक ही वर्ष म्यूनिक मे रहकर तमाम ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन किया और कैथोलिक समाचार पत्र के लिए अनेको राजनैतिक लेख भी भेजे।

"मैं पुलिस के हाथो आकाश से टपक पड़ा," उसने स्टीफ़ैन से कहा "पिछली रात को मैं अपने भाई बैरन आर्टिन के यहॉ सो रहा था। प्रात.काल ये मुझे पकड़ कर साथ ले आए और इस प्रकार मैं यहॉ पर हूँ।"

"किन्तु बैरन आर्टिन तो मेरा दोस्त है" स्टीफ़ैन ने कहा "उसका क्या हाल है ?"

"तुम तो कल सवेरे ही से ऐसा कह रहे हो", हर वेक ने निराश भरे शब्दो मे कहा।

उसने अपने पैर सिकोडे और चुपचाप चारपाई पर बैठ गया। भोजन सामग्रियो से भरे हुए पार्सल, कागज के थैले, चमडो के सूट-केस आदि उसके चारो ओर—चारपाई के ऊपर और नीचे सभी जगह—रक्खे थे। खजूर, बिस्कुट, चाकलेट, पावरोटी, मक्खन, चाय से भरा हुआ थरमस, जूस से भरा हुआ थरमस, आदि कितनी ही नाना प्रकार की चीजे वहाँ भरी पडी थी। इन पार्सलो मे प्रत्येक वस्तुएँ थीं। श्रीमती वेक अपने पति को भूखो मरने देना पसन्द न करती थीं। वेक रोटी का गस्सा तोड़ता पर फौरन उसे ख्याल आता कि वह कैदी है। और रोटी का गस्सा उसके हाथ से छूट जाता।

बाहर हाल मे लोग आते और बिना कुछ दखलन्दाजी के चले जाते।

सिर के ऊपर छत से एस० ए० के आदमियो के जूतो के शब्द सुनाई देते। प्रत्येक क्षण कोई न कोई किवाड के छिद्रो से झाँकता ही रहता। एस० ए० वालो को जेल की कोठरियाँ पर निगरानी रखने का हुक्म था।

रह रह कर बाहर से किसी न किसी की जोर की आवाज सुनाई देती। .—

"तुझे जल्दी ही उचित सबक सिखाया जायगा, ओ यहूदी सुअर!" "तुझे फाँसी दी जायगी, तुम्हारा सारा समूह फाँसी पर लटका दिया जायगा।" कभी-कभी वे लोगो के मुँह से अपना नाम सुनते और फिर वे लोगों को अपनी ओर झाकते हुए पाते।

धीरे-धीरे घण्टों बीत गए। वे लोग अपना-अपना बयान सुनाने के लिए बुलाये जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी कोठरियो से घण्टों के

प्रत्येक आदमी यदि कुछ सोचता तो यही कि वह कैद मे है। यही विचार रह रह कर उसे बेचैन करते।

"अपने को इस भाँति चिन्तित न करो, हर वेक।" स्टीफैन ने उसे ढाढस बँधाते हुए कहा "कैदखाने के अतिरिक्त कोई अन्य बात सोचने की कोशिश करो, तुम्हारा दिल बहल जायगा। जरा इन नीली तोशकों को तो देखो! ये कितनी अच्छी हे। यह सोचने की कोशिश करो कि हम एक झोपड़ी मे बैठे हुए हैं जो एक बहुत ऊँची पहाड़ी पर है। बाहर से तूफान की हरहराती ध्वनि और हवा की सनसनाहट सुनाई पड़ रही है। झोपड़ी का दरवाजा बर्फ से बन्द हो गया है और अब हम लोग आज की रात घाटी को नहीं लौट सकते। झोपड़ी तप रही है। हम लोगों ने अभी अभी राजसी-भोजन किए हैं। हमे किसी वस्तु की कमी नहीं है। केवल...... ..बर्फ का तूफान . ..हम दरवाजा नहीं खोल सकते, तो हमे क्या करना चाहिए? हम लोग सोयेगे। सवेरे जब नींद टूटेगी, तब सूर्य फिर उदय हुआ रहेगा।"

वेक ने गहरी आह भरी। वह बेचैनी से तड़फड़ाने लगा।

"ढाढस रक्खो। कल तक तुम रिहा कर दिए जाओगे" काउन्ट स्ट्रैक्जि ने कहा।

वेक चुप हो रहा। उसने कपडे उतारना उचित न समझा। अपने गर्म ओवरकोट को तह कर के उसने अपने सिर के नीचे रख लिया और फिर छत की ओर एकटक हो कर देखने लगा।

कुछ ही क्षणों मे वह सो गया। कोठरी मे उसके खर्राटों की आवाज गूँज उठी।

स्टीफन और स्ट्रैक्जि की नींद दूभर हो गई। हर वेक के खर्राटों की आवाज बड़ी तेज थी। कभी तो वह बड़ी तेजी से खर्राटा लेता, कभी बहुत ही धीमी आवाज मे और फिर यकायक तेजी से खर्राटा

"उन्होने उसे हमारे सामने वाली कोठरी मे सम्पादक ब्यूकनर (Editoı Bucknei) के साथ रक्खा है।"

"मैं उससे मिलना चाहता हूँ! क्या उसके बाद और भी बहुत से लोग कैद होकर आए हे?"

काउन्ट स्ट्रैक्विज उसके इस भोलेपन पर हँस पडा।

"सम्पूर्ण इमारत ही राजनैतिक बन्दिया से भरी पड़ी हे और अब भी नित्य नये-नये कैदी लाये ही जा रहे हैं।"

× × × ×

सन्ध्या होने लगी।

कोठरी का दर्वाजा खोल दिया गया और कैदियो को जाकर पानी लाने की आज्ञा दी गई। इसके बाद उनमे से प्रत्येक का दो-दो कम्बल दिए गए और वे सब रात बिताने के लिए तैय्यार हा गए।

पुलिस-बावर्चीखाने से बावर्चिन उनके लिए भोजन ले आई, जिसमे ठढा मास, मक्खन, रोटी और पनीर थे।

हर वेक ने वार्डर से रात्रि मे रोशनी जलते रहने के लिये प्रार्थना की। वार्डर ने ऐसा करने की हामी भी भर ली। किन्तु हर वेक को उसकी बातो पर विश्वास न हुआ क्योकि एक दिन पहले भी वह इसी प्रकार वायदा कर चुका था लेकिन बारह बजते ही उसने रोशनी बुझा दी थी।

"क्या हम रोशनी स्वय ही नही बुझा सकते?" स्टीफैन ने पूछा। शेष दोनो, स्ट्रैक्विज और कार्ल वेक उसकी बातो पर हँसने लगे।"

"मालूम पड़ता है तुम भूल गए कि हम लोग बन्दी है। स्विच कोठरी के बाहर हॉल मे हे। यह हमारा काम नही है किन्तु वार्डर इसका जिम्मेदार है। जब वह चाहेगा तब बत्ती बुझा देगा।"

वेक ने दबी हुई जबान मे कहा, "हम लोग बन्दी हैं।"

उन्होने प्रतीक्षा की।

प्रतीक्षा की—उन्होने अपनी सुनवाई की बड़ी प्रतीक्षा की। क्योकि सुनवाई होने का मतलब था उन्हे छुटकारा मिलना। वे निर्दोष थे।

उन्हे पूर्ण विश्वास था कि उनकी सुनवाई होते ही वे निरपराध सिद्ध हो जायँगे और उन्हे शीघ्र ही उस कारागार से मुक्ति मिल जायगी।

किन्तु कुछ न हुआ। दोपहर आया, समाप्त हो गया। धीरे धीरे सन्ध्या भी होने लगी। लेकिन अब तक उन्हे कोई भी बुलाने न आया।

उन्हे हॉल से निरन्तर आवागमन की ध्वनि सुनाई पड रही थी। किवाडों के खोलने और बन्द करने की आवाज बिल्कुल साफ कर्ण गोचर होती थी। उन्हे बीच बीच मे कुछ घबराहट के प्रश्न भी सुनाई पडे।

"मै यहॉ क्यो लाया गया हूँ ?"

कैदखाने मे मोटरें नये नये कैदियो को ला रही थीं। बड़ा तेज कोलाहल हो रहा था। घण्टे पर घण्टे बीतने लगे। वे निराश होकर कोठरी मे चलने लगे।

स्टीफैन ने घण्टा बजाया।

"क्या मामला है ?" वार्डर के गर्जने की आवाज दर्वाजे के रास्ते सुनाई पडी।

"मैं अपने मामले की सुनवाई चाहता हूँ। मैं यहॉ कल सवेरे ही से हूँ और अभी तक मेरी कोई सुनवाई नही हुई। मै जानना चाहता हूँ कि आखिर मेरी गिरफ्तारी का कारण क्या है ?"

"मैं इसकी रिपोर्ट कर दूँगा," बाहर से वार्डर की आवाज आई।

उन लोगो ने फिर प्रतीक्षा की।

लेता। फिर आवाज बहुत ही धीमी हो जाती और फिर यकायक तेज। खर्राटे का आलाप बड़ा ही मजेदार था।

"कितना बढ़िया आलाप है यह!" काउन्ट स्ट्रेकीज ने स्टीफैन से धीमी आवाज मे कहा।

दोनो हँस पड़े।

इस प्रकार उनका प्रथम-बन्दी-दिवस समाप्त हुआ।

× × × ×

दूसरे दिन प्रातःकाल छः बजे ही किसी ने दर्वाजा खटखटाया। उनकी आँखे खुल गई। आवाज आई "उठो, कम्बल की तह करो।"

क्षण ही भर मे वे लोग उठ खड़े हुए।

"हिम-वर्षा कैसी है? क्या दरवाजा अब भी बन्द है?" हर वेक ने व्यङ्ग-मय शब्दों मे कहा।

आधे घण्टे बाद फाटक की छोटी खिड़की खुली। खुले हुए रास्ते से कॉफी और रोटी खिसका दी गई। कॉफी अच्छी तरह न बना था और जो कुछ बना भी था वह बड़ा गन्दा था। स्वाद तो बडा ही कड़ुवा था। रोटी एक दम काली और गन्दी थी किन्तु तश्तरी मे रख कर दी गई थी।

हर वेक के थरमस मे घर से आई हुई कॉफी अब भी बच रही थी। वह उन तीनों के लिए पर्याप्त थी। और रोटी भो जो हर वेक ने स्टीफैन और स्ट्रेकिज को खाने के लिए दी बड़ी स्वादिष्ट थी।

नौ बजे तक कोठरी साफ कर दी गई। उन लोगो को जब तक कोठरी साफ होती रही हॉल मे टहलने की आज्ञा मिल गई। वे लोग कुछ कदम चले, दौड़े और पैर की थकावट दूर की। किन्तु यह शुभ समय शीघ्र ही समाप्त हो गया। उन्हे फिर कोठरी मे चले जाने की आज्ञा दे दी गई।

× × × ×

पैराग्राफ के शब्दो का अर्थ था—कैद ! कैद ! कैद ! स्टीफैन ने इन पक्तियों को एक बार, दो बार और फिर तीसरी बार पढ़ा। "बोलशेविस्टो की चालबाजी।" नेशनल सोशलिस्ट जर्मन पार्टी पर यह एक गहरा आक्षेप था।

हाल की तरफ आती हुई पगध्वनि सुनाई पडी। वे स्टीफैन की कोठरी के बाहर रुक गए। दर्वाजा खुल गया।

काउन्ट स्ट्रेकिज ने चिल्लाकर कहा "अब तुम मुक्त कर दिए जाओगे।"

एक सिपाही स्टीफैन को जेल के दफ़्तर मे ले गया।

एक नवयुवक, जिसकी उम्र मुश्किल से बीस वर्ष की रही होगी, दफ़्तर मे स्टीफैन लॉरॉ की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके सामने एक टाइपिस्ट टाइप-राइटर पर बैठा था।

उस नवयुवक ने स्टीफैन की ओर एक कुरसी बढायी।

"मुझे आपसे उन चिट्ठियो के विषय मे,' जो आपके ही कागजो मे पाई गई हैं, कुछ पूछना है," उसने कहना आरम्भ किया, "उदारणार्थ, यह लीजिए, १६२६ का लिखा हुआ एक पत्र; इसका लेखक कौन है ?"

यह कह कर उसने स्टीफैन को एक पत्र दिखलाया।

"भला मै कैसे कह सकता हूँ कि इसका लेखक कौन था ?" स्टीफैन ने उत्तर दिया, "आप तो स्वय ही देख रहे हैं कि यह पत्र मुझे सकेत करके नही लिखा गया है बल्कि यह मेरे अखबार के नाम आया है। मैं नहीं जानता कि इसका लेखक कौन है, और मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह मुझसे परिचित भी नही। इस प्रकार तो उसने सम्पादकीय-विभाग को और भी न जाने कितने ही लेख भेजे हैं। कुछ भी हो उसका नाम और पता उसके लिखे हुए कागज पर मौजूद है। आप आसानी के साथ खोज-बीन कर के उसका पता लगा सकते हैं।"

कोठरी का दर्वाजा खोला गया। एक अफसर ने न्यूरा द्वारा भेजा हुआ एक पार्सल स्टीफैन के हाथ मे दिया। उसमे एक सूट और पैजामा था। इससे यह प्रकट था कि उसे आज भी स्टीफैन के छूटने की आशा न थी।

काउन्ट स्ट्रेक्विज को वाल्किशर व्यग्रोवैक्टर की एक प्रति मिली। उसने इसे पढना आरम्भ किया। यकायक उसने मेज पर हाथ पटकते हुए कहा :—

आह तुम वहाँ हो।"

"क्या बात है भाई ?" स्टीफैन ने चौक कर पूछा।

"यहा," उसने स्टीफैन से सकेत करते हुए जोर से कहा "पढो, इसे पढो !"

स्टीफैन पत्र के पास पहुँचा। पहले ही पृष्ठ पर एक पैराग्राफ मे मोटे मोटे अक्षरो मे लिखा था .—

म्यूनिक में और अधिक गिरफ्तारियाँ

"आरटिन और व्यूकनर, नामक दो सम्पादक हिटलर के नायकत्व से अलग करने की कोशिश करने के सदेह मे पकडे गए थे। उसी सम्बन्ध मे स्टीफैन लॉरॉ पर जो म्यूकनर इलस्ट्रीट प्रेस का सम्पादक था और जो उसी फर्म से सम्बन्धित भी था आज प्रातःकाल बोलशेविष्ट की चालबाजियों मे शामिल होने के गिरफ्तार कर लिया गया है।"

स्टीफैन ने दोहराया, "बोलशेविष्ट की चालबाजियो के सन्देह मे गिरफ्तार कर लिया गया है।"

अब उसकी समझ मे आगया कि इसके क्या अर्थ थे। इसके अर्थ थे कि वह जल्दी कारागार से मुक्ति पाने की आशा न करे।

"हाँ हाँ, क्यों नहीं ? रूस की यात्रा करने की कोई रोक-टोक नहीं है। जर्मनी से रूस की यात्रा करने के अनेकों साधन सुलभ्य हैं। सहस्रों जर्मन सोवियट रूस की यात्रा करते हैं। तो क्या मैं ही ऐसा हूँ जो रूस की यात्रा करने वाले से परिचय भी नहीं रख सकता।"

"हो सकता है, लेकिन यह भद्रा यहाँ लिखती क्या है, 'मैं मार्क्स और एजिन्स का अध्ययन कर रही हूँ जिससे मैं उनके विचार भली भाँति समझ सकूँ'। इसके विषय में तुम्हें क्या कहना है ?"

"इसमें कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है। अब तक सभी जर्मन को कोई भी पुस्तक जो वे चाहते थे पढ़ने का अधिकार था। इन सब बातों का जिम्मा वास्तव में मुझसे कोसों दूर है।"

नवयुवक बड़ी देर तक ध्यान से चुपचाप स्टीफेन के चेहरे की ओर देखता रहा। अन्त में बड़ी देर चुप रहने के बाद उसने कहा :—

"किन्तु मार्क्स, जैसा कि सभी जानते हैं, मार्क्सिज़्म का सचालक है, और कोई भी सभ्य पुरुष उसके ग्रन्थ पढ़ना पसन्द नहीं करता।"

स्टीफेन चुप हो गया। वह जवाब ही क्या देता !

नवयुवक ने सेक्रेटरी को स्टीफेन का बयान लिखाना आरम्भ किया जिस पर स्टीफेन को हस्ताक्षर भी करना था। लिखाते-लिखाते उस नवयुवक ने लिखाया, "मैं पोस्टकार्ड पर लिखी हुई बातों का अर्थ समझाने में असमर्थ हूँ।" तब स्टीफेन ने उसका विरोध किया।

"मैंने यह कभी नहीं कहा" स्टीफेन ने दृढ़ता के साथ कहा। "मैंने केवल इस बात का संकेतमात्र किया था कि इस पर प्रकाश डालने की कोई बात ही नहीं है। कार्ड ही से प्रत्यक्ष है कि यह एक यात्री द्वारा अपने मित्र को लिखे गये एक क्षेम-पत्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

वह नवयुवक स्टीफैन की ओर असन्तुष्ट दृष्टि से देखने लगा।

"आप यकीन रखिए" स्टीफैन ने कहा "मै इस पत्र के लेखक को बिल्कुल नही जानता। मेरे पेपर को लगभग तीन सौ पत्र प्रति दिन, फोटोग्राफ और लेख सहित, मिला करते है। इस प्रकार वर्ष मे सैकड़ो सहस्त्र लेख सहस्त्रो आदमियो के पास से मेरे पास आते रहते हैं और उसके लेखको के चेहरे से मैं बिल्कुल अपरिचित रहता हूँ। भला मै आपसे ठीक-ठीक कैसे कह सकता हूँ कि किसने इसे चार वर्ष पूर्व लिखकर भेजा था?"

"तो तुम इस पत्र के लेखक को नही जानते?" नवयुवक ने व्यङ्ग-मय शब्दो मे कहा।

"वास्तव मे मै नहीं जानता।"

उस नवयुवक ने स्टीफैन के बयान को टाइप करने वाले को लिखाया। इसके पश्चात् वह फिर स्टीफैन की ओर घूमा।

. "और तुम्हारा इस पोस्टकार्ड के विषय मे क्या कहना है?"

उसने स्टीफैन को १६३१ मे उससे भली प्रकार परिचित एक्ट्रेस मारगैरेट मेल्जर द्वारा भेजा हुआ पोस्टकार्ड, जिस पर चित्र खिचा था, दिखलाया।

"पोस्टकार्ड के विषय मे मुझे कुछ नहीं कहना है। आप स्वय देख सकते है कि यह क्या है। यह एक साधारण पिक्चर-कार्ड है जो जर्मन पोस्ट द्वारा भेजा गया है। इससे भी वही बात प्रगट हाती है जो अन्य सहस्त्रो तसवीरो मे हुआ करती है– 'यह एक बड़ा मनोहर स्थान है, ऋतु बड़ी सुहावनी है।' यह सम्पूर्णतया एक साधारण भेट है जो अक्सर लोग अपने से दूर परिचित पुरुष के पास भेजा करते हैं।

"किन्तु यह रूस से भेजा गया है।"

दोनों उठ खड़े हुए और जल्दी से किवाड़ के पास आ पहुँचे।

"तुम यहाँ कैसे ?" व्यूकनर ने पूछा।

"वाल्किशर व्युओवेचर के कथनानुसार मैं बोलशेविकों के षणयन्त्र के सन्देह में गिरफ्तार किया गया हूँ।"

"अच्छी वेवकूफी है।" आरटिन ने ठठाकर कहा "तुमने तो कभी कोई राजनीतिक कार्य भी नहीं किया!"

उसी समय वार्डर आ पहुँचा। उसने स्टीफैन को दूसरी कोठरी के दरवाजे पर खड़ा देख बिगड़ कर कहा :—

"तुम वहाँ दूसरे दरवाजे पर खड़े क्या कर रहे हो ? तुम्हारी वहाँ कोई चीज खो गई है ?... . . यदि तुम्हारी जबान से एक भी शब्द निकला तो तुम भी अँधेरी कोठरी में ठूँस दिए जाओगे।"

उसने स्टीफैन की कोठरी का ताला खोल कर उसे उसमें बन्द कर दिया।

× × × ×

उन्हें दूसरे दिन प्रातःकाल उठे हुए कुछ ही देर हुई थी कि वहाँ का वार्डर स्टर्न कोठरी में आया और व्यंग में बोला।

"लॉरॉ, उठाओ अपना बोरी-बिस्तर! तुम अब छोड़े जा रहे हो।"

"मैं कहाँ भेजा जाऊँगा ? दूसरे कारागार में ? या एस० ए० की कोठरियों में ?" स्टीफैन ने डरते हुए कहा।

"जल्दी करो," वार्डर ने डाँटते हुए कहा, "हमारे पास समय नष्ट करने के लिए नहीं है।"

"मैं......कहाँ ..भेजा .....जाऊँगा ?"

वार्डर ने कोई उत्तर न दिया, मानो उसने उसकी बात सुनी ही नहीं।

नवयुवक ने लिखाए हुए बयान को हस्ताक्षर करने के लिए स्टीफैन के सम्मुख रख दिया। स्टीफैन ने उसे पढा। उसने सोचा कि इस इजहार मे उसको लिखे गये दो पत्रों के विषय मे कई बार सकेत किए गए हैं। किन्तु वास्तव मे वे उसे कैद मे रक्खे जाने के कारण न हो सकेंगे।

स्टीफैन ने उस नवयुवक अफसर से कहा :—

"मैं चाहता हूँ कि मेरा बयान सुन लिया जाय। कृपया क्या आप यह बतलाने की कृपा करेंगे कि मै यहाँ हू किस लिए? मैं इस पर विश्वास नही कर सकता कि केवल उन दो पोस्टकार्ड के कारण ही मैं इतने दिनो से कैदखाने मे पड़ा हूँ।"

"मैं आपका बयान स्वयं नही सुन सकता", नवयुवक अफसर ने घूमते हुए कहा, "मेरा काम तुमसे इन पत्रो के विषय मे केवल प्रश्न करना है। आप इस इजहार पर हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं अवश्य बडे दफ्तर मे आपके बयान सुने जाने की सूचना दे दूँगा।"

स्टीफैन ने हस्ताक्षर कर दिए।

अफसर स्टीफैन का बयान लेकर दूसरे कमरे मे चला गया। सिपाही जो जिरह होते समय बाहर ही खडा था, स्टीफैन को फिर कोठरी मे कर आया। जिस वार्डर के पास उस कोठरी की चाभी थी, वह उस जगह न था। सिपाही स्टीफैन को बराडे मे अकेला छोडकर उसे ढूँढने चला गया। स्टीफैन सैंतालीस नम्बर वाली कोठरी के सामने खड़ा हो कर उसकी बाट जोहने लगा। उससे थोडे ही गज के फासले पर उनतालिस नम्बर की कोठरी थी जिसमे उसके दो साथी ब्यूकनर और बैरन आरटिन बन्द थे। बराडा बिल्कुल खाली था। कुछ क्षण वह वही खड़ा सोचता रहा। फिर दौडा-दौड़ा अपने साथी की कोठरी के पास गया और किवाड के छेदो से भीतर झाँकने लगा। आरटिन और ब्यूकनर अपने बिस्तरे पर बैठे हुए कुछ पढ रहे थे। स्टीफैन ने धीरे से खटखटाया—उसने लोहे के दरवाजे से अपना नाम बताया।

"लेकिन मैं तो केवल रोशनदान के विषय मे पूछना चाहता हूँ .. ।"

वह बात काटते हुए बीच ही मे बोल उठा :—

"और मेरे विषय मे नही। रोशन-दान बिलकुल ठीक है। घण्टा फ़िर न बजाना नही तो काली कोठरी मे ठूँस दिए जाओगे।"

उसने झटके के साथ अधखुला दर्वाजा बन्द कर दिया और चला गया।

× × × ×

स्टीफैन को रात भर नींद न आई। उसकी हड्डी-हड्डी मे दर्द होने लगा। लेकिन उसे वह चिल्ले की सर्दी अधिक दुखदाई प्रतीत न हुई क्योंकि रात भर उसे तेज बुखार चढ़ा रहा।

प्रातःकाल जब पानी लेकर लौटते समय सामने ही वराडे में आन्सर्ट सोमलो के साथ खडे हुए स्ट्रेकिज और हर वेक पर उसकी दृष्टि पडी। स्पष्टतया सोमलो अब सैतालीस नम्बर वाली कोठरी में आ गया था। उन लोगो ने एक दूसरे की कोठरी मे जाने से पूर्व नमस्कार किया।

प्रातःकाल ही कुछ समय बीते एक सिपाही स्टीफैन को लेगया।

वह उसे दूसरी मञ्जिल पर लेगया।

वे एक उजाले कमरे मे जा पहुंचे थे। यह कमरा गर्म था, खूब गर्म था, खूब गर्म।

"आपने मुझे क्यो बुलाया है ?" स्टीफैन ने कमरे मे बैठे हुए अफसर से पूछा।

"अपना हाथ धो डालो। हम तुम्हारे हाथ की उँगलियों के निशान लेना चाहते हैं।"

"किन्तु मैं कोई अपराधी नहीं हूँ।"

स्टीफैन ने चलते समय काउन्ट स्ट्रैक्विज और हर वेक से हाथ मिलाया उसके बाहर होते ही दरवाजे मे फिर ताला बन्द कर दिया गया।

जब तक वे बराडे मे नहीं पहुँच गए, वार्डर कुछ न बोला। इसके बाद उसने कहा '—

"तुम्हे अब एकान्त कारावास मे रक्खा जायगा।"

"किस अपराध मे ?"

"चुप रहो।"

उसने एक कोठरी का दरवाजा खोला। स्टीफैन अब चालीस नम्बर की कोठरी मे था। उसमे सैतालीस नम्बर की तरह कोई चटाई न थी। उसमे केवल लकड़ी के एक तख्ते और भूसे से भरा हुआ एक बोरे के अतिरिक्त और कुछ न था। तख्ते के पास पानी का एक टब था। कोठरी ठण्डी और बिल्कुल सीली हुई थी। प्रकाश-दान ठीक न था।

स्टीफैन बदन की सर्दी दूर करने के इरादे से जल्दी-जल्दी इधर-उधर चलने लगा।

स्टीफैन ने अपने गरम ओवरकोट का कालर सीधा कर लिया और पैजामे को अपनी गर्दन के चारो ओर बॉध लिया। यहा पर बड़ी सर्दी थी—कडाके की सर्दी थी।

स्टीफैन ने घटा बजाया। एक वार्डर आ पहुँचा।

"क्या रोशनदान खोला नहीं जा सकता ?" स्टीफैन ने धीमे से पूछा।

उसने स्टीफैन से डपट कर कहा :—

"यह कोई होटल नही है कि जरा भी तुम्हे किसी बात की जरूरत हो कि तुमने घण्टे पर घण्टा बजाना आरम्भ कर दिया।"

फोटो ले ली गई। तब एक सिपाही सग्रहालय से स्टीफैन का हैट ले आया क्योंकि उसकी हैट के साथ भी एक फोटो ली जाने वाली थी।

स्टीफैन को जाने की आज्ञा दी गई। एक सिपाही उसे उसकी कोठरी में ले गया। स्टीफैन अपनी कोठरी तक पहुंचा ही था कि उसकी दृष्टि वार्डर पर पडी जिसने उससे मित्रवत् शब्दो मे कहा :—

"अपना सामान लेकर मेरे साथ आओ। मै तुम्हे एक ऐसी कोठरी दूँगा जिसका रेडिएटर (Radiator) ठीक है। यह कोठरी सीढी से नीचे दूसरे मञ्जिले पर है। किन्तु मैं तुमसे पहले से ही साफ साफ बतलाए देता हूँ कि कोठरी में प्रकाश नही है।"

यह सब उसी अफसर के टेलीफोन करने का परिणाम था।

वार्डर स्टीफैन को नीचे, दूसरे मञ्जिले पर लेगया। स्टीफैन के इस नए कमरे का नम्बर २४ था।

× × × ×

२० मार्च

सप्ताह का शुभागमन हुआ। स्टीफैन को 'न्यूरा' का पत्र मिला। स्टीफैन को अब तक उसे पत्र लिखने की आज्ञा नही मिली।

उसने लिखा था कि 'तुम निराश मत होना। शीघ्र ही कुछ दिनो के भीतर तुम्हारे छूट जाने का मुझे पूर्ण विश्वास है।' स्टीफैन को न्यूरा का भेजा हुआ एक बाइबिल, मेरी ऐ तोइनै और भोजन का एक पार्सल भी मिला।

स्टीफैन अब अपने कमरे मे अकेला न था। उसके पास किताबे थी। कारावास अब उसे इतना दुखदायी न प्रतीत होता था। वह पढ़ सकता था। उसके पास खाने की और कुछ चीजे थी। और अब उसके पास आशा भी थी—वह आशा जो न्यूरा ने पत्र मे दी थी और

उस आदमी ने स्टीफैन के इन शब्दों पर कुछ भी ध्यान न दिया। उसने स्टीफैन का हाथ पकड कर छापे की स्याही से रगे हुए पत्थर पर रख दिया। इसके बाद उसने पहले एक एक करके और फिर सब साथ ही स्टीफैन की सब उँगलियो को एक कागज पर जो उसे पहले से ही इस काम के लिए मिला था, दबा दिया। यह सब समाप्त होने के पश्चात स्टीफैन के मुँह की परीक्षा की गई। एक अफसर ने उसके कोने के दातो की सख्या लिखी।

स्टीफैन का शरीर कॉप उठा। शर्म और लज्जा से नही बल्कि शारीरिक कमजोरी की वजह से वर्फ की भॉति ठडे स्थान से गर्म स्थान पर यकायक आने से ऐसा हुआ।

अफसर ने स्टीफैन को बैठ जाने की आज्ञा दी। उसने उससे पूछा कि उसका शरीर क्यो कॉप उठा ?

"मुझे एक रिवाल्वर दे दीजिए," स्टीफैन ने कॉपती हुई आवाज में उत्तर देते हुए कहा, "जिससे मैं अपना जीवन समाप्त कर सकूँ। मैं उस बरफ से ठडे कमरे मे किसी न किसी भाति अपनी जीवन-लीला शीघ्र ही समाप्त अवश्य कर दूँगा।"

उस आदमी ने कहा,

"वहा ठढक जानकर नही दी गई है, अब कोठरिया गर्म रहेगी।"

यह कह कर वह उस कमरे से चला गया। स्टीफैन ने दूसरे कमरे में उसे किसी से टेलीफोन द्वारा वातचीत करते सुना।

इसके पश्चात् स्टीफैन को फोटो उतारने वाले कमरे मे ले जाया गया। वह एक छोटी कुर्सी पर बैठा दिया गया। उसके सामने एक बडा केमरा रक्खा था। उस फोटोग्राफर ने एक बटन दबाया। जिस ... पर स्टीफैन बैठा था वह घूम गई और इसके बाद बगल से भी एक

ऐसी दुर्दशा देखना पसन्द न करती थी। अन्य वेश्याओ ने छिपे छिपे उनकी ओर देखा। एक साफ चेहरेवाली वेश्या की दृष्टि स्टीफैन के बगल मे बैठे हुए कैदी पर पड़ रही थी। वह उस बेचारे को अपनी दृष्टि से कुछ आराम पहुँचाने की चेष्टा कर रही थी। उस वेश्या की दृष्टि ने स्टीफैन के पास बैठे हुए पर जादू का सा असर किया। वह भी उसकी ओर घूम कर ताकने लगा। वह दुखो का मारा सचमुच ही आराम चाहता था। उसके नेत्र खून की तरह लाल थे, उसके चेहरे पर मुर्दनी छाई थी और उसके हाथ सफेद जाली (white gauze) से बॅधे थे। वह कठिनता से हिल सकता था।

स्टीफैन ने उस आदमी से धीमी आवाज में पूछा—"क्या तुम समष्टिवादी हो ?"

उसने इन्कार सूचक रूप से अपना सिर हिलाया।

"फिर ? एक यहूदी ?"

उसने फिर उसी भॉति इन्कार कर दिया।

"किसी भी प्रकार की राजनीति मे भाग लेनेवाले ?"

"नही, मे एक काम-काजी आदमी हूॅ।"

"तुम इस प्रकार कहॉ पीटे गए हो ?"

"यही, पुलिस-स्टेशन पर।"

"किसने पीटा ?"

"एस० ए० ने ?"

"क्यों ?"

"पता नही।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"हैन्स लेक्स।"

जो अब उसे प्रसन्न चित्त बनाये रखती थी। अब उसके मस्तिष्क मे आत्महत्या करने का विचार भी न रहा।

× × × ×

नाई हॉल मे था। राजनैतिक बन्दियो को अपने पैसे से बाल बनवाने की आज्ञा थी। स्टीफैन ने भी अपनी छ दिन से बढी हुई दाढी बनवाई। अब उसे पुनर्जन्म का सा आनन्द आने लगा। स्टीफैन फिर अपनी कोठरी को लौटा। फिर वही गन्दी हवा, धुँधला प्रकाश और गन्दी दीवाले उसके सामने थी।

इतने दिनो तक उन्हे (राजनैतिक बन्दियो को) कसरत करने की आज्ञा न मिली थी। यहाँ तक कि उन्हे एक घटा खुली हवा मे टहलने की इजाजत भी न थी। स्टीफैन को छै दिन लगातार कोठरी मे बन्द रक्खा गया था।

"तुम डाक्टर के पास इसकी रिपोर्ट क्यो नहीं करते ?" वार्डर ने स्टीफैन को सलाह दी। "केवल वही एक ऐसा आदमी है जो तुम्हे कसरत करने की मजूरी दे सकता है।"

स्टीफैन ने उसके कथनानुसार डाक्टर से मिलने की आज्ञा चाही।

स्टीफैन को दोपहर के समय बुलाया गया। दूसरे कैदी भी जिन्होंने डाक्टरी जाँच की रिपोर्ट की थी, हाल मे प्रतीक्षा कर रहे थे। सबको दो पक्तियो मे खडा कर दिया गया। वार्डर ने उनके नाम पढे और तब सब एक छोटे लोहे के दरवाजे से होकर रवाना हुए। वे लोग इमारत के प्रबन्धक विभाग की तरफ होते हुए हाल मे आगे बढे। दो वार्डर और दो एस० ए० के आदमी उनके साथ हो लिए। डाक्टर के वेटिग रूम मे वेश्याएँ बैठी थीं। जब वे लोग कमरे मे घुसे वे उनकी ओर ताकने लगीं और उन्होने आपस की बातचीत बन्द कर दी। वे एक टक होकर उनकी ओर ताकने लगी। उनमे से एक ने जो दोगली प्रतीत होती थी अपनी आँखे ढक ली। वह बन्दियो की

२१ मार्च

जातीय समाजवादी दल की वाल्किशार कुश्रोवैक्टर नामक पत्रिका स्टीफैन के पास बराबर आने लगी क्योंकि न्यूरा ने इसका प्रबन्ध कर रक्खा था।

स्टीफैन ने इस पत्रिका मे एलफर्ड रोजेवर्ग द्वारा लिखा हुआ निम्नाङ्कित लेख पढ़ाः—

"२१ मार्च—१६१८ की समष्टिवादियो की बगावत का दबाया जाना।"

"२१ मार्च को मार्क्सवाद की मृत्यु होती है।

"२१ मार्च को गत १५० वर्षों से राष्ट्र का विचार परिवर्तित होता है।

"२१ मार्च को मध्य-कालीन वातावरण समाप्त होता है।"

स्टीफैन ने अपनी कोठरी मे कही से आती हुई यह आवाजें सुनी। या तो आँगन मे कही बेतार के तार की मशीन थी जिससे यह शब्द सुनाई पड़ रहे थे या सड़क पर से ये शब्द सुनाई दे रहे थे! शायद पार्क में जनता के बीच लाउड स्पीकर लगे हुए थे। कुछ भी हो, बाहर से रह-रह कर ये गूजते हुए शब्द दिन भर सुनाई पड़े।

प्रातःकाल स्टीफैन बड़े सबेरे उठा था। सेना के बैन्ड की गूजती हुई आवाज उसके कानो मे पड़ी।

एक जोर की आवाज सुनाई पड़ी। यह पोट्सडेम से आती हुई किसी मुख्य वक्ता की जोशीली दौड़ती हुई आवाज थी। उसने जोरदार शब्दो मे जर्मनो के बीच गर्जते हुए बतलाया कि यह दिन उनके लिए कितने महत्व का था।

हिन्डेनबर्ग की तीव्र आवाज बाजे से निकलते हुए शब्दो की भाँति साफ-साफ सुनाई पड़ी। तब हर हिटलर की भर्राती हुई आवाज आई।

स्टीफैन और अधिक बात-चीत न कर सका क्योकि पुलिस अफसर उनकी ओर देख रहे थे।

लेक्स के डाक्टर के पास जाने से पूर्व स्टीफैन ने उसे कोट पहिनने मे सहायता की। क्योकि वह अपने हाथो का प्रयोग न कर सकता था। वह इतना थका हुआ था कि खडे होते ही लडखड़ा कर गिर पड़ा।

"तुम्हे भली भाँति सोना चाहिए था," स्टीफैन ने उससे धीमे शब्दो मे कहा।

लेक्स अस्पताल मे उनकी आँखो से ओझल हो गया। वेश्या उसकी पीठ देखते ही चिल्ला पडी। स्टीफैन आश्चर्य मे पड़ गया कि क्या यह वेश्या लेक्स को पहले से ही जानती थी अथवा यह उसकी चोट देखकर दयार्द्र होकर चिल्ला पड़ी।

कुछ समय बाद लेक्स दूसरी पट्टी बँधवा कर वापस आगया। इसके बाद स्टीफैन की बारी थी।

स्टीफैन के प्रार्थना करने पर पुलिस सर्जन, डाक्टर ह्यूवेल ने इस बात की हामी भरी कि वह कैदियो को प्रतिदिन कसरत करने की आज्ञा दिलाने के लिए अपनी भरसक चेष्टा करेगा। किन्तु उसने यह भी कहा कि आज्ञा देना उसके बस के बाहर है क्योकि इसका अधिकार केवल राजनीतिक पुलिस को ही है।

"तुम लोग क्रान्ति करने के सन्देह मे गिरफ़ार हो। तुम्हे इन सब तकलीफो को सहना ही पडेगा।"

"मैं इसे तकलीफ नही समझता।" स्टीफैन ने कहा, "मैं इसे जङ्गलीपन समझता हूँ। मै यहाँ छै दिन से हूँ किन्तु ताजी स्वच्छ हवा मुझे एक मिनट के लिए भी न मिल सकी। मे छै. दिन अपनी कोठरी के बाहर निकाला तक नही गया।"

डाक्टर ने अपना कन्धा हिलाया। मानो वह उसकी बातो से सहमत था।

× × × ×

२२ मार्च

गत रात्रि को लगभग ग्यारह बजे, स्टीफेन चीखने और कराहने की दर्दनाक आवाज सुनकर जाग पड़ा। वह दौड़कर अपनी कोठरी के दरवाजे तक गया और दर्वाजे से कान सटाकर सुनने लगा। बराडे से सिसकने की आवाज आ रही थी।

कोई चिल्ला रहा था, "मेहरबानी करके मुझे मारिए मत ..... मैं स्वय ही आ रहा हूँ, मैं आ रहा हूँ.... .. मत मारिए . ..... मैं आरहा हूँ......... ।"

वह आदमो बराडे मे खीचा जा रहा था। एक क्रूर शब्द आया, "चुप रह, कुत्ते, तू इसी काबिल है।" इसके बाद एक घूँसे या जूते की ठोकर का शब्द आया। बेचारा आदमी फिर सिसकिया भर कर कराहने लगा, "मुझे मत मारिये मत... आ.. . "

कुछ देर पश्चात् उसने एक दर्वाजे के खुलने और फिर बन्द हो जाने के शब्द सुने। फिर सन्नाटा छा गया।

केवल आँगन मे लगे हुए लाउड स्पीकर द्वारा फौज के चलने की आवाज आ रही थी।

× × × ×

पहले दिन जब वे सब कैदी पानी लेने गये थे तब स्टीफेन ने उस आदमी को एक बार देखा था। और आज प्रात.काल उन दोनों की दुबारा भेट हो गई। नल के पास वे बन्दियों की कतार में अपने अपने प्याले और लोटे लेकर पानी भरने के लिये खडे थे। उनकी आखे चार हुई। उस छोटे आदमी का ढांचा उसके फोटो से स्टीफेन भली भाति परिचित था।

"क्या सचमुच आप ही काउन्ट आर्को हो ?" स्टीफेन ने, जब अन्य लोग अपने अपने प्याले भर रहे थे, उससे धीमे से पूछा।

"उन्नति कै पश्चात्, अपने देश के सब विभागों की तरक्की के बाद, हमारे ऊपर फिर गरीबी और दुख का प्रकोप हुआ है।"

उसकी आवाज ने कविता का अश रूप धारण कर लिया।

"जर्मनी तारो मे न्याय का स्वप्न देखता है और पृथ्वी पर अपना पैर नही रखता।"

हिटलर ने फिर कहाः—

"हम अपने देश की, अपने इतिहास की और अपनी सभ्यता के उच्च आदशो की जी-जान से रक्षा करना चाहते हैं।"

हिटलर ने सभ्यता के विषय मे कहा। उसने सभ्यता का प्रसङ्ग छेड़ा। फिर उसने स्वर्णिम-भविष्य के विषय मे कहा।

स्टीफैन अपनी कोठरी मे उठ खडा हुआ और अपने चारों ओर देखने लगा। उसके सामने एक छोटा सा बिस्तर था और कोने में एक सुराही। सभ्यता ? मानवता ? हिटलर ने मानव-जाति की स्वतन्त्रता और जर्मनो के सभ्यता की चर्चा छेडी थी!

"कृषि, विज्ञान, व्यापार और काम-काजी सम्प्रदायों को एक बार फिर से सगठित हो जाना चाहिए। फिर इसे अपने सरक्षण मे सर्वदा के लिये हमारा मत और हमारी सभ्यता, हमारा आदर और हमारी स्वतन्त्रता ले लेनी चाहिये!"

कृषि-विज्ञान, व्यापारी, मजदूर—ये कहाँ है ? कारागार मे! एस० ए० के फौलादी पञ्जो मे! और स्वतन्त्रता ?

बन्दीगण मार खा खाकर अपनी-अपनी कोठरियों मे अधमरे होकर पडे हैं!

× × × ×

उन गोलियों ने नात्सी का सफलताओं का मार्ग निष्कटक बना दिया।

प्रत्येक व्यक्ति काउन्ट आर्को को आज नात्सी शासन के एक महान् कार्यकर्त्ता के रूप मे पाने की आशा करता होगा। जबकि वह आज पन्द्रह नम्बर की कोठरी मे नात्सीदल की यातनाए भुगत रहा है।

× × × ×

आज दोपहर के पश्चात् स्टीफैन ने वार्डर से जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट से बात करने की आज्ञा माँगी। वह उनसे व्यायाम करने की इजाजत के विषय मे बात करना चाहता था। अब तक डाक्टर ने कैदियों को व्यायाम करने की कोई सुविधा न दी थी।

"उनसे तुम्हारी कोई मुश्किलाहट हल न हो सकेगी। उनकी उम्र पैंसठ साल की हो चुकी है और हफ्ने दो हफ्ते मे पेन्शन देकर उन्हे यहाँ से अलग कर दिया जायगा। वह स्वय भी अब किसी प्रकार के झन्झट मे अपने को फँसाना अच्छा न समझेंगे", भले वार्डर ने स्टीफैन को उत्तर दिया।

"फिर भी, मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।"

सायङ्काल के समय सुपरिन्टेन्डेन्ट महाशय स्वय ही पधारे। आप बृद्ध हो चले थे। दाढ़ी के बाल जहाँ तहाँ सफेद हो गये थे, जो इस बात के द्योतक थे।

"ससार के प्रत्येक कारागार मे न केवल साधारण बन्दियों को ही, बल्कि खूनियो और चोरो को भी, प्रति दिन कुछ न कुछ मेहनत करने की आजादी प्राप्त है" स्टीफैन ने सुपरिन्टेन्डेन्ट से दलील पेश करते हुए कहा "फिर, आपने हम राजनैतिक बन्दियों को उससे वञ्चित क्यों कर रक्खा है?"

सुपरिटेंडेट ने परेशानी से कहा, "यह कैसे मुमकिन हो सकता है? हमारे पास तो वैसे ही काम बहुत रहता है।"

उसने अपना सिर हिलाकर स्टीफैन के शब्दों का उत्तर दिया। उसने बोलना उचित न समझा क्योंकि वार्डर उन पर बडे ध्यान से देख रहा था। थोडी ही देर बाद वे सब अपनी अपनी कोठरियों मे कर दिए गए। स्टीफैन ने आर्को को पन्द्रह नम्बर की कोठरी मे जाते देखा।

"कितने आश्चर्य की बात है। काउन्ट टोनी आर्को! जिसने बवेरिया के प्रधान मन्त्री कर्ट ईज्नर (Kurt Eisner) के १६१६ में खुली सड़क पर गोली मारी, पन्द्रह नम्बर की कोठरी मे—बिल्कुल मेरे सामने—बन्द है।" स्टीफैत ने सोचा।

ईज्नर (Eisners) को मार डालने पर काउन्ट आर्को का एक सच्चे बहादुर और बवेरिया को शत्रुओ के पञ्जो से बचाने वाले की भाति आदर किया गया था। ईज्नर समाजवादी था, आर्को का इस कारण रूढवादियो और प्रातीय दलो मे बहुत मान बढ गया।

वर्षों पूर्व ईज्नर पर चलाई हुई उस दीवाने की गोली ने आश्चर्यजनक प्रभाव डाला। इस गुप्त-घात ने मजदूरो के बडे समुदाय को क्रान्ति की ओर बढावा दिया। बवेरिया एक लाल प्रजातन्त्र (Red Republic) के नाम से घोषित किया गया। म्यूनिक समष्टिवादियों का केंद्र हो गया।

नेशनल पार्टी ने ०ाल बवेरिया (Red Baveria) से टक्कर लेने के लिए सेना मे आदमियों की भरती आरम्भ कर दी। रक्त की नदियाँ बही। सफेद सेना ने (White Troops) म्यूनिक मे पैर रक्खा कौमी लहर ने अपना प्रचण्ड-रूप धारण किया। हिटलर ने अपनी भयानक हरकते आरम्भ कर दी। नेशनल सोशलिष्ट पार्टी या नात्सीद तब उदय हुआ।

हिटलर को म्यूनिक मे अपनी इच्छा-पूर्ति का इतना अच्छा अवसर कदापि न मिला होता यदि काउन्ट आर्को द्वारा वे अभागी गोलियाँ न दागी जातीं।

दूसरे की ओर बड़े ध्यान से देखने के अतिरिक्त और कुछ न कर सके।

लगभग पन्द्रह मिनट पश्चात् वार्डर आया। उसने इन दोनों को कारिडर में दौड़ लगाते देखा।

"तुम दोनो एक ही जुर्म के बन्दी तो नही हो ?" उसने आर्को से ख़ुश मिजाजी के साथ पूछा।

"नही।"

"अच्छा, तो यदि इच्छा हो तो तुम दोनों साथ-साथ टहल भी सकते हो।"

वे दोनो अब, न केवल साथ-साथ टहलने ही लगे बल्कि आपस में बाते भी करने लगे। उन्हे ऐसा करने के लिए किसी से प्रार्थना करने का कष्ट नही उठाना पड़ा।

"तुम बता सकते हो, मैं यहाँ क्यों बन्दी बनाया गया ?" थोड़ी देर बाते करने के बाद आर्को ने अपना सिर गर्व के साथ ऊचा उठाये हुये पूछा—"क्योंकि मैंने हटलर का खून करना चाहा था।"

उसने अपनी बातें इस प्रकार कह रहा था। मानो यह सब उसके लए मजाक था। उसने जेब से चौदहवी मार्च की वाल्किशर कुओवैक्टर नामक पत्रिका से कट कर निकाला हुआ कागज का का एक टुकड़ा स्टीफैन के हाथो पर रख दिया।

स्टीफैन ने उसे पढ़ा:—

काउन्ट आर्को की गिरफ़ारी

जासूसो ने काउन्ट आर्को को अपने मित्रों से यह कहते हुए सुना कि जिस प्रकार उसने ईजनर को मारकर अपना मार्ग निष्कण्टक बनाने की चेष्टा कीथी उसी प्रकार वह हिटलर को भी समाप्त करके

"तो फिर हम लोगो को कमसे कम कॉरिडर मे टहलने की आज्ञा ही दे दी जाय। हम लोगो को सप्ताह के आरम्भ से लेकर अन्त तक कोठरियो मे बन्द किये रखना तो ठीक नही है। कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा करना उचित न समझेगा।"

"मैं इस पर अन्य अफसरो के साथ विचार करूँगा।" वृद्ध सुपरिन्टेन्डेन्ट हकलाते हुए शब्दो में कहता हुआ चला गया।

× × × ×

२३ मार्च

अन्त मे!

आज से उन लोगो को परिश्रम करने के लिए बाहर निकलने की आज्ञा मिल गई। स्टीफैन अपनी कोठरी से लगभग एक बजे बाहर निकाला गया। कारिडर मे काउन्ट आर्को भी था। वार्डर ने उन लोगों से कहा कि वे ही दो व्यक्ति ऐसे थे जो उस मञ्जिल के आदरणीय राजनैतिक बन्दी कहे जा सकते। उन्हे व्यायाम करने की आज्ञा दे दी गई। उन दो व्यक्तियो के अतिरिक्त अन्य बन्दियों को, जिनमे कम्युनिष्ट और सोशल डिमोक्रेट्स दोनों ही थे, उसने कोठरी के बाहर निकालने भी न दिया। क्या यह घृणास्पद नीति न थी?

कारिडर मे स्वच्छ वायु का नाम भी न था। खिड़कियाँ बन्द थी, रोशनदान हवा को आगे बढने से रोक रहे थे। केवल धुँधला प्रकाश ही उस कमरे मे आ सकता था जिससे वे दोनों एक दूसरे को भलीप्रकार देख सकते थे। दरवाजे पर एक सिपाही खडा था जिसकी दृष्टि इन्ही लोगो पर थी। काउन्ट आर्को और स्टीफैन कारिडर मे खूब तेजी से दौडने लगे। उनकी वह दौड़ किसी एक्सप्रेस ट्रेन से कम न मालूम पड़ती थी। उन्हे आपस मे बात-चीत करने की आज्ञा न दी गई थी। इसलिए जब वे उस कारिडर मे एक दूसरे से मिले, वे केवल एक

हों। नेशनल सोशलिस्ट पार्टी मे भी मेरे उन हितैपी मित्रो की कमी न थी जो मुझे इस संसार से ही उठा देने से बढ़कर कोई दूसरी चीज न समझते थे।

"पुलिस हेड क्वार्टर के सामने पहुँच कर मै टैक्सी से बाहर निकला। उन दोनो व्यक्तियो ने भी अपनी गाड़ी खड़ी कर दी। मेरे बाद ही वे भी उस टैक्सी से बाहर निकले।

"उन्होंने मुझे पल मात्र को भी अपनी दृष्टि के बाहर न होने दिया। सड़क के किनारे खडे होकर वे इस बात की प्रतीक्षा करने लगे कि मैं क्या करने जा रहा था। मैंने उनके पास जाकर पूछा, "आप लोग किस लिए मेरा पीछा कर कर रहे हैं? आप लोग चाहते क्या हैं?"

"आपको यहाँ लाने के लिए," उनमे से एक ने उत्तर दिया।

काउन्ट आर्को कहते कहते रुक गया; और कुछ सोचने के पश्चात् फिर बोला :—

"वे दोनों व्यक्ति मुझे राजनीतिक महकमे मे ले गए। वहाँ एक अफसर ने मुझसे प्रश्न किया और कहा कि पुलिस मे इस बात की सूचना मिली है कि मैंने दोस्तो मे इस बात की घोपणा की थी कि जिस प्रकार मैंने ईज्नर को गोलियों का निशाना बनाया उसी प्रकार हिटलर को भी जल्द से जल्द समाप्त कर दूँगा।"

"यह तो आप जानते ही हैं कि खून करना मेरा कोई व्यवसाय नहीं है" आर्को ने हँसते हुए अफसर से कहा "हर हिटलर के विरुद्ध षडयन्त्र के विपय मे कुछ सोचने का मुझे कोई अवसर तो मिला नहीं। इसके अतिरिक्त......"

"किन्तु, जब चान्सलर हिटलर आवरवीसिनफील्ड के जहाजों के अड्डे पर पहुँचे उस समय तुम अपनी कार (Car) मे बैठे हुए दिखाई पड़े थे", पुलिस के अफसर ने कहा।

अपना मार्ग साफ करने के लिए बिल्कुल तैयार है। इस लिये उस पर राजनैतिक बन्दियो की भॉति कडी दृष्टि रक्खी जाने लगी। वह पुलिस के सामने भी लाया गया और वहॉ के जिम्मेदार अफसरों ने उससे सम्मान पूर्वक इस बात का उत्तर चाहा कि क्या उसकी ये सब धमकियॉ नात्सी पार्टी के कर्णधारो के ही विरुद्ध दी गई थी। आर्को ने उनके इस प्रश्न का उत्तर देने से इन्कार कर दिया।"

"यदि इसका एक अश भी सत्य हुआ" स्टीफैन ने कहा "तो वर्षो के लिए तुम्हे कारागार की यातनाऍ भुगतनी पडे गी।"

"रॉट (Rot)।" काउन्ट आको ने तेजी से स्टीफैन की बात काटते हुए कहा "मै तो उस समय म्यूनिक मे था भी नही।"

"तुम भले इस बात से इन्कार करो किन्तु गुप्तचरों की समझ में तो तुमने हिटलर को मारने का इरादा कर ही लिया था," स्टीफैन ने मजाक मे कहा।

"हॉं यह उन छोकरों की समझ मे ठीक होगा," काउन्ट आर्को ने क्रोध भरे शब्दो मे कहा। "मेरे गिरफ्तारी की समस्त कार्रवाइयों के प्रत्येक शब्द बेवकूफी से भरे हैं। किजब्यूकल से मै रविवार की शाम को लौटा। वहॉ मैं दस्तकारी का काम करता था। मैं म्यूनिक मे ट्रेन से उतर भी न पाया था कि मैंने दो आदमियो की दृष्टि अपने ऊपर पडती देखी। मैं एक टैक्सी मे जा बैठा। वे दोनों भी एक दूसरी टैक्सी मे बैठकर मेरे पीछे पीछे चले। ड्राइवर मेरे कहे हुए स्थान की ओर टैक्सी ले जाने लगा। उन दोनों ने भी मेरी टैक्सी का पीछा करते हुए अपनी टैक्सी बढायी। मैंने ड्राइवर से टैक्सी पुलिस के हेड क्वार्टर मे ले जाने को कहा। इस समय मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन दो पीछा करने वाले व्यक्तियों ने पुलिस हेडक्वार्टर की तरफ भी मेरा पीछा किया?

"मैंने उस समय यह सोचा कि शायद वे मेरे उन दोस्तों मे से हों जो मुझे आजीवन याद करने के लिए कुछ वस्तु प्रदान करना चाहते

चनता। शायद आप यह सोचते हों कि मैंने म्यूनिक क्यों छोड़ा। इसके उत्तर मे मेरा कहना है कि मैं बवेरिया मे क्रांति के समय उपस्थित रहना नहीं चाहता था।"

"तो तुम मुझे जमानत नहीं दे सकते।" अफसर ने विजयी की भाँति सिर ऊपर करते हुए कहा।

"हाँ, उस रूप मे नहीं जैसा आप चाहते हैं।"

"तो तुम गिरफ्तार कर लिए गए।"

"इस भाँति मैं यहाँ पर आया।" आर्को ने स्टीफैन से कहा।

"और तुम्हारा मुकदमा नही सुना गया?" स्टीफैन ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं। बीच-बीच मे मैंने कई बार पोलिटकल पुलिस को लिखा है और मेरा वाल्किशर बिओबैक्टर मे गिरफ्तार होने के कारण को पढने के बाद उनको मेरी बात पर विश्वास हो गया है कि मेरा खयाल हर हिटलर को गोली से मारने का जरा भी नहीं था। लेकिन पोलिटकल पुलिस को अभी तक कोई भी जवाब देना स्वीकार नहीं है। मैंने कल जनरल वान ऐप को लिखा जो कि मुझको बहुत अच्छी तरह जानता है। मैंने युद्ध के समय उसके नीचे काम किया है। बहुत साल हुए वह मुझे जेल मे देखने भी आया था। अब मैं इस इन्तजार मे हूँ कि ऐप जो कि आजकल जनरल स्टेट कमिश्नर फार बवेरिया है, मुझे जवाब देता है या नहीं।"

× × × ×

वार्डर हमारे पास आया। व्यायाम का समय समाप्त हो चुका था। "तुम लोग अब कल एक दूसरे से अपनी २ जीवन गाथा कहना!" उसने मित्र भाव से कहा और उन्हे कोठरियों मे बन्द कर चला गया

"यह असम्भव है", आर्को ने शन्ति-पूर्वक कहा "क्योंकि मेरी कार का लाइसेन्स अभी कुछ ही महीने पहिले मिला है। इसके पूर्व मेरी कार मोटरखाने मे बन्द थी। फिर वह बिना लाइसेन्स चल ही कैसे सकती थी। मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसमे कोई शब्द भी असत्य न मिलेगा।

आप टेलीफोन द्वारा इस बात का पता लगा कर अपने को सतुष्ट कर सकते हैं कि मैं वहॉ पर नहीं था। इसका पता लगाने के लिए कि 'मैं उस समय, जब कि मेरे ऊपर हिटलर को गोलियो का निशाना बनाने की घोषणा करने का दोषरोपण किया गया है, किजब्यूकल के होटल मे, जहॉ पर मै ठहरा था, वास्तव मे उपस्थित था या नही केवल फोन खर्च के अतिरिक्त अधिक कुछ भी व्यय न करना होगा और यह खर्च मैं सहर्ष अदा करने को तैय्यार हूँ।"

"फोन करने की बात तो दूर रही उन क्रोधी अफसर महोदय ने मेरी बातो पर विश्वास करने से भी साफ इन्कार कर दिया। इसके पश्चात् उन्होने मुझसे इस बात की जमानत देने को कहा कि मैंने कभी भी चासलर हिटलर की मुखालफत नही की और न कभी हिटलर के या नात्सीदल के विरोध मे कोई बात ही कही है।

"प्रिय महोदय", आर्को ने प्रत्युत्तर मे कहा, "मैं इस बात का विश्वास आपको नहीं दिला सकता कि मैंने कभी भी हिटलर अथवा नात्सीदल के किसी मेम्बर के विरोध मे कोई बात नही कही और न इसके लिए किसी की जमानत ही दे सकता हूँ। कुछ समय पूर्व तक हिटलर मेरी पार्टी के विरोधी पार्टी के नेता थे और उस समय चासलर नियुक्त नहीं किए गए थे। स्वभावत., अवश्य ही मैंने उनके विरुद्ध कुछ न कुछ कहा होगा। राजनीतिक मामलों मे मैं उनका विरोधी था, क्या यह सच नहीं है? मुझे बवेरिया से प्रेम था और मै बवेरियन पीपुल पार्टी का एक सदस्य था। फिर यह कैसे सभव होता कि मैं उनका विरोधी न

स्टीफैन की नोटबुक भर गई थी और अब उसने अपने नोट मेजे के काग़ज पर लिखने शुरू कर दिए थे।

वह रोजाना दीवार पर एक लाइन खींच देता था। आज उसने १३वीं लाइन खींची। उसे जेल में पड़े-पडे १३ दिन हो गये।

२७ मार्च

नये क़ैदी रात-दिन जेल मे भरे जा रहे थे। जब स्टीफैन काम करने जाता तो उसे वे दीख पडते।

"कार्ल मार्क्स व्यायाम शाला" का एक मेम्बर आया। फिर एक किसान जिसके घर पर दो बेकार पिस्तौल पाई गई थीं। एक मजदूर जिसने सार्वजनिक सभा मे कहा था, "हिटलर भी हमारी मदद नहीं कर सकता।" एक रंगसाज जो कि समष्टिवादी (Communist) पार्टी का मेम्बर था। एक किसान जिसके ऊपर बारूद छिपाने का शुबहा था।

ये ही राजनैतिक कैदी थे।

उनके यहाँ कैद होने का क्या कारण है?

"हमको उनके खिलाफ खबर मिली है", बस यही जवाब मिलता। नई जर्मनी मे जब कोई व्योपार में किसी अपने प्रतियोगी से छुटकारा पाना चाहता है या अपने दुश्मन को नीचा दिखाना चाहता है या अपनी प्रेमिका के प्रेमी से बदला लेना,चाहता है, तब वह सिर्फ पोलिटकल पुलिस के पास एक गुमनाम पत्र भेज कर उस आदमी के सिर कोई राजनीतिक दोष मढ देता है। दोषारोपित आदमी गिरफ्तार कर लिया जाता है। और कोई यह बात तक नहीं पूछता कि यह बेगुनाह है या अपराधी है।

ईर्ष्या, घृणा, झूठ, हर तरह की बुराइया विजयी होती हैं।

२४ मार्च

जेल की कोठरी ही स्टीफैन का घर बन गया था। उसकी पुरानी बातें सब स्वप्न के समान हो गई थी और उनमे असलियत नहीं रह गई थी। अब असलियत जेल की चारो दीवालो, लोहे के दरवाजो, कोठरी और टूटी चारपाई थी। ये ही उसकी दुनिया थी। वह 'मेरी ऐन्टोइनेट' नामक पुस्तक पढता रहता और यह भूल जाता कि वह बन्दी है। वह उसको तमाम दिन पढता और बार-बार दोहराता।

प्रति दिन की भाँति वे आज भी व्यायाम के लिये निकले। बगल की कोठरियो से बहुत बदबू फैल रही थी। वहाँ की दशा बहुत दयनीय थी। उन कोठरियो मे समष्टिवादी (Communist) बन्द थे।

काउन्ट आर्को और स्टीफैन लॉरॉ टहलते हुए साथ २ बात-चीत करते रहे। वे एक दूसरे को खुश करने का उद्योग करते थे। उन्होंने एक दूसरे को अपने २ खत पढकर सुनाए पर छूटने की आशा कहीं भी दीख न पडी। अखबारों ने इस निराशा को और भी पक्का क दिया

२६ मार्च

फिर इतवार आया! और अब भी स्टीफैन जेल मे ही था। उसने छुटकारे के बारे मे सोचना बन्द कर दिया था। लेकिन आज वह फिर आशा पूर्ण था। उसे यकीन होने लगा था कि वह जल्द ही छोड़ दिया जावेगा।

उसकी स्त्री न्यूरा ने पत्र मे लिखा था.—

"शायद तुमको जेल से छूटने मे सिर्फ कुछ घटे या कुछ दिनो की ही देर है।"

इतवार का समय धीरे-धीरे मुश्किल से व्यतीत हो रहा था। तमाम दिन पहाड़ के समान लगता था। दिनभर कोठरी मे बन्द! वह सोचता रहता और स्वप्न सा देखता पड़ा रहता!!

"इन शैतान समष्टिवादियों (Communists) ने पिछले कुछ सालों में २०० हंडरवेट बारूद चुरा ली है। अभी तक सिर्फ २५ हंडरवेट वापस मिल सकी है। बाकी कहां है? समष्टिवादियों (Communists) को खूब पीटना चाहिए, इतनी अच्छी तरह कि वे हमारे सामने सारी बारूद उगल दें।"

स्टीफेन की सामने वाली कोठरी में एक राज कैद था। उस पर बारूद चुराने का सन्देह था। उससे घंटों तक सवाल-जवाब किये गये। मारते-मारते उसके शरीर पर नीले दाग डाल दिये गये। इन्सपेक्टर ने हरचन्द चेष्टा की कि वह अपने साथियों के नाम बता दे। पर वह बेचारा कुछ जानता ही नहीं कि कुछ कहे। वह बारम्बार कहता कि इस जुर्म में उसका कोई भी साथी नहीं है और उसने जरा सी भी बारूद कहीं नहीं छिपाई।

"मेरा नाम फ्रांज नेहेर है", २० नम्बर के कोठरी वाले नए आदमी ने घूमने के समय स्टीफेन से कहा। वह एक सम्पादक था जिसको कि नात्सी समाचार पत्रों में लेख लिखने का सौभाग्य प्राप्त था और अन्य कई विदेशी समाचार पत्रों से भी उसका सम्बन्ध था। पोलिटिकल पुलिस उसको एक जासूस समझती थी। जासूस समझने का खास कारण यह है कि फ्रांज नेहेर फ्रेंच भाषा बोलता था। कुछ दिनों तक उसे स्टेडेलहाइम की जेल में रक्खा गया और अब वह म्यूनिक में जांच के वास्ते लाया गया था। नेहेर स्टीफेन को दिलचस्प बातें बतलाता उसने बतलाया कि एक दिन गिरफ्तारी के बाद बैरन हान ने हृदय में ऐसी मारी कि वही उसकी गिरफ्तारी का जिम्मेदार है और इस बात का भी वह ध्यान रक्खेगा कि नेहेर जल्दी जेल से छूटने न पावे। क्योंकि ऐसा करने के उपलक्ष में नात्सी सरकार ने उसे अखबारों का कमिश्नर नियुक्त कर दिया है'

जेल बेगुनाह आदमियो से भरा रहता है। उनको अपने दुःख सुनाने का कोई भी अधिकार नही और न यह सुना ही जाता है। वे वकील से नही मिल सकते। उनमे से अनेको कभी राजनीति के पास तक नही फटके हैं परन्तु तो भी वे निन्दा, धमकी और झिड़की के शिकार हैं।

आज एक एस० ए० पूरी वर्दी पहने भीतर लाया गया। वह पहला ही नात्सी कैदी था। इसके पेश्तर कोई भी कैदी नात्सी नही था। उसका अपराध था कि उसने एक यहूदी को गोली से मार दिया था।

"मेरा इसमे चारा क्या, पिस्तौल अचानक छूट गई," उसने स्टीफैन से व्यायाम करते वक्त कहा। उसकी बातों से पूरा यकीन हो जाता था कि वह यहूदी को मारना नही चाहता था। उसने सिर्फ पिस्तौल को यहूदी के सीने पर रक्खा था, जैसा कि कहानी किस्सो मे बहुधा बयान किया जाता है, कि अचानक पिस्तौल छूट गई।

जवान लडकों को ऐसा खतरनाक हथियार नही रखना चाहिए, परन्तु पिस्तौल रखना नात्सी नवयुवक की हार्दिक इच्छा होती है।

जब कैदी लोग व्यायाम करते तो एक २० साल का नौ जवान अपनी पिस्तौल के साथ खेलता रहता। जब कि वह इसको 'लोड' करता, फिर कारतूसा को निकालता छाटता और फिर नली की जाच करता, और फिर इसके घोडे को पीछे की तरफ खीचता और ऐसे कौतुक करता रहता जैसे कि एक बच्चा अपने खिलौनो से करता है।

यदि पिस्तौल छूट जाय

× × × ×

पोलिटकल पुलिस बारूद के चोरों के पीछे सदैव लगी रहती है।

एक वार्डर ने, जो कि एक मुँहफट नात्सी था, गुस्से से लाल होते हुए स्टीफैन से कहा :—

मजा लूट रहे थे। बशर्ते कि इसी बीच मे वे भी गिरफ्तार न कर लिये गये हो।

२९ मार्च

स्टीफैन के मुकदमे की अभी तक कोई खबर नही थी। काउट आर्को की दशा शोचनीय थी। वह बहुत काफी समय तक जेल मे रह चुका था। "मेरा जी जेल मे रहते रहते अच्छी तरह से उकता गया है", वह रह रह कर कहता। उसकी प्रशसक एक महिला ने उसे एक सुदर फूल वाला पौधा भेजा है। उस सूनी अँधेरी कोठरी मे लाल लाल कलिया खिली हुई बड़ी भली मालूम पड़ती थी।

आर्को इस मुसीबत मे भी हसता ही रहता था। "मै नात्सियो को अपनी दुर्दशा नहीं दिखलाना चाहता। मैं उन्हे यह सन्तोष नही देना चाहता।"

जब कभी नात्सी सिपाही बरामदे मे आता तो आर्को अपनी प्रफुल्लता जतलाने के लिए खूब जोर से हँसता। आज वह लैड्सवर्ग के जेलखाने के बारे मे चर्चा करने लगा उसने बतलाया कि "वहाँ कोठरियो के दरवाजे दोपहर तक खुले रहते थे और उसके पास एक पियानो भी था।. ...."

आर्को अपनी पुरानी बातों की याद में मस्त था।......

" .. हिटलर और उसके साथी भी लैड्सवर्ग जेल मे ही उस समय राज विरोध के अपराध मे सजा काट रहे थे। मेरा यह विश्वास है कि मै सदैव से उनकी आँखो मे खटकता रहा हूँ। जब कि मैने यह सुना कि हिटलर इसी जेल म मेरे कमरे के ऊपर वाले कमरे मे है, तो मैं सुपरिटेडेट के पास गया और मैने कहा कि मै हिटलर के नीचे वाले कमरे मे नही रहना चाहता। इस पर मुझको दूसरे कमरे मे भेज दिया गया। हिटलर को इस बात का पता चल गया। वह बहुत आग

नई जर्मनी मनुष्यो को प्रसिद्ध करने के अद्भुत तरीके अख्तियार करती है।

२८ मार्च

स्टीफैन को धीरे-धीरे विश्वास होने लगा कि नात्सी सरकार उसके फर्म के व्यक्तियो के ऊपर ही नही बल्कि उक्त प्रकाशक फर्म के ऊपर भी आक्रमण कर रही है। बल्कि वह छापेखाने और अन्य सामान को भी अपने काबू मे करना चाहती है। यह राजनीति के भेष मे आर्थिक स्पर्धा का बदला लेना था।

न्यूरा ने आज स्टीफैन को लिखा, "ऐटन उसी होटल मे ठहरे हुए है जिसमे कि हमारे योग्य मित्र।"

'सैंसर' से बचने के उद्देश्य से ही न्यूरा ने इस वाक्य को यह रूप दिया था।

ऐटन फर्म के प्रधान डा० बैज का ईसाई नाम था, "हमारे योग्य मित्र" से स्टीफैन को आशय था और "होटल" का तात्पर्य जेल था।

शाम को बावर्ची खाना लाया। उससे स्टीफैन पूछा, "डा० बैज को खाना दे आये ?" उसने जवाब दिया, "नही डा० बैज शाम को कुछ नही खाते केवल दोपहर को भोजन करते है।"

अच्छा, तो डा० बैज जेल मे ही थे।

शाम को स्टीफैन को मालूम हुआ कि उसके साथी रेब और फ्राइडमैन भी गिरफ्तार हो गए और जेल की तीसरी मञ्जिल मे थे। "नॉर एण्ड हर्थ" फर्म के लगभग सभी प्रधान व्यक्ति इस समय जेल मे थे। शुपिक को सबसे पहिले गिरफ्तार किया गया और उसके बाद बैरन आरटिन और ब्यूकनर को। उसके बाद स्फीफैन लोरॉ का नम्बर आया और अब डा० बैज, रेब और फ्राइडमैन भी गिरफ्तार कर लिये गये थे। सिर्फ प्रोफेसर कासमेन ही ऐसे व्यक्ति थे जो आजादी का

"कार्ल, तुम इस वर्दी मे इतने भिन्न मालूम होते हो कि मैं तुम्हें पहिचान ही न सका।" आर्को ने कहा।

पहले का वेटर अपने पुराने गाहक को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने आर्को को उन आनन्द पूर्ण विगत शाम की याद दिलाई जो कि आमोद-प्रमोद मे, बढिया-बढ़िया दावतो में व्यतीत हुई थी।

"वे ही दिन थे·········।"

वेटर और उसका ग्राहक जल्दी ही स्मृति के सागर मे डूब गये। आर्को उससे पूछना चाहता था कि वह एक वेटर से नात्सी सिपाही कैसे हो गया। वह चुप न रह सका, वह पूछ ही बैठा।

"कार्ल, मुझे बतलाओ, तुम तो एक बहुत अच्छे लड़के थे। तुम यहाँ कैस आये?"

उसने एस० ए० की वर्दी की तरफ इशारा किया।

कार्ल ने बिना किसी हिचक के उत्तर दिया।

"बात असल यह है, जनाब, कि मे दो साल तक बिल्कुल बेकार रहा। मैं क्या करता? मेरे साथी फ्रैज को भी आप अच्छी तरह जानते है क्योकि उसने भी अक्सर आपकी सेवा की है; अब वह एक ग्रुप कमाडर है। बेकारी की हालत मे मै उनके पास गया और एस० ए० का आदमी हो गया। इस तरह से मे थोडा-बहुत तो कमा ही लेता हूँ। लेकिन होटल में जीवन का मजा कुछ और ही था·····।"

३० मार्च

"कोई नई बात?" तमाम दिन यही सवाल दुहराया जाता। जब कभी वाडर दरवाजा खोलता, या जब कभो लड़की पलटन के मदिराघर से आती, उन सब से हमेशा यही पूछा जाता! "कोई नई बात?"

"कोई नई बात? अब हम लोगो का क्या होने वाला है?"

बबूला हुआ। मुझे बतलाया गया है कि उसी कारण मैं यहाँ लाया गया हूँ।"

स्टीफैन ने पूछा "क्या तुमने अक्सर हिटलर को देखा है?"

"मै अक्सर उससे मिला करता था। वह अपना तमाम समय अपने मित्रों के साथ व्यतीत किया करता था। वह अपनी किताब "मेरा सघर्ष" को टाइपिस्ट को लिखा रहा था। लोग हमेशा उससे मिलने आते थे। एक बार एक हवाई जहाज जेल के सहन के ऊपर से उडा और एक पार्सल फेक गया। इसमे हिटलर के वास्ते ख़त थे। वे इस प्रकार से इस लिये पहुंचाए जाते थे ताकि जेल के अफसरों को उनका पता न चले।"

आर्को आह भरता था—"हॉ! वाइमर विधान की अधीनता में जेल का जीवन बिल्कुल ही भिन्न है।"

बरामदे के आखिर मे एक सिपाही खड़ा हुआ था।

उसने बडी फुर्ती से सलाम किया और कहा।

"काउट! सलाम।"

आर्को हक्का-बक्का सा रह गया। उसने पूछा—"तुम मुझको क्यो कर जानते हो?"

सिपाही ने कहा—"काउट, क्या आपको मेरी याद नहीं है? मैं अक्सर आपकी सेवा किया करता था।"

"कहाँ?"

"वाइर जाहरैस्जाइटन मे। मै वहा होटल मे खाना 'सर्व' करता था।"

आर्को, हस पडा।

"हॉ, हॉ, अब मै जान गया। तुम्हारा नाम··· ·····।"

"कार्ल", सिपाही ने अभिमान से कहा।

महत्वपूर्ण काम हैं कि वह तुम्हारी मुक्ति का प्रश्न मुल्तवी करने के लिये वाध्य है।"

ठीक है। राजनीतज्ञो को तो और जरूरी काम से फुरसत नही; फिर बेगुनाहो की निर्दोषता पर कैसे विचार करे! उनके पास समय नहीं है। कैदियो को उनका इन्तजार करना ही पड़ेगा।

इगलैंड में सन् १६७९ से हैवियस कार्पस ऐक्ट जारी है जिसके द्वारा मनचाही गिरफ्तारी का फौरन फैसला किया जाता है। परन्तु खेद है कि जर्मनी मे सन् १९३३ ई० मे भी व्यक्तित्व स्वतन्त्रता के साधन जुटाने की ओर ध्यान नही दिया जाता।

लोग गिरफ्तार किए जाते है और बन्द कर दिए जाते हैं और पदाधिकारियो के पास उनके अपराधी अथवा अनपराधी की छान बीन मालूम करने के लिए समय ही नही है।

१ अप्रैल

आज दोपहर के बाद इस्पैक्टर फ्रैंक स्टीफैन लॉरॉ को लेने के लिये आया।

"तुम अपनी स्त्री से बात चीत कर सकते हो लेकिन उसको किसी प्रकार का समाचार नही बता सकते।" उसने कहा

न्यूरा बार्डर के कमरे में स्टीफैन की बाट देख रही थी। उन्होने एक दूसरे को देखा। स्टीफैन एक शब्द भी न बोल सका। उसका दिल जोर २ से धड़क रहा था।

वह इतना व्यग्र था कि वह अपनी स्त्री का कहा हुआ एक शब्द भी सुन न सका। उसने बहुत चेष्टा की कि उससे कहने के लिये कोई बात सोचे, लेकिन वह कुछ भी न सोंच सका। वह शून्य-दृष्टि से उसकी ओर ताकता रहा।

वार्डर प्रश्न सुनता और चुप रह जाता । इस विषय पर वह कुछ भी नहीं बता सकता था ।

"तुम ईस्टर से पहिले ही छोड़ दिये जाओगे" यही कह कर वह कैदियो को धीरज देता ।

"ईस्टर से पहिले ५००० राजनैतिक कैदी छोडे जाएगे ।"

३१ मार्च

न्यूरा (स्टीफैन लॉरॉ की स्त्री) ने स्टीफैन को कुछ दिन पहिले लिखा था कि फर्म ने स्क्रैम को उसके छुड़ाने का काम सुपुर्द कर दिया है । डा० वैज ने अपनी स्वतत्रावस्था मे ही यह प्रबध कर दिया था क्योकि वे स्टीफैन को जल्दी से जल्दी छुटकारा दिलाना चाहते थे । उसने स्क्रैम को खास हिदायत दे रखी थी कि वह उसके छुटाने के लिये पूरी कोशिश करे और जितना जोर लगा सके, लगा दे, हालाकि, कानून के मुताबिक कोई भी वकील एक सुरक्षित कारागार के कैदी की स्वतत्रता के लिये कोशिश नही कर सकता ।

लेकिन स्क्रैम एक मशहूर वकील था । उसने बहु से मामलो मे स्टाफ कमाडर रोहम को बचाया था । इस कारण आशा थी कि उसका व्यक्तिगत प्रभाव स्टीफैन के छुटकारे मे मदद करेगा ।

स्क्रैम ने इस तारीख को निम्नलिखित पत्र स्टीफैन के पास भेजा :—

"पुलिस के अध्यक्ष और हगेरी के कौसल मे तुम्हारी मुक्ति के विषय मे होने वाला विचार कई बार इस लिये मुल्तवी करना पड़ा कि देश मे राजनीतिक घटनाएँ बहुत शीघ्रता के साथ घट रही है, और फुरसत मिलना बहुत मुश्किल हो गया है । इसी कारण आज की प्रस्तावित बैठक भी न हो सकी । जल्दी की जिद करने से कोई फायदा नहीं । जैसा तुम जानते ही हो, आज कल पुलिस के हाथ मे इतने

जितना अधिक नात्सियो के खिलाफ़ आन्दोलन बढ़ता जावेगा उतने ही दिन क़ैदियो को और अधिक कारागार भोगना पड़ेगा। यहूदियो के खिलाफ़ प्रचार करना तो नात्सी दल की चालबाजी है। उनका बायकाट करना बगुला-भक्ति है। नात्सी लोग यहूदियो के ख़िलाफ़ १२ साल से आन्दोलन कर रहे हैं और अब वे यकायक उसे बन्द नहीं कर सकते। जनता को भी तो सन्तुष्ट रखना है।

जर्मन यहूदियो का दमन नात्सी लोगो को कुछ अधिक हितकर नहीं हो सकता। यह तो केवल जनता को सरकार की कर्तव्यपरायणता दिखाने का ढोग है।

यहूदियो को नात्सियो ने भेंट का बकरा समझ रखा है।

जर्मनी मे यहूदियो की संख्या केवल ६ लाख ५० हजार से कुछ ही अधिक है। इसलिये वे तमाम जन-सख्या के १ प्रतिशत हैं।

जब इतने अल्प-सख्यक यहूदियो के प्रतिकूल ऐसा भीषण आन्दोलन छेड़ना उचित है ?

जेल में थोड़े से ही क़ैदी यहूदी है। अन्य कैदी अधिकतर कैथोलिक हैं। असली लड़ाई उन्हीं के ख़िलाफ़ है।

६ लाख ५० हजार यहूदी ६० लाख की जनता से बड़ी आसानी के साथ एक दो दिन मे ही अपने नागरिक अधिकारो से वञ्चित किए जा सकते हैं। वे भय का साधन नही हो सकते।

लेकिन २० लाख कैथोलिक !

नात्सी आधिपत्य का कायम रहना अथवा न रहना केवल वर्तमान शोचनीय आर्थिक दशा से ही निश्चित नही होगा बल्कि साथ ही साथ स्वस्तिका और कैथोलिक धर्म के झगडे के नतीजे से भी निर्धारित होगा।

कई घटे व्यतीत होने के बाद वह सामान्य दशा मे आया—इस समय वह अपनी कोठरी मे था।

उसके दिमाग मे वे हजारों बातें घूमने लगी जो कि वह न्यूरा से कहना चाहता था। लेकिन अब समय हाथ से निकल चुका था। न्यूरा चली गई थी। परमात्मा जाने फिर कब मुलाकात हो...।

२ अप्रैल

फिर इतवार! और अब भी वे ही जेल की यातनाये!!

३ अप्रैल

समाचार पत्र "अत्याचार-प्रचार" के शब्दो से भरे पडे थे।

उनका मत था कि दुष्ट यहूदी नात्सी क्राति के विषय मे बड़ी २ विचित्र कहानियां दूर २ तक फैला रहे हैं और गलत फहमिया उड़ा रहे हैं।

वे झूठी हत्या, मनुष्य हत्या और राजनीतिक कैदियो के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार का मिथ्या प्रचार करते हैं।

एक प्रसिद्ध पत्र ने इस विषय मे लिखा था—

"प्रति दिन हमे यहूदियो के दुष्टतापूर्ण और निर्लज्ज प्रचार की खबरे मिलती हैं। समस्त ससार मे जितनी भी झूठी खबरे फैलाई गई हैं वे एक सी ही हैं। इससे पता चलता है कि गदे यहूदी एक ही स्थान से ये खबरे प्राप्त करते हैं।"

"हम अब केवल चेतावनियो से ही सतुष्ट नही रहेगे। ससार के यहूदियो को, जो कि अन्य देशों के मनुष्यो को धन के लालच से चूसते रहते हैं, अपनी आखो के आगे से माया का परदा हटा देना चाहिये।"

अखबार मे और भी खबरे थीं। पर कैदियो के भले के लिये कुछ भी न था।

"उसी समय दरवाजा खुला और रोहम का लाल सिर, जो कि घावों के चिन्हो से भद्दा हो गया था, वहाँ दिखाई दिया। मैं फौरन उछल पड़ी। वह मुसकराया और एक क्षण बाद मै उसके प्राइवेट आफ़िस में बुला ली गई।

रोहम ने मेरी बातो को बहुत ध्यान से सुना। वह बहुत खुश था। उसे याद था कि हमने पिछली गर्मी की छुट्टी एक ही होटल मे गुजारी थी। मैंने उसको बतलाया कि स्टीफैन पिछले तीन सप्ताह से जेलखाने में है और यह भी कहा कि वह बेगुनाह है और उसकी कोई भी सुनाई नही होती। मैंने उससे प्रार्थना की कि वह मेरे पति देव की मुक्ति के लिये अपना प्रभाव काम मे लावें।

"हम लोगों को बहुत काम करना है", रोहम ने जवाब दिया। "अभी धीरज रखो। सभी की बारी आवेगी। तुम्हारे पति की भी बारी आवेगी। कल फिर मुझसे आकर मिलो। मै जो कुछ तुम्हारे वास्ते कर सकता हूँ जरूर करूगा।" रोहम मेरे साथ दरवाजे तक गया।

"रास्ते मे मेरी जनरल वान ऐप से भेट हुई। वह गुलाब के फूलो का एक गुच्छा लिये हुए था। वह अभी यात्रा से लौटा था। उसने मुझे देखा। मैं उसके पास गई और उससे मदद करने की प्रार्थना की। उसने सहृदयता से उत्तर दिया।

"मै एक सुन्दर स्त्री की सेवा करने के लिये सदैव तैयार हूँ लेकिन मैं अपनी ताकत से बाहर कुछ भी नही कर सकता।"

"उसने मेरे हाथ का चुम्बन लिया और ऊपर को चल दिया।"

४ अप्रैल

कैदियो के व्यायाम करते समय आज जेल में एक मजाकिया दृश्य हुआ।

४ अप्रैल

न्यूरा की डायरी में से कुछ उल्लेखनीय बातें

"मैं बहुत दिनों तक चीफ ऑव स्टाफ रोहन को देखने का प्रयत्न करती रही। मैं ब्राउन हाउस, होम आफिस, फील्डफिग, मतलब यह कि हर जगह गई, लेकिन मैं कभी भी उससे भेंट न कर सकी। मगर आज मैं उससे मिल ही ली। मैंने होम आफिस के कमरे मे उसका इन्तजार किया। दीवाल के सामने एक बडा भारी दीवान था जिसको नात्सियो ने बिल्डिग पर अधिकार करने के पश्चात् वहाँ मँगाकर रक्खा था। कमरे के बीच मे मेज के पास एक नवयुवक बैठा हुआ था जो कि कैप्टेन रोहन का मित्र था। उसने मुझसे बात चीत करना शुरू किया। उसने उस यात्रा का भी वर्णन किया जो कि उसने कैप्टेन रोहम के साथ वर्लिन से म्यूनिक तक की थी। उसने कहा कि रेल मे अनेको यहूदी थे। जब कि उन्होंने चीफ ऑव दि स्टाफ को देखा तो वे भयभीत होकर नौ दो ग्यारह हो गए। "वे वास्तव मे के देखने मे खतरनाक यहूदियो मे से हैं", उस जवान आदमी ने कहा। तब फिर उसने कहा, लेकिन आप मे न जाने क्या बात है कि आप यहूदी मालूम ही नही पड़ती।

यही उस नवयुवक का ख्याल था कि वह इस प्रकार मेरा आदर कर रहा है।

"हर वर्गमान, रोहम का एडीकाग, भीतर आया। उसने मुझसे चीफ आव दि स्टाफ से भेंट करने का मकसद पूछा।

"मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहती हूँ।"

"चीफ बहुत काम मे लगे है", वर्गमान ने कहा :—

"लेकिन मुझे उनसे जरूर २ मिलना है और बहुत दिनों से उनसे मिलने की मैं कोशिश कर रही हूँ। मैं जरू र उनसे मिलकर अपनी कथा कहूँगी", मैंने उतावलेपन से कहा।

५ अप्रैल

न्यूरा का पत्र स्टीफैन को मिला। उसने लिखा था कि उसने उसकी कार को नात्सी दल के हैडकार्टर्स मे खड़े देखा था। वह कार उसके मोटरखाने से नात्सी-दल के पास कैसे आई, वह यह समझ न सकी।

उसने इस बात की खोज की। वह हैडकार्टर्स में दौडी गई। वहाँ पर उसे यह बतलाया गया कि पहिली अप्रैल को वह कार गैरेज से वहा ले आई गई है।

"उनको ऐसा करने का क्या अधिकार है ?" उसने पूछा।

वहाँ उसे नात्सियो की लिखी हुई एक रसीद दी गई।

न्यूरा ने स्टीफैन को वह रसीद भेज दी। उसमें लिखा था कि कि नात्सी फौजी अफसर की आज्ञानुसार वह मोटरकार उनके इस्तेमाल के लिये स्टीफैन लॉरॉ की गैरेज मे से उठवा ली गई है। वह पत्र हिट-लर के प्राइवेट आफिस से लिखा गया था।

६ अप्रैल

प्रोफेसर कासमान जो कि स्टीफैन की फर्म की पालिसी के संचालक थे कुछ दिन पहिले गिरफ़्तार कर लिये गये थे और उसी जेल की तीसरी मंजिल पर गिरफ़्तार थे। वे उसी कोठरी मे है जिसमे स्टीफैन के साथी रेव और फ्राइडमान थे।

स्टीफैन को एक क़ैदी ने यह क़िस्सा सुनाया। उसे आश्चर्य होने लगा कि बेचारा वृद्ध पुरुष अब क्या सोचता होगा। यह वह आदमी था जिसने कि नात्सियो की विचार धारा के प्रस्फुटित होने के लिये मार्ग तैयार किया था।

क्या किसी को इस बात पर विश्वास हो सकता है कि नात्सी लोग प्रोफेसर कासमान को कारागार मे डाल देगे ?

बरामदे मे स्टीफैन लॉरॉ, काउट आर्को एव नैहर घूम रहे थे। अचानक नैहर रुक गया जैसे किसी ने उसके पैरों मे कीले गाड़ दी हो। एक मोटा फौजी सिपाही चश्मा लगाये हुए जीने मे खड़ा हुआ था। नैहर एकदम कूदा और उस मनुष्य की गर्दन मे उसने अपना हाथ डाल दिया। मालूम पडता था कि वह पागल हो गया है। उसके साथियो को भय हुआ कि शायद उसका मशा उस सिपाही को मार डालने का था।

नैहर चिल्लाया, "फ्राज ! तुम कहाँ ?"

उन्होंने एक दूसरे को गोद मे भर लिया। खुशी के मारे दोनों के नेत्रो से आँसू निकलने लगे। वर्षों के बिछुडे हुये युद्ध के मित्रों मे इतने दिनो बाद भेट हुई थी।

नैहर और फौजी सिपाही ने युद्ध के समय एक ही कम्पनी मे काम किया था। वे पास पास ही कीचड़ मे सोये थे। वे साथ साथ एक ही खाई मे लेटे थे। वे एक ही साथ पैट्रोल पर गए थे। दोनो ने एक हीं सिगरेट का चुम्बन किया था और साथ साथ भोजन किया था। वे मित्र थे। और अब वे जेल मे मिले। एक जो अपने नागरिक जीवन मे डाक्टर था, नात्सी सिपाही के रूप मे और दूसरा एक राजनीतिक कैदी की हैसियत मे।

मित्र मित्र पर नजरबदी करने आया था। नात्सी सरकार ने मित्रो को शत्रु के रूप मे परिवर्त्तित कर दिया था। परन्तु उनको इन बातो की कोई चिन्ता न थी।

"मैं तुमको इस तरह बन्द नही रहने दे सकता", सिपाही ने जोर से चिल्लाकर कहा, "मे अभी राजतीतिक पुलिस के पास जा रहा हूँ। मैं मालूम करूँगा कि उन्हे तुम्हारे विरुद्ध क्या शिकायत है। चिन्ता न करो। तुम जल्दी ही छूट जाओगे।"

७ अप्रैल

स्टीफैन को आज प्रातःकाल यह मालूम हुआ कि लिओ हासलीटर और वैरनवान हाह को नात्सियों ने उसके फ़र्म का कमिश्नर नियुक्त कर दिया है। अब ये ही दो आदमी उसके समाचार पत्र का सशोधन करेगे। वे जिस प्रकार चाहेगे उसमे काट छाट करेगे; कोई भी व्यक्ति उनके मार्ग में काटे नहीं बिछा सकता। सब सपादकगण कारागार मे हैं और साथ दो मुख्य मैनेजर भी। अब फर्म का इच्छानुसार सुधार करने के लिए उनका रास्ता साफ है।

इन कमिश्नरो का नियुक्त होना खासकर स्टीफ़ैन के लिए अच्छे शकुन की बात नहीं थी। ६ मार्च की बात चीत के बाद हासलोटर का उसके प्रति अच्छे विचार होना असम्भव था। रहे दूसरे वैरन वान हाह, वे इसके घोषित शत्रु थे। उसी ने उस को दोषारोपित करके पुलिस के हवाले किया था।

वे दोनो इस बात की भर सक कोशिश मे थ कि स्टीफैन इस बधन से शीघ्र मुक्त न होने पावे।

८ अप्रैल

जेल से मुक्त होने को अनिश्चितता आदमी को पागल-सा बना देती है। कयामत तक बाट देखते रहो!

आखिर किसलिये? उनकी आशाओ का खून क्यो कर दिया जाता हे!

डाकू इनसे कही ज्यादा बेहतर हे। उन्हे कम से कम इस बात का तो पता रहता हे कि वे कब छोड़ जावेगे। परन्तु राजनीतिक कैदियो का क्या पूछना! . .. वे आज, अभी छोडे जा सकते हैं......या एक साल में... या कभी नही।

स्टीफैन जल्दी-जल्दी कोठरी मे बेचैन चक्कर काट रहा अभाग्यवश समय उसकी जल्दबाजी मे साथ नहीं दे रहा था।

प्रोफेसर कासमान पहले एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र के सपादक थे। वही पहले सज्जन थे जिन्होने कि युद्ध के पश्चात् लोगो को सामाजिक सगठन के लिये उत्तेजित किया था। उन्होने खुल्लमखुल्ला जोरदार शब्दो मे कहा कि जर्मनी की पराजय युद्ध क्षेत्र मे नही हुई है वरन् घर मे हुई है। जर्मन सिपाहियो को शत्रु युद्ध-स्थल मे नही हरा सके हैं वरन् उनके भाइयो ने ही उन पर आघात करके उनको बेबस बना दिया है।

यही कासमान की विचार धारा थी और उनकी यह धारणा समाज वादियो की जीभ पर चटी हुई थी। नात्सियो ने भी उसको अपनाया।

यहूदी वश मे जन्म लेने वाले प्रोफेसर कासमान वास्तव मे नात्सी-वाद के एक सस्थापक हैं। उनके और हिटलर के सिद्धान्तो मे बहुत समानता है। बाद को ये दोनो महान् पुरुषो मे लडाई-झगडे होने लगे परन्तु वे किसी प्रकार से भी उनके विचारो मे भिन्नता प्रकट नही कर सकते।

तब यह कैसे सम्भव हो सकता था कि नात्सी प्रोफेसर कासमान को कारागार मे डाल दे।

कासमान एक जर्मन राष्ट्रीय वादी था। वह पार्टी के नेता ह्यूजनवर्ग का मित्र था। जर्मन राष्ट्रीय वादी हिटलर की नीति के समर्थक थे। हिटलर केवल उन्ही लोगों की सहायता से चुनाव मे सफल हुआ था। चुनाव मे वे ही लोग उसकी जड को जमाने वाले थे। वे राष्ट्र के स्थापन के लिये लडे थे। उन्होने हिटलर के लिए रास्ता साफ़ कर दिया।

फिर कासमान को कारागार मे क्यो बन्द किया गया? वह जर्मन राष्ट्रीयवादी पार्टी का प्रमुख सदस्य था। उसका दोस्त अब भी हिटलर के मन्त्रि मडल की ४ प्रबन्ध कारिणी सभाओ का अध्यक्ष है। जर्मन राष्ट्रीयवादी अब भी नात्सी नीति का समर्थन करते हैं। फिर भी कासमान जेल मे सड़ रहे हैं।

मशहूर व्यक्ति थे। वे नात्सी सरकार के लिए बड़े खतरनाक कैसे हो सकते थे, यह समझना कठिन था।

लेकिन इनसे भी अधिक महत्वपूर्ण और भयंकर राजनीतिक बन्दीगण तीसरी और चौथी मजिल पर बन्द रक्खे जाते थे। वे सम्पादक, वकील, डाक्टर, कम्पनी डाइरेक्टर, व्यापारी और राजनीतिज्ञ थे। थोड़े दिन पहिले ववेरिया के सामाजिक-प्रजातन्त्र पार्टी के नेता ऐरहर्ड आइर को जेल मे लाया गया था। वारेन गैव्साटेल भी उसी जेल मे कैद थे।

तमाम जेलखाना राजनीतिक कैदियो से भरा हुआ था। वार्डर लोगो की शिकायत थी कि मामूली जेलियो के लिए यहाँ जगह ही नही।

१२ अप्रैल

आज व्यायाम करते समय काउंट आर्को ने एक अखबार की प्रति स्टीफैन को दी। इसमे रक्षित क़ैद (Protective Custody) के कानूनी पहलुओ पर प्रकाश डाला गया था। स्टीफैन ने उसे पढ़ा :—

"रक्षित क़ैद शासन-सम्बन्धी एक साधारण-सी बात है। इसका फौज्दारी के जुर्म मे की गई गिरफ़्तारी से कोई भी सम्बन्ध नही। इसलिये यह उन कानूनो में शामिल नही किया जा सकता जो कि मामूली फौजदारी के लिये लागू हैं—जिनके मुताबिक मुजारम फौरन ही मजिस्ट्रेट के सामने लाया जाता है और मजिस्ट्रेट मुजरिम को या तो बरी कर देता है या उसकी गिरफतारी का नियमानुसार वारट निकाल देता है। रक्षित क़ैद, इससे पहिले जर्मनी मे प्रचलित नहीं थी हालाँकि स्थानिक शासन मे इसका अर्से से एक खास स्थान रहा है।

"इस कानून का मतलब भावी बदअमनी और अशान्ति रोकने का है। इसके मुताबिक पुलिस को यह जरूरी नहीं कि रक्षित क़ैदी का मुकदमा जल्द ही ते कर दे। ऐसे कैदी को तो मजिस्ट्रेट के सामने लाना भी ज़रूरी नहीं।"

मे एक आदमी के विचार भी शीघ्र ही बदलते हैं। कभी उसको पूर्ण विश्वास और आशा-सी हो जाती है, और ठीक दूसरे पल मे वह निराशा और विषादात्मक विचारो का शिकार हो जाता है।

और निराशा के कारण आदमी बावला सा बन जाता है।

९ अप्रैल

फिर इतवार। यह चौथा इतवार था। तमाम दिन कोठरी मे बद। कोई काम धधा नही। यह अधेर है। सन्ध्या बहुत धीरे-धीरे, तरसा-तरसा कर आती है। ऐसा मालूम होता है कि मानो सूर्यास्त होगा ही नहीं।

१० अप्रैल

अगर किसी को भयानक स्वप्न न दिखाई दे तो सम्भव है वह गहरी नीद मे सो जावे। परन्तु स्टीफैन ऐसे व्यक्ति के लिये जिसे सदैव भयानक स्वप्न दिखाई देते रहते थे, पलके लगना हराम था। उसे ऐसा मालूम होता रहता था कि मानो वह घुटने तक खून मे भीगा है। दो निर्दयी उसको बाधे हुए हैं और कोड़ो से पीट रहे हे। जल्लाद अपनी कुल्हाड़ी उठाता है और एक ही बार मे उसके सिर को अलग कर देता है।

जब वह सुबह को जागता तो रात भर ऐसे भयानक स्वप्न देखने के कारण वह पिछली रात से भी अधिक थका हुआ मालूम होता।

११ अप्रैल

आदमियो की गिरफ्तारी की कोई शुमार नही। नये बन्दी बढते जा रहे थे। अन्य पुराने कैदी उनकी जेल मे घुसने की आवाज को सुनते और दोपहर के बाद व्यायाम करते हुये देखते। दूसरे मजिल वाले राजनीतिक कैदी मामूली व्यक्ति थे। नये आये हुए राजनीतिक कैदी
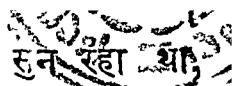
"मूर्खता है, मूर्खता", नैहर, जो हमारी बातो को सुन रहा था, भर्त्सना पूर्वक बोला, "जीभ को लगाम दो। यह जीवन इतना बुरा नही।"

उसने उनको निराशा के गड्ढे से निकालने के उद्देश्य से मनोरंजक कहानिया कहना आरम्भ की। बेचारे कैदी अपनी असलियत के मज़ाक करने लगे।

१४ अप्रैल

घंटे बज रहे थे। आज गुडफ्राइडे था। कोई गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा था। स्टीफैन ने कान लगा कर सुना ..... ।

"और तुमने घोर अपराध किया है ! तुम खाकी कमीज़ वालो और सिपाहियो, तुम जो कि निरअपराधियो को सताते हो, याद रखो कि वह दिन आने वाला है जब कि तुम्हे इसका जवाब देना होगा।

सिपाहियों की भद्दी भर्राई हुई हसी ने उसके कथन मे बाधा डाल डाल दी। लेकिन वह कहता रहा :—

"ईश्वर सब कुछ देखता है। तुमको किसी को बेकसूर गिरफ़ार नही करना चाहिए। तुम नेक बनो, नही तो दड के भागी होगे। मेरे इन शब्दो पर विश्वास करो क्योकि मैं ईश्वर, ईसा मसीह का, बेटा हूँ।"

जेल मे बद करते समय एक पादरी वह पागल हो गया था। वही अपनी खिड़की से यह सब उपदेश दे रहा था।

१५ अप्रैल

आज जब सब कैदी बरामदे मे थे, उस समय एक पुलिस मैन आया जिसके साथ स्टीफैन के फर्म का खास आदमी डाक्टर वैज भी थे। स्टीफैन ने उन्हे पहली ही बार जेल खाने मे देखा था। वह उसके पास दौड़ा हुआ गया। और पूछाः—

"वे तुमको कहाँ ले जा रहे हैं ?"

स्टीफैन ने इस लेख को कई बार पढ़ा कि कहीं इसमे छुटकारे की कोई आशा दीख पडे। परन्तु सब बेकार हुआ। रेग्यूलेशन के शब्द बिल्कुल स्पष्ट थे। रक्षित कैदी रक्षा हीन है।

वे यहाँ पर सदैव रखे जा सकते और रखे जाते हैं क्योकि वे राजनीतिक कैदी इस बात को कैसे सिद्ध कर सकते हैं कि छूटने के बाद वे कोई प्रजा मे क्रान्ति न फैलावेगे ?

१३ अप्रैल

स्टीफैन थर्रा-सा उठा। उसकी गिरफ्तारी को कल एक माह हो जावेगा और भगवान् जाने कब तक यह यातना भोगनी पडे।

उसकी कोठरी मे खिडकी खोलने के लिए एक लोहे का कुन्दा लगा था। उसके मस्तिष्क मे विचार आया। यह और भी काम मे तो लाया जा सकता है ।

मगर वह अपने विचार को अत तक सोचने का साहस न कर सका ·· उसने विचार-धारा बदल देनी चाही। लेकिन उसकी आँख उस कुन्दे पर लगी ही रही।

"रह-रह कर उसके दिमाग मे यही विचार आता—मैं अपनी हत्या तो कर सकता हूँ।

दोपहर को, काम करते समय, काउ ट आर्को ने अचानक ही उस से कहा, "मैं अब यहाँ ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रह सकता। मैं स्वय गला घोटने को सोच रहा था। मेरी खिड़की मे कुन्दा है। तुम आसानी से ।"

आर्को स्वय स्टीफैन के विचारो को दुहरा रहा था।

"मै भी आज यही विचार रहा था।" स्टीफैन ने कहा।

आर्को ने पीड़ित स्वर मे कहा, "हम दुर्बल हो रहे हैं।"

से नीले आकाश का एक टुकड़ा दीख पड़ता था। और सब जगह अंधकार का राज्य था।

स्वतंत्रता की लालसा उसके मन-मन्दिर में बढ़ती ही गई। सूर्योदय के समय स्टार्नबर्ग की झील पर लेटना कैसा आनन्ददायक होगा; और उसके स्वच्छ जल मे तैरते समय कैसा मजा आएगा!......फेफड़ों को ताजी हवा से भर लेना कितना सुखदायक होगा! आजादी! आजादी!!

फिर उसने सोचा कि इस अंधेरी कोठरी मे महान निराशा के बंधनो मे ये विचार कितने आश्चर्य-जनक हैं! मगर बाहर लोग जंगल और धूप मे इधर-उधर दौड़ रहे होंगे, बिल्कुल हवा की तरह स्वतंत्र होकर!

स्वतंत्र! स्वतंत्र!! स्वतंत्र!!!

दिन बड़ी मुश्किल से खतम हो रहा था। स्टीफैन अपनी कोठरी में सुबह से शाम तक पड़ा रहता। आज वह कसरत भी न कर सकता। जेल में केवल थोडे से वार्डर थे। वे कैदियो पर व्यायाम के समय निगरानी नही रख सकते थे।

१७ अप्रैल

ईस्टर सोमवार। सुबह से गिर्जे के घंटे बज रहे थे। उनकी आवाज स्टीफैन के कानो को तकलीफ दे रही थी।

वह घंटो तक अपने हाथो के बीच अपने सिर को दबाए बैठा रहा। अचानक वह जोर से चिल्ला कर चौंक पड़ा।

"मैं इसको और अधिक सहन नही कर सकता! मैं इसको और अधिक सहन नही कर सकता!"

उसे प्रतीत हुआ कि यह आवाज उसकी आवाज नही थी। उसने उपरोक्त दूसरी बार दोहराया। फिर तीसरी बार। फिर......

"मैं छोडे जाने वाला हूँ।" वैज ने जवाब दिया, "और मुझे ववेरिया छोड़ने का वा यदा करना पडेगा।"

"तुम्हारी स्त्री और बच्चो का क्या हाल होगा?"

डाक्टर वैज ने निराश होकर स्टीफैन की ओर देखा। वे प्रेत के समान पीले हो गये थे। वे सीढियो के ऊपर धीरे-धीरे चढ गये।

थोड़ी देर के बाद अपने थैलो को लिए वे फिर आये। कैदियो ने बिना बोले ही अपने हाथ हिलाये। डा० वैज लड़खड़ाते हुए आजादी पाने के लिए सीढियो से नीचे उतर गये। एक जर्मन को अपने देश से निर्वासित कर दिया गया!. ...

डा० वैज के छूटने पर औरो को भी छूटने की आशा हुई। अफ-वाह थी कि इस ईस्टर पर बहुत से कैदी छोडे जावेगे। कल ही ईस्टर था।

स्टीफैन भी चौकन्ना होकर अपनी कोठरी मे छुटकारे का बाट देखने लगा। पैरो की आहट आने लगी ...उसकी आशा का पुष्प हरा हो गया... कुछ क्षणो बाद ही पैरो की आहट बन्द हो गई ... और पुष्प मुरझा गया।

घटो व्यतीत हो गए। सन्ध्या हो गई लेकिन अब भी उसके हृदय मे आशा की झलक थी। कुछ दिन पहिले उसका कालिज का साथी व्यूकनर सन्ध्या होने के बहुत देर बाद छोडा गया था। उसने सोचा कि शायद उसे छोड़ने के लिये भी कोई आता हो!

पुलिस की घडी मे ११ बजे। और उसकी सब आशाओ पर पानी फिर गया। खिड़की वाला कुन्दा उसका मजाक बनाता हुआ ठडा पड़ा था!

१६ अप्रैल

ईस्टर का इतवार आगया। गिर्जे के घटे बजने लगे। खिड़की में

"लेकिन तुमको चलना पड़ेगा।" वार्डर ने स्टीफैन के हाथ को पकड़ कर कहा। स्टीफैन वार्डर का सहारे लेकर कमरे के बाहर निकले और उसके साथ चलने लगा। वह इस समय विरोध करने मे असमर्थ था।

वार्डर मनोविज्ञान को अच्छी तरह जानते हैं। वे क़ैदी की दिमाग़ी हालत से फौरन वाकिफ हो जाते हैं। वे जानते हैं कि किस समय क़ैदी के कामो मे दखलदाजी करनी चाहिये। वे जानते हैं कि कब क़ैदी निराशा की चरम-सीमा पर पहुँए गया है और इसलिए उसे अकेला नहीं छोड़ना चाहिये।

जब उसने ऊपर को देखा तो उसने अपने आपको पुलिस सर्जन डाक्टर म्यूलर के सामने पाया।

"तुम्हे क्या शिकायत है?"

सर्जरी के तीव्र प्रकाश ने स्टीफैन को अन्धा-सा बना दिया। उसे चक्कर आने लगा। उसे मालूम पड़ा कि वह गिरने ही वाला है।

डाक्टर ने जोर से चिल्ला कर कहा, "जल्दी बतलाओ कि क्या मामला है?"

स्टीफैन सिर में ख़ून का दौरान जोरों से होने लगा। उसे कुछ भी नही दीख रहा था। डाक्टर उससे बातें कर रहा था लेकिन उसे कुछ भी सुनाई नही देता था। उसने अपना तमाम बदन पर खसोटना शुरू कर दिया। उसने बोलने की कोशिश की लेकिन कुछ भी न बोल सका। वह अपना मुह तक न खोल सका। उसे ज्ञात था कि डाक्टर उसे कोई तेज दवा पिला रहा था।

"मुझे क्या हुआ है?" होश मे आते ही थोड़ी देर बाद स्टीफैन ने पूछा।

"यह तुम्हारा काम नहीं है", डाक्टर म्यूलर ने जोर से चिल्लाकर कहा, "मैं यहाँ पर क़ैदियों को कोई सूचना देने नहीं आया हूँ।"

दोपहर को वार्डर उसके कमरे मे आया। वह उसकी सूरत देख कर डर-सा गया।

"क्या मामला है? क्या तुम बीमार हो?" उसने दयाद्र होकर पूछा।

स्टीफैन ने उसे देखा। वह अभी हजामत बनवा कर आया था। वह घर से आया था, वह सडक पर घूमता हुआ आया था। अभी थोडे समय पहले उसने आकाश को आँखे भर कर देखा था। वह धूप मे घूम रहा था। वह अभी-अभी लोगो की भीड मे था। वह अभी एक ट्राम पर सवार था।

"मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं बिल्कुल अच्छी तरह से हूँ।" उसने चिल्ला कर कहा।

वह उसे अकेला छोड़ कर बाहर चला गया।

घटो के बजने से कोठरी गूँज उठी। स्टीफैन ने अपने कानो मे कागज ठूस लिया ताकि उसे वह गूज सुनाई न दे। लेकिन घटो की आवाज अधिक तेज होती गई। उसे निराशा ने आ घेरा। वह बड़-बड़ाने लगा।

"मैं इसको और अधिक सहन नही कर सकता! मैं इसको और अधिक सहन नही कर सकता!!"

उसकी आँखे खिड़की वाले लोहे के कुन्दे पर लगी हुई। थी। एक झटके से उसने अपनी पेटी को खोल डाला। उसने फाँसी लगाने का पक्का इरादा कर लिया था।

चाबियो का शब्द हुआ। वार्डर उसकी कोठरी मे दाखिल हो गया।

"तुमको डाक्टर के पास चलना होगा," उसने कहा।

"लेकिन मैंने तो कभी नही कहा कि मैं अपने को उसे दिखाना चाहता हूँ।" स्टीफैन ने दृढता से उत्तर दिया।

"स्टीफैन लारॉ, यहॉ आओ, अपनी चीजे बटोरो", शोडर ने कहा। "तुमको अब अन्य कैदियों के साथ-साथ रहना होगा।"

"क्यो ?"

"डाक्टर की आज्ञा।"

"मैं यहॉ से नही जाना चाहता। मैं यही रहूँगा।"

दोनो आदमियो ने उसे तरह-तरह से समझाया। उन्होने उसे बतलाया कि उसकी नई जगह पुरानी जगह से कही अच्छी है। वह अच्छे प्रकाश वाली और सुन्दर कोठरी है। वहॉ वह बहुत आराम से रहेगा।

"मैं नही जाना चाहता। मैं नही जाऊँगा।"

उसने उन दोनो आदमियो के जाते ही फासी पर लटकने का बिल्कुल पक्का इरादा कर लिया था।

लेकिन वार्डर वहॉ से हटे नही। वे उसे चिकनी-चुपड़ी बातो से फुसलाते रहे। "कम से कम एक बार उस कमरे को देख तो लो।" शोडर ने कहा। "अगर तुम्हे पसन्द न हो तो तुम वापस आ जाना। तुम अपनी चीजे यहीं रहने दो।"

"नही ! नहीं !!" स्टीफैन ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

ग्लास बोला, "हमारे लिए आफत मत पैदा करो। डाक्टर ने तुमको नई जगह रहने का हुक्म दिया है। हमको इस आज्ञा का पालन करना है।"

उन्होने स्टीफैन के हाथ पकडे और उसे चौथी मजिल पर ले गये। एक कमरे का दरवाजा खोला गया।

स्टीफैन ने अपने आपको कमरा न० ४७ मे पाया। इसी कमरे मे वह एक महीने पहले एकान्त कारागार काटने के लिए रक्खा गया था।

काउट स्ट्राकविज अब भी वहॉ था। उसने मेरा अभिवादन किया।

वह कमरे से बाहर कर दिया गया ।

नेहर वेटिंग रूम मे बैठा हुआ था। उसने डाक्टर से कुछ नींद लाने वाली गोलिया मागी थी। स्टीफैन उसके पास बैठ गया। नेहर ने अपना हाथ स्टीफैन के हाथ के ऊपर रख लिया। जब डाक्टर दूसरे कैदियो को देखता रहा तब तक वे चुपचाप ऐसे ही बैठे रहे।

कुछ देर बाद वार्डर उनको उनकी कोठरियो मे ले गया।

गिर्जे के घटे अब भी बज रहे थे। वे दो दिन से लगातार बज रहे थे।

डाक्टर के कठोर व्यवहार ने स्टीफैन की अतिम आशा पर कुठाराघात किया। वह चुपचाप होकर उस लोहे के कुन्दे की ओर देखता रहा ।

अचानक उसकी निगाह एक आख पर पड़ी जो कि जासूसी सूराख से उसे देख रही थी।

"छिः !" चुपके से आवाज आई—"मैं हूँ, होनी। हिम्मत बाधो। हम लोग जल्दी ही छूटने वाले हैं।"

यह आर्की था। वार्डर ने उसको कुछ खाना लाने के लिये भेजा था। वह स्टीफैन की बुरी हालत को सुन चुका था और उसे सान्त्वना देना चाहता था। इसलिए उसने दीवार के सूराख मे से चुपचाप फुसफुसाया था।

ज्यो ही वह चला गया स्टीफैन ने खिडकी वाले कुन्दे से अपनी पेटी बाधी। उसने सोचा कि उसकी जीवन का अब समाप्त-सा हो गया है। उसने फासी लगाने का पक्का इरादा कर लिया था।

उससे प्रतीत होने लगा कि किसी वस्तु का अन्त करना बहुत सुगम है। वह कुर्सी पर चढ़ा और कुन्दे को हाथ से देखा। क्या वह उसका बोझ साध न सकेगा ?

बरामदे मे उसने किसी के पैरो की आहट सुनी। दरवाजा फिर खोला गया। दो वार्डर, शोडर और ग्लास, कमरे मे दाखिल हुये ।

रहते थे। वे कल आधी रात तक बात चीत करते रहे। फिर खुल कर बात चीत करने की इजाजत मिल जाना वास्तव मे आश्चर्य जनक था। और फिर इतने देर तक बाते करते रहना ! यहाँ पर उन्हे एक ही घंटे के अन्दर सब काम करने के लिये मजबूर नही किया जाता; यहाँ वे अपनी मर्जी के माफिक काम कर सकते थे। वे बाते करते और घंटों तक करते रहते। सब लोगों का साथ-साथ एक कमरे में रहना बहुत भला मालूम होता। एकान्त वास ही मनुष्य को हताश कर देता है।

यह कमरा स्टीफैन को बहुत पसन्द आया। यहाँ उसके पास एक मेज भी थी। क्राइगर ने जो एक इन्जीनियर था, बहुत से छोटी छोटी चीजों से कमरे को आराम दायक बना दिया था। उसने कपड़ों के टांगने का थी प्रबन्ध कर दिया था। ढक्कन के डिब्बे मे वे सिगरेट की राख डालते। दीवालो पर पत्रिकाओ में से तसवीर निकाल-निकाल कर लगा दी गई थी। कागज का एक शेड भी बना लिया गया था। एक फलों वाली टोकरी हमारे रद्दी की टोकरी का काम देती थी। यहाँ सब तरह का आराम था।

जब सुबह को कमरे साफ किए गए तब उस मजिल के कैदियों ने स्टीफैन को देखा। उन्होने उसका अभिवादन किया। सब से पहिले शुपिक ने उससे भेट की थी।

"देखो ! मैंने तुमसे पहिले ही कहा था कि जातीय-समाजवादी जो चाहेगे वह मनमाना करेंगे।" यही उसका आरम्भिक वाक्य था। उसने दुआ सलाम नहीं की और न उसने कुशल क्षेम ही पूछा। उसने फ़ौरन वह बात चीत छेड़ दी जो कि वे आजादी के समय बहुत पहिले किया करते थे।

वे लोग बरामदे मे घूम रहे थे। कोठरियों के दरवाज़े खुले हुए थे। सब कैदियो ने स्टीफैन को दूसरी मजिल की हालत पूछने के लिये घेर लिया। क्या वह कभी पीटा भी गया था ? क्या उसने रिहाई के बारे मे भी कुछ सुना था ?

वार्डर ने कहा, "देखो ! यहाँ तुम्हारे पुराने मित्र हैं। यहाँ तुम्हारे लिये हरेक सुविधा होगी।"

स्टीफैन ने अपने चारों ओर देखा। उसे इस सजे हुये कमरे में आना भला मालूम हुआ। उसमे मेज और कुर्सी थे और खिड़की से प्रकाश आ रहा था। धूप मे उसकी आखे चुँधिया जाती थीं। उसके साथी काउट स्ट्राकविज और लैफ्टिनेन्ट क्राइजर भी उसी कोठरी में थे।

उन लोगो की सगत से स्टीफैन पर अच्छा असर पड़ा। उन सब ने पिछले सप्ताह की घटनाओं पर खूब गपशप की। स्टीफैन ने दूसरी मजिल की जिन्दगी का वर्णन किया। स्ट्राकविज ने सब उसे बताया कि उसके जाने के बाद वहाँ क्या-क्या बीता।

कुछ समय हँसते-बोलते बीता। स्टीफैन ने धीरे-धीरे होश सभाला। उसे विश्वास नही हो रहा था कि दो घटे पहले वह आत्म-हत्या करने पर तुला हुआ था।

दोपहर के बाद वह अपनी चीजे नीचे से उठा लाया। वार्डर ने आर्का के कमरे को खोला ताकि स्टीफैन उससे उधार ली हुई किताबे उसे वापस कर दे।

आर्का ने दुखी होकर कहा, "तुमसे अलग होते हुए मुझे बहुत दुख हो रहा है। लेकिन तुम्हारा जाना तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिए अच्छा होगा।"

उसकी आँखों मे आँसू भर आये।

१८ अप्रैल

बहुत दिनो बाद स्टीफैन को आज गहरी नीद आई। यहाँ पर वह बहुत सुखी था। विगत काल के कई दिन उसके दिमाग से बुरे स्वप्न की भाति लुप्त होते जा रहे थे। उसके कमरे के साथी साफ सुथरे

"चीफ़ आव स्टाफ़ की।"

"थोड़ी देर के बाद हैर वर्गमान जो कि रोहम का सहायक है, बाहर आया। मैंने उससे कहा कि यह मोटर गाड़ी जो तुम अपने काम मे ला रहे हो मेरे पति की है।

उसने कुछ घबराहट मे उत्तर दिया—

"मेरी मोटर खराब है . . . इसलिए मैंने इसको ले लिया। यह ब्राउन-हाउस के मैदान मे खड़ी हुई थी।"

"और तब भी पुलिस का बयान है कि उनको मोटर का पता नही चला।" मैने मुसकरा कर उसके तरफ देखा।

"मैं इस मोटर को तुम्हे वापस लौटाने की कोशिश करूगा",—हैर वर्गमान ने जल्दी से चलते हुए कहा। वह हमारी मोटर मे बैठ कर चलता बना।

"दो दिन बाद हैर डानर्ट ने फोन पर मुझसे पूछा कि क्या मै मोटर वापिस चाहती हूँ। "जरूर आप जानते हैं कि मैं हफ्तो से इसकी तलाश मे थी।"

"अच्छा अब तुम्हे यह वापस मिल जावेगी।"

"धन्यवाद!" मैंने खुशी से चिल्ला कर कहा "मै फौरन ही इसको लेने आती हूँ।"

"नही..... अभी मत आओ।" डानर्ट ने कहा, "मैं अभी इसी मोटर मे इस हफ्ते के अत मे गार्मिश जाना चाहता हूँ। क्या तुमको कोई एतराज है?"

मैं क्या कहती? डानर्ट राजनीतिक पुलिस का एक अफसर है।

मैं चुप थी।

"यानी तुम मुझे और थोडे दिन के वास्ते गाड़ी दे रही हो", डानर्ट ने यकायक कहा।

छोटी-छोटी चीटियों की तरह सब लोग उसके चारो तरफ इकट्ठे हो गये। वे लोग सवाल पर सवाल करते, लेकिन जवाब सुनने पर कोई भी ध्यान नही।देता था। वे सिर्फ यह जानना चाहते थे कि वे कब रिहा होगे।

इस मजिल मे ११ कमरे थे। ३७ से लेकर ४७ नम्बर तक। ४४ नम्बर का कमरा बड़ा कमरा था जिसमे लकडी के बहुत से तख्ते लगे थे। नम्बर ३७, ४२ और ४७ मे से हरेक मे तीन कैदी रक्खे जाते थे। नम्बर ३६ सिर्फ दो के वास्ते था। बाकी सब अधेरी कोठरियाँ थी और प्रत्येक मे एक-एक कैदी रक्खा जाता था।

श्यूप्पिक ३७ नम्बर के कमरे मे था और उसके साथ मे डा० मसौर (जो कावर्ग मे डाक्टर था) और गोहरिङ्ग (एक अखबार का सहकारी सम्पादक) भी उसी कमरे मे थे।

वैरन आरटिन, जो अखबार के काम मे स्टीफैन के साथ-साथ था, ३६ नम्बर के कमरे मे था। उसके साथ म्यूनिच का एक डाक्टर क्राइगर काउन्ट स्ट्राक्विज और स्टीफैन ४७ नम्बर के कमरे मे थे।

इस मजिल मे व्यौपारी, वकील, डाक्टर और अन्य वृद्ध पुरुष भरे थे। कोई भी उनमे ५० साल से कम का नही था। ४५ नम्बर का सिगार का सौदागर हैर आस तो वास्तव मे ६० साल से भी बडा था।

उनमे से किसी ने भी राजनीति मे भाग नही लिया था। कभी उनके बारे मे कोई बात नही सुनी गई। किसी को भी अपनी गिरफ़्तारी का असली कारण मालूम नही था।

न्यूरा (स्टीफैन की स्त्री) की डायरी का एक अंश

१९ अप्रैल

"हमारी मोटर गाड़ी की आज कल बड़ी माँग है। कल मैंने उसे कृषि-मन्त्रिमडल के सामने खड़ा देखा था। एक सिपाही उस पर बैठा हुआ था। मैंने उससे पूछा कि वह किसकी बाट देख रहा है।

छोटी-छोटी चीटियों की तरह सब लोग उसके चारो तरफ इकट्ठे हो गये। वे लोग सवाल पर सवाल करते, लेकिन जवाब सुनने पर कोई भी ध्यान नही।देता था। वे सिर्फ यह जानना चाहते थे कि वे कब रिहा होंगे।

इस मजिल मे ११ कमरे थे। ३७ से लेकर ४७ नम्बर तक। ४४ नम्बर का कमरा बड़ा कमरा था जिसमे लकडी के बहुत से तख्ते लगे थे। नम्बर ३७, ४२ और ४७ मे से हरेक मे तीन कैदी रक्खे जाते थे। नम्बर ३६ सिर्फ दो के वास्ते था। बाकी सब अंधेरी कोठरियाँ थी और प्रत्येक मे एक-एक कैदी रक्खा जाता था।

श्यूप्पिक ३७ नम्बर के कमरे मे था और उसके साथ मे डा० मसौर (जो कावर्ग मे डाक्टर था) और गोहरिङ्ग (एक अखबार का सहकारी सम्पादक) भी उसी कमरे मे थे।

वैरन आरटिन, जो अखबार के काम मे स्टीफैन के साथ-साथ था, ३६ नम्बर के कमरे मे था। उसके साथ म्यूनिच का एक डाक्टर क्राइगर काउन्ट स्ट्राक्विज और स्टीफैन ४७ नम्बर के कमरे मे थे।

इस मजिल मे व्यौपारी, वकील, डाक्टर और अन्य वृद्ध पुरुष भरे थे। कोई भी उनमे ५० साल से कम का नही था। ४५ नम्बर का सिगार का सौदागर हैर आस तो वास्तव मे ६० साल से भी बडा था।

उनमे से किसी ने भी राजनीति मे भाग नही लिया था। कभी उनके बारे मे कोई बात नही सुनी गई। किसी को भी अपनी गिरफ़्तारी का असली कारण मालूम नही था।

न्यूरा (स्टीफैन की स्त्री) की डायरी का एक अंश

१९ अप्रैल

"हमारी मोटर गाड़ी की आज कल बड़ी माँग है। कल मैंने उसे कृषि-मन्त्रिमडल के सामने खड़ा देखा था। एक सिपाही उस पर बैठा हुआ था। मैंने उससे पूछा कि वह किसकी बाट देख रहा है।

उस रोज के टेलीफोन पर बात करने के बाद मैं रोजाना राजनीतिक पुलिस के यहाँ मोटर लाने जाती हूँ लेकिन वे हर रोज कल के लिए टाल देते हैं। मुझे आज तक भी यह वापस नही मिली है।"

२० अप्रैल

जर्मनी आज हिटलर का जन्म-दिवस मना रही थी।

इसके उपलक्ष मे वैरन आरटिन को एक बड़ी चौकोलेट केक मिली थी जिस पर "हिटलर की जय" अंकित था।

काउंट स्ट्राकविज के कुछ दोस्तो ने छुआरे, अखरोटों आदि का एक नात्सी सिपाही बना कर भेजा।

परन्तु आरटिन और स्ट्राकविज अपने २ उपहारो से खुश न थे। उन्हे भय था कि ये उपहारो के कारण उनके जेल मे और सड़ाने का कारण बन सकते हैं।

स्ट्राकविज ने अपने उपहार को बाहर फेंक दिया।

आरटिन ने अपने उपहार का थोड़ा-थोड़ा भाग हमको दिया। मेरे टुकडे पर "स्वस्तिका" लिखा था। खाने मे खूब मजेदार था।

२१ अप्रैल

आज स्टीफैन के वकील ने उसे उस पत्र की नकल भेजी जो उसने पुलिस हैडकार्टर्स को कल लिखा था। स्टीफैन ने पत्र को पढा :—

"१५०/३३/ He.

२० अप्रैल

सेवा मे, पुलिस हैडक्वार्टर्स

म्यूनिच

कमरा १४१